हिंदी आलोचना कोश

(हिंदी साहित्य पर आलोचना तथा भाषा-विज्ञान संबंधी पुस्तकों की विस्तृत सूची; १९७२-१९७७)

संपादक

यशपाल महाजन

सहायक संपादक

सूक्ष्म गुप्ता

भूमिका

हिंदी आलोचना : उद्‌भव और विकास

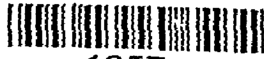
डॉ० निर्मला जैन

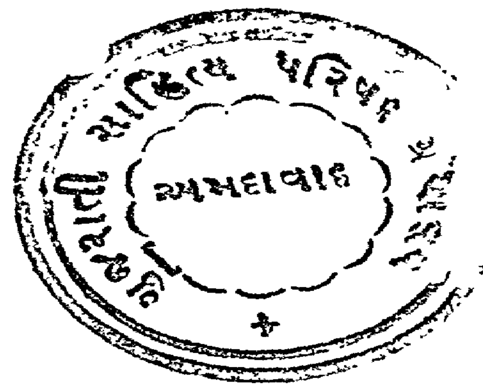


भारतीय ग्रंथ निकेतन

१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-११०००६

HINDI LITERATURE : BOOKS ON HINDI LITERARY CRITICISM AND LINGUISTICS
by Yash Pal Mahajan and Suksham Gupta





मूल्य : ७० रुपये
प्रथम संस्करण : १९७८
प्रकाशक : हिंदी सेवा संस्थान, ११०००६
वितरक : भारतीय ग्रंथ निकेतन
१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-११०००६
मुद्रक : विकास आर्ट प्रिंटर्स, शाहदरा-दिल्ली-११००३२

भूमिका

मैंने सन् १९७१ में **हिन्दी साहित्य आलोचना ग्रंथ-सूची** नामक संदर्भ ग्रंथ का संपादन किया था, जिसमें १९४७ से १९७१ तक की हिन्दी में प्रकाशित साहित्य एवं भाषाविज्ञान संबंधी आलोचनात्मक एवं निबंध ग्रंथों की प्रामाणिक और उपयोगी जानकारी दी गयी थी। उक्त पुस्तक के संकलन एवं संपादन में मैंने यथासम्भव प्रयत्न किया था कि उस अवधि में हिन्दी में प्रकाशित सभी पुस्तकों का प्रामाणिक विवरण उपलब्ध हो जाय एवं इस काल में प्रकाशित कोई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ छूटने न पाए। यद्यपि यह कार्य शोध-संस्थानों का ही है तथापि मैं साधनहीन एवं बिल्कुल अकेले होते हुए भी इस कार्य में प्रवृत्त हुआ। इस कार्य में मुझे कितनी सफलता मिली, मैं इस बात का निर्णय तो नहीं कर सकता हूँ, फिर भी पाठकों के आग्रह से अनुमान लगाया जा सकता है कि हिंदी साहित्य के विद्वान एवं अनुरागियों को मेरी तुच्छ सेवा स्वीकार हुई है।

हिंदी जब आज भारत की राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होने जा रही है तब हिंदी भाषा एवं साहित्य का सर्वांगीण अनुशीलन आवश्यक है एवं ऐसे अनुशीलन के लिए प्रस्तुत ग्रंथ जैसे संदर्भ ग्रंथ का विशेष महत्त्व आ जाता है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने १९६५ में 'बृहद् हिंदी ग्रंथ-सूची' नामक संदर्भ ग्रंथ संपादित किया जिसका परिशिष्ट १९६७ में प्रकाशित हुआ। तदुपरान्त १९७१ में 'हिंदी साहित्य : आलोचना ग्रंथ-सूची' भी प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत ग्रंथ भी इसी शृंखला की एक कड़ी है। यह ग्रंथ "हिंदी साहित्य : आलोचना ग्रंथ-सूची" का परिशिष्ट स्वरूप माना जा सकता है। इसमें १९७२ से १९७७ तक प्रकाशित ग्रंथों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

ऐसे संदर्भ ग्रंथ हिंदी के उन अध्येताओं, पुस्तकालयों एवं शोध संस्थानों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, जिन्हें हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में समय-समय पर प्रकाशित होने वाली रचनाओं को पढ़ने और उनके संबंध में व्यापक जानकारी प्राप्त करने की ललक रहती है।

अनुभवी विद्वानों को विदित है कि ऐसे संदर्भ ग्रंथों के संकलन एवं प्रकाशन पर्याप्त श्रम एवं व्यय की अपेक्षा रखते हैं एवं द्रव्यप्राप्ति की दृष्टि से ऐसे कार्य लाभजनक नहीं हो सकते हैं। एक अकिंचन हिंदी प्रेमी होने के नाते मैं इस दुरूह और दुर्गम पथ पर इस आशा और विश्वास के साथ अग्रसर हुआ हूँ कि मेरे इस प्रयत्न से राष्ट्रभाषा के प्रेमी पाठकों के समक्ष हिंदी साहित्य का सर्वांगीण रूप प्रस्तुत हो सके। यदि पाठकों ने मेरे इस प्रयास का स्वागत किया तो मैं भविष्य में इसी प्रकार हिंदी उपन्यास, हिंदी नाटक आदि विभिन्न विषयक संदर्भ ग्रंथ प्रस्तुत करने का विचार रखता हूँ।

प्रस्तुत ग्रंथ को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में यह अपने ढंग की पहली पुस्तक है। सामान्यतः पुरानी पुस्तकें लुप्त होती जाती हैं और नवीन रचनाओं का प्रादुर्भाव होता रहता है, परन्तु संदर्भ ग्रंथों का स्थायी महत्त्व रहता है और तब तक संग्रहणीय वस्तु बन जाती है।

ग्रंथालयी ही नहीं अपितु प्रत्येक विद्वान्, शिक्षा-शास्त्री, पुस्तक-विक्रेता तथा प्रत्येक शोधार्थी यह जानना चाहता है कि :

अमुक कवि, उपन्यासकार, नाटककार आदि लेखकों के ऊपर कौन-कौन-सी पुस्तकें हैं ?
अमुक कवि, उपन्यासकार, नाटककार आदि लेखकों के ग्रंथों के ऊपर कौन-कौन-सी पुस्तकें हैं ?
अमुक लेखक की कौन-कौन-सी पुस्तकें हैं ?
अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा सम्पादक कौन है ?
अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है ?
अमुक पुस्तक का विषय क्या है ?
अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है, उसमें कितने पृष्ठ हैं, किस वर्ष में प्रकाशन हुआ है, क्या कोई ग्रंथ शोध-प्रबंध है तथा वह किस विश्वविद्यालय से स्वीकृत हुआ है ? आदि, आदि ।

इस ग्रंथ-सूची में यथासंभव हर प्रकार की जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है ।

भारतीय लेखकों के नामों को किस प्रकार क्रमबद्ध किया जाय, मेरे सामने यह एक जटिल समस्या थी । मैंने लेखकों के नामों को वंश-नाम से अथवा लेखक जिस नाम से साहित्य-जगत में जाने जाते हैं, उस तरह से लिया है । नामों को ढूंढ़ने में सुविधा हो, इस दृष्टि से कई तरह के यथासंभव निर्देशी संलेख (Cross references) अनुक्रमाणिका भाग में दे दिए गए हैं ।

संदर्भ-कोषों के निर्माण और उनके संकलन-संपादन में बड़े धैर्य एवं लगन की आवश्यकता होती है । मैं नहीं कह सकता कि प्रस्तुत ग्रंथ को सर्वांगपूर्ण बनाने में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है, मुझे तो केवल इस बात का संतोष है कि जितनी सतर्कता इस काम में बरती जानी चाहिए थी, उतनी बरती गई है । आशा है कि भविष्य में विद्वानों के दिशा-निर्देशन तथा प्रकाशकों के सहयोग से यह कार्य और भी पूर्ण और शुद्धतर हो सकेगा । पूरी चेष्टा करने पर भी यदि इसमें मुद्रण आदि की अशुद्धियां रह गई हों तो उसके लिए प्रेमी पाठक मुझे उदारतापूर्वक क्षमा करेंगे । विद्वान पाठकों से अनुरोध है कि वे इन त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान दिलायें, जिससे भविष्य में इसे और भी सुंदर तथा उपयोगी बनाया जा सके ।

मैंने ये सब जानकारी दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी, दिल्ली, कई अन्य पुस्तकालयों तथा प्रकाशकों के पास जाकर एकत्र की है । मैंने अमरीकन लायब्रेरी आफ कांग्रेस की एक्सेशन लिस्ट तथा राष्ट्रीय ग्रंथ-सूची से भी इसके निर्माण में सहायता ली है जिसके लिए मैं उनका बहुत ऋणी हूँ । मैं उन सभी पुस्तकालयों, प्रकाशकों तथा स्नेही जनों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस सूची के निर्माण में अपना अनन्य सहयोग दिया है । वास्तव में यदि उनका सक्रिय योगदान न मिलता तो मेरा यह काम पूरा न होता । डॉ० श्रीमती निर्मला जैन, रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने प्रस्तुत ग्रंथ की भूमिका लिखकर इसके महत्त्व की वृद्धि की है । मैं उन्हें भी हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

यदि इस व्यवहारोपयोगी संदर्भ ग्रंथ से पाठकों को कुछ भी लाभ मिल सका, तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूंगा ।

I-ई-७८ लाजपत नगर
नई दिल्ली-११००२४

यशपाल महाजन

इस ग्रंथ-सूची का उपयोग कैसे किया जाय

इस ग्रंथ-सूची में १९७२ से १९७७ तक की हिंदी साहित्य में आलोचना, निबंध तथा भाषा-विज्ञान संबंधी पुस्तकें ली गई हैं। इसके तीन भाग हैं। प्रथम भाग में पुस्तकें अकारादि क्रम से निम्न विषयों के अन्तर्गत हैं :

(१) कृति तथा कृतिकार
(२) काव्य
(३) उपन्यास-कहानी
(४) नाटक-एकांकी
(५) साहित्यशास्त्र तथा आलोचना
(६) भाषाविज्ञान तथा व्याकरण
(७) विविध

द्वितीय भाग में प्रथम भाग की अनुक्रमणिका है। लेखकों तथा पुस्तकों के नाम अकारादि क्रम से दिए गए हैं। तीसरे भाग में प्रकाशकों के पूरे पते हैं, जिनकी पुस्तकें इस सूची में दी गई हैं।

प्रत्येक विभाग में लेखक-क्रम से व्यवस्था है : ग्रंथकार, ग्रंथ-नाम, संपादक आदि, संस्करण, प्रकाशन स्थान, प्रकाशक, वर्ष, पृष्ठ संख्या तथा मूल्य। यथासंभव लेखकों की जन्म-तिथियां तथा शोध-प्रबंध जिस विश्वविद्यालय से स्वीकृत हुआ है उसकी भी जानकारी दी गई है।

स्थायित्व तथा एकरूपता लाने के लिए निम्नलिखित प्रणाली अपनाई गई है, जिससे पुस्तकों को शीघ्रता से ढूंढा जा सके—

१. प्रत्येक विभाग में पुस्तकों को हिंदी अक्षर-क्रम के अनुसार रखा गया है। पंचम वर्ण के स्थान पर अधिकतर अनुस्वार का प्रयोग किया गया है। जैसे—'पन्त' का पंत; 'हिन्दी' का 'हिंदी'। यह इसलिए आवश्यक था कि सूची के क्रम को सुगमता तथा स्पष्टता से निभाया जा सके।

२. लेखकों को वंश-नाम या उप-नाम से रखा गया है। जैसे—शुक्ल, रामचंद्र; प्रसाद, जयशंकर; बच्चन, हरिवंशराय आदि, और यथासंभव निर्देशी संलेख दे दिए गए हैं। जैसे—कमलेश. दे. गौरीशंकर 'कमलेश'; उपाध्याय, अयोध्यासिंह 'हरिऔध'. दे. हरिऔध. आदि।

३. अनुक्रमणिका (भाग दो) में लेखक अथवा ग्रंथ नाम का पहला शब्द यदि ऊपर आ चुका है, तो उसे पुनः न देकर उसके स्थान पर '—'का प्रयोग किया गया है। जैसे—

अग्रवाल, कुंवरजी	उपन्यास और राजनीति
—, कुसुम	— कला के तत्त्व
—, कृष्णचंद्र	— का उदय

४. तीसरे भाग में उन प्रकाशकों के पूरे पते हैं, जिनकी पुस्तकें इस सूची में समाविष्ट हैं। जिन प्रकाशकों के नाम इस भाग में नहीं है, उनका पूरा पता मालूम नहीं है या भाग एक की पुस्तकों से स्वयं ही जाना जा सकता है।

५. पुस्तकों का मूल्य पुस्तकों से अथवा प्रकाशकों की नई सूची से लिया गया है। इधर कई प्रकाशकों ने मूल्य बढ़ा दिये हैं, इसलिए सही मूल्य के लिए संबंधित प्रकाशकों से पत्र-व्यवहार करें।

६. यदि किसी पुस्तक का प्रकाशक तथा वितरक दोनों है, तो प्रकाशक-सूची में वितरक का पता भी दिया गया है।

७. यदि एक पुस्तक को दो विषयों में रखा जा सकता है। जैसे—"हिंदी काव्य-शास्त्र में कविता का स्वरूप विकास"। उसे 'काव्य' तथा 'साहित्यशास्त्र' दोनों विभागों में दिया गया है। 'उपन्यास कला के तत्त्व' 'उपन्यास-कहानी' तथा 'साहित्यशास्त्र' विभाग में। आदि, आदि।

संकेत-सूची

अनु.	—	अनुवादक	यूनि.	—	यूनिवर्सिटी
खं.	—	खंड	विश्व.	—	विश्वविद्यालय
टीका.	—	टीकाकार	व्या.	—	व्याख्याकार
दे.	—	देखिये	सं.	—	संस्मरण
परि.	—	परिवर्द्धित	संग्रा.	—	संग्रहकर्ता
पा.	—	पाकेट	संपा.	—	संपादक
प्र.	—	प्रत्येक	संशो.	—	संशोधित
भा.	—	भाग	सा.	—	साहित्य

हिन्दी आलोचना

भारतेन्दु-पूर्व

हिन्दी की अपनी आलोचना का आरम्भ भारतेन्दु-युग से माना जाता है। इसका कारण यह है कि इससे पूर्व हिन्दी आलोचना के नाम पर जो कुछ उपलब्ध होता है, उसके आधार पर हिन्दी आलोचना की निजी पहचान निर्धारित नहीं की जा सकती। वस्तुतः आधुनिक युग से पूर्व आलोचना को साहित्य की एक स्वतन्त्र, गम्भीर विधा के रूप में ग्रहण ही नहीं किया गया।

संस्कृत साहित्य शास्त्र में अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि, रीति एवं रस सम्प्रदायों के रूप में आलोचना के सैद्धान्तिक आधार की प्रतिष्ठा हुई। इन सम्प्रदायों में बल प्रायः काव्य के प्रमुख तत्व-निर्धारण पर रहा और इनके समर्थक आचार्य मुख्य रूप से 'काव्य की आत्मा' के प्रश्न पर विचार करते रहे। उन्होंने प्रायः 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' जैसी 'सूत्रमयी सैद्धान्तिक आलोचना' के उदाहरण ही प्रस्तुत किए।

रचनात्मक साहित्य के आधार पर काव्य का भेदोपभेद-निरूपण, शैली के नियमों का निर्धारण, अथवा गुण-दोष विवेचन आदि भी सिद्धांत-निरूपण के एक पक्ष विशेष के रूप में ही सामने आया। काव्य के तत्वों के सूक्ष्म भेदोपभेद-विवेचन में इन आचार्यों की वृत्ति विशेष रूप से रमती थी। व्यावहारिक आलोचना के नाम पर संस्कृत में प्रायः तुलनात्मक आलोचना, कृतियों के गुण-दोष निरूपण या फिर टीका साहित्य की ही प्रधानता रही। परिमाण और गुण दोनों ही दृष्टियों से यह साहित्य उपेक्षणीय नहीं कहा जा सकता।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में काव्य-रचना की प्रधानता रही। यह बात अलग है कि इन काव्य-ग्रन्थों के बीच 'काव्य-स्वरूप' अथवा 'काव्य-प्रयोजन' जैसे गम्भीर शास्त्रीय विषयों को लेकर कुछ फुटकर उक्तियाँ बिखरी हैं। इस प्रकार की उक्तियों में इन विषयों पर रचनाकार कवि के निजी दृष्टिकोण का आभास-भर मिलता है।

वस्तुतः सही रूप में हिन्दी में शास्त्र-चर्चा का आरम्भ भक्तिकाल में कृपाराम (१५९८) की 'हिततरंगिणी' से ही माना जाता है। इस ग्रंथ का आधार भरतमुनि का 'नाट्य शास्त्र' तथा भानुदत्त की 'रस मंजरी' थे। इन्हीं से प्रेरणा ग्रहण कर कृपाराम ने रस-निरूपण किया तथा नायिका-भेद की चर्चा की। 'हिततरंगिणी' के लेखक को किसी प्रकार की मौलिक उद्भावना का श्रेय नहीं दिया जा सकता किन्तु हिन्दी में साहित्यशास्त्र का प्रथम ग्रंथ होने के कारण इसका ऐतिहासिक महत्व असंदिग्ध है। 'हित तरंगिणी' के उपरान्त साहित्यशास्त्र के ग्रन्थों की रचना की अविकल परम्परा सत्रहवीं शताब्दी से चल निकली। सम्वत् १६६७ में सूरदास ने 'साहित्य लहरी' की रचना की, जो रस तथा रीति के निरूपण की दृष्टि से एक उल्लेखनीय कृति है। सत्रहवीं शताब्दी में ही नंददास कृत 'रसमंजरी' तथा पं० मोहनलाल मिश्र कृत 'शृंगार रस' में रस की सम्यक् चर्चा मिलती है। इस प्रकार हिन्दी में आलोचना का आरम्भ

व्यावहारिक रूप में न होकर सैद्धान्तिक रूप में हुआ। साहित्यशास्त्र की इन आरम्भिक कृतियों में जो सिद्धान्त-चर्चा मिलती है उसकी पृष्ठभूमि में भी संस्कृत साहित्यशास्त्र की सुदीर्घ और सुदृढ़ परम्परा ही रही, हिन्दी कवियों का मौलिक चिन्तन नहीं। इस प्रकार हिन्दी की यह तथाकथित आरम्भिक आलोचना, संस्कृत साहित्यशास्त्र की उपजीवी ही कही जायगी।

कवि-सम्बद्ध आलोचना के नाम पर विद्वानों ने प्रायः गोसाई विट्ठलनाथ के 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन् की वार्ता' नामक ग्रंथों का, तथा नाभादास के 'भक्तमाल' का उल्लेख किया है। किन्तु जैसा कि शीर्षकों से स्पष्ट है, इन ग्रन्थों में बल कृतियों पर न होकर व्यक्तियों पर रहा और उसमें भी तथ्य-निरूपण से अधिक श्रद्धा-समर्पण पर। इन रचनाओं में काव्य-चर्चा से अधिक वैष्णवों और भक्तों की माहात्म्य-चर्चा है। वह भी कुछ इस अतिरंजित रूप में कि तथ्यों की जानकारी की दृष्टि से भी इन ग्रंथों में उपलब्ध सामग्री की प्रामाणिकता संदिग्ध है। काव्य-चर्चा के नाम पर इस दौर में कुछ आलोचनात्मक सूत्र मिलते हैं, जिनका न रचयिता ज्ञात है और न रचना-काल। इसके अतिरिक्त स्वयं कवियों ने अपनी रचनाओं के आरम्भ और अंत में रचना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला है। इन अंशों से कृतिकार के काव्य-प्रयोजन-सम्बंधी निजी दृष्टिकोण का बोध होता है। इसके अतिरिक्त तुलसी और जायसी जैसे बड़े कवियों की रचनाओं के बीच कुछ आलोचनात्मक सूत्र बिखरे है। इन सूत्रों के माध्यम से अधिक-से-अधिक इन कवियों के काव्य-सम्बंधी निजी दृष्टिकोण का संकेत मिलता है। चाहें तो इस सामग्री को इन कवियों के काव्य-सिद्धांतों के रूप में व्यवस्थित किया जा सकता है।

रीतिकाल में आलोचना के नाम पर जो कुछ लिखा गया, वह उसी परम्परा का बढ़ाव मात्र है, जिसका आरम्भ भक्तिकाल में हुआ था। रीतिकालीन हिन्दी आलोचना का स्वरूप भी मुख्यतः सैद्धान्तिक ही है। यह बात अलग है कि व्यावहारिक आलोचना की इस काल में उतनी उपेक्षा नहीं की गयी जितनी पूर्ववर्ती युगों में मिलती है। कुल मिलाकर कवि-कर्म की अपेक्षा आचार्यत्व की प्रतिष्ठा इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति रही। जब काव्य-रचना की तुलना में शास्त्र-रचना या सिद्धांत-निरूपण को प्रधानता दी जाए तो ऐसी स्थिति में व्यावहारिक या ठेठ आलोचना की स्थिति क्या रही होगी, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

रीतिकालीन सिद्धांत-चर्चा भी मुख्यतः संस्कृत साहित्यशास्त्र से प्रेरित रही। इस युग के कवियों ने संस्कृत काव्यशास्त्र के सभी प्रमुख विषयों, रस, अलंकार, रीति, ध्वनि आदि का सविस्तार विवेचन किया। इनका विवेचन सबसे अधिक आचार्य मम्मट के 'काव्यप्रकाश' और आचार्य विश्वनाथ के 'साहित्यदर्पण' का ऋणी रहा। ब्यौरों में और भेदोपभेद-विभाजन में कुछ सतही अन्तर के अतिरिक्त रीतिकालीन आचार्यों ने विशेष मौलिकता का परिचय नहीं दिया। यह आकस्मिक नहीं है कि इन पर मूल ग्रन्थों की अपेक्षा टीका-व्याख्याओं का प्रभाव ही अधिक रहा। परन्तु रीतिकाल में ऐसे बहुत से ग्रंथ लिखे गए जिनका उल्लेख गुण और परिमाण, दोनों दृष्टियों से, हिन्दी में, संस्कृत साहित्यशास्त्र की उद्धरणी करने के लिए किया जाना चाहिए। इन ग्रंथों में रस, ध्वनि, अलंकार और नायिका-भेद आदि विषयों का सम्यक् विवेचन किया गया है। चिन्तामणि के 'कविकुल कल्पतरु' व 'काव्य-विवेक', कुलपति का 'रस-रहस्य', देवकृत 'शब्द रसायन', श्रीपति कृत 'काव्य सरोज' तथा भिखारीदास का 'काव्य निर्णय' आदि ग्रंथ इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है।

इनके अतिरिक्त कुछ ग्रंथ ऐसे थे जिनमें काव्य के सर्वांग का निरूपण न करके किसी विषय विशेष का ही विवेचन किया गया है। ऐसे ग्रंथों में रस और अलंकार को प्रमुखता दी गयी है। रस-विवेचन को प्रमुखता देने वाले ग्रंथ है : केशवदास का 'रसिकप्रिया', मतिराम का 'रसराज', देव का 'रस विलास' और 'भावविलास' तथा बेनी प्रवीण का 'नवरसरंग' आदि।

अलंकार-विषयक ग्रन्थों में केशवदास कृत 'कविप्रिया', जसवन्तसिंह कृत 'भाषाभूषण', सुरति मिश्र के 'अलंकार माला', भूपति के 'कण्ठा भूषण', तथा पद्माकर के 'पद्माभरण' का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। इन सभी आचार्यों ने अलंकारों के सोदाहरण लक्षण प्रस्तुत किए हैं। जैसा पहले कहा जा चुका है इनका पूरा ध्यान हिन्दी में संस्कृत साहित्य-शास्त्र की सामग्री को सुलभ करने पर केन्द्रित रहा। काव्य में अलंकार की उपयोगिता, अलंकार और अलंकार्य का सम्बन्ध, काव्य के अन्य उपादानों में, अलंकार के महत्व का निर्धारण, अन्य तत्वों से अलंकार का सम्बन्ध आदि अनेक ऐसे तात्विक प्रश्न हैं जिन पर पर्याप्त मौलिक चिंतन का अवकाश हो सकता है। हर युग की निजी अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए ये प्रश्न पुनः-पुनः विचारणीय बने रहते हैं। रीतिकालीन कवियों ने इन मौलिक प्रश्नों को अपेक्षित महत्व न देकर अलंकारों के भेदोपभेदों का कुछ घटा-बढ़ा कर वर्णन करने में ही अधिक शक्ति लगायी है। परन्तु इनके द्वारा भेद-निरूपण में जो परिवर्तन किए गए हैं, वे भी सर्वत्र प्रश्नातीत नहीं हैं। इसलिए यदि इन परिवर्तनों को मौलिक योगदान के खाते में डालने का प्रयत्न भी किया जाय, तो भी इनके महत्व में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती।

काव्यालोचन के क्षेत्र में इन कवि-आचार्यों का विशेष योगदान नहीं रहा। गणना के लिए श्रीपति और भिखारीदास को इस दिशा में कुछ प्रयास करने का श्रेय दिया जा सकता है। भिखारीदास ने हिन्दी की तुकान्त कविता को आलोचना का विषय बनाया और श्रीपति ने केशवदास और उनके सम-सामयिक कवियों की रचनाओं से उद्धरण प्रस्तुत कर, उनके आधार पर काव्य-दोषों का वर्णन किया। इनके अतिरिक्त कुछ कवियों की काव्यगत विशेषताओं को लक्ष्य करके उन्हें छन्दों में बाँध दिया गया। बिहारी के काव्य के संबंध में प्रचलित यह प्रसिद्ध दोहा : "सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर। देखन को छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर।" इसी सूत्रात्मक शैली की आलोचना का उदाहरण है। इस प्रकार की उक्तियों के स्रष्टा कवि लोकोक्तियों, मुहावरों, या लोक-कथाओं के रचनाकारों की तरह प्रायः अज्ञात ही बने रहते थे। इन उक्तियों में कवि-विशेष की रचना की किसी एक ऐसी विशेषता की गहरी पकड़ निहित रहती थी, जिसने उक्ति के रचयिता को सर्वाधिक प्रभावित किया हो।

यदि टीका के माध्यम से कृति को समझने के प्रयास को भी आलोचना माना जाय तो इस दिशा में भी रीतिकाल में कुछ प्रयत्न किए गए। 'क्रिसन रुक्मणि री वेलि' की टीकाएँ इसी पद्धति के अन्तर्गत गिनी जायेंगी। 'रामचरितमानस' को लेकर की जाने वाली कुछ प्रयोगात्मक समीक्षाओं का भी अपना महत्व है। किन्तु इस सब के बावजूद एक बात निर्विवाद है। संस्कृत साहित्यशास्त्र से प्रेरणा ग्रहण करने पर भी, रीतिकालीन हिन्दी आलोचना में सैद्धान्तिक चिन्तन का भी समुचित विकास नहीं हुआ। इसका एक प्रमुख कारण था—प्रौढ़ और विकसित गद्य का अभाव। सिद्धान्त-चर्चा के लिए छन्दोबद्ध शैली की उपयुक्तता सन्देहास्पद ही कही जाएगी। साहित्यशास्त्र के दुरूह और जटिल विषय छन्द के अनुशासन में बंध जाने पर और भी अधिक दुर्ग्राह्य हो जाते हैं। काव्य-रचना में जो सांकेतिकता या व्यंजना गुण हो सकती है, वही बौद्धिक विवेचन-विश्लेषण को और भी अधिक दुर्ग्राह्य बना देती है। वस्तुतः ये कवि विषय की स्पष्टता से अधिक अपने आचार्यत्व की धाक बैठाने के लिए चिन्तित थे। परिणामतः कवि-कर्म भी अनेक स्थलों पर इनके लिए साध्य न रहकर साधन बन गया। काव्यांगों का लक्षण-निरूपण इनकी दृष्टि में प्रधान था, लक्षणों के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए काव्य-रचना करना गौण। इनके लक्षण-निरूपण में मौलिकता का लगभग एकान्त अभाव इसलिए भी रहा, क्योंकि इन्होंने सम-सामयिक काव्य-रचनाओं को केन्द्र में रखकर भी सिद्धांत-विचार नहीं किया। इनकी दृष्टि में जैसे एक ही लक्ष्य प्रधान था—संस्कृत-साहित्यशास्त्र की उद्धरणी। यदि इन्होंने अपने समय के साहित्य के संदर्भ में शास्त्र-चिंतन किया होता तो कोई कारण नहीं था कि सामयिक संदर्भ के दबाव से कुछ नए प्रश्न नहीं उभरते और इस प्रकार कुछ

मौलिक सिद्धांत-चर्चा सामने आती ।

बहरहाल, कारण चाहे जो रहे हों, ऐतिहासिक तथ्य यही है कि आधुनिक काल से पूर्व विद्वत्तापूर्ण सिद्धान्त-चर्चा, टीका-व्याख्या या फिर सूक्तियों के अतिरिक्त रचनात्मक-साहित्य के संदर्भ में हिन्दी की ठेठ आलोचना का कोई रूप स्थिर नहीं हो पाया था ।

आधुनिक युग : गद्य का आविर्भाव और आलोचना का आरम्भ

खड़ी बोली गद्य के आविर्भाव के साथ हिन्दी में जिन नयी साहित्यिक विधाओं का सूत्रपात हुआ, उनमें आलोचना का उल्लेख करना अनुचित न होगा । गद्य-शैली के निर्माण-काल में साहित्य के अनेक नए रूपों को विषयानुरूप एक नया माध्यम मिला, यह सही है । किन्तु यह भी उतना ही सही है कि आधुनिक युग की बदलती हुई परिस्थितियों ने साहित्य के मानदण्डों पर नए सिरे से विचार करना अनिवार्य कर दिया था । हिन्दी आलोचना में जिस नयी दृष्टि के उन्मेष का आभास इस युग में मिलना आरम्भ हुआ, उसके लिए सम्पूर्ण राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश जिम्मेदार था । अर्थात् परिवर्तित होती हुई युग-चेतना ने साहित्य के मानदण्डों में भी बदलाव की स्थिति पैदा कर दी । अंग्रेजों के शासन की स्थापना के उपरान्त, भारतवासियों का सम्पर्क जिस सभ्यता, संस्कृति और साहित्य से हुआ, उसके केन्द्र में धर्म और अध्यात्म न होकर आधुनिक भौतिकवादी जीवन था । इस युग के लेखक के पास साहित्य-चिंतन के नाम पर रीतिकालीन लक्षण-ग्रंथों की विरासत थी और दूसरी ओर एक नए युग की परिस्थितियों की चुनौती थी । भारतेन्दु तथा उनके समकालीन लेखक पश्चिम से मिलने वाले ज्ञान तथा विचारों के समर्थक तो थे ही, पर अपनी राष्ट्रीय परम्परा के संबंध में भी पूर्णत: जागरूक थे । अत: इस युग के रचनात्मक और समीक्षात्मक साहित्य में उदारता और निष्ठा के मेल से निर्मित समन्वयात्मक वैचारिकता का उन्मेष मिलता है ।

रीतिकाल में सारा बल सैद्धान्तिक आलोचना पर था । भारतेन्दु युग में इसके विपरीत लक्षण-ग्रन्थों से कट कर अलग खड़े होने की छटपटाहट दिखाई पड़ने लगी । अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क से आलोचना की व्यावहारिक पद्धति का आरम्भ हुआ, जिसकी शुरुआत कुछ फुटकर निबंधों और पत्रिकाओं में छपने वाली सम्पादकीय टिप्पणियों में देखी जा सकती है । इन समीक्षाओं में न तो सूत्रात्मक उक्तियाँ मिलती हैं और न कृति के गुण-दोष परिगणन की रूढ़िवादी प्रवृत्ति । इस युग के लेखकों ने उदार-बुद्धिवाद और उपयोगितावाद से प्रभावित होकर, परम्परा और आधुनिक चिंतन में जो कुछ उपयोगी था उसे आधार बनाया तथा जो अनुपयोगी था उसे निषिद्ध मान कर छोड़ दिया। इस दृष्टि से भारतेन्दु का 'नाटक' शीर्षक निबंध एक महत्वपूर्ण रचना है । इसमें भारतेन्दु ने न केवल नाटक के विभिन्न अंगों का विवेचन किया है, अपितु यह दिखाने का भी प्रयास किया है कि नाटक के प्राचीन सिद्धान्तों में कितना अंश अपरिहार्य है और कितना अनुपयोगी, अत: त्याज्य हो गया है ।

यह कहना कि इस युग में गद्य-शैली का विकास एवं नयी विधाओं का उन्मेष आलोचना के जन्म में सहायक सिद्ध हुआ, एक अधूरा वक्तव्य देना होगा । बात सिर्फ इतनी ही नहीं है । वस्तुत: ध्यान से देखा जाय तो हम पायेंगे कि आधुनिक युग में साहित्य व्यक्ति-सत्ता या वर्ग-सत्ता से हट कर, समाज-सत्ता की ओर उन्मुख हुआ । परिणामत: साहित्य का पाठक समुदाय भी राजदरबारों और रईसों की गोष्ठियों की रसिक-मण्डली से उठकर मध्यवर्ग की शिक्षित पाँत में आ बैठा । अत: यह कहना गलत न होगा कि जन-सामान्य की रुचि का दबाव भी हिन्दी-आलोचना पर पर्याप्त पड़ा । इस परिवर्तन का संबंध केवल शैली विशेष के विकास से न होकर उस नए ढंग की सामाजिकता से है जो साहित्य के माध्यम से उद्घाटित हुई । भारतेन्दु के 'भारत दुर्दशा' या 'अंधेर नगरी' जैसे नाटकों के मूल्यांकन के लिए, जाहिर

चौथी और सबसे महत्वपूर्ण प्रवृत्ति व्यावहारिक आलोचना की है जिसके अन्तर्गत पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक-समीक्षाएँ, सम्पादकीय टिप्पणियाँ, प्राप्ति-स्वीकार तथा कभी-कभी सम्पादकों के नाम लिखे पत्र आते हैं। भारतेन्दु के युग में कई साहित्यिक पत्रिकाओं का सम्पादन होता रहा—'कवि-वचन सुधा'(१८६८ ई०) 'हिन्दी प्रदीप'(१८७७ ई०), 'सार सुधानिधि'(१८७८ ई०), 'क्षत्रिय पत्रिका', (१८८१ ई०), 'आनन्द कादम्बिनी' (१८८१ ई०), 'कवि व चित्रकार' (१८९१ ई०) तथा 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'(१८९७ ई०)।

इनके अतिरिक्त भारतेन्दु द्वारा सम्पादित 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' का अपना विशिष्ट स्थान है। बहुत से विद्वान् तो हिन्दी आलोचना का आरम्भ ही 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' में नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले स्तम्भ 'और आलोचना संभूषिता' से मानते हैं। स्पष्ट है कि भारतेन्दुजी ने नाटक, प्रहसन और गद्य आदि के साथ-साथ आलोचनात्मक रचनाओं को भी स्थान देने का प्रयास किया था। स्वयं भारतेन्दु की 'संयोगिता-स्वयंवर' नाटक की आलोचना पुस्तक-परिचय के रूप में 'आनन्द-कादम्बिनी' में प्रकाशित हुई थी। इसमें न केवल गुण-दोष-सम्बन्धी उक्तियाँ मिलती हैं, समीक्षा का वह गम्भीर और विश्लेषणात्मक रूप भी दिखाई देता है जो तत्कालीन आलोचना में आने वाले परिवर्तनों का सूचक है।

"यद्यपि इस पुस्तक की समालोचना करने के पूर्व इसके समालोचकों की समालोचनाओं की समालोचना करने की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि जब हम नाटक की समालोचना अपने बहुतेरे सहयोगियों को करते देखते हैं, तो अपनी ओर से जहां तक खुशामद और चापलूसी का कोई दरजा पाते हैं, शेष छोड़ते नहीं दिखाते, जिसे यदि खुशामद न मानी जाय तो यह अनुमान न हो कि न वे केवल नाटक-विधा और पुराने कवियों के काव्य ही से अनभिज्ञ हैं किन्तु कदाचित् भाषा व हिन्दी को भी भली-भाँति नहीं जानते, क्योंकि इस क्षुद्र ग्रंथ की रचना पर मोहित हो रचयिता को भाषा के वाल्मीकि, भाषा के कालिदास और आचार्य्य कह डालते और श्री हरिश्चन्द्र के तुल्य भारतेन्दु के पद के योग्य ठहराते।" (आनन्द कादम्बिनी, माला २, मेघ १०-११-१२ संवत् १९४२, पृष्ठ ७)

'हिन्दी प्रदीप'(१८८६) में पं० बालकृष्ण भट्ट ने लाला श्रीनिवास द्वारा रचित 'संयोगिता स्वयंवर' की कटु आलोचना की। इस आलोचना में उन्होंने नाटक के दोषों का परिचय देते हुए, ऐतिहासिक नाटक का स्वरूप निर्धारित किया और उसे उपर्युक्त कसौटी पर असफल ठहराया है। निम्न उदाहरण में न केवल हिन्दी आलोचना की एक नयी परम्परामुक्त समीक्षा-शैली के दर्शन होते हैं बल्कि स्वयं आलोचक के व्यक्तित्व की विशेषताएँ भी उभर कर आती हैं—"क्या केवल किसी पुराने समय के ऐतिहासिक पुरावृत्त की छाया लेकर नाटक लिख डालने से ही वह ऐतिहासिक हो गया—क्या किसी विख्यात राजा या रानी के आने से ही वह ऐतिहासिक हो जायगा। यदि ऐसा है तो गप्प हाँकने वाले दास्तानगो और नाटक के ढंग में कुछ भी भेद न रहा—किसी समय के लोगों के हृदय की क्या दशा थी, उनके आन्तरिक भाव किन पहलू पर ढलके हुए थे अर्थात् उस समय मात्र के भाव (स्पिरिट ऑफ़ द टाइम) क्या थे ? इन सब बातों को ऐतिहासिक रीति पर पहले-पहल समझ लीजिए तब उसके दरसाने का भी यत्न नाटकों द्वारा कीजिए—केवल क्लिष्ट श्लेष बोलने ही से तो ऐतिहासिक नाटक के पात्र क्या वरन् एक प्राकृतिक मनुष्य की भी पदवी हम आपके पात्रों को नहीं दे सकते।"

श्री बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने भी इसी समय के आसपास 'आनन्द कादम्बिनी' में उपर्युक्त नाटक की समीक्षा लिखी। इसके अलावा उन्होंने गदाधरसिंह कृत 'बंग विजेता' नामक बंगला पुस्तक के अनुवाद की भी समीक्षा लिखी। इन समीक्षाओं का प्रमुख उद्देश्य गुण-दोष निरूपण रहता था परन्तु ये आलोचनाएँ समसामयिक साहित्य के नज़दीक थीं और देशकालिक संदर्भों की उपेक्षा नहीं करती थीं।

भारतेन्दु-युग पर रीतिकालीन पंडित्यपूर्ण आलोचना-पद्धति का पर्याप्त प्रभाव था, फिर भी इस काल में आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल नहीं दिया गया। इसलिए इस युग की समीक्षा में हमें आलोचना के प्रारम्भिक रूप के दर्शन होते हैं। भले ही उसमें प्रौढता का अभाव रहा, फिर भी अलोचना के नाम पर सिद्धांत-निरूपण की परम्परागत परिपाटी से मुक्त होने की इस छटपटाहट को आलोचना के विकास की दिशा में एक स्वस्थ कदम माना जा सकता है।

१८९७ ई० में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रकाशन में आलोचना ने एक नये स्वागत-संदेश का आभास पाया। यहीं से हिन्दी आलोचना के इतिहास में उन नयी प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा होने लगती है जो बाद में द्विवेदी-युगीन आलोचना की आरम्भिक रचनाओं में दिखाई देती है।

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आने वाली पुस्तक-समीक्षाओं की इस परम्परा का क्रम आगे बढ़ाने का काम बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में 'सरस्वती'(१९०० ई०) ने किया। १९०३ ई० में स्वयं आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इसके सम्पादन का कार्यभार ग्रहण किया तथा जल्द ही 'पुस्तक-परीक्षा' नाम से एक आलोचनात्मक स्तम्भ की शुरुआत की। यह स्तम्भ वे स्वयं ही लिखा करते थे। 'सरस्वती' के अतिरिक्त 'समालोचक' (१९०२ ई०) तथा 'सुदर्शन' (१९०० ई०) जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण घटना थी, क्योंकि ये दोनों ही पत्रिकाएँ पूर्ण रूप से आलोचना को समर्पित थीं। इसमें सन्देह नहीं कि आरम्भ में इन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली पुस्तक-समीक्षाओं का रूप परिचयात्मक ही था। इन परिचयात्मक निबन्धों के अतिरिक्त इसी समय प्राचीन और समसामयिक साहित्य पर कुछ मूल्यांकनपरक लेख भी सामने आए। ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी आलोचना की नींव सही अर्थों में इन्हीं लेखों से पड़ी। इस क्षेत्र में मिश्र बन्धुओं द्वारा 'हम्मीर हठ'(सरस्वती, १९०० ई०) और श्रीधर पाठक तथा महाकवि भूषण पर (समालोचक, १९०४ ई०) लिखे गए आलोचनात्मक लेख एक सही शुरुआत के रूप में सामने आए। रीति-ग्रंथों में प्रतिपादित शास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित होने के बावजूद भी इन लेखों में एक प्रकार की ताजगी थी, क्योंकि उन्होंने साहित्य और साहित्यकार के मूल्यांकन को भी उद्देश्य बनाया था। यद्यपि अलोचना की इस पद्धति में बदली हुई रुचि की झलक मिलती है, तथापि आचार्य शुक्ल के अनुसार–'उसका स्वरूप प्रायः रूढ़िगत (कन्वेंशनल) ही रहा।' (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ६३८)

१९१०-११ ई० में 'हिन्दी नवरत्न' के प्रकाशन के साथ उपर्युक्त पद्धति का समुचित विकास हुआ। पद्मसिंह शर्मा, पं० कृष्णविहारी मिश्र, लाला भगवानदीन आदि द्विवेदीयुगीन आलोचकों ने प्रस्तुत ग्रंथ को तुलनात्मक आलोचना का आधार बनाया तथा इस प्रकार दो कवियों की तुलना करके एक की श्रेष्ठता निर्धारित करने की प्रक्रिया में एक जीवन्त बहस का जन्म हुआ। निस्सन्देह, काव्य और नाटक की आलोचना की परम्परा रीतिशास्त्र में पहले से विद्यमान थी। इसी कारण यह आलोचना-पद्धति एक सीमा तक रूढ़िबद्ध हो गयी। किन्तु इनसे भिन्न जो समीक्षात्मक लेख नयी साहित्य-विधाओं को विषय बना कर लिखे गए उनमें एक अलग ढंग की आलोचना-दृष्टि का परिचय मिला। इन लेखों के केन्द्र में समसामयिक कथा-साहित्य था और इनका स्वर विवादात्मक था। बाबू देवकीनंदन खत्री के प्रसिद्ध उपन्यास 'चंद्रकांता' को लेकर १९०२-३ ई० में 'सुदर्शन' तथा 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' के बीच एक लम्बा विवाद चला जिसका 'समालोचक' पत्र ने अत्यन्त आत्मीय परिहास के साथ उपसंहार किया। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि अपेक्षाकृत कम प्रतिष्ठित पत्रों का रुझान समसामयिक तथा लोकप्रिय साहित्य की ओर अधिक था। 'चंद्रकांता' को लेकर अगर सम्भव-असम्भव की बहस हुई तो किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यास 'तारा' में श्लीलता-अश्लीलता के प्रश्न को प्रमुखता मिली (समालोचक, १९०३ ई०)। इनके अतिरिक्त 'छत्तीसगढ़ मित्र' (१९०२) में श्रीनिवासदास के

करते समय वे कवि मिल्टन के विचारों से स्पष्टतया प्रभावित दिखाई देते हैं—हालांकि उनमें उन्होंने देश, काल व संस्कार-सापेक्ष परिवर्तन भी किए हैं।

सैद्धान्तिक आलोचना के अतिरिक्त द्विवेदीजी ने व्यावहारिक समीक्षा के क्षेत्र में भी स्मरणीय योगदान दिया है। इस दिशा में जहाँ उन्होंने प्राचीन कवियों की रचनाओं का मूल्यांकन किया वहां समकालीन रचनाकारों की कृतियों को भी आलोचना का विषय बनाया। उन्होंने 'विक्रमांकदेवचरित चर्चा', 'नैषधचरित चर्चा,' 'कालिदास', 'कालिदास की निरंकुशता' आदि बृहत् निबन्ध लिख कर प्राचीन कवियों को अपनी प्रखर लेखनी का विषय बनाया। प्रथम दो निबन्ध विक्रमांक देव एवं श्रीहर्ष की परिचयात्मक व्याख्या के उद्देश्य से ही लिखे गए थे। इनकी रचना के मूल में एक हद तक अंग्रेज़ी साहित्य को आदर्श मानकर, उसका अनुकरण करने की प्रेरणा भी थी। अंग्रेज़ी साहित्य में जहाँ पूर्ववर्ती कवियों तथा उनकी रचनाओं पर अनेक ग्रंथ उपलब्ध थे वहाँ हिन्दी साहित्य में यह स्थान प्रायः खाली ही था। द्विवेदीजी ने इस कमी को पूरा करने का प्रयत्न किया। कालिदास-विषयक निबन्धों में उन्होंने कालिदास के प्रति अपने परम्परा-प्रेम एवं औपचारिक नम्रता को ताक पर रख कर, उनकी 'निरंकुशता' पर प्रहार करके जिस साहस का परिचय दिया, वह हिन्दी आलोचना में एक नयी लहर का प्रथम उन्मेष था। द्विवेदीजी की दृष्टि में 'उपदेश' काव्य का अनिवार्य तत्व था। यही कारण है कि उन्होंने कालिदास के 'मेघदूत', 'विक्रमोर्वशीय' और 'मालावकाग्निमित्रम्' को 'रघुवंश' की तुलना में निम्न स्तर की रचनाएँ माना। ऐसा उन्होंने स्पष्ट रूप से नहीं कहा, किन्तु विद्याभूषणजी के 'कालिदास' ग्रंथ की समीक्षा के संदर्भ में उनसे सहमति व्यक्त करते हुए यह बात अनायास ही प्रकट कर दी। विद्याभूषणजी के ग्रन्थ से उन्होंने जो अंश उद्धृत करने के लिए चुना, उससे उनके मन का यह आशय सहज ही प्रकट हो जाता है—

"मेघदूत में कोई ऐसा आदर्श चरित्र नहीं जिससे कोई लोक-हितकर या समाज-हितकर शिक्षा मिल सके। राम, सीता और दुष्यन्त-शकुन्तला के आदर्श चरित्रों से समाज का बहुत कुछ उपकार साधन हो सकता है परन्तु 'मेघदूत' के यक्ष और यक्ष-पत्नी के चरित्र से उस तरह का कोई उच्च उद्देश्य साधन नहीं हो सकता। 'विक्रमोर्वशीय' और 'मालविकाग्निमित्र' में समाज के लिए हितकर आदर्श चरित्र नहीं। महाकवि ने वैसा चरित्र-चित्रण करने का प्रयास नहीं किया।"

द्विवेदीजी की निर्भीक कलम से आलोचना की विश्लेपणात्मक शैली का भी सूत्रपात हुआ हालाँकि इसका रूप पूरी तरह प्रकाश में नहीं आ पाया। प्राचीन कवियों और उनकी रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने अपने समसामयिक साहित्यकारों की कृतियों की भी समीक्षा की। 'सरस्वती' के सम्पादक होने के नाते वे उसी में नियमित रूप से समकालीन पुस्तकों की चर्चा किया करते थे। समसामयिक साहित्य की समीक्षा उन्होंने स्वतन्त्र ग्रन्थ-रचना के रूप में नहीं की। शायद इसीलिए इन समीक्षाओं में गहराई का अभाव होता था। इनमें प्रायः रचना की उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता, अभारतीय तत्व या भाषा-दोषों की ओर ही संकेत होता था। फिर भी उनका यह कदम इस दिशा में प्राथमिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। यह सही है कि उनकी समीक्षा-दृष्टि नैतिकता और उपयोगिता को ही महत्व देती थी किन्तु यहाँ यह जान लेना भी आवश्यक है कि प्राचीन और समकालीन कवियों की रचनाओं की समीक्षा करते समय, वे रचना को उसकी युगीन नैतिकता के संदर्भ में ही परखते थे। अतः उनकी समीक्षा चाहे जितनी भी निर्मम क्यों न हो देश-काल-सापेक्ष होती थी।

मिश्रबंधु : द्विवेदी-काल के दूसरे प्रमुख समीक्षक जिन्होंने उस समय की आदर्शवादी परम्परा का ही अनुसरण किया—मिश्रबन्धु हैं। इस बंधुत्रयी में श्री गणेशविहारी मिश्र, रावराजा डा० श्याम विहारी मिश्र (१८७३-१९४७ ई०), और रायबहादुर शुकदेवविहारी मिश्र (१८७८-१९५१ ई०)

शामिल हैं। इनके सम्मिलित प्रयास का प्रतीक ग्रन्थ हिन्दी 'नवरत्न' आलोचना के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इस ग्रन्थ में हिन्दी के नौ कवियों के जीवन-वृत्त तथा कृतियों की विशेषताओं का उल्लेख मिलता है। तुलनात्मक आलोचना की दिशा में ऐतिहासिक शुरुआत करने का श्रेय भी 'हिंदी-नवरत्न' को जाता है। इनकी दूसरी महत्वपूर्ण रचना 'मिश्रबन्धु विनोद' के चार भाग हैं। कहना न होगा कि 'मिश्रबन्धु विनोद' की रचना ने तत्कालीन लेखकों को साहित्येतिहास-लेखन की आवश्यकता का बोध कराया। प्रस्तुत ग्रन्थ में नए-पुराने सभी कवियों तथा उनके युगों की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए, कवि-विशेष को उसकी सम्पूर्ण परम्परा के संदर्भ में परखा गया है। मूल्यांकन की यह ऐतिहासिक दृष्टि अपने-आपमें एक सराहनीय प्रयास है। रामचन्द्र शुक्ल ने इसे कवि-इतिवृत्त संग्रह कह कर छोड़ दिया है, क्योंकि उनके मत में वह मात्र सामग्री का संकलन है, विश्लेषणात्मक दृष्टि से किया गया मूल्यांकन नहीं। उन्होंने उत्साह और परिश्रम की दृष्टि से तो इस ग्रन्थ को प्रशंसनीय कहा किन्तु इतिहास-लेखन की दिशा में उसका अधिक योगदान स्वीकार नहीं किया। अतः 'मिश्रबन्धु विनोद', 'कविवृत्त संग्रह' के रूप में ही प्रसिद्ध होकर रह गया। इससे अधिक उसकी उपादेयता महसूस नहीं की गयी। इतिहास की भूमिका और कवियों का मूल्यांकन करते समय मिश्रबन्धुओं ने जिस आलोचना-दृष्टि का परिचय दिया था, उसकी ओर विद्वानों का ध्यान नहीं गया। इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी गयी कि आलोचना की जिस पद्धति के दर्शन हमें 'नवरत्न' में होते हैं उसका ढाँचा 'मिश्रबन्धु-विनोद' में ही तैयार हो चुका था।

उनकी समालोचना-दृष्टि पर उनके अपने समय की पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति और आदर्शवाद का पूरा प्रभाव था। यही कारण है कि वे भी कविता के विषय का उपयोगी और नैतिक होना आवश्यक मानते थे। वे इस बात का भलीभाँति अनुभव करते थे कि "अब भाषा में शृंगार कविता की आवश्यकता बहुत कम है, क्योंकि भूतकाल में कविता का यह अंग उचित से अधिक ऐसे ही स्फुट छन्दों द्वारा भर चुका है। अब हिन्दी गद्य में वर्तमान प्रकार के उपकारी विषयों पर रचना की आवश्यकता है और नाटक-विभाग की पूर्ति और भी आवश्यक है। स्फुट छन्दों के लिए अब स्थान बहुत कम है।" (मिश्रबन्धु-विनोद, भाग ३, पृष्ठ ११८२)

नैतिकता के आग्रह के बावजूद, इसमें सन्देह नहीं कि उनकी दृष्टि अपने समकालीन समीक्षकों की अपेक्षा अधिक साहित्यिकता लिए हुए थी। कवियों की रचनाओं का मूल्यांकन करते समय उनकी दृष्टि उन शुद्ध साहित्यिक स्वरूपों को भी खोजती थी जिनकी वे स्पष्ट व्याख्या कर सकें। इसीलिए समालोचना के विषय में उनकी एक निजी, निश्चित और साफ़ राय थी। समालोचना का उद्देश्य निर्धारित करते समय वे साधारण पाठक-समाज की सीमाओं को विस्मृत नहीं करते—"प्रत्येक पाठक की रुचि भिन्न हुआ करती है, परन्तु वह अपनी रुचि के अनुरूप सब ग्रन्थ खोजने में सदैव समर्थ नहीं होता। समालोचना के हरएक ग्रन्थ का असली रूप साधारण पाठक के सम्मुख, बिना उसके पढ़े ही, उपस्थित हो जाता है। "इस प्रकार समालोचना से उचित एवं उपयोगी पुस्तकों के चुनाव में भी लोगों को बड़ी सहायता मिलती है।" (हिन्दी नवरत्न, पृष्ठ १८) इसलिए "समालोचक का कर्त्तव्य है कि वह ग्रन्थों के ठीक-ठीक गुण-दोष पता कर ऐसे मनुष्यों की रुचियों की भी उचित उन्नति करे।" (वही, पृष्ठ १७-१८) आलोचना कैसी होनी चाहिए? इस सवाल के उत्तर में उनका जो वक्तव्य मिलता है उससे साफ़ ज़ाहिर है कि उनके मन में समालोचना का स्वरूप निश्चित था। उन्होंने गुण-दोष-निरूपण वाली प्राचीन आलोचना तथा प्रशंसात्मक-निंदात्मक समीक्षा के वर्तमान रूप के समन्वय में ही समालोचना के शुद्ध स्वरूप की पहचान की थी। उनके विचार में प्राचीन आलोचकों का निन्दा से परहेज ही आलोचना के मार्ग में बाधक बना था। किन्तु उसके साथ-साथ वे वर्तमान युग की विडम्बनाओं तथा मिथ्याडम्बर को पह-

जानते थे और यह विश्वास भी रखते थे कि झूठी आलोचना का अस्तित्व अधिक दिन नहीं रहता—"संसार बड़ा सौन्दर्योपासक है। बिना गुण के वह किसी का माल नहीं खरीदता। मित्रों की झूठी प्रशंसा तथा वस्तुओं की ईर्ष्यापूर्ण निन्दा का प्रभाव कुछ ही काल रह सकता है" किन्तु अन्त में भवभूति की 'कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी' वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। प्रयोजन केवल इतना है कि शुद्ध साहित्य सेवा और चमत्कृत ग्रंथों का अस्तित्व ही समय पर लेखकों तथा हिन्दी साहित्य की गरिमा का कारण होगा। इतर कोई युक्ति काम न आवेगी।" (मिश्रबंधु विनोद, भाग-३, पृ० ११७७) आलोचक के लिए भी उन्होंने दो गुण आवश्यक माने थे—सहृदयता और विद्वत्ता। इनमें से किसी एक की अनुपस्थिति आलोचक को कर्तव्य-विमुख करती है। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा है—'कई महाशय अनेक साहित्यकारों तथा साहित्य पर समालोचना लिखते हुए कुछ विषयों पर पचास-पचास, साठ-साठ पृष्ठों के निबन्ध लिख जाते हैं और अन्त में उदाहरण की भाँति आलोच्य कवियों अथवा साहित्यिक समयों के रचयिताओं से दो मोटी-मोटी बातें कहकर समझ लेते है कि उन्होंने विशिष्ट कवियों अथवा साहित्यिक समयों के साहित्य की समालोचना कर डाली। वास्तव में यह आलोचना न होकर उन विषयों पर निबन्ध मात्र होता है।" (मिश्रबंधु विनोद, भाग-३, पृष्ठ १६५) तात्पर्य यह कि आलोचक निबंध-लेखक नहीं होता, बल्कि इन सबसे विशिष्ट होता है, क्योंकि "समालोचना लिखना भी कोई साधारण काम नहीं है। वही मनुष्य समालोचना लिख सकता है, जो ग्रंथों को भलीभाँति समझ सके, और उनके विषयों से अच्छी जानकारी तथा सहृदयता रखता हो। इस योग्यता और सहृदयता के अतिरिक्त समालोचक को मूल ग्रन्थ का भलीभांति अध्ययन तथा मनन करने में यथेष्ट समय भी देना पड़ेगा। अतः प्रकट है कि अच्छे विद्वान् के सिवा कोई साधारण मनुष्य आलोचक नहीं हो सकता।" (हिन्दी नवरत्न, पृष्ठ १८)।

मिश्रबन्धुओं ने प्रथम बार 'हिन्दी नवरत्न' में 'काव्य प्रौढता' की एक मानदण्ड के रूप में स्थापना करके कवियों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर दिया! यही उनकी मौलिक देन थी। किन्तु काव्य की प्रौढता का सही मूल्यांकन करने के लिए उनके पास कोई निश्चित वस्तुगत कसौटी नहीं थी। इस सम्बन्ध में अत्यन्त उदारतापूर्वक उनका कहना था: "यदि कोई पूछे कि किन गुणों के होने से हम काव्य को गौरवान्वित मानते हैं, तो हमें विवशतः कहना पड़ेगा कि इन गुणों और कारणों का कथन हर एक छंद के लिए पृथक् है।" (मिश्रबन्धु विनोद, पृष्ठ १२) तात्पर्य यह कि कृति-विशेष की अपनी प्रकृति ही उसके गुण-दोष-निरूपण का मुख्य आधार होती है, लेकिन साथ ही समालोचक की निजी रुचि की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह आवश्यक नहीं कि दो आलोचक एक ही गुण को श्रेष्ठ मानें।

अपने दृष्टिकोण में उदार और आधुनिक होने के बावजूद मिश्रबंधु रीतिकाव्य के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त नहीं रहे। मध्यकालीन ग्रंथों की आलोचना करते समय उनकी उक्तियों में यह प्रभाव बराबर दिखायी पड़ता है। उदाहरणार्थ, तुलसीकृत 'रामायण' उनकी दृष्टि में, रामचन्द्र के नख-शिख-वर्णन के कारण प्रशंसनीय है और वे सहज ही इसे महाकवि की अलौकिक कवित्व-शक्ति तथा पांडित्य-चमत्कार का प्रमाण मान बैठते हैं। इस आधार पर यही कहा जा सकता है कि उनकी आलोचना-दृष्टि का निर्माण और पोषण रीतिकालीन काव्यशास्त्र के संदर्भ में ही हुआ था। अतः उनसे आधुनिक साहित्य के संदर्भ में किसी नवीन प्रतिमान के निर्माण की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। कुल मिलाकर उनकी रुचि रीतिकालीन पांडित्य-प्रेम से ही बँधी थी।

साहित्य के अतिरिक्त उनकी चिन्ता भाषा के विकास और उसकी स्वायत्त प्रतिष्ठा को लेकर भी कम नहीं थी। उनकी पूरी कोशिश हिन्दी को संस्कृत के कठोर अनुशासन से मुक्त करके, उसे

साहित्यिक दृष्टि से लोकप्रिय बनाने की थी। उन्हें इस बात पर भी एतराज़ रहा कि हिन्दी की लेखन-शैली संस्कृत व्याकरण के नियमों में आवद्ध हो। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में उपर्युक्त मत के समर्थकों के विरुद्ध आवाज उठाई—"ऐसे महानुभाव यह वात प्राय: भूल जाते हैं कि संस्कृत और हिन्दी दो अलग-अलग भाषाएं हैं।" (मिश्रवन्धु विनोद, पृष्ठ ४१)

निस्सन्देह भाषा के स्वरूप के प्रति उनकी मूल दृष्टि जनतांत्रिक ही थी। व्याकरण-सम्बन्धी जिन विषयों पर उन्होंने विचार किया, उनमें विभक्ति, प्रत्यय, लिंगभेद, नियम, शब्दों के नए रूप, लिपि-प्रणाली आदि प्रमुख हैं। इन सबके विवेचन के पीछे उनका एकमात्र उद्देश्य था—हिन्दी को संस्कृत के बोझ से मुक्ति दिलाना। हिन्दी की जो परिकल्पना उनके ज़ेहन में रही वह जन-सामान्य की भाषा की ही थी—"हिन्दी एक जन-समुदाय की सरल भाषा है और उसे दुर्गम एवं जटिल बना देने का एकमात्र परिणाम यही होगा कि पाँच-सात वर्षों के उत्कट परिश्रम विना किसी को अपनी मातृभाषा का भी बोध न हो सकेगा। यह तो स्पष्ट ही है कि साधारण जन-समुदाय में एकदम विद्यानुराग जाग्रत नहीं हो सकता, अतः अगत्या अपढ़ और कुपढ़ एवं साधारण पढ़े-लिखे लोगों की भाषा कोई और ही हो जाएगी।" (मिश्रवन्धु विनोद, पृष्ठ ४१)

मिश्रवन्धुओं की समालोचना की एक मुख्य विशेषता—पक्षपातहीन दृष्टि है, जिसका उन्होंने हर संदर्भ में निर्वाह किया। यदि वे अपने समकालीन कवि श्रीधर पाठक की रचनाओं की भाषा के प्रशंसक थे, तो उन्हें छंदोभंग, समस्यापूर्ति और चित्रकाव्य करने पर दोषी ठहराने में भी नहीं हिचकते थे। इससे यह सहज ही प्रमाणित होता है कि वे पूर्वाग्रहों से मुक्त 'पक्षपातरहित मान्य समालोचनाओं द्वारा हिन्दी का भण्डार भरने' के इच्छुक थे। इसी का परिणाम था कि आचार्य शुक्ल जिन्होंने 'मिश्र-वन्धु विनोद' को इतिहास मानने से इन्कार कर दिया था, अपने इतिहास में इस ग्रंथ का प्रशंसात्मक उल्लेख करना नहीं भूले।

पूर्ववर्ती रीतिकालीन संस्कारों से जुड़े होने के वावजूद, नवीन काव्य-चेतना के प्रति उनकी जागरूकता सचमुच प्रशंसनीय है। 'छायावाद' जैसी प्रवृत्ति को अपने इतिहास में विवेचन का विषय बनाकर उन्होंने इसी जागरूकता का परिचय दिया है यह वात और है कि 'छायावाद' को समझने में वे अक्षम रहे। फिर भी उनका उत्साह, उनकी उदारता इस वात की साक्षी है कि उन्होंने नई-पुरानी सभी साहित्यिक प्रवृत्तियों को समुचित स्थान प्रदान करते हुए उन्हें आलोचना का विषय वनाया तथा हिन्दी के सरल स्वरूप के निर्माण पर पर्याप्त वल दिया।

पंडित पद्मसिंह शर्मा : मिश्रवन्धुओं ने 'हिन्दी-नवरत्न' के माध्यम से तुलनात्मक आलोचना की जो नींव डाली थी, पंडित पद्मसिंह शर्मा (१८७६-१९३२ ई०) ने उसी से प्रेरणा ग्रहण करके 'विहारी सतसई' पर एक आलोचनात्मक ग्रंथ लिखा। उन्होंने 'आर्यासप्तशती' तथा 'गाथा सप्तशती' के अनेक पद्यों और विहारी के दोहों की समानताएँ दिखलाने का प्रयास किया है। तुलनात्मक आलोचना द्विवेदी-युग की आलोचना की प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभर कर आयी जिसके विकास में समकालीन समा-लोचकों ने समुचित योगदान दिया। काव्यगुण का मूल्यांकन करने के लिए अनेक पूर्ववर्ती तथा समकालीन कवियों की कृतियों का परीक्षण करने वाले समालोचकों में पद्मसिंह शर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वयं महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' (१९११, पृष्ठ ४२५) में 'कालिदास की विद्वत्ता' शीर्षक निवन्ध लिखते समय उनकी तुलना भवभूति और शेक्सपियर आदि से की है। कहना न होगा कि पद्मसिंह शर्मा भी द्विवेदी-युग पर रीतिकाल के प्रच्छन्न प्रभाव से मुक्त नहीं थे। अतः 'विहारी सतसई' में उन्होंने विहारीकृत कविताओं को केन्द्र में रखकर अन्य पूर्ववर्ती तथा समसामयिक रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। किन्तु उनके ग्रंथ की रचना का उद्देश्य उन आक्षेपों का

परिहार था, जो देव और बिहारी की तुलना करते हुए देव को प्रतिष्ठित करने के लिए बिहारी पर लगाए गए थे। इसके साथ ही उसमें शृंगार की जिस रूप में वकालत की गयी है वह द्विवेदीयुगीन नैतिकतावादी चेतना से मेल नहीं खाती। उन्होंने न केवल बिहारी को देव की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करते हुए मिश्रबन्धुओं की स्थापना का विरोध किया, अपितु युग की अपेक्षाओं के प्रति उदासीन रह कर रीतिकालीन शृंगारिक कविताओं में ही कविता का चरम परिपाक भी दिखाया। 'बिहारी की सतसई' नामक ग्रंथ की भूमिका में उन्होंने अपने युग में हो रहे शृंगार रस के घोर अपमानों से तिलमिलाकर लिखा है—"बहुत से महापुरुष कविता की उपयोगिता को स्वीकार तो किसी प्रकार कर लेते हैं पर शृंगार रस उनके निर्मल नेत्रों में कुछ खार-सा, या तेज़ाब-सा खटकता है। वह शृंगार की रसीली लता को विषैली समझकर कविता-वाटिका से एकदम जड़ से उखाड़ फेंकने पर तुले खड़े हैं। उनकी शुभ सम्मति में शृंगार रस ही सब अनर्थों की जड़ है, शृंगार रस के अश्लील काव्यों ने ही संसार में अनाचार और दुराचार का प्रचार किया है। शृंगार के साहित्य का संसार से यदि आज संहार कर दिया जाय तो सदाचार का संचार सर्वत्र अनायास हो जाय, फिर संसार के सदाचारी और ब्रह्मचारी बनने में कुछ भी देर न लगे।" (बिहारी की सतसई, पृष्ठ ३)

पंडित पद्मसिंह शर्मा की समीक्षा-दृष्टि भी मुख्यत: परम्परागत ही रही। 'संजीवनी भाष्य' से इस बात का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि वे दोहों की किन विशेषताओं पर दृष्टि केन्द्रित करते थे और किन बातों की व्याख्या करना ज़रूरी समझते थे—"कवि ने इस दोहे में कमाल किया है, फड़का देने वाले अतिचमत्कृत अर्थ के साथ शब्द-रचना और वाक्य-विन्यास भी बड़ा ही सुन्दर है। केवल 'बाल' और 'लाल' दोनों सम्बोधन पद ही लाल की जोड़ी से कम कीमत के नहीं हैं।" (बिहारी की सतसई, संजीवनी भाष्य, पृष्ठ ४४) इसमें संदेह नहीं कि 'चमत्कार' की भूखी यह दृष्टि काव्य का सर्वश्रेष्ठ गुण 'चमत्कार' को ही मानती थी और उस 'श्रेष्ठता' को स्थापित करने के लिए चमत्कारपूर्ण शैली का ही सहारा लेती थी—"ये क्रोध से लाल नहीं हैं—इस 'चक्करदार' 'घुले हुए' उत्तर में वह बात कहाँ है, जो—'लाल तिहारे दृगन की परी दृगनि में छाँह'—इस सीधी-सादी, तड़ाक-फड़ाक हाजिरजवाबी में है।" (बिहारी की सतसई, पृष्ठ ४८) इस तरह के चटपटे वाक्य आलोचक की हाज़िरजवाबी का परिचय तो देते हैं किन्तु आलोचना के गम्भीर दायित्व का वहन करने में प्राय: असमर्थ ही रहते हैं। शुक्लजी ने उनकी शैली को 'बिना ज़रूरत के जगह-जगह चुहलबाज़ी और शाबाशी का महफ़िली तर्ज़" कहकर उसके प्रति अपनी अरुचि प्रकट की है। 'चमत्कार' शर्माजी के लिए कविता का प्राण था, इसलिए महाकवि भी वे उसी को ठहराते हैं "जो शब्दार्थ में निराली नूतनता पैदा करके प्राचीन भाव को चमत्कृत बना देता है।" (बिहारी सतसई, पृष्ठ ३५) अर्थात् भाव पुराना हो या नया, यह गौण बात है—मुख्य बात है उसका चमत्कारपूर्ण होना।

उनकी इसी चमत्कार-प्रेमी रीतिकालीन दृष्टि के कारण उनकी समीक्षा-शैली प्रखर और विदग्ध होने के बावजूद धुँधले प्रभाव की सृष्टि करती है। बहुत कम ऐसे स्थल हैं जहाँ उन्होंने अपने युग की पुकार को सुना और उसकी मांग के अनुरूप आधुनिक ढंग से व्याख्याएँ कीं। सात्विक भाव की परिभाषा करते समय इस आधुनिकता का आभास निश्चित रूप से होता है—"सत्व कहते हैं, जीवन शरीर-जीवित (जिंदा) शरीर को, उसके जो धर्म (वे गुण या चिन्ह जिनसे जीवन-सत्ता की प्रतीति हो—जिंदगी का सबूत मिलता हो) हैं, वे सात्विक भाव कहलाते हैं।" (संजीवन भाष्य, पृष्ठ ५५) किन्तु यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसे स्थलों पर उनकी शैली की नितान्त निजी विशेषता, उनकी मौलिकता लुप्तप्राय: हो गयी है और वाक्य अधिक व्याख्यात्मक होते-होते सारहीन से हो गए हैं। उनके रीतिकालीन संस्कारों और रूढ़िबद्ध दृष्टि से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को हमेशा शिकायत

रही। अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में उन्होंने लिखा है—"दूसरे शृंगारी कवियों से अलग करने वाली बिहारी की विशेषताओं के अन्वेषण और अन्त:प्रवृत्तियों के उद्घाटन का—जो आधुनिक समालोचना का प्रधान लक्ष्य समझा जाता है—प्रयत्न इसमें नहीं हुआ है (पृष्ठ ६३७)।" लेकिन काव्य-रसिक पंडित पद्मसिंह शर्मा के लिए काव्य सरसता का पर्याय था, विषय, रूप-रचना आदि को लेकर वे चिन्तित नहीं हुए। उनका मत था कि युगीन आदर्शों से प्रभावित नीतिप्रधान हिन्दी कविता साहित्य के क्षेत्र में सूखी हुई टहनी के समान है। इस तरह की कविता अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकती क्योंकि वह भावविहीन, नीरस और कर्णकटु है। उनका दृढ विश्वास था कि कविता में उपयोगिता के साथ-साथ "भाषा में सरसता और टिकाऊपन भी अभीष्ट है तो इसके निस्सार शरीर में प्राचीन साहित्य के रस का संचार होना अत्यावश्यक है।" (बिहारी सतसई, पृष्ठ २२)

अन्त में, पंडित पद्मसिंह शर्मा की तुलनात्मक आलोचना के विषय में एक मुख्य बात कह देनी आवश्यक है। तुलना करते हुए उन्होंने प्राय: संस्कृत, उर्दू और फ़ारसी—तीनों भाषाओं की रचनाओं से उदाहरण प्रस्तुत किए। यह प्रयास उनकी बहुज्ञता को तो प्रमाणित करता ही है, साथ ही उनकी शैली पर उर्दू-शायरी की महफिली दाद के प्रभाव को समझने में सहायता करता है। उनकी समीक्षा का ढंग गम्भीर व्याख्यापरक न होकर 'दरबारी' क्यों है, इसका कारण भी सहज ही समझ में आ जाता है। जिस पर प्रसन्न हुए, उसे मुहावरों, सूक्तियों और प्रशंसात्मक उच्छ्वासों से सजा कर विशिष्ट बना देना इसी दरबारी-प्रवृत्ति का एक ढंग है—"पर बिहारीलाल भी तो एक ही काइंया ठहरे। वह कब चूकने वाले हैं पहलू बदल कर मज़मून को साफ़ ले उड़े—

"अज्यों न आए सहज रंग बिरह दूबरे गात' वाह उस्ताद क्या कहने हैं, क्या सफ़ाई खेली है; काया ही पलट दी! कोई पहचान सकता है! वहाँ (गाथा में) केवल गुलझर पड़े केश ही थे यहाँ बिरह दूबरे गाते हैं।" (बिहारी की सतसई, पृष्ठ ४०)

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि उनकी तुलनात्मक दृष्टि मज़मून को नहीं 'अन्दाजेबयाँ' को महत्व देती थी। उनकी मान्यता थी कि प्राचीन कवियों ने जब कोई विषय अछूता ही नहीं छोड़ा तो परवर्ती कवियों के पास उनका 'मज़मून छीन' कर नए ढंग से उसे कहने, चमत्कार उत्पन्न करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं है। और इस तरह की कविता उनके अनुसार प्रशंसनीय व स्तुत्य थी।

इसके अतिरिक्त शर्माजी ने अंग्रेज़ी, संस्कृत और उर्दू की तुलनात्मक समीक्षा पर भी बल दिया और हिन्दी में इस तरह की समीक्षा की आवश्यकता अनुभव की—"हिन्दी साहित्य में जहाँ तक मालूम है इस शैली पर कभी कोई ग्रंथ नहीं लिखा गया। हिन्दी में भी यह रीति प्रचलित होनी चाहिए, इसकी आवश्यकता है। यही समझ कर इस विषम मार्ग में चलने की चेष्टा की गई है।" (बिहारी की सतसई, पृष्ठ १४) निस्सन्देह हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना के सूत्रपात का श्रेय पद्मसिंह शर्मा को ही जाता है।

कृष्णबिहारी मिश्र : रीतिवादी परम्परा से प्रभावित तुलनात्मक आलोचना के इस दौर में दूसरे समीक्षक कृष्णबिहारी मिश्र हैं (१८९० ई०)। मिश्रजी ने पद्मसिंह शर्मा द्वारा उपेक्षित देव की विशेषताओं का उद्घाटन करने के लिए 'देव और बिहारी' नामक ग्रंथ की रचना की! पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की अन्य रीतिकालीन कवियों के साथ तुलना करते समय देव को तिरस्कृत कर दिया था किन्तु कृष्णबिहारी मिश्र ने उन्हें निष्कासितों की पंक्ति से उठा कर पुन: श्रेष्ठता प्रदान की। 'देव और बिहारी' में उन्होंने देव के काव्य की कलात्मकता तथा उदात्त भाव-सम्पदा का अवलोकन करते हुए बिहारी को उच्चासन से नीचे उतार दिया है किन्तु ऐसा करते समय भी उनकी दृष्टि अपेक्षाकृत

संतुलित रही। पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की जो पक्षपातपूर्ण प्रशंसा की, उसकी उन्होंने निंदा की है—"टीकाकार (शर्माजी) हमको स्थल-स्थल पर बिहारी के साथ अनुचित पक्षपात करता हुआ दीख पड़ता है। बिहारीलाल श्रृंगारी कवि थे। अतएव उनकी श्रृंगारमयी सुधा-सूक्तियों का हिन्दी भाषा के अन्य श्रृंगारी कवियों की तादृश उक्तियों से तुलना करना उचित है। पर शर्माजी ने इस प्रकार की जो तुलना की है, वह खेद है, पक्षपातपूर्ण है—इस पक्षपात का चूड़ान्त उदाहरण पाठकों को इसी बात से मिल जाएगा कि देव-सदृश उच्चकोटि के श्रृंगारी कवि की कविता से बिहारी के दोहों की तुलना तो दूर रही, उस बेचारे का नाम तक 'संजीवन भाष्य' के प्रथम भाग में नहीं आने पाया है—सूरदास जी का नाम तो लिया गया है पर उनकी कविता भी तुलना रूप में नहीं दिखलाई गई है।" (देव और बिहारी, पृष्ठ ६७) देव की प्रतिष्ठा बढ़ाते समय वे (मिश्रजी) बिहारी की विशेषताओं के प्रति भी जागरूक रहे हैं। यही कारण है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में उनके ग्रंथ को प्रशंसापूर्वक याद किया है।

"इस पुस्तक में बड़ी शिष्टता, सभ्यता और मार्मिकता के साथ दोनों बड़े कवियों की भिन्न-भिन्न रचनाओं का मिलान किया गया है। इसमें जो बातें कही गई हैं वे बहुत कुछ साहित्यिक विवेचन के साथ कही गई हैं। 'नवरत्न' की तरह यों ही नहीं कही गयी हैं। यह पुरानी परिपाटी की साहित्य-समीक्षा के भीतर अच्छा स्थान पाने योग्य है।" (पृष्ठ ५८७) मिश्रजी की समीक्षा-शैली के गाम्भीर्य, शिष्टता और संयम का चरम परिपाक 'मतिराम ग्रंथावली' में हुआ है। 'मतिराम ग्रंथावली' का बहुलांश भी तुलनात्मक आलोचना को ही समर्पित है। इसमें लेखक ने न केवल मतिराम के वंश-परिचय, कृति-परिचय तथा उनकी कृतियों में आए ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख किया है बल्कि मतिराम की कविताओं की अन्य कवियों के साथ गुण-दोष की परिपाटी में तुलना भी की है। मिश्रजी के विचार में, किसी भी बात की तुलनात्मक आलोचना, आलोचक का प्रमुख धर्म था। समालोचक के दायित्व तथा उसकी कसौटियाँ निर्धारित करते समय उन्होंने जिन मुख्य बातों को ध्यान में रखा, उनसे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका दृष्टिकोण रीतिबद्ध था—"समालोचना से यह अभिप्राय है कि कवितागत गुण-दोषों पर विचार किया जाय। गुण-दोष क्या हैं ? इसका पता काव्य-शास्त्र के ग्रंथों के अध्ययन से मालूम हो सकता है। काव्य-शास्त्र में कविता की उत्तमता या हीनता की जो कसौटी दी हुई है, उसमें रस, अलंकार, भाषा-गुण, दोष, लक्षण, व्यंजना आदि पर विचार करना पड़ता है।" (मतिराम ग्रंथावली, भूमिका, पृष्ठ २३)

आलोचना के अतिरिक्त 'काव्य के सम्बन्ध में भी मिश्रजी अपनी धारणाएं व्यक्त करने में पीछे नहीं रहे। शब्द और अर्थ का वह सान्निध्य जो रमणीय हो, उनके अनुसार काव्य कहलाने का अधिकार रखता है। 'रमणीयता' उनकी दृष्टि में 'आनन्दोत्पत्ति' का हेतु थी। अत: कविता की रमणीयता से उत्पन्न आनन्द एक लोकोत्तर आनन्द था। अपनी धारणा की पुष्टि के लिए उन्होंने कुलपति मिश्र, मम्मटाचार्य, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अंग्रेजी कवियों के मत-उद्धृत किए। रमणीय काव्य का उपभोक्ता उनके मत में सहृदय रसिक ही हो सकता था। मिश्रजी जब रस, अलंकार व शब्द-चित्र आदि को रमणीयता के पोषक मानते हुए, ध्वनि अर्थात् व्यंजना-प्रधान काव्य को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करते हैं तो वे रसवादियों की अपेक्षा, ध्वनिवादी आचार्य जगन्नाथ से अधिक प्रभावित लगते हैं। जाहिर है कि उनकी दृष्टि में आनन्दवादी मूल्यों का महत्व उपयोगितावादी मूल्यों से अधिक था। उनके विचारों से स्पष्ट है कि वे नैतिकमूल्यों को काव्य की परिधि से बाहर मानते थे। इसीलिए श्रृंगारिक कविता का समर्थन उन्होंने खुले शब्दों में किया—"मनोविकारों के स्थायित्व और विकास की तरह, श्रृंगार रस सचमुच रसों का राजा है। हम कुरुचि-प्रवर्तक कविता के समर्थक नहीं परन्तु श्रृंगार-कविता के विरुद्ध आजकल जो

धर्म-युद्ध जारी कर रखा गया है, उसकी घोर निन्दा करने से भी नहीं हिचकते हैं।" (मतिराम ग्रंथावली, पृष्ठ ६३-६४) शृंगार रस को वे काव्य का शाश्वत उपादान मानते थे, क्योंकि उनके मत में—"शृंगार रस का स्थायी भाव प्रेम है। प्रेम विधेयात्मक सहानुभूतिमय और सत्य है। यह सबसे अधिक स्थायी और उपयोगी है।" (मतिराम ग्रंथावली की भूमिका, पृष्ठ १) यही कारण है कि उन्होंने शृंगार की विषयपरक कविताएं लिखने वाले कवियों को आंशिक रूप से दोषी ठहराया है—"इन कवियों की निन्दा इस कारण होनी चाहिए कि उन्होंने शृंगार रस के उस सुन्दर रूप (प्रेम भक्ति) को क्यों नहीं दिखलाया।" (वही, पृष्ठ २३) उपयोगितावाद को वे काव्य के रस-परिपाक में बाधा मानते थे और उनकी सलाह थी कि कविता को उसके 'चक्कर में डालकर ललित कला का सौन्दर्य नष्ट करना ठीक नहीं।'

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि मिश्रजी की मूल दृष्टि रीतिबद्ध थी, जिसके बीच में कभी-कभी आधुनिक वैचारिकता बिजली की तरह कौंध जाती है। उनके भाषा-सौन्दर्य-सम्बन्धी विवेचन से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है। अच्छी भाषा के लिए उन्होंने जिन गुणों का निर्धारण किया था, वे उनकी आधुनिक दृष्टि का प्रमाण हैं। उनके मतानुसार, भाषा में 'भाव प्रकट करने के पूर्ण सामर्थ्य', पाठक को लेखक या कवि के अभिप्राय तक पहुंचा देने की क्षमता, और 'ठीक मतलब की बात बहुत थोड़े से शब्दों में प्रकट कर देने की शक्ति' होनी चाहिए। इनके अतिरिक्त, वे सरलता, अकृत्रिमता, स्वाभाविकता, तरोताजगी और नवभाव, लचीलेपन को भी भाषा के अनिवार्य गुण मानते थे। (मतिराम ग्रंथावली, भूमिका, पृष्ठ ७२-७३) निस्सन्देह यह शास्त्रीय रीतिबद्धता का दबाव नहीं बल्कि अपने समय की मांग थी, जिस पर उन्होंने ध्यान दिया। किन्तु यह केवल सिद्धांत-निरूपण ही नही था, मिश्रजी ने भाषा-सम्बन्धी इन विचारों को व्यवहार में उतारा। उनकी समीक्षाओं की भाषा अपनी सरलता, स्पष्टता, सहजता और आडम्बरहीनता के कारण प्रशंसनीय है। यहां तक कि रस जैसे काव्यशास्त्रीय विषय का भी उन्होंने सीधी-सरल आधुनिक भाषा में विवेचन किया। इससे यह स्पष्ट है कि रीतिबद्ध शास्त्रीयता से प्रभावित होने के बावजूद उन्होंने अपने युगानुरूप ही समालोचक के दायित्व का निर्वाह गम्भीरतापूर्वक किया। तुलनात्मक आलोचना के क्षेत्र में उनकी पक्षपातहीन विवेचना निश्चय ही प्रशंसनीय है। आधुनिकता के प्रति उनकी सचेतनता भी कई स्थलों पर साफ-साफ उभर कर सामने आयी परंतु इस सबके बावजूद उन्हें मिश्रबन्धु तथा पद्मसिंह शर्मा की तरह रीति संस्कारों से जुड़े हुए आलोचकों की परम्परा में ही रखा जाएगा।

लाला भगवानदीन (१८६६-१९३०) : देव और बिहारी का जो विवाद मिश्रबन्धुओं से शुरू हुआ था, लाला भगवानदीन भी उससे अलग नहीं रह सके। अपने आदर्श कवि बिहारी की पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र द्वारा अवमानना होती देख, पुनः बिहारी का पक्ष लेकर उन्होंने एक तुलनात्मक ग्रन्थ की रचना की। 'बिहारी और देव' में उन्होंने देव के प्रति बड़ा निर्मम रुख अपनाया है और बिहारी के प्रति हुए अन्याय का बदला लेने के लिए लिखा—"एक बिहारी पर चार-चार बिहारियों (मिश्रबन्धु और कृष्ण बिहारी मिश्र) का धावा देखकर बेचारा हिन्दी साहित्य संसार घबड़ा गया है। लखनऊ प्रांत के निवासी बिहारियों ने रसिकराज कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा नगर के निवासी बिहारी की कविता को हल्की ठहरा कर देव पर बेतरह आसक्ति दिखाई है। यह देखकर सबको आश्चर्य हो तो अनुचित नहीं है।" (बिहारी और देव, पृष्ठ २) इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य बिहारी पर लगाए गए दोषों का निराकरण ही था, अतः बिहारी के काव्य-विवेचन पर लाला भगवानदीन का ध्यान कम हो गया। उन्होंने प्रतिक्रिया के आवेश में बिहारी पर लगाए गए दोषों को देव पर आरोपित कर दिया। इससे अधिक, कोई नवीन और मौलिक उद्भावना उन्होंने अपने ग्रन्थ में नहीं की।

उनका निम्न कथन मध्यकालीन प्रवृत्तियों से प्रभावित उनकी आलोचना दृष्टि का परिचायक है—

"देव में यह भारी दुर्गुण था कि वे धनलोलुपता के कारण द्वार-द्वार और देश-देश मारे-मारे फिरते थे। धनलोलुपता कभी शान्त नहीं रह पाती। बिना शान्ति और सन्तोष के अच्छी कविता बन नहीं सकती। देव को तो हम भिक्षुक कवि कह सकते हैं, बिहारी राजकवि और कविराज थे।" (बिहारी और देव, पृष्ठ ४६) इस पुस्तक में लालाजी ने देव पर बिहारी की 'भाव-सम्पदा' की चोरी का इलजाम लगाते हुए, उन्हें बहुत नीचे दर्जे का कवि घोषित कर दिया जबकि बिहारी को हिंदी साहित्य का 'चौथा रत्न' माना है। लाला भगवानदीन की आलोचना में हमें द्विवेदी युग की रीतिबद्ध निर्णयात्मक आलोचना का कटुतम रूप देखने को मिलता है। कहना न होगा, कि उनमें एक अच्छे टीकाकार के सभी गुण थे *किन्तु एक जिम्मेदार आलोचक की अनिवार्य गम्भीरता और निष्पक्ष परीक्षण-बुद्धि का अभाव* था। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने केशव की जो टीका उपलब्ध कराई, उसके बिना केशव का अध्ययन सम्भव नहीं हो पाता। इस ग्रंथ का हिन्दी साहित्य में विशेष महत्व है। इसके अतिरिक्त लाला जी के उन निबन्धों का उल्लेख भी यहां आवश्यक है जिनमें इन्होंने हिन्दी के रचनात्मक साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों के 'अनगढ़पन' को अपनी कटु आलोचना का विषय बनाया है। 'जयद्रथवध' की समीक्षा करते हुए उन्होंने 'लक्ष्मी' नामक पत्रिका में गुप्तजी की भाषा को एकदम गैर-साहित्यिक ठहरा दिया था—"गुप्तजी ने अपनी कविता के लिए एक विशेष मिश्रित भाषा तैयार की है जिसे खिचड़ी बोली कह सकते हैं। इसमें संस्कृत भाषा के चावल, खड़ी बोली की दाल, संस्कृत और बंगला भाषा के मुहावरों की अदरख, उर्दू-फारसी शब्दों की सोंठ-मिर्च, ब्रजभाषा और बुन्देलखंडी मुहावरों का नमक और स्वेच्छापूर्वक नियमोल्लंघन का घृत मिलाया गया है। थोड़े से अंग्रेजी शब्दों की हल्दी भी डाल दी गई है। कुछ शब्द गुप्त जी के सखुननकिया हैं। वे व्यर्थ छंदःपूर्ति के लिए ठूँस दिए जाते हैं। यह पियाज की बघार का काम देते हैं।" ('लक्ष्मी', संपा० लाला भगवानदीन, जुलाई, अगस्त, सितम्बर १९१५ ई०)।

यों तो द्विवेदी युग के सभी आलोचकों की शैली में एक प्रकार की निर्भीकता और व्यंग्यात्मकता पाई जाती है किन्तु लाला भगवानदीन की शैली की 'अक्खड़ता' की बात दूसरी थी। यही कारण है कि उनकी आलोचना प्रायः आक्रामक होती थी जो बड़े से बड़े कवि को सिंहासनच्युत कर देती थी। रामचरित उपाध्याय कृत 'रामचरित चिंतामणि' को भी उन्होंने अपनी आक्रामक शैली का शिकार बनाया था। यह अच्छा ही हुआ कि परवर्ती आलोचकों ने तुलनात्मक आलोचना की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया, वरन् वे भी रीतिकालीन कवियों के कोटि-क्रम-निर्धारण के प्रश्न पर जूझते रहते। द्विवेदीयुगीन आलोचकों के वाद-विवादों से यह बात तो स्पष्ट होती ही है कि प्रत्येक आलोचक की रुचि अलग-अलग थी किन्तु उस रुचि का निर्माण करने वाले संस्कारों के मूल में वही रीतिकालीन प्रवृत्तियां थीं। अतः मूल रूप में सभी की आलोचना-दृष्टि एक जैसी थी।

लेखक और पत्रकार श्री बालमुकुन्द गुप्त को लेकर परवर्ती आलोचकों एवं इतिहास-लेखकों में यह मतभेद रहा है कि उन्हें द्विवेदी युग में स्थान दिया जाय अथवा नहीं। वस्तुतः इस काल में गुप्त जी के कुछ फुटकर लेख ही प्रकाशित हुए थे। वैसे उन लेखों में द्विवेदी-युग की दोनों प्रवृत्तियों को लक्षित किया जा सकता है। 'अश्रुमती नाटक', 'अधखिला फूल', 'गुलशन-ए-हिन्द', 'तुलसी सुधाकर', 'तारा उपन्यास' आदि पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए उनकी दृष्टि भी प्रधान रूप से 'दोष-दर्शन' की ओर ही रही। बंगला के 'अश्रुमती नाटक' की समीक्षा में वही लाला भगवानदीन वाली स्पष्टवादिता देखी जा सकती है—'अश्रुमती नाटक' के लिखे जाने से बंग-भाषा के साहित्य का मुंह काला हो गया है।" (गुप्त निबंधावली, पृष्ठ ५४४)। द्विवेदी जी से अनेक विषयों पर उनकी नोंक-झोंक होती रहती थी जो

कभी-कभी तीव्र आलोचना का रूप धारण कर लेती थी। किन्तु केवल इन्हीं दोनों कारणों से उन्हें इस युग का महत्वपूर्ण आलोचक स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से देखने पर हम पाएंगे कि द्विवेदी युग में ऐसे और भी आलोचक रहे जो 'सरस्वती' आदि पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आते रहे। पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली उनकी आलोचनात्मक रचनाओं में भी युग की विशिष्ट प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि द्विवेदी युग में आलोचना की दो पद्धतियां ही प्रमुख रहीं। पहली आलोचना-पद्धति का आश्रय उन आलोचकों ने लिया जो रीतिकालीन संस्कारों में बंधे थे। उन्होंने या तो रीतिकालीन कवियों के तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया अथवा इस काल की रचनाओं के अर्थ का उद्‌घाटन किया। इन आलोचकों के काव्य-मर्मज्ञ होने में संदेह नहीं। किन्तु उनकी सीमाओं को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। इन्होंने रीतिकालीन काव्य के विशद विवेचन एवं टीकाओं द्वारा रीतिकाल के साहित्य की शक्तियों और सीमाओं को प्रकाशित किया है। अतः रीतिकालीन काव्य के पुनर्मूल्यांकन का श्रेय इन्हें ही दिया जाना चाहिये। लेकिन मुश्किल यह है कि मध्यकाल की साहित्य-धारा को अविच्छिन्न रखने के लिए इन्होंने जिस आलोचना-दृष्टि को आधार बनाया वह रीतिकालीन संस्कारों में जकड़ी हुई थी। इसलिए वे युग-चेतना के अनुरूप, साहित्य और सामाजिक आवश्यकता के बीच पुल बनाने का कार्य नहीं कर पाए।

द्विवेदीयुगीन आलोचना की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति उन आलोचकों में परिलक्षित होती है जिन्होंने अपनी समय-सजग दृष्टि से परम्पराबद्ध रीतिकालीन पद्धति की अनुपयुक्तता को देख लिया था और आधुनिक साहित्य व आलोचना के लिए एक नए ढंग की काव्य-रुचि की ज़रूरत को महसूस किया था। साहित्य की जीवन-सापेक्ष व्याख्या एवं समीक्षा का आग्रह तथा साहित्य की भाषा को जन-सामान्य की भाषा से एकरूप करने का प्रयत्न इसी 'ज़रूरत' की पूर्ति की दिशा में किए गए प्रयास थे। युग के नैतिक-उपयोगितावाद का प्रभाव इतना तीव्र था कि कुछ रीतिबद्ध आलोचक भी उसकी लपेट में आ गए। रीतिबद्ध संस्कारों में जकड़े मिश्रबंधु जैसे आलोचकों ने भी कहीं-कहीं काव्य-मूल्यांकन के संदर्भ में बदलते सामाजिक संदर्भों को स्वीकारा।

रामचन्द्र शुक्ल और आलोचना की सही शुरुआत

१९२० ई० में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'सरस्वती' का सम्पादन-कार्य छोड़ना, हिन्दी आलोचना में एक युगान्तकारी घटना थी। इस समय आलोचना के स्वरूप में होने वाले कुछ परिवर्तनों को सहज ही द्विवेदीकालीन आलोचना-पद्धति से अलग करके देखा जा सकता है। द्विवेदीजी के प्रभाव से मुक्त नवीन आलोचना-पद्धतियों का प्रतिनिधित्व आचार्य शुक्ल और अन्य स्वच्छन्दतावादी आलोचकों की समालोचना में दिखाई पड़ता है।

शुक्लजी ने आलोचना को सृजनात्मक साहित्य के समकक्ष स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित ही नहीं किया बल्कि भारतीय साहित्य में गहरे उतर कर उन मौलिक विशेषताओं का उद्‌घाटन किया जो पूर्ववर्ती समालोचकों की स्थूल दृष्टि से परे छिपी थीं। उन्होंने महान् काव्य को भाव की गहराई तथा औदात्य की कसौटी पर देखा, परखा तथा महानता के रहस्य का उद्‌घाटन किया। १९१६ ई० के आस-पास छायावाद के उदय से और साथ ही प्रेमचंद के कथा-साहित्य से गद्य और पद्य की जिन नवीन प्रवृत्तियों का आविर्भाव हुआ, वे आलोचना के लिए चुनौतीपूर्ण थीं। साहित्य की आधुनिक प्रवृत्तियों के लिए रीतिकालीन मानदण्ड की अपर्याप्तता के विरुद्ध जो आवाज उठ रही थी वह एक

व्यक्ति-विशेष की न होकर, पूरे समय की आवाज़ थी। इस आवाज को अनसुना करने का अर्थ था समसामयिकता से मुंह मोड़ना अथवा सामयिक जीवन और साहित्य के प्रति अपने दायित्व की उपेक्षा करना। नया साहित्य जीवन के नये प्रश्नों को लेकर सामने आया था, उसे परम्पराबद्ध मानकों पर नहीं परखा जा सकता था। 'सरस्वती' और 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं की अब तक की भूमिका, साहित्य के नए स्वरूप के प्रति न्याय कर पाएगी या नहीं, यह भी अचानक संदेहास्पद हो उठा था। संदेह की स्थिति में ही नयी सम्भावनाएं उजागर होती हैं। इसलिए 'माधुरी', 'मर्यादा', 'सुधा', 'इन्दु', 'श्रीशारदा' जैसी पत्रिकाएं आलोचना की नयी चेतना को लेकर सामने आयीं। 'श्रीशारदा' (१९२० ई०) में पहली बार 'छायावाद' की विशेषताओं पर रोशनी डालने वाली मुकुटधर पाण्डेय की लम्बी लेखमाला प्रकाशित हुई।

इसी समय, स्वाधीनता-आन्दोलन पूरे ज़ोरों पर था, जनता के शिक्षित-वर्ग में अपनी भाषा और साहित्य के प्रति जागरूकता आ रही थी। हिन्दी क्रमशः गौरव का विषय बन गयी थी और देश के विश्वविद्यालयों में हिन्दी को स्नातकोत्तर स्तर पर प्रतिष्ठा मिल रही थी। काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग की स्थापना १९२० ई० के आसपास हुई। हिन्दी की इस जनप्रियता तथा प्रसार ने आलोचना को भी प्रभावित किया। साहित्य के अध्ययन और मनन की आवश्यकता का एहसास आलोचना के लिए एक मुक्त वातावरण का निर्माण करने लगा। किन्तु इसका दूसरा पक्ष यह भी रहा कि विश्वविद्यालयी आलोचना अपने संतुलन एवं निष्पक्षता के बावजूद, शिक्षोपयोगी अनुशासन-दृष्टि से मुक्त होकर अधिक जीवन्त पद्धति नहीं अपना सकी। फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हिन्दी में गम्भीर रूप से शास्त्रीय चिन्तन के सूत्रपात का श्रेय उन्हीं ग्रंथों को जाता है जो स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को दृष्टि में रखकर लिखे गए थे।

अतः हम देखते हैं कि यह समय हिन्दी आलोचना के विकास का वह संधिस्थल था जहां परम्पराबद्ध आलोचना-पद्धति के अवशेष, युगानुकूल साहित्यिक प्रवृत्तियों के नए मिजाज को देखकर खुद ही डगमगाने लगे थे। नयी परिस्थितियों ने साहित्य और आलोचना के सीधे सम्पर्क के लिये नयी ज़मीन तैयार कर दी थी और विश्वविद्यालय एक अधिक अनुशासित एवं संतुलित आलोचना-पद्धति के निर्माण के लिए प्रयत्नशील थे। ऐसे में, पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्तों से प्रभावित होना भी स्वाभाविक था। कहीं-कहीं संस्कृत काव्यशास्त्र तथा पाश्चात्य काव्य-शास्त्र के सम्मेलन से जन्मी नयी समन्वयवादी चिन्तन-पद्धति के संकेत भी मिलने लगे थे। इसके साथ ही प्राचीन और मध्ययुगीन साहित्य के सम्बन्ध में किए गए शोध-कार्य तथा अनुपलब्ध सामग्री के उद्घाटन का सारा दायित्व नयी-नयी पत्र-पत्रिकाएं लेने को प्रस्तुत थीं।

इस संक्रमणकालीन वातावरण में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (१८८४-१९४० ई०) ही एक मात्र ऐसे समालोचक थे जिन्होंने आलोचना की परम्पराबद्ध शैलियों को समुचित सम्मान देते हुए युग की आवश्यकतानुसार हिन्दी आलोचना को एक नया स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' के साथ इस क्षेत्र में पदार्पण किया तथा काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में अध्यापन-कार्य करते हुए विदा ली। बीच का समय उनकी सजग आलोचना-दृष्टि का सच्चा साक्षी है। समसामयिक साहित्य और उस पर होने वाले विवादों पर टिप्पणी करने से वे कभी नहीं चूके। विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं उनके सामयिक लेखों को प्रकाशित करती रहीं। 'शब्दसागर' की भूमिका के रूप में साहित्येतिहास का लेखन, 'पद्मावत' का सम्पादन, तुलसी, जायसी तथा सूर के ग्रंथों की भूमिकाएं तथा विभिन्न कृतियों का मूल्यांकन शुक्लजी की गतिशील लेखनी के सजीव प्रमाण हैं। मूल्यांकन की प्रक्रिया में प्रयोग में आने वाले आधारभूत सिद्धान्तों को वे शास्त्र-चिन्तन के

रूप में भी संवार देते थे। सबसे रोचक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि विश्वविद्यालय की सीमाओं में बंधने के बाद भी उनकी आलोचना, विश्वविद्यालयी अनुशासन और वर्जनाओं से मुक्त रही। वस्तुतः यहीं से हिन्दी-आलोचना गुण-दोष विवेचन तथा रीति-वाक्यों की श्रेष्ठता के विवाद से आगे बढ़ कर एक वास्तविक स्वरूप अख्तियार करती है। अतः यह स्वाभाविक ही है कि यहां से रीति कालीन व्यक्तित्व आलोचना के केन्द्र से च्युत हो चला और देव, बिहारी आदि के तुलनात्मक अध्ययन के स्थान पर आलोचकों की बदली हुई रुचि का परिचय मिलने लगा। आचार्य शुक्ल ने कवियों को इस नाप-जोख के अपमानजनक विधान से बाहर निकाला और व्यावहारिक आलोचना के माध्यम से हिन्दी कवियों का तारतमिक मूल्यांकन प्रस्तुत किया। शुक्लजी मूल्यांकन की परीक्षा-पद्धति को बेहूदा समझते थे और व्याख्या-विश्लेषण को एक सही शैली। यही कारण है कि आलोचक का सर्वप्रमुख कर्तव्य निभाते हुए उन्होंने पाठक में अच्छे-बुरे साहित्य की सही पहचान पैदा करने का श्रेय लिया। साहित्य और जीवन के बीच किसी प्रकार की दरार शुक्लजी को मान्य नहीं थी। यह बात उनके 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में भारतेन्दु के विषय में दिए गए निम्न वक्तव्य से सहज प्रकट हो जाती है—"हिन्दी साहित्य अपने पुराने रास्ते पर ही पड़ा था। भारतेन्दु ने उस साहित्य को दूसरी ओर मोड़ कर हमारे जीवन के साथ फिर से लगा दिया। इस प्रकार हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था, उसे उन्होंने दूर कर दिया।" कहने का तात्पर्य यह है कि आलोचक के साहित्यिक मूल्य, रुचि-अभिरुचि, मान्यताओं और निषेधों की आकृति उनकी समालोचनाओं के माध्यम से बनती चलती है। अगर ऐसा न होता तो शुक्ल जी एक ऐसे आदर्श आलोचक की प्रतिमा स्थापित न कर पाते जो सिद्धान्त और व्यवहार को एक रूप कर देता है। उन्होंने न केवल व्यवहार में ही भक्तिकालीन साहित्य के प्रति अपनी रुचि को स्पष्ट किया, अपितु सैद्धान्तिक धरातल पर भी रीतिग्रंथों के दुष्प्रभाव की चर्चा की। उनका मत था कि 'रीतिग्रंथों ने देश की साहित्यिक रुचि को कुंठित किया। परिणामस्वरूप, कवियों की दृष्टि संकुचित हो गयी। लक्षणों की क़वायद पूरी करके वे अपने कर्त्तव्य की समाप्ति मानने लगे, काव्य का रूप संघटित करने के स्थान पर वे बाहरी सजावट में अधिक उलझने लगे।' (रस मीमांसा, पृष्ठ ७५) शुक्लजी, इस सजावट के विरोधी नहीं थे, क्योंकि यह तो कवि के 'कला-निपुण' होने का प्रमाण है। परन्तु वे 'काव्य में कला-निपुणता के अतिरिक्त सहृदयता के अस्तित्व को भी आवश्यक मानते थे। जब वे 'काव्य का स्वरूप संघटित करना' कवि का अनिवार्य धर्म मानते हैं तो जाहिर है यह सहृदयता द्वारा ही सम्भव हो सकता है। उनका 'रस-वाद' रीतिवादी ग्रंथों के रस-निरूपण से इसी अर्थ में भिन्न हो जाता है कि वे उसमें 'गिनीगिनाई बातों को निर्दिष्ट शैली के अनुसार' उन्हें आंखें मूंद कर कह देने की 'रस्म अदायगी' के पक्ष में नहीं थे। रस-वाद को उन्होंने 'अनुभूति' केन्द्रित बनाकर उसे लोक-मानस के व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। उनके यहां न विषयों की सीमा थी न स्वरूप की। वे दृश्यजगत् के अनेकानेक रूपों में ही काव्य की कल्पना, भावादि का निर्माण सम्भव मानते हुए कहते हैं—"संसार सागर की रूप-तरंगों से ही मनुष्य की कल्पना का निर्माण और इसी की रूप-गति से उसके भीतर विविध भावों या मनोविकारों का विधान हुआ है। सौन्दर्य, माधुर्य, विचित्रता, भीषणता, क्रूरता इत्यादि की भावनाएं बाहरी रूपों और व्यापारों से ही निष्पन्न हुई हैं। हमारे प्रेम, भय, आश्चर्य, क्रोध, करुणा इत्यादि भावों की प्रतिष्ठा करने वाले मूल आलंबन बाहर ही के हैं—इसी चारों ओर फैले हुए रूपात्मक जगत् के ही हैं। जब हमारी आंखें देखने में प्रवृत्त रहती हैं तब रूप हमारे बाहर प्रतीत होते हैं, जब हमारी वृत्ति अन्तर्मुखी होती है तब रूप हमारे भीतर दिखाई पड़ते हैं। बाहर-भीतर रहते हैं रूप ही···।" अतः शुक्लजी ने जिस बात की आवश्यकता सबसे अधिक महसूस की, वह थी 'मानव-प्रवृत्ति का अन्वीक्षण'। इसीलिए उन्होंने 'भावों' के स्वरूप-प्रदर्शन' तथा 'श्रोता के हृदय में उसके संचार' के बीच भेद किया है। उनके विचार में काव्य का प्रकृत

लक्ष्य शास्त्र में गिनी-गिनाई बातों का संकलन नहीं, 'पदार्थों के साथ भावों के प्रकृत सम्बन्ध का प्रत्यक्षीकरण'—जगत् के साथ हमारी रागात्मिका वृत्ति का सामंजस्य सिद्ध करना है। (रस मीमांसा, पृष्ठ ७७)

अतः स्पष्ट है कि काव्य की रसात्मकता से शुक्लजी का अभिप्राय उसकी रागात्मकता या अनुभूति-प्रवणता से था। अनुभूति-तत्व को प्राथमिकता देते हुए, अनुभूति-प्रधान काव्य को ही वे उत्तम काव्य मानते थे। किन्तु यहां भी वे अनुभूति के औदात्य के समर्थक थे। यही कारण है कि बिहारी के श्रृंगार-वर्णन की प्रशंसा करते हुए भी वे अनुभूति की उदात्तता पर प्रश्न-चिन्ह लगाना नहीं भूलते—'कविता उनकी श्रृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुंचती।' (रस मीमांसा, पृष्ठ ३०३) यहां एक बात और उल्लेखनीय है और वह यह कि अनुभूति को काव्य का केन्द्र मानने के बावजूद शुक्ल जी उसकी ऐकान्तिक सत्ता के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने प्रसाद की 'कामायनी' के इड़ा-विरोधी श्रद्धावाद को समझने में अपनी असमर्थता जताते हुए उसमें इड़ावाद के समन्वय पर बल दिया। उनके मत में 'प्रत्येक भाव का प्रथम अवयव विषयबोध ही होता है,' अतः बोधतत्व को भावभूमि से निष्कासित करना असम्भव है। इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि काव्य में अनुभूति की प्रधानता को स्वीकार करने पर भी उन्होंने काव्य में विषय-प्रधानता को अधिक महत्व नहीं दिया। यद्यपि उत्तर छायावाद की कविता और आलोचना में आत्माभिव्यक्ति-प्रधान अनुभूति को पर्याप्त स्थान मिला, किन्तु शुक्लजी का रसवाद अनुभूति को व्यक्तिगत दायरे से बाहर निकाल कर लोकमानस के साथ रागात्मक सम्बन्ध के रूप में प्रतिष्ठित करता है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा—'लोक-हृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस दशा है' (रस मीमांसा, पृष्ठ २०७)। इस रस-दशा तक पहुंचने के लिए जो मार्ग वे अपनाते हैं वह अन्तर्मुखी न होकर बहिर्मुखी है। इसके साथ ही उन्होंने मुक्तक की अन्तर्मुखी गीत-रचना की अपेक्षा प्रबन्ध की व्यापक भूमि का समर्थन किया। प्रबन्धकार की भावुकता की कसौटी भी उन्होंने इस बात को माना कि वह किसी आख्यान के अधिक मर्मस्पर्शी स्थलों को पहचान सका है या नहीं।

वास्तव में, शुक्लजी लोकमंगल की जो चर्चा करते हैं वह उनकी लोकतांत्रिक दृष्टि का परिणाम है। काव्य की भावभूमि को न तो वे 'लोकोत्तर' बनाने के इच्छुक हैं और न 'लोकेतर'; वे उसे मात्र 'लोक सामान्य' बनाना चाहते हैं। शास्त्र में की गयी रसानुभव की 'लोकोत्तरता' की चर्चा करते हुए वे उसकी नयी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं—"हमारे यहां लक्षण-ग्रंथों में रसानुभव को जो 'लोकोत्तर' और 'ब्रह्मानंद-सहोदर' आदि कहा गया है, वह अर्थवाद के रूप में, सिद्धान्त रूप में नहीं। उसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि रस में व्यक्तित्व का लय हो जाता है।" (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ६८७) व्यक्तित्व के लय हो जाने का अर्थ है, मनुष्य के हृदय का 'स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठकर लोक-सामान्य' भावभूमि पर पहुंच जाना!

विद्वानों द्वारा प्रायः शुक्लजी पर यह आरोप लगाया गया है कि उनकी आलोचना के मानदण्ड नैतिकता के दबाव से मुक्त नहीं थे। किन्तु वस्तुतः शुक्लजी की नैतिकता का साहित्य के साथ वाला सम्बन्ध नहीं है, अपितु वह साहित्य के भाव-जगत् की बुनावट में रची-बसी है। वह आरोपित मूल्य न होकर सौन्दर्य-बोध का ही महत्वपूर्ण अंग है। वह द्विवेदीकालीन सुधारवाद से अलग हटकर लोकमंगल की कामना है जिसका आधार अध्यात्म या आदर्शवाद न होकर सामाजिक जीवन का यथार्थ है। यही कारण है कि शुक्लजी साहित्य के संदर्भ में जीवन-मूल्यों की बात करते हैं। सामाजिक यथार्थ और लोक-जीवन से कटे हुए साहित्य, धर्म, दर्शन और अध्यात्म का उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं था। धर्म की व्याख्या करते हुए भी उनकी दृष्टि लोकमंगल पर टिकी हुई है—"जिस व्यवस्था या वृत्ति से लोक मंगल का विधान होता है, अभ्युदय की सिद्धि होती है, धर्म है।" कहना न होगा

कि धर्म उनके अनुसार कोई रूढ़ि न होकर लोक-जीवन के अनुरूप बदलता हुआ मूल्य था। इसी तरह 'अध्यात्म' शब्द का भी उन्होंने काव्य और कला के क्षेत्र से बहिष्कार कर दिया! साधारणीकरण को पुनः प्रतिष्ठित किया तथा व्यक्ति वैचित्र्य के विरुद्ध आवाज उठाई।

किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि शुक्लजी काव्यानुभूति को लोकोत्तर स्तर से उतार कर उसके अवमूल्यन का इरादा रखते थे। योग, तंत्र, रसायन आदि को रहस्यमार्ग मानकर उनकी साधनात्मक महत्ता से उन्होंने कभी इन्कार नहीं किया। हां, काव्यभूमि में उनके प्रवेश पर उन्हें हमेशा एतराज़ रहा। अतः भारतीय काव्यशास्त्र के 'आनन्द' आदि शब्द उनके आक्रोश का केन्द्र बने। वे 'आनन्द' की साधनावस्था अर्थात् प्रयत्न पक्ष के समर्थक थे—"मेरी समझ में रसास्वाद का प्रकृत स्वरूप 'आनन्द' शब्द से व्यक्त नहीं होता।······इस 'आनन्द' शब्द ने काव्य के महत्व को बहुत कुछ कम कर दिया······उसे नाच-तमाशे की तरह बना दिया है।" (रस मीमांसा, पृष्ठ ८०) आनन्द की साधनावस्था का स्वीकार भी उन्होंने मात्र इसलिए नहीं किया कि इसका सम्बन्ध सामाजिक जीवन से है, बल्कि इसलिए भी कि इसमें विरुद्धों का सामंजस्य होने के नाते रस की अधिक गहरी अवस्था निहित रहती है। सौन्दर्य के दायरे में कर्म, शील और शक्ति को शामिल करते हुए उन्होंने सौन्दर्य के व्यापक स्वरूप का उद्घाटन किया। सामाजिक जीवन की विषमताओं के बीच समता लाने के प्रयास परिस्थिति के अनुसार होते है, कभी मधुर, कभी करुण, कभी सद्भावनापूर्ण, कहीं क्रोधपूर्ण। किन्तु मूलतः सब सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित होते है। अतः संहार, घृणा, क्रोध भी उतने ही सुन्दर होते हैं जितने प्यार, करुणा और सृजन। यहीं शुक्लजी स्थायीभाव या अंगी भाव से अलग 'बीज भाव' की उद्भावना करते हैं जो सभी कर्मों के मूल में रहता है। बीज भाव के मांगलिक अथवा अमांगलिक होने पर ही भावों का सुन्दर अथवा असुन्दर होना निर्भर करता है। बीज भाव की निर्वैयक्तिकता, भावों को प्रभावी बनाती है। कवि-हृदय की पहचान शुक्लजी के अनुसार यही है कि उसका हृदय प्रकृति के इन सब रूपों में लीन होता है।

छायावाद तथा उसके साम्प्रदायिक रहस्यवाद के विरोधी शुक्लजी, काव्य के आलम्बन का परिधि-विस्तार करते समय 'नरेतर प्रकृति' के प्रति भी सजग हो उठते हैं। वस्तुतः छायावाद के शुद्ध-स्वाभाविक मार्ग से उनका विरोध था भी नहीं। पंतजी की स्वाभाविक रहस्यभावना के संदर्भ में, हृदय के धरातल पर प्रकृति के अनन्त रमणीय रूपों के प्रति उठने वाली स्वाभाविक जिज्ञासा को उन्होंने मान्यता दी। यहां इस बात का उल्लेख भी आवश्यक है कि काव्य और कलाओं के माध्यम से सिद्ध होने वाले भावयोग या अनुभूति योग को शुक्लजी ज्ञानयोग और कर्मयोग के समकक्ष मानते थे: 'मुक्त हृदय मनुष्य अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किए रहता है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।' (रस मीमांसा, पृष्ठ ६) करुणा को सर्वाधिक महत्व देने का मुख्य कारण भी यही रहा कि यह भाव लोक-सत्ता तथा व्यक्ति-सत्ता को एक-दूसरे से जोड़ता है। आत्मप्रसार में सहायक होता है तथा जीवन में लोकमंगल के विधान में योग देता है।

शुक्लजी का भाव और मनोविकार-सम्बन्धी विवेचन इस बात का प्रमाण है कि वे प्रत्येक विषय का अध्ययन-विश्लेषण उसे सामाजिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ कर करते थे। लोकमंगल और मानव-मन की अन्तर्वृत्तियों के बीच जिस सम्बन्ध का उन्होंने निर्माण किया है, वह करुणा और प्रेम के विवेचन में स्पष्ट देखा जा सकता है। यही कारण है कि जब वे सामाजिक संदर्भों में रस की व्याख्या करते हैं तो उसे 'आस्वाद' से आगे बढ़ाकर मूल्य से जोड़ देते हैं। रस समय की बुनियादी शक्तियों के अनुसार ही परिवर्तनशील हैं, क्योंकि वह केवल आस्वाद नहीं, समय और स्थान की चेतना से जुड़ा हुआ जीवन-

मूल्य है।

अपनी आलोचना में जहां शुक्लजी ने काव्य की लोकमंगल-विधायिनी प्रकृति, काव्य के विषय, जगत् और जीवन के नाना रूपों से उसके सम्बन्ध पर विचार किया है, वहां रीतिग्रंथों में विहित अभिव्यक्ति की परिपाटी की भी उपेक्षा नहीं की। ध्यान देने की बात यह है कि शुक्लजी ने साहित्य की आलोचना और आलोचना के सिद्धान्तों में भेद किया है। साहित्य की आलोचना को वे 'समालोचना' कहते हैं, और आलोचना के सिद्धांत-निरूपण को 'काव्य मीमांसा'। अपने इतिहास में उन्होंने दोनों के बीच विभाजक-रेखा खींचते हुए बाबू श्यामसुन्दर दास के 'साहित्यालोचन' की चर्चा 'काव्य मीमांसा' के रूप में की है। दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि साहित्य के ग्रंथों में उपलब्ध लक्षण-नियम आदि को वे केवल "विचार की व्यवस्था के लिए, काव्य-सम्बन्धी चर्चा के सुभीते के लिए" ग्रहण करने के पक्ष में थे। जाहिर है कि इन लक्षणों और नियमों को कठोर बन्धनों के रूप में स्थापित होते देख वे तीव्र प्रतिक्रिया के लिए तत्पर हो उठे थे और उन्होंने इस बात का आग्रह किया था कि "हमें सामंजस्य बुद्धि से काम लेकर अपना स्वतन्त्र मार्ग निकालना चाहिए।" यही कारण है कि उन्होंने पश्चिम के कलावाद तथा मध्ययुग के अलंकारवाद के दुराग्रहों का विरोध करते हुए एक नयी व्याख्या प्रस्तुत की। पश्चिम के कलावाद और अभिव्यंजनावाद की हिन्दी कविता में भद्दी नकल होती देख उन्होंने उसकी भर्त्सना की किन्तु साथ ही छायावादी कवियों द्वारा किए गए नए अलंकार-प्रयोगों की ताजगी की प्रशंसा भी की। रीतिकाल में कल्पना अलंकार-विभाजन का साधन-भर थी। शुक्लजी ने उसके सीमित क्षेत्र का विस्तार किया तथा उसे अनुभूति के अधीन स्थान देते हुए काव्य की आतमा तक पहुंचने का मार्ग बना दिया—'काव्य का आभ्यन्तर स्वरूप या आतमा भाव या रस है।···जब कि रस ही काव्य में प्रधान वस्तु है तब उसके संयोजकों में जो कल्पना प्रयोग होता है वही आवश्यक और प्रधान ठहरा। रस का आधार खड़ा करने वाला जो विभावन व्यापार है कल्पना का प्रधान कर्मक्षेत्र वही है। पर वहां उसे अनुभूति या रागात्मिकता वृत्ति के आदर्श पर कार्य करना पड़ता है।' (रस मीमांसा, पृष्ठ ८३) कल्पना उनके यहां भी साधन-रूप में आयी है किन्तु 'रस' की, अलंकार-विधान की नहीं, अब वह काव्य के आभ्यन्तर विधान का अंग है। इस दृष्टि से उन्होंने 'काव्य विधायिनी कल्पना' उसी को माना है "जो या तो किसी भाव द्वारा प्रेरित हो अथवा भाव का प्रवर्त्तन या संचार करती हो। सब प्रकार की कल्पना काव्य की प्रक्रिया नहीं कही जा सकती। अतः काव्य में हृदय की अनुभूति अंगी है, मूर्तरूप अंग भाव प्रधान है, कल्पना उसकी सहयोगिनी।" (चिंतामणि, भाग २, पृष्ठ १८१)

रस का आधार खड़ा करने वाला विभावन-व्यापार शुक्लजी की दृष्टि में काव्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। दूसरे शब्दों में, वह काव्य के वस्तु-तत्व व मूर्त विधान की प्रतिष्ठा है। प्रबन्ध के विस्तृत कलेवर में, 'विभावन-व्यापार' को वे वस्तु-विधान, चरित्र-योजना तथा दृश्य-योजना के रूप में देखते हैं। मुक्तक एवं गीतों में वह चित्रात्मकता तथा मूर्त्त विधान के रूप में लक्षित होता है। इसीलिए काव्य-भाषा की विशिष्टता उन्होंने इस बात में मानी है "कि कविता में कही गई बात चित्र रूप में हमारे सामने आए।" वे काव्य में केवल 'अर्थग्रहण' की नहीं, 'बिम्बग्रहण' की महत्ता को स्वीकार करते हैं। उनकी यह धारणा शास्त्रीय धारणा से मेल नहीं खाती। 'बिम्ब ग्रहण' कराने को कविता का मूल धर्म मानकर, वे यह स्थापित करना चाहते हैं कि रसानुभूति के समय श्रोता या पाठक के मन में आलम्बन आदि विशेष व्यक्ति या विशेष वस्तु की मूर्त्त भावना ही आती है। क्योंकि शुक्लजी का मत था कि "बिम्बग्रहण निर्दिष्ट गोचर और मूर्त्त विषय का ही हो सकता है" (रस मीमांसा, पृष्ठ १३४)। इसमें कुछ लोगों को उनके विवेचन की सीमा दिखाई पड़ सकती है। किन्तु यदि हम आधुनिक कविता के प्रमुख आधार 'अनुभूति के वैशिष्ट्य' को ध्यान में रखकर शुक्लजी के मत का पुनर्मूल्यांकन करें तो

पायेंगे कि वह विशेष-आलम्बनजन्य विशेष अनुभूति ही सर्वसामान्य की अनुभूति बन जाएगी क्योंकि वह एक नहीं अनेक पाठकों और श्रोताओं के हृदय में समान रूप से जागेगी। रूढ़ सिद्धान्तों को छोड़कर उन्हें मौलिक उद्भावनाओं से संवलित करके प्रस्तुत करना शुक्लजी के विवेचन की विशेषता रही है। योरोपीय कला-समीक्षा और भारतीय अलंकार-शास्त्र द्वारा दी गयी 'सौन्दर्य' की व्याख्याओं से भिन्न उन्होंने उसे एक नए अर्थ में ग्रहण करके अपनी मौलिकता का ही तो परिचय दिया है—"जिस सौन्दर्य की भावना में मग्न होकर मनुष्य अपनी पृथक् सत्ता की प्रतीति का विसर्जन करता है वह अवश्य ही एक दिव्य विभूति है।" (रस मीमांसा, पृष्ठ ७५) उन्होंने सौन्दर्य को रंग-रूप की परिधि से आगे बढ़ाकर कर्म और मनोवृत्ति में प्रतिष्ठित किया! शुक्लजी का मौलिक और साहसी आलोचक व्यक्तित्व उनके निबन्ध-सम्बन्धी विवेचन में भी प्रतिबिम्बित होता है। सदियों से कविता की प्रमुखता के अधीन रहता आया साहित्य उनके इस क्रान्तिकारी वक्तव्य से उद्वेलित न हुआ हो, यह असम्भव है—"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। 'भाषा' की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक सम्भव होता है।" (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ६०५)

शुक्लजी के आलोचक व्यक्तित्व की विशेषताओं की चर्चा करते हुए डा० देवराज ने लिखा है—"शुक्ल जी की सबसे बड़ी विशेषता है रसग्राहिता। इतनी ठोस रसज्ञता वाले पाठक और आलोचक बहुत कम पैदा होते हैं। जो कोई भी शुक्लजी के गहरे सम्पर्क में आता है वह उनकी इस शक्ति से चकित और अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। स्वदेश में अथवा विदेश में रसग्राहिता के ऐसे अपरिमित क्षमता-सम्पन्न समीक्षक कम मिलेंगे। कौन-सा काव्य वस्तुतः सुन्दर, वस्तुतः महान् है इसे पहचानने में शुक्लजी की मर्मभेदिनी दृष्टि कभी धोखा नहीं खाती, भले ही वे सदैव उस दृष्टि का सम्यक् विवेचनात्मक मण्डन प्रस्तुत न कर सकें।" (साहित्य चिन्ता, पृष्ठ १६७)

शुक्लजी की यही विशेषता निरन्तर उनकी व्यावहारिक समीक्षाओं में प्रतिभासित होती है। निस्सन्देह, वे व्याख्यात्मक समीक्षा के प्रौढ़ आलोचक हैं, अतः कवि या उसकी कृति को अपने दुराग्रह का शिकार बनाने के बजाय गहन अध्ययन और विश्लेषण पर बल देते हैं। सूर, तुलसी और जायसी पर लिखे गए उनके प्रबन्धों में उनकी आलोचना का उत्कृष्ट स्वरूप दृष्टिगोचर होता है! कृति विशेष की किसी मार्मिक बात पर दृष्टि केन्द्रित कर वे सामान्य सिद्धान्त-निरूपण करने लगते हैं। तुलसी और जायसी की अपेक्षा उन्होंने सूर पर थोड़ा लिखा, क्योंकि सूर के काव्य-क्षेत्र की सीमा उन्होंने संकीर्ण मानी। किन्तु इसके साथ यह भी स्वीकार किया कि सूर ने अपने सीमित क्षेत्र में भी जितनी मौलिक उद्भावनाएं की हैं, उतनी अन्य किसी कवि ने नहीं की। वे मानवीय अन्तर्वृत्तियों के मर्मज्ञ हैं। और यह मर्मज्ञता अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। शृंगार और वात्सल्य रस की वह गहराई उसमें डूब-कर ही नापी जा सकती है। किन्तु इसके बावजूद, तुलसी की समीक्षा करते हुए शुक्लजी ने उन्हें सूर से बड़ा कवि सिद्ध किया है। उनके अनुसार, तुलसी का काव्य रस-संचार के माध्यम से जिस उच्च उदात्त भूमि पर पहुंचाता है वह सूर की विशेषता नहीं है। दूसरे, तुलसी प्रबन्धकार थे और उन्होंने 'लोकधर्म', 'मर्यादा' और लोक-नीति जैसे विषयों को उठाया था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित्र शक्ति, शील और सौन्दर्य का संगम था। शुक्लजी ने तुलसी के काव्यों के भक्ति-दर्शन, ज्ञान-भक्ति-दर्शन समन्वय का विश्लेषण करते हुए लोक-धर्म और मर्यादा आदि पक्षों पर प्रकाश डाला तथा तुलसी-काव्य की विशेषताओं को ही उच्च काव्य की कसौटी के रूप में प्रतिष्ठित किया।......जायसी के 'पद्मावत' की परीक्षा करते समय भी उनकी दृष्टि उसके प्रबन्धत्व पर टिकी रही। नागमती के विरह-वर्णन के संदर्भ में पद्मावत की रसवादी समीक्षा करते हुए उन्होंने जायसी की प्रेम-पद्धति की छानबीन की है—"जायसी एकान्तिक प्रेम की गूढ़ता और गम्भीरता के बीच-बीच में जीवन के और-और अंगों के

साथ भी उस प्रेम के संपर्क का स्वरूप कुछ दिखाते गये हैं, इससे उनकी प्रेम-गाथा पारिवारिक और सामाजिक जीवन से विच्छिन्न होने से बच गई है। उसमें भावात्मक और व्यावहारिक दोनों शैलियों का मेल है। पर है वह प्रेम-गाथा ही, पूर्ण जीवन-गाथा नहीं। ग्रंथ का पूर्वार्द्ध—आधे से अधिक भाग प्रेम-मार्ग के विवरण से ही भरा है। उत्तरार्द्ध में जीवन के और-और अंगों का सन्निवेश मिलता है, पर वे पूर्णतया परिस्फुट नहीं हैं। दाम्पत्य-प्रेम के अतिरिक्त मनुष्य की और वृत्तियां जिनका कुछ विस्तार के साथ समावेश है, वे यात्रा, युद्ध, सपत्नी-कलह, मातृ-स्नेह, स्वामिभक्ति, वीरता, कृतघ्नता, छल और सतीत्व हैं। पर इनके होते हुए भी पद्मावत को हम शृंगार-रस-प्रधान काव्य ही कह सकते हैं। 'रामचरित' के समान मनुष्य-जीवन की भिन्न-भिन्न बहुत सी परिस्थितियां और सम्बन्धों का इसमें समन्वय नहीं है।' (जायसी ग्रंथावली की भूमिका, पृष्ठ ३०)

इन महत्वपूर्ण कवियों के अतिरिक्त उन्होंने अपने समय के गद्य-साहित्य की पद्धतियों और प्रवृत्तियों को भी विवेचना का विषय बनाया। प्रेमचन्द के उपन्यासों में यथार्थवादी जीवन-दृष्टि, भारतीयता और सामाजिकता को ही लक्ष्य कर वे उन्हें हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार घोषित कर गए थे। कहानी, निबन्ध, नाटक आदि के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी तत्वग्राहिणी सूक्ष्म दृष्टि का लाभ उठाते हुए सही कसौटियों का निर्धारण किया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी आलोचना के जिस युग को 'शुक्ल युग' कहा जाता है, वही हिन्दी में वास्तविक आलोचना का प्रस्थान-बिन्दु है। शुक्लजी के द्वारा जिस प्रौढ़ आलोचना शैली का विकास हुआ, वह न तो पश्चिमी कलावाद से आक्रान्त थी न मध्ययुगीन अलंकार-रीतिवाद की शास्त्रीयता से ग्रस्त। शुक्लजी ने अपनी आलोचना-शैली को एक सर्वथा मौलिक स्वरूप प्रदान किया था। द्विवेदी-युग में काव्य की बदली हुई रुचि का आभास बहुत कुछ अस्पष्ट था, शुक्ल-युग में इस बात को लेकर कोई सन्देह नहीं रह गया कि साहित्य को समसामयिक जीवन के निकट लाकर उसके मानदण्डों का परिमार्जन अब अत्यंत आवश्यक हो गया है। जहां अब तक आलोचना का केन्द्र रीतिकालीन कवि तथा उनकी शृंगारिक कविताएं रहीं, वहां शुक्लजी ने भक्तिकालीन सगुण कवियों को प्रतिष्ठित करके अलंकार-रीति के स्थान पर पुनः रसवाद को स्थापित किया। यही नहीं भारतीय शास्त्रीय परम्परा से हटकर उसे लोक-सम्पृक्ति से सम्बद्ध किया तथा आधुनिक और प्रासंगिक बनाया। इस दृष्टि से उनकी आलोचना में हृदय और बुद्धि का अभूतपूर्व समन्वय देखा जा सकता है। यह समन्वय अनुभूति-योग की बहिर्मुखता तथा रस की व्यापक वस्तुनिष्ठता में भी दृष्टिगोचर होता है। उनकी साधारण वस्तुनिष्ठता सामाजिक संदर्भों से उद्भूत है, आत्मनिष्ठ विषयिपरकता से नहीं, क्योंकि उनकी मूल चिन्ता लोकमानस की चिन्ता थी। रस को लोक-भूमि पर उतार कर, रूप-सौन्दर्य के स्थान पर कर्म-सौन्दर्य की प्रतिष्ठा कर, करुणा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थायीभाव मानकर उन्होंने अपनी इसी मानववादी दृष्टि का परिचय दिया है। यही नहीं द्विवेदीयुगीन स्थूल नैतिक उपयोगितावाद को भावात्मक मानववाद में रूपायित करके आलोचना के प्रतिमान के रूप में स्थापित करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। शुक्लजी की समीक्षा की विशेषताओं पर विचार करने के बाद यही कहा जा सकता है कि रसवादिता तथा लोकमंगल की भावना ही वे मूल तत्व हैं जिन्होंने न केवल उनकी आलोचनात्मक धारणाओं का निर्माण किया अपितु उनके विकास के लिए समुचित मार्ग भी निर्धारित किया!

इसी युग में शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरोध से हिन्दी में विश्वविद्यालयी आलोचना का जो सूत्रपात हुआ, उसका श्रेय **बाबू श्यामसुन्दरदास** (१८७५-१९४५ ई०) को जाता है। 'साहित्यालोचन' की भूमिका में, ग्रंथ की रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने स्वयं लिखा है कि "एम० ए० के पाठ्यक्रम में तीन विषय ऐसे रखे गए जिनके लिए उपयुक्त पुस्तकें नहीं थीं। वे विषय थे भाषा-विज्ञान,

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास व साहित्यिक आलोचना। इन तीनों विषयों के लिए अनेक पुस्तकों के नामों का निर्देश कर दिया गया जिनकी सहायता से इन विषयों का पठन-पाठन हो सके परन्तु आधार-स्वरूप कोई मुख्य ग्रंथ नहीं बनाया जा सका। सबसे पहले मैंने साहित्यिक आलोचना का विषय चुना और उसके लिए जिन पुस्तकों का निर्देश किया गया उन्हें देखना आरम्भ किया। मुझे शीघ्र ही अनुभव हुआ कि इस विषय का भलीभांति अध्ययन करने की आवश्यकता है कि विद्यार्थियों को पहले आलोचना के तत्वों का ज्ञान करा दिया जाए। इसके लिए मैंने सामग्री एकत्र करना आरम्भ किया और सम्पूर्ण ग्रंथ के परिच्छेदों का क्रम, विषय का विभाग आदि अपने मन में बना कर उसे लिखना आरम्भ किया।" बाबू श्यामसुन्दरदास के उपर्युक्त वक्तव्य से स्पष्ट है कि उन्होंने तत्कालीन आवश्यकता से प्रेरित होकर जल्दी-जल्दी में ही इस ग्रंथ की रचना की। अतः उसकी व्यापकता जहां प्रशंसनीय है, वहां विश्लेषण अधिक गहराई और मौलिकता की अपेक्षा रखता है। निस्सन्देह उन्होंने परवर्ती संस्करणों में इस अभाव की क्षति-पूर्ति का प्रयत्न किया है। जिस क्रम-विभाग तथा अध्यायों की ओर उन्होंने भूमिका में संकेत किया है, वे हडसन से काफ़ी हद तक प्रभावित हैं। पाश्चात्य कला-विवेचन के आधार पर ही उन्होंने 'साहित्य' को ललित कलाओं के बीच स्थान दिया तथा परम्परागत व आधुनिक पद्धतियों को समान रूप से मान्यता प्रदान की। एक ओर जहां रस, अलंकार जैसे शास्त्र-निबद्ध विषयों का विवेचन किया, वहां उपन्यास, कहानी, निबन्धादि जैसी आधुनिक विधाओं की भी उपेक्षा नहीं की। 'रूपक-रहस्य' की रचना उन्होंने नाटक के सांगोपांग विवेचन को उद्देश्य बना कर की। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट में हिन्दी साहित्य शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों की सूची देकर उन्होंने आलोचना के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

'हिन्दी भाषा और साहित्य' नामक इतिहास भी विद्यार्थियों की आवश्यकता को दृष्टि में रखकर लिखा गया। आचार्य शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' साहित्येतिहास-लेखन की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम था। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर हम पायेंगे कि बाबू श्यामसुन्दर दास का इतिहास न तो शुक्लजी जैसी आलोचनात्मक विश्लेषण की परम्परा को विकसित करता है और न 'मिश्रबन्धु-विनोद' की तर्ज पर साहित्यकारों के विषय में पर्याप्त सूचनाएं देकर इतिवृत्तात्मक लेखन को कोई नया आयाम देता है। फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इसमें साहित्य को भाषा और ललित कलाओं के विकास के व्यापक संदर्भ में रखकर देखने का उनका प्रयास महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। उनकी आलोचक-दृष्टि की व्यापकता का अंदाज़ इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उन्होंने पाश्चात्य समीक्षा-पद्धति में चर्चित 'फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त', 'कला कल कला के लिए', 'यथार्थवाद' आदि सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय देते हुए, हिन्दी आलोचना के लिए उनकी प्रासंगिकता पर भी विचार किया है।

व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में उनकी 'कबीर-ग्रंथावली' एक महत्वपूर्ण कृति है। कबीर के प्रति अपनी श्रद्धा को बरकरार रखते हुए उन्होंने कबीर-काव्य एवं जीवन का सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत किया है। उन्होंने कबीर के सिद्धान्तों और उपदेशों को उनके व्यक्तित्व का ही अभिन्न अंग मानते हुए उनके मंगलकारी रूप की खोज की है। 'कबीर-ग्रंथावली' के सम्पादन के अतिरिक्त बाबू श्यामसुन्दर दास ने अपने शिष्य पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल से निर्गुण काव्यधारा पर शोध कराया! उनकी आलोचना मौलिक उद्भावनाओं, सृजनात्मक स्फूर्ति तथा पठनीयता की दृष्टि से भले ही विशिष्ट न रही हो, पर हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में उसकी उपयोगिता सन्देहास्पद नहीं है।

इस युग की आलोचना में जहां हमें शुक्लजी की विश्लेषणपरक आलोचना-पद्धति तथा बाबू

श्यामसुन्दरदास की विश्वविद्यालयी संतुलित पद्धति के दर्शन होते हैं, वहीं छायावादी कवियों द्वारा आलोचना को नयी दिशा देने के प्रयास भी देखे जा सकते हैं। इस आलोचना-पद्धति के विषय में खास बात यह है कि एक ओर वह प्राचीन शास्त्रवादी साहित्यिक मूल्यों का विरोध करती हैं और दूसरी ओर आचार्य द्विवेदी तथा आचार्य शुक्ल जैसे समालोचकों को भी चुनौती देती है। १९२६ में सुमित्रानन्दन पन्त का 'पल्लव' केवल सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं वल्कि आलोचना के लिए भी नए मूल्यों का आह्वान वनकर आया। पन्तजी ने स्पष्ट शब्दों में प्राचीन शास्त्रवादी पद्धति के प्रति अपनी अरुचि ज़ाहिर की—"हिन्दी में सत्समालोचना का बड़ा अभाव है। रस गंगाधर, काव्यादर्श आदि की वीणा के तार पुराने हो गए, वे स्थायी संचारी, व्यभिचारी आदि भावों का जो कुछ संचार अथवा व्यभिचार करवाना चाहते थे, करवा चुके। जब तक समालोचना का समयानुकूल रूपान्तर न हो, वह विश्वभारती के आधुनिक विकसित तथा परिष्कृत स्वरों में न अनुवादित हो जाय, तव तक हिन्दी में सत्साहित्य की सृष्टि नहीं हो सकती।" अतः पन्त ने हिन्दी के विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित होने का स्वागत किया और इस बात की आशा प्रकट की कि "विश्वविद्यालय के उत्साही हिन्दी-प्रेमी छात्र, जब तक हमारे वयोवृद्ध समालोचक, वेचारे विहारी और देव में कौन बड़ा है, इसके निर्णय के साथ उनके भाग्यों का निवटारा करने तथा 'सहित' शब्द में ष्यण प्रत्यय जोड़कर सत्साहित्य की रचना करने में व्यस्त हैं, तब तक हिन्दी में अंग्रेजी ढंग की समालोचना का प्रचार कर उसके पथ में प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।" (पल्लव, प्रवेश, पृष्ठ ५०) यही आशावादिता निराला को उन्हीं दिनों छात्रों के निमंत्रण पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में खींच कर ले गयी जहां उन्होंने 'रहस्यवाद' पर व्याख्यान दिया जिसका प्रमुख उद्देश्य शुक्ल जी की रहस्यवाद-विरोधी मान्यताओं का उत्तर देना था। इसी संदर्भ में आगे चलकर प्रसाद ने भी 'काव्य और कला तथा अन्य निवन्ध' में शुक्लजी के साथ अपने मतभेद का उद्‌घाटन किया। यहां यह वात भी ध्यान देने योग्य है कि छायावादी कवियों के आपसी मतभेद भी तीसरे दशक में, साहित्यिक मूल्यों के वहुस्तरीय संघर्ष के सूचक हैं। कहना न होगा कि इससे आलोचना के विकास में वाधा नहीं आयी वरन् उसे गति ही मिली। किन्तु छायावादी कवियों की आलोचनात्मक देन की चर्चा करते समय यह नहीं भूलना चाहिए कि वे लोग पेशेवर आलोचक नही थे। उनका प्रमुख कर्म कविता था और आलोचनाएं लगे हाथ उनके इसी रचना-कर्म की प्रक्रिया में होती चलती थीं।

श्री सुमित्रानन्दन पन्त (१९०० ई०) ने काव्य-भाषा और शिल्प के क्षेत्र में कुछ नयी मान्यताओं की स्थापना की। 'पल्लव' के प्रवेश में वे अनायास ही कविता को परिभाषित करते चलते हैं—'कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।' वहुत साफ न होते हुए भी यह परिभाषा कविता की व्यापकता और गम्भीरता की ओर संकेत करती है। काव्यभाषा के रूप में उन्होंने व्रजभाषा के स्थान पर खड़ी वोली को ही उचित तथा नये भाववोध के अनुरूप माना है—"हमें भाषा नहीं, राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है, पुस्तकों की नहीं, मनुष्यों की भाषा, जिसमें हम हंसते, रोते, खेलते-कूदते, लड़ते, गले मिलते, सांस लेते और रहते हैं, जो हमारे देश की मानसिक दशा का मुख दिखलाने के लिए आदर्श हो सके।" (पृ० २४) काव्यभाषा के संदर्भ में उन्होंने विम्व-योजना अर्थात् भाषा की चित्रात्मकता पर भी वल दिया है। खड़ी वोली कविता के लिए मुक्त छंद की उपयुक्तता पर विचार करते हुए उन्होंने अपने शिल्प-वोध का परिचय दिया है। 'पल्लव' के वाद भी अपने अन्य काव्य-संग्रहों में उन्होंने विस्तृत भूमिकाएं लिखकर आधुनिक कविता के आस्वाद के लिए भावानुरूप पृष्ठभूमि का निर्माण किया है। 'आधुनिक कवि-२' तथा 'पर्यालोचन' में छायावाद तथा प्रगतिवाद की दो काव्यधाराओं का संतुलित मूल्यांकन करते हुए उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि कवि होते हुए भी उनमें गम्भीर विवेचन की अपूर्व क्षमता विद्यमान थी।

गद्य को 'जीवन-संग्राम की भाषा' मानने वाले कवि **सूर्यकान्त त्रिपाठी** 'निराला' (१८९६-१९६१ ई०) की आलोचनाओं का स्वर विवादात्मक है। किन्तु विवादात्मक होते हुए भी वे एकदम व्यावहारिक आलोचक की तस्वीर पेश करती हैं। 'पन्त और पल्लव' शीर्षक निबंधमाला (१९२७ ई०) में उन्होंने पन्त-काव्य का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए उनके दोषों को ही दिखाया है। इसके विपरीत 'मेरे गीत और कला' में उन्होंने अपने पक्ष का समर्थन ही किया है। 'जूही की कली' शीर्षक कविता की विस्तृत अर्थ-मीमांसा के माध्यम से उन्होंने हिन्दी में व्यावहारिक समीक्षा की स्वस्थ पहल की। इस कविता के संदर्भ में हिन्दी में पहली बार 'आवयविक सिद्धान्त' (ऑर्गेनिक थियरी ऑफ़ पोएट्री) की स्थापना का श्रेय निराला को ही जाता है।

'परिमल की भूमिका' (१९३० ई०) भी, 'पल्लव' के 'प्रवेश' की भांति हिन्दी-आलोचना की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें उन्होंने मुक्त छंद का गहन विवेचन करते हुए हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक नए छन्दःशास्त्र की नींव रखी है। छन्द-मुक्ति और स्वच्छन्तावादी जीवन-मूल्य को एक सूत्र में बांधते हुए वे लिखते हैं—"मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना।" अपने कथन की पुष्टि के लिए वे वेदों का आश्रय लेते भी नजर आते हैं और इस बात पर बल देते हैं कि छन्द-रचना व मानव-वृत्तियों का गहरा सम्बन्ध है जो आदिकाल से चला आ रहा है—"वैदिक साहित्य में इस प्रकार की स्वच्छन्द सृष्टि को देखकर हम तत्कालीन मनुष्य-स्वभाव की मुक्ति का अन्दाज लगा लेते हैं। परवर्ती-काल में ज्यों-ज्यों चित्र-प्रियता चढ़ती गई है, साहित्य में स्वच्छन्दता की जगह नियन्त्रण तथा अनुशासन प्रबल होता गया है, यह जाति त्यों-त्यों कमजोर होती गई है। सहस्रों प्रकार के साहित्यिक बन्धनों में यह जाति स्वयं भी बंध गई,...अब उसे अपनी मुक्ति के लिए उन तमाम बन्धनों को पार करना होगा।...इस समय के और पराधीन काल के काव्यानुशासनों को देखकर हम जाति की मानसिक स्थिति को भी देख ले सकते हैं। अनुशासन के समुदाय चारों तरफ से उसे जकड़े हुए हैं। साहित्य के साथ-साथ राज्य, समाज, धर्म, व्यवसाय सभी कुछ पराधीन हो गए हैं।..."

'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध' **जयशंकर प्रसाद** (१८८९-१९३७ ई०) की उन साहित्यिक मान्यताओं का संग्रह है जिनकी रचना मूलतः छायावाद पर लगाए गए आरोपों के परिहार के उद्देश्य से की गई थी। उनका प्रमुख आग्रह यह रहा कि छायावाद को भारतीय चिन्तन-परम्परा के विकास की स्वाभाविक परिणति के रूप में स्वीकार कर लिया जाय। शुक्लजी उसे बंगला के माध्यम से आने वाला पश्चिमी प्रभाव मानते थे। अतः अन्य छायावादी कवियों की तरह प्रसाद के इस आग्रह का मुख्य कारण भी शुक्लजी की मान्यता का खण्डन करना ही था। यही नहीं, शुक्लजी की लोकमांगलिक रस-मीमांसा को सामान्य अनुभव स्तर से उठाकर वे दार्शनिक धरातल पर ले गए और काव्य का सम्बन्ध हृदय से आगे बढ़कर आत्मा से जोड़ने लगे। शुक्लजी के विवेचन में 'हृदय की मुक्ति का विधान करने वाली वाणी' प्रसाद की चिन्तन-धारा में 'काव्य' न होकर, 'आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति' हो गयी। कहना न होगा कि प्रसाद की काव्य-सम्बन्धी परिभाषा आत्मा की असाधारण अवस्था पर बल देती है, इसीलिए वह भारतीय दर्शन के अद्वैतवादी चिन्तन के निकट पड़ती है। शुक्लजी ने जिस 'आनन्द' शब्द को रसानुभूति से दूर रखा, प्रसाद ने उसकी स्थिति स्वीकार करते हुए रसानुभूति के कोटि-क्रम निर्धारित करने का स्पष्ट विरोध किया। प्रसाद ने आधुनिक युग में पहली बार, किसी भी कृति के सारभूत प्रभाव के आधार पर रस-निर्णय की चर्चा की। किन्तु भारतीय नाटकों में रस की आनन्दवादी परम्परा के साथ-साथ उन्होंने पाश्चात्य महाकाव्यों के त्रासदीय दृष्टिकोण को भी स्वीकार किया। यही कारण है कि वे करुण रस और करुणाजन्य दया व सहानुभूति के सूक्ष्म अन्तर को पकड़

पाने में सफल हुए।

प्रसाद का छायावाद-सम्बन्धी विवेचन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उन्होंने यथार्थवाद के संदर्भ में छायावाद की मौलिक व्याख्या प्रस्तुत की। यथार्थवाद की एक प्रमुख विशेषता 'लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात' के साथ छायावाद का आन्तरिक सम्बन्ध दर्शाते हुए उन्होंने अपनी आलोचनात्मक प्रतिभा के विकास की सूचना दी। व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में प्रसाद का योगदान प्रायः शून्य ही रहा। किन्तु छायावाद की आलोचना की दिशा में उन्होंने जो सहयोग दिया, वह स्मरणीय है।

महादेवी वर्मा (१९०७ ई०) ने जिस समय कविता के क्षेत्र में कदम रखा, तब तक छायावाद पर लगाए जाने वाले अधिकांश आक्षेपों का परिहार हो चुका था। अतः उनके लिए इस दिशा में कुछ नया करने की गुंजाइश नहीं थी। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती कवियों द्वारा कही गयी बातों को व्यवस्थित करके तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करने का ही प्रयत्न किया। 'यामा', 'दीपशिखा' की भूमिकाएं तथा 'विवेचनात्मक गद्य' के स्फुट लेख इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। बाद में इन्हीं का 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध' शीर्षक से परिवर्द्धित रूप प्रकाशित हुआ। छायावाद-सम्बन्धी प्रश्नों को निश्चित परिभाषाएं देने का उनका प्रयत्न सराहनीय है। इसके अतिरिक्त, 'गीत' विषयक निबन्ध में उन्होंने लोकगीतों के आधार पर गीतिकाव्य की विशेषताओं को रेखांकित किया। साथ ही तत्कालीन प्रगतिशील आन्दोलन के दबाव को महसूस करते हुए उन्होंने 'छायावाद' में छायावाद की सामाजिक और यथार्थपरक व्याख्या का प्रशंसनीय कार्य किया।

शुक्लोत्तर समीक्षा

जिस युग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का छायावाद-विरोधी स्वर उभर रहा था, उसी युग में छायावादी कवियों की आत्म-विश्लेषणात्मक आलोचना भी स्थान पा रही थी। साथ ही आलोचकों का एक ऐसा वर्ग भी सामने आ रहा था जिन्होंने छायावाद के प्रति सहृदयतापूर्ण दृष्टि अपनायी। उनकी सहानुभूतिपूर्ण व्याख्याओं में इसकी झलक साफ दिखाई पड़ती है। इनमें प्रमुख स्वर पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी (१९०६-१९६७ ई०) का रहा जिनकी गणना प्रभाववादी आलोचकों में की जाती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा के पक्ष में नहीं थे और उसे 'समीक्षा या आलोचना' कहने से भी परहेज रखते थे। किन्तु ऐसा करते समय वे शान्तिप्रिय द्विवेदी को इस दायरे से बाहर का आलोचक मानते रहे। अपने इतिहास में उन्होंने स्पष्ट लिखा—'पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी ने हमारे साहित्य-निर्माता' नाम की पुस्तक लिख कर हिन्दी के कई बर्तमान कवियों और लेखकों की प्रवृत्तियों और विशेषताओं का अपने ढंग पर अच्छा आभास दिया है।' (पृ० ६७७-७८) शुक्लजी के बाद भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उनकी गद्य-शैली उनके प्रभाववादी होने को बराबर पुष्ट करती रही। कवि पन्त की कविताओं की-सी छाया लिए हुए उनकी गद्य-शैली में पंत की उपलब्धियों का वर्णन करते-करते तन्मयता और मुग्ध भाव ही अधिक प्रकट होने लगता है। किन्तु इससे उनकी वैचारिक क्षमता और गम्भीरता के विषय में संदेह नहीं किया जा सकता। जहां कहीं वे काव्य की भावुक भूमि से उतरकर सैद्धांतिक प्रतिपादन करते हैं, वहां उनमें एक जागरूक और उद्बुद्ध आलोचक के रूप में परिचय होता है। हालांकि ऐसे स्थलों पर भी उनकी काव्यात्मक अभिरुचि झलक जाती है। उदाहरण के लिए शुक्लजी और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना करते समय उन्होंने जो विवेचन किया है, उसका एक स्थल द्रष्टव्य है—

"आचार्य शुक्लजी साहित्य का रसात्मक विवेचन जानते थे किन्तु उनकी समीक्षाओं में

सरसता का प्रायः अभाव है। कहीं-कहीं उनका आलंकारिक विश्लेषण ऐसा शुष्क और गरिष्ठ हो गया है कि काव्य का सहज आनन्द उपलब्ध नहीं होता जैसे, उनके द्वारा लिखित इतिहास में बिहारी का विवेचन। हृदय-स्पर्श के लिए समीक्षक के भीतर गीली मिट्टी (रसार्द्रता) होनी चाहिए।......विचारों में यत्र-तत्र शुक्लजी से मतभेद रखते हुए भी उनकी (हजारीप्रसाद द्विवेदी की) समीक्षाएं भी उन्हीं की तरह बौद्धिक स्तर पर हैं। (प्रतिष्ठान, पृ० १४८–४९)

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि शान्तिप्रिय द्विवेदी अपनी प्रभाववादी आलोचना-पद्धति के प्रति सजग थे। इसी कारण उन्हें उसके पक्ष में सफ़ाई देने की जरूरत महसूस हुई। किन्तु हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उनके इसी स्पष्टीकरण की आड़ लेकर यह सिद्ध किया कि जो आलोचना वस्तु-सत्य की अपेक्षा भावसत्य पर बल देती है, वह कृति के साथ बौद्धिक न्याय नहीं कर पाती—"गीली मिट्टी से बड़ी-बड़ी इमारतें कैसे बन सकती हैं?" आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की यह उक्ति इस बात का भी प्रमाण है कि छायावाद के रसज्ञ आलोचक के रूप में शान्तिप्रिय द्विवेदी की जो देन हिन्दी साहित्य को रही, उसे प्रायः उपेक्षित ही कर दिया गया। जबकि यह तथ्य भुलाया नहीं जा सकता कि शांतिप्रिय द्विवेदी ही वे पहले आलोचक थे जिन्होंने अपने युग की राजनैतिक चेतना और छायावाद की काव्य-चेतना के बीच के सम्बन्ध और संगति को रेखांकित किया। यही नहीं, उन्होंने ही पहली बार 'छायावाद' को गांधीवाद के 'साहित्यिक संस्करण' के नाम से अभिहित किया। अन्यथा इससे पूर्व छायावाद को बंगला के माध्यम से आया पश्चिमी प्रभाव ही माना जाता था। गांधीवादी और छायावादी साहित्य को केवल 'शिल्पभेद' से विभाजित करते हुए उन्होंने दोनों प्रवृत्तियों को तत्कालीन युग-चेतना का प्रतिबिम्ब माना—"गांधीवाद के साहित्यकार प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण और जैनेन्द्र तथा छायावाद के कलाकार प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी ये सब एक ही परिवार की प्रजाएं हैं, इनमें शिल्प-भेद है, मनोभेद नहीं।" (सामयिकी, पृष्ठ २२५)

उत्तर छायावाद के समालोचक होने के कारण शान्तिप्रिय द्विवेदी की आलोचना का जन्म तथा पोषण छायावादी कविता द्वारा ही हुआ। वैसे उनकी आलोचना में छायावादी कविता की व्यक्तिवादी चेतना और वस्तुनिष्ठता दोनों का मिश्रण है। जहां उनकी आलोचना दृष्टि व्यक्तिवादी चेतना से प्रेरित होती है वहां प्रभाववादी समीक्षा के दर्शन होते हैं और जहां वस्तुनिष्ठता की ओर उन्मुख होती है वहां समीक्षा का रूप स्वयं ही व्याख्यापरक हो उठता है। उनकी विचार-भूमि की चर्चा करते समय हम यह भी देखते हैं कि अपने 'इतिहास के आलोक' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने साहित्य की धारा को ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्परा के क्रमिक विकास के संदर्भ में रखकर देखा है तथा छायावाद को नयी प्रवृत्ति न मानकर मध्यकालीन मनोवृत्तियों का युग-सापेक्ष विकास माना है। इस विकास-क्रम को जोड़ने वाले सूत्रों की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं—"भारतेन्दु-युग से लेकर छायावाद-युग तक एक ही मनोजगत् का उत्तरोत्तर विकास है, क्योंकि इनका सांस्कृतिक धरातल एक है।" (सामयिकी, पृष्ठ २२५) लेकिन उनकी मौलिक दृष्टि का परिचय तो तब मिलता है जब वे मध्यकालीन मूल आध्यात्मिक और शृंगारिक भावना को द्विवेदी-काल से गुजारते हुए छायावाद तक ले आते हैं, साथ ही विभिन्न युगों की सामाजिक रूप-रेखाओं और अभिव्यक्तियों को भी स्पष्ट करते चलते हैं। अतः ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली के आविर्भाव के बावजूद वे मनोभावों में कोई परिवर्तन नहीं महसूस करते। ब्रजभाषा की शृंगारिकता उन्हें नाथूशर्मा की 'केरल की तारा' और गुप्तजी की नायिकाओं के रूपवर्णन में भी मुखर होती दिखाई पड़ती है। निष्कर्ष-रूप में वे कहते हैं—"ब्रजभाषा के समय में यदि सामन्तवादी सामाजिक वातावरण था, तो छायावाद-काल में पूंजीवादी सामाजिक वातावरण। दोनों में अन्तर केवल अतीत और वर्तमान साम्राज्यवाद का है। मूलतः दोनों की विषम सामाजिक

सम्पूर्ण काव्य में प्रतिबिम्बित होता है। 'काव्य के प्रति अप्रतिम निष्ठा' के कारण भी ये दोनों कवि वाजपेयीजी की दृष्टि में अन्य कवियों की अपेक्षा श्रेष्ठ हो जाते हैं।

लेकिन काव्य-सौष्ठव को जीवन-चेतना तथा नैतिकता से ऊपर रखने के कारण वे प्रेमचन्द तथा प्रगतिशील साहित्य के साथ समुचित न्याय न कर सके। साहित्य के मूल्यांकन में साहित्येतर मूल्यों की घुसपैठ उन्हें मान्य नहीं थी। किन्तु फिर भी उन्होंने छायावाद को राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की साहित्यिक अभिव्यक्ति माना : "नयी छायावादी काव्यधारा का भी एक आध्यात्मिक पक्ष है, परन्तु उसकी मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है। उसे हम बीसवी शताब्दी की वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति की प्रतिक्रिया भी कह सकते है।" (आधुनिक साहित्य, पृष्ठ ३१९) छायावाद को युगीन परिस्थितियों, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के सन्दर्भ मे रखकर देखना एक महत्वपूर्ण कार्य था। किन्तु छायावाद को यह औचित्य प्रदान करने के साथ-साथ उन्होंने उसके अभारतीय तत्वों का भी उद्‌घाटन किया तथा उसे एक ऐसा 'कला आंदोलन' माना जो योरोप के स्वच्छन्दतावाद से प्रभावित है।

शास्त्रीय आलोचना के क्षेत्र में यद्यपि वाजपेयीजी का विशेष योगदान नहीं रहा तथापि शुक्लजी द्वारा की गयी रसवादी विवेचना के प्रतिक्रियास्वरूप उन्होंने भी कुछ कहना आवश्यक समझा। 'अलौकिकता' के प्रश्न को लेकर वे शुक्लजी के साथ सहमत थे और रस को अलौकिक सिद्ध करने वाले तर्कों को पाखण्डपूर्ण समझते थे। 'रस' के 'लोकधर्मी' पक्ष पर उन्होंने शुक्लजी के विवेचन से जरा अलग हटकर नयी व्याख्या प्रस्तुत की तथा इस बात का विरोध किया कि 'रस' शास्त्रीय परम्परा के अनुसार हमेशा मूल्यांकन का आधार रहे। "जब हम कहते है कि 'रस' काव्य की आत्मा है तब हमारा आशय यह होता है कि प्रत्येक काव्य में, यदि वह वस्तुतः काव्य है, मानव-समाज के लिए आह्लादकारिणी भावात्मक, नैतिक और बौद्धिक अनुभूतियों का संकलन होगा ही। 'रस' शब्द से आचार्यों का आशय काव्य की इस मानवतावादी सत्ता से ही है।" (राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ ३३)

व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में उन्होंने निश्चय ही उल्लेखनीय काम किया है। यूं तो उनकी आलोचना की व्यापक परिधि में उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधाओं को भी स्थान मिला, पर कविता इन में सबसे प्रमुख है तथा उसकी समीक्षा द्वारा ही उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का सही अन्दाजा लगाया जा सकता है। उन्होंने न केवल मध्ययुगीन कवियों की कृतियों पर आलोचना लिखी अपितु गुप्त, प्रसाद और निराला जैसे आधुनिक कवियों के काव्य का तुलनात्मक विवेचन भी किया। किन्तु एक विरोध उनकी आलोचना में स्पष्टतः दिखाई देता है। समाजवादी विचारों के समर्थक होने और उन्हें 'साहित्यसृजन का अनिवार्य क्षेत्र' मानने के बावजूद उन्होंने कभी भी यशपाल, राहुल, नागार्जुन तथा केदारनाथ अग्रवाल जैसे प्रगतिवादी लेखकों पर कलम चलाने की आवश्यकता अनुभव नहीं की।

वैसे, साहित्य में आलोचना की भूमिका निश्चित करते समय उनके मन में कोई दुविधा नहीं थी। उनकी दृष्टि में समीक्षा न तो रचना विशेष की अनुचरी मात्र है, और न साहित्य का कठोरता से नियंत्रण करने वाली अधिनेत्री ही।...वह रचनात्मक साहित्य की प्रिय सखी, शुभैषिणी, सेविका और सहृदय स्वामिनी कही जा सकती है।" (नया साहित्य : नए प्रश्न, पृष्ठ २७) यही सहृदयता वाजपेयीजी के आलोचक-व्यक्तित्व में भी दिखाई पड़ती है। इसीलिए अपने समीक्षा-सम्बन्धी सिद्धान्तों में वे 'रचना में कवि की अन्तर्वृत्तियों के अध्ययन' को सबसे अधिक प्रमुखता देते है। किसी भी 'काव्य के जीवन-सम्बन्धी सामंजस्य और संदेश' का अध्ययन उनकी दृष्टि में समीक्षक का अन्तिम कार्य होना चाहिए। अतः इसमें संदेह नहीं रह जाता कि उनकी चेतना काव्य-रुचि और आलोचना-दृष्टि के निर्माण का सारा

श्रेय उदयकालीन छायावादी काव्य को ही जाता है। यह बात अलग है कि जैनेन्द्र, अज्ञेय और भगवती प्रसाद वाजपेयी के उपन्यासों पर विचार करते समय उनकी सामाजिक प्रश्नोन्मुखी प्रगतिवादी चेतना भी मुखरित हुई है। यही नहीं, 'नया साहित्य : नये प्रश्न' पुस्तक में जैनेन्द्र को प्रेमचंद की सापेक्षता में देखते हुए उन्होंने जैनेन्द्र जी की शक्तियों के साथ-साथ सीमाओं को भी रेखांकित किया है। गद्य-लेखक के रूप में 'आधुनिक काव्य की अन्तरंग', 'छायावाद में अनुभूति और कल्पना', 'प्रसाद का व्यक्तित्व और कृतित्व', 'प्रसाद की मालविका', 'लक्ष्मीनारायण मिश्र', 'नये उपन्यास', 'व्यक्तिवादी उपन्यास', 'नवीन कथा-साहित्य : विचार पक्ष', 'हिन्दी समीक्षा का विकास', 'द्विवेदी युग की समीक्षा को देन' तथा 'नव्यतम समीक्षा-शैलियां' आदि निबन्ध उनकी बहुरंगी प्रतिभा के प्रमाण हैं। इन्हीं को दृष्टि में रखकर सम्भवतः डा० देवराज ने उन्हें अपने युग का लेखक माना है, क्योंकि उन्होंने न केवल नयी प्रतिभाओं का समर्थन किया, आधुनिक हिन्दी के पाठकों का रुचि-परिष्कार किया बल्कि आलोचना-क्षेत्र में नयी दृष्टियों के प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त किया (डा० देवराज : आधुनिक समीक्षा, पृष्ठ ११५) वाजपेयीजी को शुक्लजी की कोटि का विचारक न मानते हुए भी उन्होंने रस-संवेदना की दृष्टि से उन्हें शुक्लजी से अधिक परिपक्व स्वीकार किया।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (१९०७ ई०) के विषय में प्रायः यह कहा जाता रहा है कि सर्जनात्मक साहित्य में उनकी प्रतिभा जितनी निखरी है, आलोचना के क्षेत्र में उतनी नहीं। तात्पर्य यह है कि सर्जक के रूप में साहित्य को उन्होंने जितना दिया उसी अनुपात में वे आलोचक के रूप में न दे सके। किन्तु दोनों के बीच भेद के समर्थक यह भूल जाते हैं कि सर्जनात्मक साहित्यकार ही आलोचक के पद पर बैठकर रचना के प्रति अधिक सहानुभूतिशील और अन्तरंग दृष्टिकोण अपना सकता है। द्विवेदीजी ने स्वयं समीक्षा के लिए रचनाकार की अनुभूति-प्रवणता और बौद्धिक विश्लेषणपरकता दोनों को आवश्यक माना है—"जब तक सहृदय का व्यक्तित्व कवि के साथ एकाकार नहीं हो जाता तब तक रस का अनुभव नहीं हो सकता। समीक्षक जब तक अपना अहंकार लेकर बैठा रहेगा तब तक रस नहीं पा सकेगा। स्वयं शुक्लजी ने कहा है कि "काव्य का जो चरम लक्ष्य सर्वभूत को आत्मभूत कराके अनुभव कराना है उसके साधन में ही अहंकार का त्याग है।" (साहित्य का साथी) अतः द्विवेदीजी की आलोचना में सर्जनात्मकता का सौन्दर्य स्पष्ट दिखाई देता है। द्विवेदीजी की मूलतः रचनात्मक दृष्टि किसी भी रचना के मूल सौन्दर्य और उसके विधायक तत्वों तक पहुंचने का प्रयत्न करती है। कहना न होगा कि वे साहित्य के सौन्दर्य के आस्वाद और मूल्यांकन में साहित्यिक मानदण्डों के उपयोग पर बल देते थे। किन्तु साथ ही साहित्य का सम्बन्ध यथार्थ जगत् से मानते थे—"काव्य भी स्थूल जगत् से विच्छिन्न होकर नहीं रह सकता, क्योंकि शब्द और अर्थ ही उसके शरीर हैं और अर्थ शब्दों द्वारा सूचित बाह्य सत्ता को प्रकट करते हैं। एक व्यक्ति के चित्त में स्थित अर्थ को दूसरे के चित्त में प्रवेश कराके ही शब्द सार्थक होता है।" (विचार प्रवाह, पृष्ठ १५०) इससे स्पष्ट है कि साहित्य के संदर्भ में सामाजिकता की चर्चा करते हुए द्विवेदीजी किसी राजनीतिक या साम्प्रदायिक विचार से प्रेरित होकर उसे साहित्य पर आरोपित नहीं करते अपितु साहित्य का मूल उत्स और विषय मानते हैं। अतः साहित्येतर बाह्य सत्ता, साहित्य या कला के भीतर ठीक उसी रूप में गृहीत नहीं होती। उनके मत में वह एक संश्लिष्ट व्यापार है। शुक्लोत्तर-युग के अन्य आलोचकों से वे इस अर्थ में भिन्न थे कि उन्होंने साहित्य की प्रवृत्तियों और व्यक्तियों को देश-काल-व्यापी सांस्कृतिक संदर्भ में रखकर देखने समझने का आग्रह किया। शुक्लजी से तो उनका साहित्य के प्रति सम्पूर्ण दृष्टिकोण को लेकर मतभेद था। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' (१९४० ई०) नामक ग्रंथ में उन्होंने हिन्दी साहित्य को संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य एवं ब्राह्मण, बौद्ध, जैन, नाथ, सिद्ध सन्त आदि सभी धर्मों के समन्वय से उपजी भारतीय चिन्ता के स्वाभाविक विकास

की दृष्टि से देखा है। दूसरी ओर भारतीय विचारधारा को समझने के लिए हिन्दी साहित्य का कितना महत्व है, इस विषय पर प्रकाश डाला है—"कम-से कम भारतवर्ष के आधे हिस्से की सहस्र-वर्षव्यापी आशा-आकांक्षाओं का मूर्तिमान प्रतीक यह हिन्दी साहित्य अपने-आपमें एक ऐसी शक्ति-शाली वस्तु है कि इसकी उपेक्षा भारतीय विचारधारा को समझने में घातक सिद्ध होगी।" उन्होंने पूर्ववर्ती आलोचकों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली हिन्दी साहित्य की अध्ययन-दृष्टियों का विरोध किया तथा उन्हें अनुपयुक्त ठहराया। ऐसा करते समय उन्होंने आचार्य शुक्ल तथा उनके इतिहास में मध्ययुगीन साहित्य-सम्बन्धी दृष्टिकोण पर विशेष रूप से आक्षेप किया—"दुर्भाग्यवश, हिन्दी साहित्य के अध्ययन और लोक-चक्षु-गोचर करने का भार जिन विद्वानों ने अपने ऊपर लिया है, वे भी हिन्दी साहित्य का सम्बन्ध हिन्दू जाति के साथ ही अधिक बतलाते हैं और इस प्रकार अनजान आदमी को दो ढंग से सोचने का मौका देते हैं—एक यह कि हिन्दी साहित्य एक हतदर्प पराजित जाति की सम्पत्ति है, इसलिए उसका महत्व जाति के राजनीतिक उत्थान-पतन के साथ अंगांगि-भाव से सम्बद्ध है, और दूसरा यह कि ऐसा न भी हो तो भी वह एक निरंतर पतनशील जाति की चिंताओं का मूर्त प्रतीक है, जो अपने-आपमें कोई विशेष महत्व नहीं रखता। मैं इन दोनों बातों का प्रतिवाद करता हूं…। ऐसा करके मैं इस्लाम के महत्व को नहीं भूल रहा हूं, लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूं कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का रूप बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।"

जहां शुक्लजी ने साहित्यिक परिवर्तनों के मूल में राजनीतिक उथल-पुथल को कारण माना था वहां उन्होंने भक्ति-साहित्य को राजनीतिक घटनाओं का प्रतिफलन न मानकर सांस्कृतिक घटनाओं के शताब्दियों से चले आ रहे प्रभाव का परिणाम माना है। न केवल यही, बल्कि उन्होंने भक्तिकाल को सगुण-निर्गुण दो खण्डों में विभाजित करने से इन्कार कर दिया और उसे एक ही विराट् भक्ति-चेतना के रूप में प्रतिष्ठित किया। द्विवेदीजी के व्यापक दृष्टिकोण का प्रमाण वहां मिलता है जहां वे साहित्य के संदर्भ में चित्र, संगीत, नृत्य-विज्ञान, इतिहास, कला और ज्ञान आदि की चर्चा करते हैं और उन्हें साहित्य के अध्ययन के लिए प्रासंगिक मानते हैं। 'विचार-प्रवाह' में वे लिखते हैं—"वस्तुतः अर्थहीन छंद-प्रवाह ही संगीत है। संगीत में बाह्य जगत् की उस सत्ता से जो शब्द द्वारा प्रकाशित होती है, कम-से-कम योग होता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गणित में उस अन्तर सत्ता से जो आवेग कंपित स्वर से प्रकाशित होती है, कम से कम योग होता है। चेतना के एक प्रान्त पर संगीत है दूसरे पर गणित। संगीत में जिसे स्वर कहते हैं वह एक प्रकार का वेग ही है। बाह्य अर्थों से युक्त होने पर वह आवेग के रूप में प्रकट होता है। परन्तु जिस प्रकार शब्द-प्रकाश्य अर्थ के द्वारा बाह्य विषय सत्ता से बंधा रहता है, उस प्रकार संगीत नहीं बंधा रह सकता। वह अपने आप ही स्पंदित होता है। ताल उसमें उसी प्रकार की अनुभूति-क्षमता भरता रहता है जिस प्रकार छन्द आवेग में।…काव्य द्वारा और संगीत द्वारा स्पंदित मानव-चित्त के आवेगों में थोड़ा अन्तर होता है। काव्य में आवेग द्वारा जो स्पन्दन उत्पन्न होता है वह बाह्य सत्ता से पूर्णतया सम्बद्ध होता है। हम बाह्य घटनाओं की अनुभूति से चालित होते रहते हैं। काव्य पाठक में सुख-दुःख का आवेग उत्पन्न करता है। मनुष्य दूसरों के सुख-दुःख से प्रभावित होता है, उसके साथ उसकी संवेदना होती है और अन्त तक उस सुख-दुःख को अनुभव करने लगता है। इस प्रकार काव्य मनुष्य-मनुष्य के भीतर वर्तमान एकत्व का प्रतिष्ठापक हो जाता है।"

द्विवेदीजी जब यह कहते हैं कि सांस्कृतिक नैरंतर्य एवं अखंडता काव्य में एक भिन्न स्तर पर गृहीत होती है तो वे उसके अध्ययन की पद्धति भी सामने रखते हैं। उनके अनुसार यह काव्य रूढ़ियों और कवि-प्रसिद्धियों द्वारा सम्भव है जो किसी भी देश अथवा जाति की सांस्कृतिक चेतना का प्रतिफलन होती हैं। 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता के प्रश्न पर विचार करते हुए उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना-

प्रक्रिया में कथानक-रूढ़ियों के अध्ययन के माध्यम से इसे व्यावहारिक रूप में रख कर दिखाया है। इस तरह रूप में साहित्यिक रुचि में परिवर्तन करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। जनता की रुचि को ध्यान में रखते हुए ही वे साहित्य के निर्माण में ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भों को महत्व देते हैं। यह उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रभाव था, कि मनुष्य को वे साहित्य का लक्ष्य मानते थे। कहना न होगा कि शुक्लजी के लोकमंगलवाद का छायाभास उनके इस विचार में मिलता है। इसी कारण, शुक्लोत्तर आलो-चकों की पंक्ति में वे ही प्रगतिशील आन्दोलन की ओर सर्वाधिक झुके दिखाई देते हैं। इसका प्रमाण है उनके द्वारा की गई प्रेमचंद-साहित्य की परख एवं प्रतिष्ठा जो इस युग के किसी अन्य आलोचक ने नहीं की थी। किन्तु अपनी संतुलित दृष्टि के कारण उन्होंने कबीर, तुलसी, सूर, जायसी, प्रसाद, पंत, निराला महादेवी और अज्ञेय की भी उपेक्षा नहीं की। वे जीवन में सामंजस्य और समन्वय के लिए प्रयत्नशील थे। साहित्य के संदर्भ में सौन्दर्य की चर्चा करते हुए वे उसे सामंजस्य का पर्याय मानते हैं और उसका सम्बन्ध व्यापक सामाजिक यथार्थ की चेतना से जोड़ते हैं—"साहित्य के उपासक अपने पैर के नीचे की मिट्टी की उपेक्षा नहीं कर सकते। हम सारे बाह्य जगत् को असुन्दर छोड़कर सौन्दर्य की सृष्टि नहीं कर सकते। सुन्दरता सामंजस्य का नाम है। जिस दुनिया में छोटाई-बड़ाई में, धनी और निर्धन में, ज्ञानी और अज्ञानी में, आकाश और पाताल का अन्तर हो, वह दुनिया सामंजस्य की नहीं कही जा सकती और इसलिए वह सुन्दर भी नहीं है। इस बाह्य असुन्दरता के ढूह पर खड़े होकर आंतरिक सौन्दर्य की उपासना नहीं हो सकती। हमें उस बाह्य असौन्दर्य को ढेलना पड़ेगा। निरन्न, निर्वसन जनता के बीच खड़े होकर आप परियों की कल्पना नहीं कर सकते। साहित्य सौन्दर्य का उपासक है। इसलिए साहित्य को असामंजस्य को दूर करने का प्रयत्न पहले करना होगा। सौन्दर्य और असौन्दर्य का कोई समझौता नहीं हो सकता। सत्य अपना पूरा मूल्य चाहता है। उसे पाने का सीधा और एकमात्र रास्ता उसकी कीमत चुका देनी ही है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं है। हमारे देश का बाह्य रूप न तो आंखों को प्रीति देने लायक है और न कानों को, न मन को न बुद्धि को। यह सच्चाई है।" (अशोक के फूल, पृष्ठ १६८-६६) द्विवेदी जी की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए डा० देवराज ने 'प्रतिक्रियाएं' में लिखा था —"द्विवेदीजी मुख्यतः एक पंडित हैं, एक महापंडित या स्कॉलर, जिनका प्रमुख क्षेत्र सांस्कृतिक इतिहास है। साथ ही एक व्यक्तित्व में मानववादी जीवन-दृष्टि का आवेगात्मक आकलन भी है।" (पृष्ठ ५६) किन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि समसामयिक व आधुनिक प्रश्नों के प्रति उन्होंने कोई उत्साह नहीं दिखाया। 'आधुनिकता' के लक्षण की चर्चा करते हुए उन्होंने उसे भावुकता-विहीन माना है —"अत्यन्त आधुनिक कवि इस भावुकता को पसंद नहीं करता। वह वस्तु को आत्मनिरपेक्ष भाव से देखने को ही सच्चा देखना मानता है। यह बात उसके निकट सत्य नहीं है कि वस्तु को उसने वैसा देखा, बल्कि यह कि वस्तु उसके बिना भी वैसी है। इस वैज्ञानिक चित्तवृत्ति का प्रधान आनन्द कौतूहल में है, उत्सुकता में है, आत्मीयता में नहीं।" (साहित्य-सहचर, पृष्ठ २८)

द्विवेदीजी ने समसामयिकता, आधुनिकता और परम्परागतता को कुछ इस प्रकार समन्वित कर दिया है कि उनमें बहुत स्पष्ट भेद करना कठिन है। उनकी कबीर की समीक्षा इसका अच्छा उदा-हरण है जहां एक ओर वे अपने इतिहास-बोध का परिचय देते हुए धर्म, समाज, जाति, व्यवस्था और संस्कार तथा पूर्ववर्ती परम्परा के परिप्रेक्ष्य में कबीर को प्रतिष्ठित करते हुए उनके स्वभाव की फक्कड़ता और मस्ती को रेखांकित करते हैं। द्विवेदीजी के मत में वे वाणी के डिक्टेटर हैं। कबीर के इन गुणों के प्रति उनकी जागरूकता उन्हें सहज ही दिनकर, बच्चन, नवीन तथा भगवतीचरण वर्मा जैसे उत्तर-छाया-वादी कवियों से जोड़ती है। कबीर के जिस फक्कड़पन और मस्ती से वे प्रभावित हुए, वह असल में उनके युग में ही उपस्थित थी। युग का भावबोध कवि के साथ-साथ आलोचक को भी प्रभावित करता है तथा

की दृष्टि से देखा है। दूसरी ओर भारतीय विचारधारा को समझने के लिए हिन्दी साहित्य का कितना महत्व है, इस विषय पर प्रकाश डाला है—"कम-से कम भारतवर्ष के आधे हिस्से की सहस्र-वर्षव्यापी आशा-आकांक्षाओं का मूर्तिमान प्रतीक यह हिन्दी साहित्य अपने-आपमें एक ऐसी शक्तिशाली वस्तु है कि इसकी उपेक्षा भारतीय विचारधारा को समझने में घातक सिद्ध होगी।" उन्होंने पूर्ववर्ती आलोचकों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली हिन्दी साहित्य की अध्ययन-दृष्टियों का विरोध किया तथा उन्हें अनुपयुक्त ठहराया। ऐसा करते समय उन्होंने आचार्य शुक्ल तथा उनके इतिहास में मध्ययुगीन साहित्य-सम्बन्धी दृष्टिकोण पर विशेष रूप से आक्षेप किया—"दुर्भाग्यवश, हिन्दी साहित्य के अध्ययन और लोक-चक्षु-गोचर करने का भार जिन विद्वानों ने अपने ऊपर लिया है, वे भी हिन्दी साहित्य का सम्बन्ध हिन्दू जाति के साथ ही अधिक बतलाते हैं और इस प्रकार अनजान आदमी को दो ढंग से सोचने का मौका देते है—एक यह कि हिन्दी साहित्य एक हतदर्प पराजित जाति की सम्पत्ति है, इसलिए उसका महत्व जाति के राजनीतिक उत्थान-पतन के साथ अंगांगि-भाव से सम्बद्ध है, और दूसरा यह कि ऐसा न भी हो तो भी वह एक निरंतर पतनशील जाति की चिंताओं का मूर्त प्रतीक है, जो अपने-आपमें कोई विशेष महत्व नही रखता। मै इन दोनों बातों का प्रतिवाद करता हूं···। ऐसा करके मैं इस्लाम के महत्व को नहीं भूल रहा हूं, लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूं कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का रूप बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।"

जहां शुक्लजी ने साहित्यिक परिवर्तनों के मूल में राजनीतिक उथल-पुथल को कारण माना था वहां उन्होंने भक्ति-साहित्य को राजनीतिक घटनाओं का प्रतिफलन न मानकर सांस्कृतिक घटनाओं के शताब्दियों से चले आ रहे प्रभाव का परिणाम माना है। न केवल यही, बल्कि उन्होंने भक्तिकाल को सगुण-निर्गुण दो खण्डों में विभाजित करने से इन्कार कर दिया और उसे एक ही विराट् भक्ति-चेतना के रूप में प्रतिष्ठित किया। द्विवेदीजी के व्यापक दृष्टिकोण का प्रमाण वहां मिलता है जहां वे साहित्य के संदर्भ में चित्र, संगीत, नृत्य-विज्ञान, इतिहास, कला और ज्ञान आदि की चर्चा करते है और उन्हें साहित्य के अध्ययन के लिए प्रासंगिक मानते है। 'विचार-प्रवाह' में वे लिखते हैं—"वस्तुतः अर्थहीन छंद-प्रवाह ही संगीत है। संगीत में बाह्य जगत् की उस सत्ता से जो शब्द द्वारा प्रकाशित होती है, कम-से-कम योग होता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गणित में उस अन्तर सत्ता से जो आवेग कंपित स्वर से प्रकाशित होती है, कम से कम योग होता है। चेतना के एक प्रान्त पर संगीत है दूसरे पर गणित। संगीत में जिसे स्वर कहते है वह एक प्रकार का वेग ही है। बाह्य अर्थो से युक्त होने पर वह आवेग के रूप में प्रकट होता है। परन्तु जिस प्रकार शब्द-प्रकाश्य अर्थ के द्वारा बाह्य विषय सत्ता से बंधा रहता है, उस प्रकार संगीत नहीं बंधा रह सकता। वह अपने आप ही स्पंदित होता है। ताल उसमें उसी प्रकार की अनुभूति-क्षमता भरता रहता है जिस प्रकार छन्द आवेग में।···काव्य द्वारा और संगीत द्वारा स्पंदित मानव-चित्त के आवेगों में थोड़ा अन्तर होता है। काव्य में आवेग द्वारा जो स्पन्दन उत्पन्न होता है वह बाह्य सत्ता से पूर्णतया सम्बद्ध होता है। हम बाह्य घटनाओं की अनुभूति से चालित होते रहते है। काव्य पाठक में सुख-दुःख का आवेग उत्पन्न करता है। मनुष्य दूसरों के सुख-दुःख से प्रभावित होता है, उसके साथ उसकी संवेदना होती है और अन्त तक उस सुख-दुःख को अनुभव करने लगता है। इस प्रकार काव्य मनुष्य-मनुष्य के भीतर वर्तमान एकत्व का प्रतिष्ठापक हो जाता है।"

द्विवेदीजी जब यह कहते हैं कि सांस्कृतिक नैरंतर्य एवं अखंडता काव्य में एक भिन्न स्तर पर गृहीत होती है तो वे उसके अध्ययन की पद्धति भी सामने रखते हैं। उनके अनुसार यह काव्य रूढ़ियों और कवि-प्रसिद्धियों द्वारा सम्भव है जो किसी भी देश अथवा जाति की सांस्कृतिक चेतना का प्रतिफलन होती है। 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता के प्रश्न पर विचार करते हुए उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना-

प्रक्रिया में कथानक-रूढ़ियों के अध्ययन के माध्यम से इसे व्यावहारिक रूप में सच कर दिखाया है। व्यापक रूप से साहित्यिक रुचि में परिवर्तन करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। जनता की रुचि को ध्यान में रखते हुए ही वे साहित्य के निर्माण में ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भों को महत्व देते हैं। यह उनके मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रभाव था, कि मनुष्य को वे साहित्य का लक्ष्य मानते थे। कहना न होगा कि शुक्लजी के लोकमंगलवाद का छायाभास उनके इस विचार में मिलता है। इसी कारण शुक्लोत्तर आलोचकों की पंक्ति में वे ही प्रगतिशील आन्दोलन की ओर सर्वाधिक झुके दिखाई देते हैं। इसका प्रमाण है उनके द्वारा की गई प्रेमचंद-साहित्य की परख एवं प्रतिष्ठा जो इस युग के किसी अन्य आलोचक ने नहीं की थी। किन्तु अपनी संतुलित दृष्टि के कारण उन्होंने कबीर, तुलसी, सूर, जायसी, प्रसाद, पंत, निराला महादेवी और अज्ञेय की भी उपेक्षा नहीं की। वे जीवन में सामंजस्य और समन्वय के लिए प्रयत्नशील थे। साहित्य के संदर्भ में सौन्दर्य की चर्चा करते हुए वे इसे सामंजस्य का पर्याय मानते हैं और इसका सम्बन्ध व्यापक सामाजिक यथार्थ की चेतना से जोड़ते हैं—"साहित्य के उपासक अपने पैर के नीचे की मिट्टी की उपेक्षा नहीं कर सकते। हम सारे बाह्य जगत् को असुन्दर छोड़कर सौन्दर्य की सृष्टि नहीं कर सकते। सुन्दरता सामंजस्य का नाम है। जिस दुनिया में छोटाई-बड़ाई में, धनी और निर्धन में, ज्ञानी और अज्ञानी में, आकाश और पाताल का अन्तर हो, वह दुनिया सामंजस्य की नहीं कही जा सकती और इसलिए वह सुन्दर भी नहीं है। इस बाह्य असुन्दरता के ढूह पर खड़े होकर आंतरिक सौन्दर्य की उपासना नहीं हो सकती। हमें इस बाह्य असौन्दर्य को देखना पड़ेगा। निरन्न, निर्वसन जनता के बीच खड़े होकर आप परियों की कल्पना नहीं कर सकते। साहित्य सौन्दर्य का उपासक है। इसलिए साहित्य को असामंजस्य को दूर करने का प्रयत्न पहले करना होगा। सौन्दर्य और असौन्दर्य का कोई समझौता नहीं हो सकता। सत्य अपना पूरा मूल्य चाहता है। उसे पाने का सीधा और एकमात्र रास्ता उसकी कीमत चुका देनी ही है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं है। हमारे देश का बाह्य रूप न तो आंखों को प्रीति देने लायक है और न कानों को, न मन को न बुद्धि को। यह सच्चाई है।" (अशोक के फूल, पृष्ठ १६८-६६) द्विवेदी जी की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए डा० देवराज ने 'प्रतिक्रियाएं' में लिखा था —"द्विवेदीजी मुख्यतः एक पंडित हैं, एक महापंडित या स्कॉलर, जिनका प्रमुख क्षेत्र सांस्कृतिक इतिहास है। साथ ही एक व्यक्तित्व में मानववादी जीवन-दृष्टि का आवेशात्मक आकलन भी है।" (पृष्ठ ५६) किन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि समसामयिक व आधुनिक प्रश्नों के प्रति उन्होंने कोई उत्साह नहीं दिखाया। 'आधुनिकता' के लक्षण की चर्चा करते हुए उन्होंने उसे भावुकता-विहीन माना है —"अत्यन्त आधुनिक कवि इस भावुकता को पसंद नहीं करता। वह वस्तु को आत्मनिरपेक्ष भाव से देखने को ही सच्चा देखना मानता है। यह बात उसके निकट सत्य नहीं है कि वस्तु को उसने वैसा देखा, बल्कि यह कि वस्तु उसके बिना भी वैसी है। इस वैज्ञानिक चित्तवृत्ति का प्रधान आनन्द कौतूहल में है, उत्सुकता में है, आत्मीयता में नहीं।" (साहित्य-सहचर, पृष्ठ २८)

द्विवेदीजी ने समसामयिकता, आधुनिकता और परम्परागतता को कुछ इस प्रकार समन्वित कर दिया है कि उनमें बहुत स्पष्ट भेद करना कठिन है। उनकी कबीर की समीक्षा इसका अच्छा उदाहरण है जहां एक ओर वे अपने इतिहास-बोध का परिचय देते हुए धर्म, समाज, जाति, व्यवस्था और संस्कार तथा पूर्ववर्ती परम्परा के परिप्रेक्ष्य में कबीर को प्रतिष्ठित करते हुए उनके स्वभाव की फक्कड़ता और मस्ती को रेखांकित करते हैं। द्विवेदीजी के मत में वे वाणी के डिक्टेटर हैं। कबीर के इन गुणों के प्रति उनकी जागरूकता उन्हें सहज ही दिनकर, बच्चन, नवीन तथा भगवतीचरण वर्मा जैसे उत्तर-छायावादी कवियों से जोड़ती है। कबीर के जिस फक्कड़पन और मस्ती से वे प्रभावित हुए, वह अगल में उनके युग में ही उपस्थित थी। युग का भावबोध कवि के साथ-साथ आलोचक को भी प्रभावित करता है तथा

उनकी रुचि व काव्य-संस्कार का निर्माण करता है।

जिस इतिहास-बोध का परिचय उन्होंने काव्य के क्षेत्र में दिया उसका काव्यशास्त्रीय चर्चा में प्रतिफलन स्वाभाविक ही था। 'रस सिद्धांत' की ऐतिहासिक व्याख्या उन्होंने भारतीयता के उत्थान एवं पतन को दृष्टि में रखकर की। उन्होंने सिद्ध किया कि भरत के साथ रस-सिद्धांत का जो उदात्त सात्विक रूप उभर कर आया था, वह पंडितराज तक आते-आते शृंगार तक सीमित हो गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नाट्य रस' (दशरूपक-भूमिका), शब्द-शक्तियों, छन्द-तत्व और लय-तत्व आदि पर भी सम्यक् रूप से विचार किया है।

सैद्धांतिक विवेचन में उन्होंने जिस प्रकार दृष्टि की मौलिकता का परिचय दिया है, उसी के अनुरूप व्यावहारिक आलोचना की दिशा में भी उन्होंने सर्वथा पूर्वाग्रहमुक्त होकर विश्लेषण-मूल्यांकन किया है। इसी कारण वे तुलसी के समन्वयवाद, कबीर के बाह्याचार विरोध, तथा सूर की आध्यात्मिकता में मानवहित का ही अनुसंधान करते हैं। साहित्य के अध्ययन की यह दृष्टि पूर्ववर्ती आलोचकों से भिन्न थी और आलोचना के क्षेत्र में एक नये ढंग की समीक्षा-पद्धति के आरम्भ की सूचक थी। साहित्य के पुराने सिद्धांतों या शाश्वत प्रवृत्तियों की कसौटी पर कसने के पक्ष में वे नहीं थे। इसके विपरीत उन्होंने अपने युग के सामाजिक यथार्थ एवं चेतना से उपजे प्रासंगिक प्रश्नों के आधार पर साहित्य के मूल्यांकन की अपील की। शुक्लोत्तर-युग के वरिष्ठ आलोचकों के बीच आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्थान इसीलिए महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट हो जाता है।

डा० नगेन्द्र (१९१५ ई०—) ने जब आलोचना की शुरुआत की तब तक नन्ददुलारे वाजपेयी और हजारीप्रसाद द्विवेदी बहुत आगे निकल चुके थे। यह शुरुआत १९३७ ई० में प्रकाशित उनके पहले समीक्षात्मक निबन्ध 'छायावाद' से हुई थी। हालांकि इससे पहले वे समकालीन कृतियों पर छुटपुट समीक्षात्मक लेख लिखते रहे थे। किन्तु क्रमशः उनका झुकाव शास्त्रीय आलोचना की ओर हो गया। उन्होंने 'आस्था के चरण' में अपने समकालीन किन्तु वरिष्ठ आलोचकों की चर्चा 'आधुनिक हिन्दी काव्य के आलोचक' के रूप में की। छायावाद के सम्बन्ध में वाजपेयीजी की निर्भीक, निर्भ्रान्ति दृष्टि की उन्होंने सराहना की लेकिन छायावाद पर दार्शनिकता का आवरण चढ़ाने के लिए उन्हें दोषी भी ठहराया। हजारीप्रसाद द्विवेदी के संस्कृत साहित्य के गहन अध्ययन से डा० नगेन्द्र काफी प्रभावित हुए तथा उनकी आलोचना में शास्त्रीय पुट उन्हें रास आया। शान्तिप्रिय द्विवेदी की आलोचना उनकी दृष्टि में पाठकों के लिए बहुत उपयोगी नहीं थी क्योंकि, वे छायावाद के रस का आस्वादन तो करा सके, लेकिन स्वरूप स्पष्ट नहीं कर सके (पृष्ठ ३२५)। इससे एक बात बहुत साफ हो जाती है कि वे आलोचकों की शक्ति व सीमाओं के प्रति सजग थे। अतः उनकी आलोचना के गुणों को आत्मसात् करके दोषों का बहिष्कार करने की सूझबूझ उनमें थी। यही कारण है कि उन्होंने वाजपेयीजी की तरह छायावाद पर आध्यात्मिकता का आरोपण नहीं किया बल्कि नए ढंग से उसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। तार्किकता डा० नगेन्द्र की आलोचना-शैली की प्रमुख विशेषता रही। नवीन के प्रति आग्रह या पुरातन के प्रति निष्ठा दोनों के पीछे उन्होंने तर्कसम्मत आधार देने का प्रयास किया। इसीलिए रूढ़िवादिता का खतरा मोल लेते हुए भी उन्होंने शास्त्रसिद्ध आलोचना का सहारा लिया। एक दूसरी विशेषता उनकी आलोचना-दृष्टि में प्रमुख रूप से देखने को मिलती है, वह है अनेकता में एकता की खोज का प्रयास। ऐसा करते हुए उन्होंने किसी मौलिक कार्य का सूत्रपात नहीं किया अपितु भारतीय चिंतन-परम्परा को ही आगे बढ़ाने का दायित्व निभाया। प्राचीन साहित्य, आधुनिक साहित्य, पश्चिमी और पूर्वी साहित्य, बिम्बवादी अथवा इतिवृत्तात्मक साहित्य —उनके अनुसार सभी का आधारभूत तत्व अनुभूति है। डा० नगेन्द्र का मत था कि अनुभूति देश-काल की सीमाओं के परे, काव्य की पहली शर्त होती है। अनुभूतिशून्य काव्य काव्य नहीं होता। 'मेरी

साहित्यिक मान्यताएं' शीर्षक निबन्ध के अन्तर्गत उन्होंने लिखा है—"भाव, कल्पना और बुद्धि में, मैं भाव को ही आधार मानता हूं। अत: काव्य का आस्वाद मूलत: भाव का आस्वाद है—इन्द्रियगम्य प्रकृत भाव का नहीं वरन् कल्पनागम्य शुद्ध अथवा निर्वैयक्तिक भाव का।" उनके प्रारम्भिक निबन्धों में जहां 'साहित्य के मान' (१९५४), 'कविता क्या है' (१९६०), 'साहित्य का धर्म' (१९६०) जैसे प्रश्नों पर विचार किया गया है वहां रस-सिद्धान्त तक आते-आते गम्भीरतम शास्त्रीय विषयों की चर्चा होने लगी। उनके आसपास के अन्य आलोचकों ने भी काव्य में अनुभूति तत्व के महत्व को स्वीकार किया था। वाजपेयीजी का 'साहित्य और आत्मानुभूति' शीर्षक निबन्ध इसका प्रमाण है। डा० नगेन्द्र के 'रस-सिद्धान्त' का उल्लेख करते समय यहां इस बात की चर्चा करना भी आवश्यक है कि जहां शुक्लजी ने तुलसी-काव्य के आधार पर रस की लोकमंगलवादी व्याख्या की और छायावादी आत्माभिव्यक्ति का बहिष्कार किया वहां डा० नगेन्द्र ने रस की आत्मपरक आनन्दवादी व्याख्या के माध्यम से उसके लिए स्थान बनाने का प्रयत्न किया। ऊपर जिस समन्वयवादी प्रवृत्ति का जिक्र हमने किया है उसका प्रमाण यह है कि उन्होंने भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा सिद्धान्तों के बीच तुलना करते हुए कुछ समान तत्वों के अन्वेषण का प्रयास भी किया। संस्कृत के ध्वन्यालोक, काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, वक्रोक्ति जीवित, आदि ग्रंथों के हिन्दी अनुवादों तथा 'अरस्तू का काव्यशास्त्र', 'काव्य में उदात्त तत्व' आदि ग्रंथों की भूमिका में इस प्रयास के संकेत मिल जाते हैं। यही नहीं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के आधुनिक सिद्धान्तों पर दो परिचयात्मक पुस्तकों की रचना भी उन्होंने की—'काव्य बिम्ब' (१९६७) तथा 'नयी समीक्षा नये संदर्भ' (१९७०)। 'भारतीय काव्यशास्त्र भाग-२' तथा 'रस सिद्धान्त' तक आते-आते उनके प्रयत्नों की मूल प्रेरणा साफ़-साफ़ समझ आने लगी—"भारत तथा पश्चिम के दर्शनों की तरह यहां के काव्यशास्त्र भी एक-दूसरे के पूरक है और पुनराख्यान आदि के द्वारा उनके आधार पर हमारे अपने साहित्य की परम्परा के अनुकूल संश्लिष्ट आधुनिक काव्यशास्त्र का निर्माण सहज संभव है।" (आस्था के चरण, पृष्ठ ११)

डा० नगेन्द्र की उत्तरोत्तर शास्त्रोन्मुख बनती हुई आलोचना का आरम्भ जैसा कि हमने पहले इंगित किया, छायावाद-सम्बन्धी स्फुट निबन्धों से हुआ था। इस दृष्टि से 'हंस' १९३७ ई० में प्रकाशित उनका पहला निबन्ध उल्लेखनीय है। बाद में उन्होंने 'सुमित्रानन्दन पंत' में उसे प्रथम परिच्छेद का रूप दे दिया। १९३९ ई० में 'वीणा' में प्रकाशित 'साहित्य में कल्पना का उपयोग' से साफ जाहिर है कि शुरू से ही पश्चिमी काव्य-सिद्धान्तों की ओर उनका ध्यान आकर्षित हुआ। तत्पश्चात् 'हंस' (१९४०) में प्रकाशित 'साहित्य और समीक्षा', उनके सिद्धान्त-चिंतन का मोड़ है। 'साहित्य की प्रेरणा' (१९४३ ई०), 'साहित्य में आत्माभिव्यक्ति' आदि निबन्धों में प्रगतिवाद और फ्रायड का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है जिसे उन्होंने स्वीकार भी किया है। काव्यशास्त्र की ओर उनका झुकाव होने के साथ-साथ 'भारतीय और पाश्चात्य शास्त्र' (१९४९) जैसे निबन्ध सामने आने लगे जिनकी प्रेरणा का स्रोत उनका शोधग्रंथ 'रीतिकाव्य की भूमिका' तथा 'देव और उनकी कविता' ही थे।

आलोचक के दायित्व की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं—"प्राय: प्रतिष्ठित या ऐसा काव्य ही जिसके स्थायी मूल्य स्पष्ट लक्षित हों, मेरी आलोचना का विषय रहा है—किसी कृति को या कृतिकार को स्थापित करने की स्पृहा मेरे मन में नहीं आयी।" (आस्था के चरण, पृष्ठ ९४) उनके इस कथन की पुष्टि कामायनी पर लिखे गए उनके लेखों से सहज ही होती है।

व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के कारण सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ तथा युगबोध आदि उनकी आलोचनाओं में स्थान नहीं पाते। कवि की सौन्दर्यानुभूति तथा स्वरूप-विश्लेषण ही उनकी दृष्टि में महत्वपूर्ण हैं। इसी आधार पर वे अभिव्यक्ति की सफलता-असफलता को परखते हैं। इसके अतिरिक्त फ्रायड के

प्रभाव से मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या की प्रवृत्ति भी उनके यहां मिलती है जिसके उदाहरण 'तुलसी और नारी', 'देव और उनकी कविता' आदि निबन्धों में मिल जाते हैं। व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में उन्होंने विविध विषयों को उठाया है जिनमें काव्य, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र आदि सभी शामिल हैं। किन्तु उन्हें प्रमुख रूप से आधुनिक काव्य का आलोचक कहना ही उचित होगा। 'कामायनी', 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' की समीक्षाओं के अध्ययन से एक बात साफ हो जाती है कि कृति के शिल्प-विश्लेषण में उन्होंने गहरी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। खण्डन-मण्डन या विवादात्मक आलोचना में उनका विश्वास नहीं है। वे कृति को अनुशंसात्मक दृष्टि से देखने के ही हिमायती रहे हैं। यह कहना गलत न होगा कि 'शास्त्राध्ययन' ने उनकी आलोचना को गरिमा प्रदान की है।

मुख्य रूप से हिन्दी आलोचना के लिए डा० नगेन्द्र ने दो महत्वपूर्ण कार्य किए। भारत और पश्चिमी आलोचना शास्त्र की सामग्री को हिन्दी पाठक के लिए उपलब्ध कराया तथा व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में छायावाद की सहृदयतापूर्ण स्वरूप-व्याख्या की तथा आत्मनिष्ठ रचनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में सामने लाने का स्तुत्य प्रयास किया। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डा० नगेन्द्र उन समीक्षकों में से हैं जिनके सिद्धान्तों और व्यावहारिक समीक्षा के बीच अलगाव नहीं दिखाई देता। डा० रामदरश मिश्र के शब्दों में "नवीन यात्राओं की पहचान का प्रयत्न उनके शास्त्रीय आधार को नूतन रंग देता चलता है और शास्त्रीय आधार नवीन यात्राओं के स्वरूप को मूर्त्त रूप में देखने की दृष्टि देता है। डा० नगेन्द्र के सिद्धान्तों, साहित्य-परीक्षण की प्रक्रियाओं और विशेषतया उनके निष्कर्षों से असहमत हुआ जा सकता है, किन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि डा० नगेन्द्र का अपना आलोचना-संसार बड़ा ही मूर्त्त, ठोस और संतुलित है।" (हिन्दी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ, पृष्ठ २२२)

शुक्लोत्तर-आलोचना एक तरह से पूर्णतया छायावाद के पुनर्मूल्यांकन को समर्पित थी। शुक्ल-जी के छायावाद-विरोधी स्वर की प्रतिक्रियास्वरूप वाद के कई आलोचकों ने छायावादी काव्य की विशेषताओं का परीक्षण-निरीक्षण करते हुए उसकी प्रतिष्ठा का प्रयत्न किया। इसी बीच **डा० देवराज** ने 'छायावाद के पतन' की घोषणा करते हुए आलोचना के क्षेत्र में कदम रखा! अपने क्रांतिकारी शीर्षक के बावजूद इस पुस्तक ने किन्हीं मौलिक विचारों से हलचल पैदा नहीं की। क्योंकि तब तक स्वयं छायावादी कवियों द्वारा छायावादी युग के अन्त की घोषणा की जा चुकी थी और प्रगतिवादी लेखकों ने छायावादी भावुकता तथा काल्पनिकता को सामाजिक यथार्थ से पलायन की प्रवृत्ति सिद्ध कर दिया था। अतः शुक्ल-जी की ही मान्यताओं का पुनःकथन करने वाली इस पुस्तक की निजी महत्ता विशेष नहीं थी। हां, छायावादी काव्य की शिल्पगत दुर्बलताओं का सोदाहरण विश्लेषण एवं उद्घाटन इसकी एक उपलब्धि अवश्य कही जा सकती है। शुक्लजी की मान्यताओं को नयी पारिभाषिक शब्दावली में प्रस्तुत करने का काम भी प्रशंसनीय है। बाद में, डा० देवराज की प्रौढ़तर होती हुई आलोचना-दृष्टि, छायावाद की एकांगी दृष्टि के समानान्तर चलने में स्वयं को असमर्थ पाने लगी। इसीलिए 'साहित्य चिंता' में उन्होंने यह स्वीकार करने में संकोच नहीं किया कि—'स्वभावतः अवस्था-वृद्धि और रस-संवेदना के विकास के साथ निर्णय-बुद्धि अधिक संतुलित होना सिखाती है।' (पृष्ठ १६६)

किसी भी कृति का मूल्यांकन वे 'अनुभूति की गहराई, व्यापकता एवं नूतनता' के आधार पर करते हैं किन्तु साथ ही 'साहित्यिक अनुभूति' में 'बोध या ज्ञान के अंश' की अनिवार्यता को भी स्वीकार करते हैं। 'व्यापकता' से उनका अभिप्राय छायावादी आत्मोन्मुखता से भिन्न लोकोन्मुख दृष्टि से था। साहित्य और जीवन के आन्तरिक सम्बन्ध की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं—"जीवन से आंख बचा-कर नहीं, जीवन को उसकी पूर्णता में रागात्मक निरीक्षण और अनुभूति का विषय बनाकर ही कलाकार अपने काम को पूर्णतया सम्पादित कर सकता है। श्रेष्ठ कलाकार बनने के लिए अनुभूति में गहराई और

व्यापकता दोनों ही गुणों का सन्निवेश होना चाहिए। महान् कलाकार अपने युग का पूरा प्रतिनिधि, सम्पूर्ण व्याख्याता होता है। उसकी वाणी में युग के सारे संघर्ष, सारे राग-विराग, समस्त प्रश्न और सन्देह मूर्तिमान होकर बोलते या ध्वनित होते हैं।" (साहित्य चिन्ता, पृष्ठ ६४) यही कारण है कि साहित्य के मूल्यांकन के लिए वे आलोचना के शाश्वत प्रतिमानों की धारणा का खण्डन करते थे। नवीन सिद्धान्तों की आवश्यकता और स्पष्टता को उन्होंने अपने युग की एक बड़ी आवश्यकता माना और स्पष्ट शब्दों में घोषित किया कि "आज रस और ध्वनि की कसौटियों पर तुर्गनेव के 'पिता और पुत्र', गाल्सवर्दी के 'फोर्साइट सागा', प्रेमचन्द के 'गोदान' को ठीक से जांचा नहीं जा सकता।" (पृष्ठ ६७) इसके स्थान पर युग-सापेक्ष एवं ऐतिहासिक-सामाजिक आलोचना दृष्टि की जरूरत की ओर संकेत करते हुए उन्होंने संस्कृति-बोध के महत्व को रेखांकित किया—"प्रतिमान के रूप में संस्कृति-बोध को इस समय मैं उतना ही महत्व देता हूं. जितना क्लासिकी विचारक, काव्य के प्राण-तत्व के रूप में रस को देते रहे हैं।" अज्ञेय व 'तार सप्तक' के अन्य कवियों की कविता को इसी कसौटी पर कसते हुए, उन्होंने अज्ञेय को दूसरे कवियों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध किया और निष्कर्ष-रूप में नये कवियों की दुर्बलता के प्रमुख कारण पर प्रकाश डाला—"वे लेखक जिनमें किसी कोटि का सांस्कृतिक बोध समृद्ध नहीं है, न तो अधिक सृजनशील हो पाते हैं और न विशेष प्रगति ही कर पाते हैं" (प्रतिक्रियाएं, पृष्ठ २१०) किन्तु संस्कृति के प्रति उनके इस आग्रह का अर्थ यह कदापि नहीं है कि वे साहित्य को जीवन के भौतिक यथार्थ से काटकर देखते थे। अनुभूति में 'ज्ञान' को उन्होंने आवश्यक अंश माना है, अतः साहित्य में विचार-तत्व की उपेक्षा का सवाल ही नहीं उठता।

मूलतः उनकी दृष्टि रोमाण्टिक न होकर क्लासिक ही थी इसीलिए सिद्धान्त-निरूपण की प्रक्रिया में वे प्रायः प्राचीन क्लासिकी साहित्य की विशेषताओं को प्रकाशित करते चलते हैं। अपने इसी आग्रह के कारण वे शैली में 'स्पष्टता, सशक्तता, सघनता और यथार्थानुगामिता' के हिमायती थे किन्तु साथ ही शब्दाडम्बर के खिलाफ। यह खिलाफत छद्म-क्लासिकी के प्रति उनकी सतर्कता का प्रमाण है। शब्दों के रूढ़ होने के खतरे की ओर भी उन्होंने संकेत किया है। अतः वे शब्दों का प्रयोग नयी चेतना एवं संवेदन के संदर्भ में करने के पक्ष में थे—"उनमें (शब्दों में) नये अनुषंग एवं ध्वनियां जगाने की क्षमता स्थापित करने के लिए उन्हें नए विचारों, नये चित्रों एवं नयी संवेदनाओं के संदर्भ में नियोजित करना पड़ता है।" (साहित्य-चिन्ता, पृष्ठ ११६)

डा० देवराज की आलोचना का संदर्भ अत्यन्त व्यापक है। इसका प्रमाण 'अलंकार और ध्वनि', 'उर्दू गज़ल में चमत्कार', 'साहित्य का प्रयोजन', 'युग और साहित्य', 'साहित्य में प्रगति' और 'हिन्दी आलोचना का धरातल' जैसे निबन्धों से मिलता है। यही नहीं 'प्रतिक्रियाएं' में उन्होंने 'आदि काव्य' से लेकर 'प्रयोगशील काव्य' तथा कथा-साहित्य की आधुनिकतम उपलब्धियों का विवेचन किया है।

प्रगतिशील समीक्षा

चौथे दशक के मध्य में जहां शुक्लोत्तर पीढ़ी के आलोचक छायावाद के पुनर्मूल्यांकन और प्रतिष्ठा के प्रश्न को लेकर परेशान थे, स्वयं छायावादी कवियों ने यह महसूस किया कि छायावाद में गत्यवरोध उत्पन्न हो गया है और वह पतनोन्मुख पूंजीवाद की निर्जीव अभिव्यक्ति बनकर रह गया है। ऐसे समय में उन्होंने उसके 'अंत' की घोषणा करके नयी चेतना का आह्वान किया तथा नवीन सामाजिक तत्वों को पहचानना शुरू किया। समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर मार्क्स तथा एंगेल्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की स्थापना करके समाज एवं प्रकृति के प्रत्येक पक्ष पर पुनः संतुलित ढंग से विचार किया था। उन्होंने सामाजिक सम्बन्धों के परिवर्तन के कारण आर्थिक आधार एवं उत्पा-

दन के साधनों में खोजने की जरूरत महसूस की तथा यह सिद्ध किया कि साहित्य और दर्शन भी बहुत दूर तक इन परिवर्तनों से प्रभावित होते हैं। हर युग में समाज की नयी-पुरानी शक्तियों का संघर्ष, नयी जीवनोन्मुख शक्तियों को जन्म देता है और साहित्य पुनः सजीव होने लगता है। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद का स्वर १९३५ के आसपास सुनाई पड़ता है। ई० एम० फार्स्टर के सभापतित्व में पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के प्रभावस्वरूप १९३६ में प्रेमचन्द की अध्यक्षता में लखनऊ में उसकी भारतीय शाखा का पहला अधिवेशन हुआ। छायावाद का स्खलन जिस कुंठाग्रस्त ह्रासोन्मुखी काव्य-प्रवृत्ति में हो गया था उससे क्षुब्ध होकर इन कवियों को इस नये दर्शन में साहित्य-सृजन की नयी दिशा का संकेत दिखाई पड़ने लगा। कहना न होगा कि छायावाद के वरिष्ठ कवि ही सबसे पहले प्रगतिवाद के समर्थक बने। पंत और निराला का नाम यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रगतिवाद, सृजन और आलोचना के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण लेकर उपस्थित हुआ था। जीवन के प्रति सर्वथा नवीन दृष्टिकोण होने के कारण उसने नये साहित्य के मूल्यांकन के लिए पिछली सभी समीक्षा-कसौटियों को रद्द कर दिया। रीतिबद्ध समीक्षा, गुण-दोष-विवेचन, प्रभाववादी तुलनात्मक समीक्षा तथा शुक्लजी की व्याख्यात्मक आलोचना-पद्धतियों को उसने अधूरा मानकर त्याग दिया। प्रगतिवाद व्याख्यामूलक साहित्यिक रस को सामाजिक यथार्थ की भूमि पर प्रतिष्ठित करना चाहता था। उसका दृष्टिकोण पूर्णतया जनमांगलिक था तथा समीक्षा का प्रमुख मानदण्ड उसकी दृष्टि में साहित्य की सोद्देश्यता थी। सामाजिक यथार्थ का उद्‌घाटन ही उसके अनुसार साहित्य का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए। इसी समय 'हंस' पत्रिका के प्रगति अंक में एडवर्ड अपवर्ड ने 'साहित्य की मार्क्सवादी व्याख्या' शीर्षक से एक लेख लिखा और कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पष्ट किया। प्राचीन साहित्य की प्रासंगिकता को लेकर उन्होंने कहा, "प्राचीन काल में लिखी गई पुस्तकें जो अपने काल के जीवन की सतह का ठीक चित्रण करती थीं और आज हमारे अनुभवसिद्ध जीवन के बारे में हमें कुछ नहीं बतातीं साहित्य के नाते मृत हैं चाहे ऐतिहासिक लेख्य पत्र के रूप में उनका महत्व भले ही हो। तथापि अतीत में जिस पुस्तक ने जीवन की सतह के नीचे काम करने वाली शक्तियों को प्रतिबिम्बित किया है वह बहुत सम्भव है हमारे आज के बुनियादी यथार्थों के बारे में भी महत्वपूर्ण बातें बता सके। सतह के ऊपर गति नीचे से अधिक क्षिप्र होती है और जितनी ही गहराई से किसी लेखक की अन्तर्दृष्टि सतह भेद कर नीचे पहुंचेगी उतने ही दीर्घकाल तक उसकी कृति परिवर्तनशील यथार्थ-जगत् के प्रति बासी—पुरानी नहीं पड़ेगी।" अतः स्पष्ट है प्रगतिशील समीक्षा का आग्रह सामाजिक यथार्थ की सही अभिव्यक्ति की ओर ही था। उसकी दृष्टि में, पूंजीवाद को नष्ट कर समाजवाद की स्थापना के लिए प्रयत्नशील शक्तियां ही आज की आधारभूत शक्तियां हैं। साहित्य, उनके अनुसार वर्गचेतना की अभिव्यक्ति है। अतः सही साहित्य-सृजन के लिए साहित्यकार और जन-सामान्य का रागात्मक सम्बन्ध अत्यंत आवश्यक है। जन-सामान्य उनकी समस्त विचारधारा का केन्द्र है। अतः सौन्दर्यबोध की चर्चा करते हुए भी वे सौन्दर्य की अवस्थिति जनता में मानते हैं। उनके अनुसार, सौन्दर्यबोध का निर्माण परिस्थितियों और सामाजिक सम्बन्धों से होता है। तात्पर्य यह है कि वे सौन्दर्य को जीवन का पर्याय मानते हैं, जो वस्तु जीवन को अभिव्यक्त करती है, वही सुन्दर है। अतः श्रम सौन्दर्य का प्रतीक है।

प्रगतिवादी समीक्षा छंद, भाषा, अलंकार, शैली को जन-सामान्य के बीच से ग्रहण करती है। भाषा-शैली की सहजता, सरलता एवं स्पष्टता पर उनका विशेष बल रहा है, क्योंकि उनमें जनता को प्रभावित करने की सामर्थ्य होती है। इस प्रकार हिन्दी में संगठित रूप से प्रगतिशीलता का एक नया दौर शुरू हुआ तथा आलोचना के क्षेत्र में नयी मान्यताएं प्रकट होने लगीं। प्रगतिशील आलोचना के

सिद्धान्तवादी आलोचकों में श्री **शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त** और **रामविलास शर्मा** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सबसे पहले **शिवदानसिंह चौहान** ने १९३७ ई० के 'विशाल भारत' में 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता' शीर्षक से एक लेख लिखा। प्रगतिशील साहित्य के सिद्धान्तों का विवेचन करने के साथ-साथ इस लेख में उन्होंने भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य पर विध्वंसात्मक टिप्पणी की तथा वर्तमान साहित्य में भी स्वस्थ विचारधारा के अभाव की ओर संकेत किया। 'प्रगतिवाद' में संकलित उनके आरम्भिक निबन्ध उनकी अपरिपक्व दृष्टि के सूचक हैं। तत्पश्चात् प्रेमचन्द के बाद उन्होंने प्रगतिशील पत्र 'हंस' का सम्पादन-भार सम्भाला तथा उदारवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। पंत की कविताओं के प्रति सहृदयता इसी उदार दृष्टि का प्रमाण है। १९४३ में 'हंस' के 'प्रगति अंक' के प्रकाशन से प्रगतिशील विचारधारा का सुस्पष्टतर रूप सामने आया। १९५१ में उन्होंने आलोचना का सम्पादन आरम्भ किया। 'साहित्यानुशीलन', 'साहित्य की परख' तथा 'आलोचना के मान' उनके तीन आलोचना ग्रंथ हैं जिनमें पुस्तक-समीक्षाएं एवं सैद्धान्तिक निबन्धादि संकलित हैं। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि ने 'पूर्ण मानव की प्रतिष्ठा' को साहित्यिक कृति के मूल्यांकन की प्रमुख कसौटी माना—"……समस्त मानवीय कृतित्व और तज्जनित मानव-मूल्यों के निर्माण का इतिहास, मनुष्य की समस्त विकासोन्मुखी सचेतन-अवचेतन प्रचेष्टा और परिणाम का विविध भाव, वर्ण, रूप, रस, गंध-मय अनुभव कला और साहित्य में विशिष्ट मूर्तिमत्ता के साथ प्रतिबिम्बित है। निरपवाद रूप से व्यक्ति और समाज की भावी प्रगति के योग-क्षेम की दृष्टि से जैसे कला और साहित्य का नव-निर्माण प्रयोजनीय है वैसे ही उसके व्यापक मानव-मूल्यों का निर्धारण भी उतना ही प्रयोजनीय है।" (साहित्य की परख, पृष्ठ ७) वे मार्क्सवाद में कट्टरता के विरोधी एवं उदारता के समर्थक हैं किन्तु साहित्यिक मूल्यांकन के समय सैद्धान्तिक आग्रह से काफी हद तक प्रभावित दिखाई देते हैं। प्रगतिवाद को पश्चिम की वस्तु मानने वाले समालोचकों के मत का खण्डन करते हुए उन्होंने स्पष्टतः कहा कि "पूर्व-पश्चिम, भारतीय-अभारतीय कहकर विचारधाराओं, मनोवृत्तियों और सौन्दर्य-मूल्यों को देश-काल की संकुचित परिधि में बांध कर नहीं रख सकते।" (प्रगतिवाद, पृष्ठ १) शिवदानसिंह चौहान की आलोचना-शैली की चर्चा करते समय उनकी गम्भीरता से इन्कार नहीं किया जा सकता किन्तु विचारों की दुरूहता और उलझाव के कारण सहज प्रवाह प्रायः बाधित होता है। सम्भवतः उन पर यह कॉडवेल का प्रभाव था।

प्रकाशचन्द्र गुप्त (१९०८-१९७०) की आलोचना-दृष्टि शिवदान जी से भी अधिक उदार रही। उसमें प्रगतिशीलता का आग्रह इतना कम है कि कुछेक पंक्तियां निकाल देने पर उनका स्वरूप शान्तिप्रिय द्विवेदी की प्रभाववादी आलोचना जैसा हो जाता है। अंग्रेजी के शिक्षक होते हुए भी गुप्तजी ने जिस निष्ठा से 'हिन्दी साहित्य' की प्राचीन परम्परा का अनुशीलन और समसामयिक साहित्य का सहानुभूतिपूर्ण सर्वेक्षण किया, वह प्रशंसनीय है। 'आधुनिक हिन्दी साहित्य : एक दृष्टि' (१९५२ ई०), 'हिन्दी साहित्य की जनवादी परम्परा' (१९५३ ई०) और 'साहित्यधारा' (१९५६ ई०) आदि ग्रंथों में संकलित विविध निबन्ध उनकी व्यापक आलोचना-दृष्टि का सही परिचय देते हैं। अपने समकालीन मार्क्सवादी आलोचकों से भिन्न वे हमेशा निन्दात्मक आलोचना से बचते रहे। यही कारण है कि सहृदयता उनकी आलोचना का प्रमुख गुण बन जाता है। सुबोधता और सरलता उनकी शैली की विशेषताएं हैं जो उनके विचारों को अधिक ग्राह्य बनाती हैं!

डा० रामविलास शर्मा (१९१२ ई०) मार्क्सवादी आलोचकों में से सबसे विवादास्पद आलोचक हैं। निर्भीक, पैनी और स्पष्ट आलोचना-दृष्टि उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने अपनी

आलोचना-यात्रा निराला के साहित्य की व्याख्या से शुरू की थी और उनकी सर्वोत्तम उपलब्धि भी निराला की साहित्य-साधना' ही है। आलोचकों में रामचन्द्र शुक्ल, उपन्यासकारों में प्रेमचन्द और कवियों में निराला उन्हें सबसे प्रिय हैं और असन्दिग्ध रूप से ये तीनों साहित्यकार उनके आलोचनात्मक मान के भी आधार-स्तम्भ हैं। इस दृष्टि से 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना', 'प्रेमचंद' और 'निराला की साहित्य साधना' स्वयं लेखक की ही नहीं बल्कि हिन्दी आलोचना की उपलब्धियां हैं। लेकिन उनके आलोचना-कर्म की पराकाष्ठा निराला साहित्य के मूल्यांकन में ही दिखाई पड़ी। इस ग्रंथ की रचना के पीछे उनका उद्देश्य "निराला के पारिवारिक-सामाजिक परिवेश से, उस युग की सांस्कृतिक परिस्थितियों से, उनके जीवन के वाह्य रूपों के साथ उनके अन्तर्जगत् से पाठकों को परिचित कराना है।" हिन्दी में साहित्यकारों के 'व्यक्तित्व कृतित्व' सम्बन्धी अध्ययनों का अभाव नहीं है किन्तु ऐसा अध्ययन जिसमें ये दोनों अलग खानों में बंटे न रहकर एक इकाई बन जाएं, एक की समझ दूसरे के मूल्यांकन में सहायक हो जाए, और एक के सही ज्ञान के लिए दोनों की पारस्परिकता का ज्ञान अपरिहार्य प्रतीत होने लगे, इस ग्रंथ से पहले देखने में नहीं आया। निराला के जीवन-चरित्र, के बहाने डा० शर्मा ने उस समय के हिन्दी साहित्य के वातावरण और परिवेश का जो अंतरंग परिचय प्रस्तुत किया है वह जैसे इतिहास-ग्रंथों में अनुपलब्ध घटनाओं के आधार पर निराला के समकालीन साहित्यिक इतिहास की पुनर्रचना है। इस प्रकार यह ग्रंथ एक साथ किसी हद तक उनके साहित्य का मूल्यांकन और समय का साहित्यिक इतिहास प्रस्तुत करता है।

रामविलास शर्मा ने मार्क्सवादी साहित्य-सिद्धान्तों के कोरे प्रतिपादन से ही सन्तोष नहीं किया बल्कि मार्क्सवादी दृष्टि से समूचे हिन्दी साहित्य की परम्परा की नई व्याख्या प्रस्तुत करके मार्क्सवादी आलोचना का सामर्थ्य स्थापित कर दिखाया। यही नहीं, उन्होंने वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के साहित्य का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया। 'आदि काव्य' और भवभूति की करुणा' अपने समय की अप्रतिम आलोचनाएं हैं। कहना न होगा कि डा० रामविलास शर्मा की दृष्टि में भारतीय साहित्य की समूची परम्परा का परिप्रेक्ष्य विद्यमान है जो उनके मूल्यांकन को गुरुता और विश्वसनीयता प्रदान करता है।

मार्क्सवादी होने के बावजूद वे जड़ मार्क्सवादी आलोचना के पक्ष में नहीं थे। 'आस्था और सौन्दर्य' नामक पुस्तक में सौन्दर्य की वस्तुवादी व्याख्या प्रस्तुत करके उन्होंने सौन्दर्य को व्यक्ति या विषय में नियत करने के बजाय उन दोनों के संघात में देखा है। साथ ही साहित्य को 'शुद्ध विचारधारा' का रूप मानने से इन्कार करते हुए यह घोषणा भी की है कि "उसका (साहित्य का) भावों और इन्द्रियबोध से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इससे पष्ट है कि ललित कलाओं को विचारधाराओं के रूपों में गिनना सही नहीं है।" (पृष्ठ ३०)

डा० रामविलास शर्मा ने आचार्य शुक्ल का विरोध करने के स्थान पर उनके विचारों की पुष्टि करते हुए उनकी पुनर्व्याख्या की और साथ ही युगानुरूप विस्तार भी किया। 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना', की भूमिका में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा—"हिन्दी साहित्य में शुक्लजी का वही महत्व है जो उपन्यासकार प्रेमचन्द या कवि निराला का। उन्होंने आलोचना के माध्यम से उसी सामन्ती संस्कृति का विरोध किया जिसका उपन्यास और कविता के माध्यम से प्रेमचन्द व निराला ने। शुक्लजी ने न तो भारत के रूढ़िवाद को स्वीकार किया, न पश्चिम के व्यक्तिवाद को। उन्होंने वाह्य जगत् और मानव-जीवन की वास्तविकता के आधार पर नये साहित्य-सिद्धान्तों की स्थापना की और उनके आधार पर सामन्ती साहित्य का विरोध किया और देशभक्ति और जनतन्त्र की साहित्यिक परम्परा का समर्थन किया।" (पृष्ठ ७)

डा० रामविलास शर्मा ने पंत की 'स्वर्णकिरण' और 'स्वर्णधूलि' की जो समीक्षाएं कीं, उनका अंदाजेबयां देखते हुए प्राय: उनकी आलोचना को विध्वंसात्मक कहा जाता है। अवांछनीय तत्वों की सफाई करके विधेयात्मक मूल्यों की प्रतिष्ठा का उनका प्रयास ही उनके विध्वंसात्मक आलोचक होने का भ्रम पैदा करता है किन्तु ध्यान से देखा जाए तो उनके जैसे दो टूक, खरी बात कहने वाले आलोचक हिन्दी में दुर्लभ हैं। यही नहीं, हिन्दी आलोचना की भाषा को शास्त्रीय दुरूहता से मुक्त कर बोलचाल के स्तर पर लाने और जटिल विचारों का माध्यम बनाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

गजानन माधव मुक्तिबोध (१६१८-१६६४ ई०) आरम्भ में तारसप्तक के कवि के रूप में विख्यात हुए, हालांकि उनकी प्रखर, गहरी और व्यापक आलोचना-क्षमता का परिचय भी 'तार सप्तक' के प्रकाशन के समानान्तर ही मिलना आरम्भ हो गया था। उनकी प्रथम आलोचनात्मक कृति 'कामायनी : एक पुनर्विचार' का पुस्तकाकार प्रकाशन १६६१ में हुआ। १६४५-४६ के 'हंस' में दो लेख पहले ही प्रकाशित हो चुके थे। ये लेख उनकी मौलिक दृष्टि और परम्परामुक्त चिन्तन क्षमता का परिचय देते हैं। 'कामायनी' की रचनाप्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि का परिचय देते हुए मुक्तिबोध मनु को एक वर्ग-चरित्र के रूप में देखते हैं और ध्वस्त सामन्तवाद के अवशिष्ट चरित्र के रूप में उनकी समस्त चारित्रिक विशेषताओं को देखते हैं। इसी तरह इड़ा उनकी दृष्टि में 'बुद्धिवाद की प्रतीक नहीं, पूंजीवाद की प्रतिनिधि है' तो श्रद्धा आत्मबद्ध भावुकता के आदर्शीकरण का नाम है। कामायनी की वर्ग-दर्शन पर आधारित विस्तृत पुनर्व्याख्या करके मुक्तिबोध ने आलोचक के रूप में अपनी मार्क्सवादी दृष्टि का प्रमाण प्रस्तुत किया है। आस्था से मार्क्सवादी होते हुए भी नयी कविता के मूल्यांकन को लेकर वे पुराने प्रगतिवादी आलोचकों से भिन्न थे। उन्होंने नयी कविता के अन्तर्मुखी साहित्य-सिद्धान्तों उसकी 'जड़ीभूत सौन्दर्याभिरुचि' का विरोध भी उसी प्रकार किया जैसे सतही प्रयोगवादी आलोचकों का।

मुक्तिबोध की दृष्टि में आलोचक का दायित्व आपद्-धर्म न होकर धर्म है। इसका प्रमाण वे कविता की रचना-प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए देते हैं। 'एक साहित्यिक की डायरी' में काव्य रचना के तीन क्षणों का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं—"कला का पहला क्षण है, जीवन का उत्कट तीव्र अनुभव क्षण। दूसरा क्षण है इस अनुभव का अपने कसकते-दुखते हुए मूल्यों से पृथक् हो जाना और एक ऐसी फैन्टेसी का रूप धारण कर लेना मानो वह फैन्टेसी अपनी आंख के सामने खड़ी हो। तीसरा और अन्तिम क्षण है इस फैन्टेसी के शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया का आरम्भ और उस प्रक्रिया की परिपूर्णावस्था तक की गतिमानता।" (पृष्ठ १६-१७) मुक्तिबोध की काव्य-रचना का मुख्य माध्यम यही फैन्टेसी है। रामविलास शर्मा के शब्दों में यथार्थ को फैन्टेसी में बदले बिना वे पकड़ नहीं पाते। मुक्तिबोध स्वयं अपनी कविताओं की संरचना की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि 'कविता, एक संगीत को छोड़कर सब कलाओं से अधिक अमूर्त्त है। वहां जीवन-यथार्थ केवल भाव बनकर प्रस्तुत होता है, यहां बिम्ब बनकर या विचार बनकर। कविता के भीतर की सारी नाटकीयता वस्तुतः भावों की गतिमयता है। उसी प्रकार, कविता के भीतर का कथा-तत्व भी भाव का इतिहास है।" (पृष्ठ ३६)

मुक्तिबोध की आलोचना का प्रस्थान-बिन्दु व्यावहारिक आलोचना था किन्तु अन्त तक आते-आते वे रचना-प्रक्रिया, संरचनात्मक विशेषताओं के विश्लेषण के माध्यम से कला-चिन्तन की ओर झुक गए। निस्सन्देह; नये प्रगतिशील आलोचकों में वे सबसे प्रखर और गम्भीर थे। उनका व्यक्ति कवि की सहृदयता और आलोचक की चिन्तन-शक्ति का अद्भुत मिश्रण था।

डा० नामवर सिंह (१६२७) समाजवादी जीवन-दृष्टि और नयी कविता की भावभूमि के समवेत बोध को लेकर आलोचना-क्षेत्र में उतरे। अपने पूर्ववर्ती प्रगतिवादी आलोचकों से भिन्न उन्होंने

नयी कविता को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखा तथा मुक्तिबोध के आह्वान का स्वागत किया। उनकी प्रथम आलोचनात्मक रचना छायावाद (१९५४ ई०) उस समय सामने आई जब छायावाद समर्थन और विरोध के दो विभिन्न चरण झेल चुका था। अबतक छायावाद की ऐतिसासिक-सामाजिक पृष्ठिभूमि को स्पष्ट करने के प्रयास ही हुए थे किन्तु डा० नामवर सिंह ने प्रथम बार छायावादी कविता के छाया-चित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन किया। यह पुस्तक मार्क्सवादी आलोचना के परिष्कृत रूप का परिचय और शैलीगत ताजगी का स्पर्श कराती है।

'कविता के नए प्रतिमान' (१९६८) उनकी दूसरी काव्य-समीक्षात्मक पुस्तक है। दो खण्डों में विभाजित इस पुस्तक में जहां एक ओर परम्परा से प्रतिष्ठित प्रतिमानों की प्रासंगिकता पर एकबारगी प्रश्न-चिन्ह लगाए गए है वहां नयी कविता के संदर्भ में काव्य-मूल्यों का सवाल भी उठाया गया है। नयी कविता के दायरे को विस्तृत करते हुए यहां वे उन कविताओं को भी विचार की सीमा में ले आना आवश्यक समझते है जिन्हें किसी अन्य उपयुक्त शब्द के अभाव में सामान्यत: लम्बी कविता कहा जाता है। (पृष्ठ २६५) इसलिए उन्होंने खुलेआम 'वैयक्तिक और आत्मपरक छायावादी संस्कारों' में गढ़े गए प्रतिमानों का विरोध किया। मुक्तिबोध की कविताओं के रूप में उन्होंने काव्य के उन मूल्यों पर बल देने का दावा किया—"जो अपनी यथार्थ दृष्टि में सामाजिक और वस्तुपरक है और आज के ज्वलंत एवं जटिल यथार्थ को अधिक से अधिक समेटने के प्रयास में कविता को व्यापक रूप में नाट्य-विन्यास प्रदान कर रहे है और इस तरह तथाकथित बिम्बवादी काव्य-भाषा के दायरे को तोड़ कर सपाट आदि अन्य क्षेत्र में कदम रखने का साहस दिखा रहे है।" इसके अतिरिक्त, सामान्य रूप से साहित्यिक मूल्यों को स्पष्ट करने का प्रयत्न उन्होंने 'इतिहास और आलोचना' शीर्षक पुस्तक के निबन्धों में किया है। 'व्याप-कता और गहराई' की चर्चा करते हुए, दोनों को विरोधी गुणों के रूप में देखने वाले तथा व्यापकता की अपेक्षा 'गहराई' को अधिक मूल्यवान मानने वाले दृष्टिकोण का उन्होंने विरोध किया है। कुछ अन्य निबन्धों में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के इतिहास की पुनर्व्याख्या का जोखिम भी उठाया गया है। ये निबन्ध निश्चित रूप से साहित्येतिहास-लेखन की एक नयी दिशा का निर्देश करते है। 'कहानी नयी कहानी' के माध्यम से उन्होंने समीक्षा के क्षेत्र में अब तक उपेक्षित कथा-समीक्षा को गौरवान्वित किया और उसे काव्य समीक्षा के स्तर तक उठाया।

नयी समीक्षा

प्रगतिशीलता के युग में छायावाद के विरुद्ध एक अन्य प्रवृत्ति का उदय हुआ जिसका विकास आगे चलकर प्रयोगवाद में हुआ। छायावाद की रूमानियत के विरोध में यदि एक ओर यथार्थवाद-प्रेरित सामाजिक यथार्थ की प्रवृत्ति प्रबल हुई तो दूसरी ओर टी० एस० इलियट के रोमांटिसिज्म विरोधी अभियान से प्रेरित नव-कलासिकी दृष्टि का निर्माण हुआ। पांचवे दशक की हिन्दी आलोचना में इस प्रवृत्ति के प्रतिनिधि लेखक श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय थे। अज्ञेय (१९११ ई०) यद्यपि शुद्ध आलोचक नहीं थे तथापि नयी कविता के आस्वाद और मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नयी आलोचना की नींव डालने के लिए आलोचना के इतिहास में वे सदा स्मरणीय रहेंगे। 'तीसरा सप्तक' की भूमिका में कवियों को आलोचना-कर्म की ओर प्रवृत्त करने के लिए उन्होंने लिखा है कि 'नयी कविता का अपने पाठक और स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व बढ़ गया है। यह मानकर कि सामान्य आलो-चकों से उसे सहानुभूतिपूर्ण तो क्या पूर्वाग्रहरहित अध्ययन भी नहीं मिला है, यह आवश्यक हो गया है कि स्वयं आलोचक तटस्थ और निर्मम भाव से उसका परीक्षण करे। दूसरे शब्दों में परिस्थिति की

मांग यह है कि कविगण स्वयं एक-दूसरे के आलोचक बन कर सामने आएं।" आगे चलकर 'भवन्ती' में, आलोचना को 'गौण अथवा उपजीवी कर्म' मानने के बावजूद कवि के लिए उसकी आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने लिखा कि "आलोचना की अनुपस्थिति में वह (कवि) मुर्झाता है, उसकी प्रतिभा मालन होती है।" शायद इसीलिए वे स्वयं बराबर आलोचना कर्म में प्रवृत्त रहे। व्यावहारिक समीक्षाओं के अतिरिक्त अपनी कविताओं की व्याख्या तथा साहित्य के सम्बन्ध में कुछ सैद्धान्तिक स्थापनाएं भी उनकी महत्वपूर्ण देन हैं।

'त्रिशंकु' के निबन्धों में उन पर इलियट का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है जिसका उदाहरण है, छायावादी काव्य-सिद्धान्त के विरुद्ध काव्य के निर्वैयक्तिक सिद्धान्त की स्थापना। कविता उनकी दृष्टि में अहं के विलय का साधन है। इसी कारण 'आत्मनेपद' में स्वयं को आज के कवि से भिन्न मानते हुए वे लिखते हैं—"आज का कवि तो कविता को वरंच व्यक्तित्व की, व्यक्ति के अहं की, प्रखरतर अभिव्यक्ति और उस अहं को पुष्ट करने वाली रचना मानता है। मैं कहूं कि इस चरम कोटि का आधुनिक कवि मैं नहीं हूं, अधिक-से-अधिक उस श्रेणी में हूं जो कविता को अहं के विलयन का साधन मानते हैं।"

'दूसरे सप्तक' की भूमिका में कवि के लिए परम्परा के महत्व और उसके उपयोग की प्रक्रिया की चर्चा करते समय भी वे इलियट से प्रभावित नजर आते है। परम्परा उनकी दृष्टि में गहरे संस्कार की तरह है जिसे आत्मसात् करना कवि के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शुरू में फ्रायड और एडलर के मनोविश्लेषण से प्रभावित होते हुए भी बाद में अधिक समय तक वे उसका निर्वाह नहीं कर पाए।

साहित्य के संदर्भ में अपनी मान्यताएं प्रस्तुत करते समय अज्ञेय ने प्रयोग को विशेष महत्व दिया है। 'प्रयोग' उनकी दृष्टि में एक प्रकार का नवोन्मेषण है, जिसका सम्बन्ध शब्द-अर्थ दोनों से है। उनके विचार में, "अनुभव की अद्वितीयता और अर्थ की साधारणता—प्रतिभा के ये दो इष्ट है, या कहा जाए कि इन दो ध्येयों का योग ही उसका इष्ट है।" अपनी प्रयोगशीलता के सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उन्होंने हिन्दी के कुछ प्राचीन कवियों का भी पुनर्मूल्यांकन किया है। 'हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य' (१९६७ ई०) में संकलित 'केशव की कविताई' शीर्षक रचना एक रोचक उदाहरण हो सकती है। आधुनिक कविता की विस्तृत आलोचना 'पुष्करिणी' की भूमिका में मिलती है।' बाद में यह निबन्ध 'खड़ी बोली की कविता : पृष्ठभूमि' शीर्षक से उपर्युक्त पुस्तक में संकलित हुआ। अज्ञेय की निजी स्थापनाओं की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है।

छायावाद को अंग्रेजी के रोमाण्टिक दौर का प्रभाव मानने वाले आलोचकों के विरुद्ध उन्होंने एक नितान्त मौलिक स्थापना की—'यदि छायावादी आन्दोलन की एक प्रेरणा हिन्दी कवि द्वारा शेली और कीट्स का आविष्कार था तो यूरोप के रोमाण्टिक आन्दोलन की एक प्रेरणा यूरोपीय कवि द्वारा कालिदास का आविष्कार था।" इस तरह उन्होंने छायावाद में भारतीय परम्परा के योगदान की ओर भी संकेत किया। अज्ञेय की साहित्य-सम्बन्धी मान्यताओं के अवलोकन से एक बात साफ जाहिर है कि वे बंधी-बंधायी विचार पद्धति के अन्धानुकरण के पक्षधर नहीं थे। साहित्य की नवीन समस्याओं को मौलिक ढंग से ही पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने के हिमायती थे। फिर भी उनके चिन्तन पर अन्य भारतीय, पाश्चात्य विद्वानों के चिन्तन का प्रभाव स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। हां, उन्हें पुनः प्रस्तुत करने की प्रक्रिया में उन विचारों का नवीकरण हो जाता है।

विजयदेवनारायण साही (१९२७ ई०) अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तीसरे सप्तक' के कवि हैं और अज्ञेय द्वारा प्रवर्तित 'नयी कविता' के महत्वपूर्ण सिद्धांतकार भी। साही जी ने बहुत कम लिखा किन्तु जितना लिखा उसमें मौलिकता और चिंतन की गहराई स्पष्ट ही दिखाई देती है। यही कारण है कि 'लघुमानव के

बहाने हिन्दी कविता पर बहस' तथा 'शमशेर की काव्यानुभूति' जैसे दो निबन्धों के बल पर उन्होंने हिंदी आलोचना में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। पहला निबन्ध 'नयी कविता' के १९६०-६१ के संयुक्तांक ५-६ में प्रकाशित हुआ। यह निबन्ध बहुत सी बातों के लिए चर्चित रहा। लघु मानव की अवधारणा को केन्द्र में रखते हुए, और बहुत-सी बातों के बीच उन्होंने परम्परा की व्याख्या की और अज्ञेय को उन्ही प्रसाद की परम्परा से जोड़ा जिन्हें अज्ञेय केवल विश्वविद्यालयों का कवि मानते थे—"यदि परम्परा हमेशा परिवर्तन और वैपरीत्य की दिशाओं में फूली हुई चलती है, तो अज्ञेय, आगे के इतिहासकार को, प्रसाद की 'परम्परा' में ही दिखलाई पड़ेंगे।" (पृष्ठ १२०) इस निबन्ध में साही ने आधुनिक हिन्दी कविता की गहराई में जाकर अलक्ष्य सामाजिक चेतना को उद्भासित किया। उस युग के मिजाज के साथ साहित्यिक संदर्भो को जोड़ते हुए साहित्य के लघु और महत् के द्वन्द्व की राजनीतिक पृष्ठभूमि स्पष्ट की—"गुलामी की स्थिति यथार्थ और लघुता की स्थिति थी। और दूर कहीं पर, किन्तु निश्चित या अनिश्चित काल के भीतर ही आजादी का लक्ष्य आदर्श और महत्व का लक्ष्य था।" उन्होंने पश्चिम के रोमांटिसिज्म और हिन्दी प्रदेश के छायावाद की मनोभूमि के बुनियादी अन्तर को स्पष्ट करते हुए रेखांकित किया। शमशेर की काव्यानुभूति की संरचना की चर्चा करते हुए उन्होंने उस बुनियादी बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जिसे उनकी दृष्टि पकड़ने में हमेशा उत्सुक रहती है। उनका मत था कि कविता में आने वाला बदलाव सिर्फ बाह्य कलेवर नहीं होता, उसका सम्बन्ध गहरे स्तर पर अवस्थित अनुभूति से होता है। 'विवेक के रंग' में संकलित इस निबन्ध में साही मलार्मे की काव्यानुभूति के सादृश्य पर शमशेर की कविता की बनावट को समझने का प्रयत्न करते हैं। आलोचक के रूप में उन्होंने कोई दावा नहीं किया। उनका विचार था कि आलोचना किसी साहित्यिक कृति की संवेदना का पाठक तक जबरदस्ती सम्प्रेषण नहीं कर सकती। हां, उसे (पाठक को) पूर्वाग्रहों से मुक्त करके एक औचित्यपूर्ण तत्परता की अवस्था में ले जा सकती है। आलोचना का काम उनकी दृष्टि में 'रेडियो की सूई को उचित लहर' मान पर लाकर लगा भर देता है।' साही के इस दायित्व-निर्वाह का लाभ पाठकों को भी हुआ और आलोचकों को भी।

'अतुकांत' के कवि **लक्ष्मीकांत वर्मा** (१९२२ ई०) का आलोचना-कर्म में प्रवृत्त होना नयी कविता की सहानुभूतिपूर्ण व्याख्या के आरम्भ का सूचक है। 'नयी कविता के प्रतिमान' (१९५७) की भाव-प्रवण व्याख्या-शैली के कारण उन्हें शान्तिप्रिय द्विवेदी के साथ स्मरण किया जाने लगा। हालांकि आगे चलकर वे विजयदेवनारायण साही की बौद्धिक दृष्टि से प्रेरित हुए और नयी कविता के मूल में 'लघु मानव' की प्रतिष्ठा कर विवादों का विषय रहे। लेकिन बाद में उन्होंने अज्ञेय द्वारा प्रवर्तित नयी कविता की छद्म-छायावादिता के विरुद्ध आवाज उठायी और सप्तक के कवियों की रूमानी भावुकता की कटु आलोचना की। यह परिवर्तन, 'नये प्रतिमान : पुराने निकष' में संकलित 'ताजी कविता कुछ जोड़ बाकी' शीर्षक निबन्ध में लक्ष्य किया जा सकता है। उनका ऐतराज उस 'लिखित मूड' से था जिससे आज नया कवि बुरी तरह ग्रस्त दिखाई देता है। यही कारण है कि उन्होंने नयी कविता को छायावाद का ही आग्रह माना और प्रयोगवाद को दोनों का मिश्रण माना। "नयी कविता और छायावाद के बीच अर्द्धचेतन में प्रयोगवाद के रूप में समझौता हुआ था।" (पृष्ठ २९२) कहना न होगा कि आलोचना के स्तर पर उन्होंने गैर-रूमानी काव्य-सिद्धांत का रूप खड़ा किया।

रामस्वरूप चतुर्वेदी (१९३१ ई०) का नामोल्लेख नवलेखन और नयी कविता के उन व्याख्याकारों में किया जाता है जिनकी काव्यरुचि का आधार अज्ञेय का कृति-साहित्य है। अपनी पहली पुस्तक 'नवलेखन' में वे सर्वेक्षण से आगे नहीं बढ़े किन्तु 'भाषा और संवेदना' में उन्होंने काव्य-भाषा की सृजनशीलता को आलोचना का केन्द्रीय विषय बनाया। भाषा को कविता के मूल्यांकन का प्रतिमान मानते हुए उन्होंने घोषणा की "आज की कविता को जांचने के लिए, जो अब सचमुच 'प्रास के रजत पाश' से मुक्त

समीक्षा के प्रयास अधिक प्रेरणा न पा सके। स्वयं प्रसाद के नाटकों पर 'इब्सोनियन' रंगमंच का प्रभाव आंका जाने लगा। इससे एक अच्छी बात अवश्य हुई, कि हिन्दी की नाट्य समीक्षा पर इब्सनवाद के प्रभाव की सही तस्वीर सामने आयी। किन्तु कुल मिलाकर, विकसित और व्यावसायिक रंगमंच के अभाव में नाटक एक साहित्यिक विधा ही बना रहा और समीक्षा के सही मानदण्डों की स्थापना नहीं हो पाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, छठे दशक के अन्त में संगीत नाटक अकादमी के अन्तर्गत नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा की स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस दृष्टि से नाटक को सही रंगमंच देने का काम श्री इब्राहिम अलकाजी ने किया। पहली बार रंगमंच की आधुनिक तकनीक का विधिवत अध्यापन और मंच पर व्यावहारिक प्रयोग आरम्भ हुआ। वैसे लोकमंच की स्थापना तो पहले ही हो चुकी थी। बंगला और मराठी रंगमंच भी इससे कहीं पहले विकसित एवं प्रतिष्ठित हो चुका था। नेशनल स्कूल की स्थापना के साथ हिन्दी रंगमंच को दिशा ही नहीं मिली, बल्कि रंगमंचीय धारणाओं में मूलभूत परिवर्तन परिलक्षित हुए। रंगमंच की दृष्टि नाटक से कुछ और मांग करने लगी। अतः कहना न होगा कि नाट्य समीक्षा में नयी सम्भावनाओं का विकास हुआ। वैसे तो नेमिचंद्र जैन 'कृति' में नाट्य समीक्षा का 'पार्श्व और प्रेक्ष्य' नामक स्तम्भ १९५९-६० में चलाते थे किन्तु 'नटरंग' की प्रकाशन-योजना के पीछे इन नये रंगमंचीय प्रयोगों की प्रेरणा ही रही थी।

विविध फुटकर समीक्षाओं के अतिरिक्त उन्होंने नाट्यकला पर 'रंग-दर्शन' नामक ग्रन्थ की रचना भी की। डा० लक्ष्मीनारायण लाल का 'नाटक और रंगमंच' भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। अब रंगमंच की दृष्टि से जिन बहुत सी बातों पर विचार करना जरूरी समझा गया उनमें एक पक्ष भाषा का भी था। डा० गोविन्द चातक द्वारा प्रसाद के नाटकों का भाषिक विश्लेषण, डा० विपिन कुमार अग्रवाल द्वारा आधुनिक संदर्भ में रंगमंच-पक्ष से नाटक में भाषा के प्रयोग का सवाल, ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

नाट्य समीक्षा के विकास का श्रेय उन लघु पत्रिकाओं को भी जाता है जो समय-समय पर नाटक सम्बन्धी समीक्षात्मक लेख प्रकाशित करती रहीं। इन लेखों की मूल दृष्टि नाटक पर नहीं, नाटक के रंगमंचीय प्रस्तुतिकरण पर रहती थी। यह इस बात का प्रमाण है कि नाटक दृश्य काव्य के रूप में सार्थक हुआ।

कथा समीक्षा के इतिहास में छठे दशक के मध्य युवा कथाकारों की एक पूरी पीढ़ी का उदय महत्वपूर्ण घटना है। अतः १९५५ ई० में सरस्वती प्रेस से भैरवप्रसाद गुप्त के सम्पादकत्व में 'कहानी' पत्रिका का निकलना आकस्मिक न होकर अत्यन्त स्वाभाविक है। निस्सन्देह इस पत्रिका ने सर्जनात्मकता की इस नयी प्रवृत्ति को एक जगह संकलित करने का काम तो किया ही, कहानी सम्बन्धी आलोचनात्मक लेखों के प्रकाशन से कथा-समीक्षा के लिए भी दरवाजे खोल दिए। १९५६ ई० के नव वर्षांक में डा० नामवर सिंह ने पहली बार यह प्रश्न उठाया कि 'नयी कविता' की तरह 'नयी कहानी' नाम की भी कोई चीज है अथवा नहीं। यह कहानी जो प्रेमचन्द के वस्तुगत यथार्थ और जैनेन्द्र व अज्ञेय की अन्तर्निष्ठ वैयक्तिकता के बीच अपनी दिशा निर्धारित कर रही थी कथा समीक्षा की पुरानी परिपाटी को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। डा० नामवर सिंह ने उसकी मांग को पहचान कर 'कहानी-नयी कहानी' में नयी कहानी की सफलता और सार्थकता पर विचार करते हुए स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर दी—"यह आवश्यक हो गया है कि कहानी की आलोचना को एक नये स्तर पर उठाया जाय। टेकनीक की शास्त्रीय चर्चाओं और कहानियों का सारांश बतलाते हुए उनकी सामान्य समस्याओं के परिचयात्मक विवरणों का काम बहुत हो चुका।" इसी के साथ उन्होंने कहानी को कथानक, चरित्र, वातावरण,

समीक्षा और काव्य समीक्षा की कोटियों का योगदान भी स्वीकार करते हैं।

यह बात नहीं कि पहले हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में समीक्षा बिल्कुल नहीं होती थी। किन्तु उसका रूप तत्वधर्मी ही रहा। समीक्षा का वर्तमान रूप उससे कई अर्थों में भिन्न एवं मौलिक है। बंधी-बंधायी लीक से हटकर उपन्यास की संरचना और उसमें यथार्थ के विभिन्न स्तरों के कल्पनात्मक सृजन के विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।

इसी समय आलोचना के क्षेत्र में कुछ परिवर्तन घटित हुए दिखाई दिए। नयी कविता और कहानी आन्दोलनों के उतार के साथ-साथ कवियों और कहानीकारों की एक युवा पीढ़ी ने साहित्य में प्रवेश किया। उनके आगमन की सूचना साहित्य के बदले हुए तेवर, नये मुहावरे, तथा यथार्थ दृष्टि के प्रति प्रबल आग्रह से मिलती है। यद्यपि आलोचना के प्रति इस पीढ़ी का रुख बहुत कुछ प्रशंसात्मक नहीं रहा, तथापि अशोक वाजपेयी, रमेशचन्द्र शाह जैसे युवा आलोचकों का सामने आना स्वागत का विषय रहा है।

अपने एक मात्र निबन्ध संग्रह 'फिलहाल' के माध्यम से अशोक वाजपेयी (१९४१ ई०) ने कुछ बेहद स्पष्ट मान्यताओं की स्थापना की है। कवि होने के कारण कविता की आलोचना ही उनका प्रमुख क्षेत्र रहा। आलोचना को वे कवि के लिए आपद्-धर्म नहीं मानते बल्कि दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं कि "आलोचना भी मनुष्य की हालत को देखने समझने का और अपनी अस्मिता और अभिव्यक्ति की खोज का एक उत्कृष्ट माध्यम हो सकती है।" व्यावहारिक आलोचना के क्षेत्र में समकालीन कवियों की समीक्षाओं के साथ-साथ उन्होंने आलोचना की भाषा पर भी विचार किया है और उसे बोलचाल की भाषा के निकट लाने का प्रयास किया है। रमेशचन्द्र शाह (१९४०) ने कविता के अतिरिक्त समकालीन हिन्दी कहानी में भी रुचि दिखाई और सहृदय व रसज्ञ के नाते उनका विश्लेषण किया। 'समानान्तर' (१९७३ ई०) इस बात का प्रमाण है कि उनका विशेष ध्यान सर्जनात्मक समीक्षा की ओर रहा। निस्सन्देह यह समीक्षा छायावादी ढंग की सी प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा से भिन्न है। रचनाकार की 'सृजन-प्रक्रिया' का आत्मीय विश्लेपण समीक्षा का मुख्य धर्म मानते हुए वे अपने आदर्श की व्याख्या इस प्रकार करते हैं— "वही सम्पूर्णता समझ और सहानुभूति की, दार्शनिक की सी गम्भीरता और बौद्धिक तेजस्विता, कलाकार की सी लाघवपूर्णता और परिष्कृति, तथा वैज्ञानिक की सी एकाग्र तथ्य चिन्ता, निर्लिप्ति और दक्षता।" (पृष्ठ १९) अज्ञेय के प्रति उनका विशेप झुकाव रहा और कहना न होगा कि अज्ञेय के कृतित्व के आधार पर ही उन्होंने समीक्षा के प्रतिमान निर्धारित किए। इनके अतिरिक्त समकालीन समीक्षकों में सुरेन्द्र चौधरी और विजयमोहन सिंह कथा समीक्षा के लिए, मलयज तथा विष्णु खरे काव्य समीक्षा के लिए उल्लेख्य हैं। पुस्तक समीक्षाओं के रूप में लिखी जाने वाली इन आलोचनाओं में एक सीमा तक साहित्य के सामान्य सिद्धान्तों की रूपरेखा भी बनती नज़र आती है जिससे हिन्दी आलोचना की बदली हुई भंगिमा का परिचय मिलता है।

डॉ० निर्मला जैन

रीडर, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली-११०००७

कृति तथा कृतिकार

—अग्रवाल, केदारनाथ, १९१०-

श्री प्रकाश, संपा.
केदार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७०. १४६ पृ. ७.५०

—अग्रवाल, वासुदेव शरण, १९०४-१९६६.

द्विवेदी, कृष्ण वल्लभ, संपा.
ज्ञानमूर्ति आचार्य वासुदेवशरण : स्व. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के जीवन और कृतित्व का गौरव-आलेख. लखनऊ, वासुदेव-ज्ञानपीठ, १९७४. २४८ पृ. १०.००

वृन्दावनदास, संपा.
डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७४. ३३२ पृ. ३८.००

—अग्रवाल, शांति, १९२०-

विश्वंभर नाथ, संपा.
'कवियत्री' श्रीमति शांति अभिनंदन ग्रंथ. बरेली, शांति प्रकाशन मंदिर, १९७०. ४, १२८ पृ. ५.००

—अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-

अग्रवाल, माया.
आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय; एक विवेचन. दिल्ली, अनिता प्रकाशन, १९७४. १७२ पृ. ६.००

अग्रवाल, विजय कुमार.
अज्ञेय : 'नदी के द्वीप'. दिल्ली, गोयल बुक डिपो, १९७३. २३२ पृ. ६.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
अन्तरा : अन्त:प्रक्रियाएं, १९७०-७४. दिल्ली, राजपाल एंड सन्स, १९७५. १२० पृ. १२.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
त्रिशंकु. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७३. १२० पृ. १०.००

कृष्ण 'भावुक', १९४०-
अज्ञेय की काव्य चेतना. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. ३८४ पृ. २५.००

चतुर्वेदी, रामस्वरूप.
अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या. सं. २. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७२. १८४ पृ. ६.००

चतुर्वेदी, शंभूनाथ, १९३७-
अज्ञेय का काव्य; एक पुनर्मूल्यांकन. लखनऊ, राष्ट्रीय साहित्य सदन, १९७३. १४२ पृ. १२.००

ठाकुर, देवेश, १९३३-
'नदी के द्वीप' की रचना-प्रक्रिया. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७५. १४८ पृ. १८.५०

त्रिवेदी, कुसुम.
अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियाँ : लघु प्रबंध. कानपुर, साहित्य संस्थान, १९७६. ९१ पृ. १५.००

बांदिवडेकर, चंद्रकांत महादेव, १९३२-
'अज्ञेय' की कविता; एक मूल्यांकन. इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९७१. २१५ पृ. १२.००

भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
अज्ञेय की काव्य-साधना. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७६. ३४४ पृ. १५.००

राय, गोपाल.
अज्ञेय और उनके उपन्यास. दिल्ली, मैकमिलन, १९७५. १९४ पृ. २१.००

राय, गोपाल.
शेखर : एक जीवनी : मूल्यांकन. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७३. ८५ पृ. ५.००

राय, नंदकुमार, १९४०-
अज्ञेय के उपन्यास : कथ्य और शिल्प. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. १२६ पृ. १२.५०

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
अज्ञेय और आंगन के पार द्वार. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. २०८ पृ. ३.००

शर्मा, श्रीराम, १९२०-
नया सप्तक : विवेचनात्मक अध्ययन (अज्ञेय एवं मुक्तिबोध). आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २०० पृ. ३.५०

—अब्दुर्रहमान प्रेमी, मिर्जा.

इक़बाल अहमद, संपा.
नख-शिख. बम्बई, महात्मा गांधी मेमोरियल रिसर्च सेंटर, १९७२. १०, १११ पृ. ५.००

—अब्दुलरहमान, ११वीं शती

द्विवेदी, हजारीप्रसाद तथा विश्वनाथ त्रिपाठी, संपा.
संदेश-रासक; आलोचना, हिंदी अनुवाद और अवचूरी व्याख्या सहित. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. २३६ पृ. १७.००

—अश्क, उपेन्द्रनाथ, १९१०-

चोपड़ा, सुदर्शन, इण्टरव्युकर्ता.
कहानी के इर्द-गिर्द. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७१ १५.००

जादव, वी. एस.
जय-पराजय की समीक्षा. कोल्हापुर, महाराष्ट्र ग्रंथ भंडार, १९६९. ८, ६९ पृ. २.००

राय, कपिलदेव.
साहित्यकार अश्क; व्यक्तित्व एवं काव्य. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७७. भा. १. २५.००

सिंह, अहिबरन, १९४८-
अश्क का कथा साहित्य. दिल्ली, कौशिक साहित्य सदन, १९७३. १९० पृ. १५.००
शोध प्रबन्ध.

—आलम, शेख, वि. १५८३.

टंडन, प्रेमनारायण, संपा.
श्याम सनेही : सरस खण्ड काव्य (आलम कृत). बंगलौर, विद्या-मंदिर, १९७४. १६, ३८ पृ. ३.५०

—उग्र (पांडेय बेचन शर्मा), १९०१-१९६७.

धर, मधु
'उग्र' का कथा-साहित्य. दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज़, १९७७. २३८ पृ. ३०.००

रत्नाकर, मोहनलाल.
पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' : कहानीकार उपन्यासकार. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७४. २५० पृ. २०.००

—उपाध्याय, अमर मुनि, १९०५-

तिवारी, बृजविहारी.
उपाध्याय अमरमुनि की साहित्य साधना. आगरा, सन्मति ज्ञानपीठ, १९७१. १६, ८८ पृ. २.००

—उपाध्याय, रामनारायण

शर्मा, शिवशंकर, संपा.
माटी की गंध; श्री रामनारायण उपाध्याय अभिनंदन ग्रंथ. हरसूद, साहित्यार्चन समिति, १९७४. २६७ पृ. २०.००

—उपाध्याय, हरिभाऊ, १८९२-

चतुर्वेदी, बनारसीदास तथा अन्य, संपा.
समन्वयी साधक श्री हरिभाउ उपाध्याय अभिनंदन ग्रंथ. जयपुर, राजस्थान-संस्कृत-संसद, १९६९. ७६१ पृ. ४०.००

— कपूर, पृथ्वीराज, १९०६-१९७२.

जानकी वल्लभ शास्त्री, १९१६-
नाट्यसम्राट् श्री पृथ्वीराज कपूर. मुजफ्फरपुर, निराला निकेतन; इलाहाबाद, वितरक लोकभारती प्रकाशन, १९७४. ४१०, २४ पृ. ५०.००
देवदत्त शास्त्री, संपा.
पृथ्वीराज कपूर अभिनंदन ग्रंथ. इलाहाबाद, किशलय मंच, १९६२. ४०, ३७६, २०३, ८१ पृ.

—कबीर, १५वीं शती.

अग्रवाल, माया.
कबीर वाणी-सार. दिल्ली, कला-मंदिर, १९७४. ८, ३२१, १०४ पृ. ७.००
अभिलाषदास, संपा.
बीजक, परख प्रबोधिनी सहित. गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६९. १९२, ९०४ पृ. १२.००
अभिलाषदास, संपा.
बीजक-शिक्षा (संक्षिप्त संग्रह). गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६३. १४, ६९२ पृ. ५.००
अभिलाषदास.
संत सम्राट् सद्गुरु कबीर. वाराणसी, बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, १९६९. १७६ पृ. २.४०
कबीर.
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने. इलाहाबाद, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९७२. ५४ पृ. १.००
कबीर साखी और पाठ. कोल्हापुर, शिवाजी विद्यापीठ, १९७३. ४, २८ पृ. १.००
कांतिकुमार, १९३२-
कबीरदास. ग्वालियर, किताब घर, १९७२. १६७ पृ. १२.५०
कुट्टन पिल्ले, एन. पी., टीका.
संत कबीर. हैदराबाद, साहित्य प्रकाशन, १९७५. १६८ पृ. १२.५०
चतुर्वेदी, परशुराम, १८९४-
कबीर साहित्य की परख. सं. ३. इलाहाबाद, भारती भंडार, १९७२. २८९ पृ. १०.००
चतुर्वेदी, परशुराम, १८९४- तथा महेंद्र, संपा.
कबीर-कोश. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. ४२० पृ. २७.००
टंडन, हरिहरनाथ तथा भगवत्स्वरूप मिश्र, संपा.
कबीर-सुधा. सं. २. आगरा, रवि प्रकाशन, १९७४. ८, २०४ पृ. ४.००
तिवारी, पारसनाथ, संपा.
कबीर वाणी संग्रह. सं. २. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. २५० पृ. ५.००
तिवारी, पारसनाथ, संपा.
कबीर वाणी सुधा. इलाहाबाद, १९७२. ११३, १५९ पृ. ७.००
तिवारी, रामचंद्र
कबीर मीमांसा. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. १७७, २० पृ. १५.००
त्रिपाठी, आर्या प्रसाद.
कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन. इलाहाबाद, सरोज प्रकाशन, १९७४. १६, ४८७ पृ. २५.००
शोध प्रबन्ध—सागर विश्व
दीक्षित, विश्वप्रसाद 'बटुक', १९१८- तथा रामधार मिश्र.
आधुनिक कबीर : एक अध्ययन. इलाहाबाद, अरविंद प्रकाशन; हिंदी भवन, जालंधर, १९७२. १२८ पृ. ४.००
द्वायर, विलियम, १९३०-
कबीर की भक्तिभावना. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. १४, २५४ पृ. ३०.००
द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
कबीर. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. ३६८ पृ. १६.००
नजीर मुहम्मद, १९३०-
कबीर के काव्य रूप. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७१. ३५६, १८ पृ. १५.००
शोध प्रबन्ध—अलीगढ़ मुस्लिम विश्व.
भट्ट, कान्तिकुमार, १९२४-
कबीर-परंपरा गुजरात के संदर्भ में. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. ३२६ पृ. ३५.००
शोध प्रबन्ध—गुजरात विश्व.
मिश्र, भगवतस्वरूप, १९२०- संपा.
कबीर ग्रंथावली; संजीवनी व्याख्या सहित. संशो. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ६१६, ३२ पृ. १५.००
मिश्र, भगवतस्वरूप, १९२०- संपा.
साखी सरोवर. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १०, २५६, ४१ पृ. ५.००
मिश्र, भगीरथ, १९१४- संपा.
कबीर वानी. सं. २. इन्दौर, कमल प्रकाशन; प्राप्ति स्थान : मानक चन्द बुक डिपो, उज्जैन, १९७२. ३७, ८४ पृ. ४.००
मिश्र, विद्युमाधव.
कबीर-ग्रंथावली की भाषा. दिल्ली, ज्ञानभारती प्रकाशन, १९७२. १५, ६३, १९२ पृ. २२.००
शोध प्रबन्ध, परिमार्जित सं.—काशी हिंदू विश्व.

मौर्य, प्रह्लाद, १९३९-
कबीर का सामाजिक दर्शन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४? २१४ पृ. ३०.००
शोध प्रबन्ध—पूना विश्व.

रामजीलाल सहायक, १९१८-
महात्मा कबीर एवं महात्मा गांधी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, आत्माराम, १९७२. ३५५ पृ. ३०.००
शोध प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

लाल, जयबहादुर, १९२७-
कबीर का सहज दर्शन. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७३. १६३ पृ. १०.००

वर्मा, राम कुमार.
कबीर का रहस्यवाद; कबीर के दार्शनिक विचारों का गंभीर विवेचन. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७२. २५६ पृ. ७.५०

विजयेन्द्र स्नातक, १९१४- संपा.
कबीर. सं. ३. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७०. २४८ पृ. १०.००

वियोगी हरि, संपा.
कबीर सुबोध साखियां. नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल, १९७४. ८, ८८ पृ. १.५०

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- तथा प्रताप चंद जैसवाल, संपा.
कबीर और जायसी; एक मूल्यांकन. आगरा, समीक्षा-लोक कार्यालय, १९७४. १५० पृ. १५.००

शर्मा, शिवमूर्ति, १९४१-
कबीर और जायसी. इलाहाबाद, वीना प्रकाशन, १९७२. ६, २०४ पृ. ५.५०

शर्मा, सरनामसिंह 'अरुण', १९१७- संपा.
कबीर-वाणी. आगरा, प्रसाद बुक ट्रस्ट, १९७२. १७०, ७२ पृ. ६.९०

शुक्ल, बैजनाथ प्रसाद, १९४८-
कबीर; एक नव्य बोध. लखनऊ, साहित्य-कुटीर, १९७५. १६१ पृ. २०.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र, १९३९-
कबीर : मूल्यांकन का एक और निकप. इलाहाबाद, सर्वराकेश प्रकाशन, १९७५. १६० पृ. १५.००

शुक्ल, सावित्री तथा राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, टीका.
कबीर ग्रंथावली. लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, १९७१. १५.००

सिंह, चंद्रदेव.
कहें कबीर. नई दिल्ली, शकुन प्रकाशन, १९७५. ३१ पृ. २.५०

सिंह, चंद्रमोहन.
कबीर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. इलाहाबाद, ज्ञानलोक, १९७२. ¹२८ पृ. १०.००

सिंह, जयदेव तथा वासुदेव सिंह.
कबीर वाङ्मय. ६ भा. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४
भा. १. रमैनी : भावार्थ बोधिनी व्याख्या सहित. १६.००

सिंह, राजदेव, १९३६-
आधुनिक कबीर. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, २०३ पृ. ५.००

सिंह, शुकदेव.
कबीर-बीजक. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७२. २०० पृ. १२.००

सुभद्रादास, स्वामी.
सत्य की खोज. चखना, कबीर मठ, १९७४. १४० पृ. ०.७५

सेठ, रवींद्रकुमार, १९३९-
तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १७, २३१ पृ. ३०.००
शोध प्रबंध—दिल्ली विश्व.

हनुमानदास.
तीसायंत्र. संपा. सुभद्रादास. सं. २. वाराणसी, श्री सद्गुरु कबीर हनुमत पुस्तकालय, १९७२. ६८ पृ. ०.५०

हनुमानदास.
बीजकग्रंथः संपा. सुभद्रादास. संशो. सं. २. वाराणसी, कबीर हनुमत पुस्तकालय, १९७२. १०३० पृ. १५.००
संस्कृत-हिंदी में.

हनुमानदास, संपा.
मूल बीजक. सं. ५. वाराणसी, श्री सद्गुरु कबीर हनुमत पुस्तकालय, १९७०. ४१६ पृ. १.५०

—केशवदास.

अग्रवाल, जगदीश नारायण, १९२६-
रामचरितमानस और रामचंद्रिका; तुलनात्मक अध्ययन. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७२. ४१६ पृ. ३०.००
शोध-प्रवंध—आगरा विश्व.

तिवारी, रामविनोद.
"'रामचंद्रिका' में नाटकीय तत्व. लखनऊ, माया प्रकाशन, १९७३. १६३ पृ. १५.००
शोध-प्रबंध—लखनऊ विश्व.

त्रिपाठी, सत्यनारायण, १९२७-
केशवदास की भाषा. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १४, ३८६ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—गोरखपुर विश्व.

भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
केशव-काव्यसुधा. दिल्ली, अनीता प्रकाशन; वितरक कला मंदिर, १९७३. ३६४ पृ. १०.००

रामस्वरूप, संपा.
रामचंद्रिका. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७१. ८, ५६, ६९ पृ. ४.८५

शर्मा, श्रीभगवान, संपा.
केशव काव्य संकलन. आगरा, भारती भवन, १९७३. १०, ३४१ पृ. ३.००

शुक्ल, शिवनारायण, १९३९-
केशव की काव्य-धारा. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७१. १६४ पृ. १०.००

संसारचंद्र, संपा.
रामचंद्रिका-सार-संग्रह : अध्ययन एवं संकलन. भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन; ग्वालियर : प्रमुख विक्रेता लायल बुक डिपो, १९७४. ४७, ८० पृ. ६.००

सिंह, विजयपाल, १९२३-
केशव की काव्य-चेतना. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७६. १३० पृ. १५.००

—केस, कवि, १७वीं शती.

वर्मा, सत्येंद्र, संपा.
माधवानल नाटक. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९६७. ३४, ६२ पृ. ६.००

—कौशिक (विश्वंभरनाथ शर्मा), १८९१-१९४५.

शर्मा, सुमित्रा.
'कौशिक' जी का कथा साहित्य. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७२. ९७ पृ. १०.००

—खुसरो, अमीर, १२५३-१३२५.

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
अमीर खुसरो और उनकी हिंदी रचनाएँ. दिल्ली, न्यू लिटरेचर, १९७६. १६६ पृ. १५.००

मोहम्मद मलिक, १९३५- संपा.
अमीर खुसरो, भावात्मक एकता के अग्रदूत. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. २२९ पृ. २५.००

राय, राजनारायण, संपा.
अमीर खुसरो. पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, १९७५. १६६ पृ. ५.००

—गरीबदास, १७१७-१७८२?

गरीबदास, १७१७-१७८२?
गरीबदास जी की बानी, जीवन-चरित्र सहित. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६९. १७३ पृ. २.५०

—गवासी, मुल्ला, १७वीं शती.

दशरथ राज, १९२७- तथा महेंद्र गोस्वामी, संपा.
मैना सतवंती. आगरा, ऊषाला प्रकाशन, १९७२. १११ पृ. १०.००

—गुप्त, परमेश्वरीलाल, १९१४-

कुलश्रेष्ठ, सरोजिनी, संपा.
डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त : व्यक्तित्व और कृतित्व. मथुरा, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ; वितरण विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९६६. १५७ पृ. ५.००

—गुप्त, मैथिलीशरण, १८८१-१९६४.

अखिलेश.
यशोधरा समीक्षा. कानपुर, प्रज्ञा प्रकाशन, १९७३. ४, १२३ पृ. ४.००

दीक्षित, आनंद प्रकाश, १९२५- संपा.
मैथिलीशरण गुप्त. इलाहाबाद, वसुमति प्रकाशन; वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७२. ७, २०७ पृ. ११.००

धग, विनोद.
मैथिलीशरण गुप्त के विरह-काव्य. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. १३१ पृ. १०.००
शोध प्रबन्ध—जम्मू विश्व.

पाठक, दानबहादुर 'वर'.
साकेत : एक अध्ययन. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, २७१ पृ. ८.००

प्रसाद, वासुदेवनंदन, १९२५- तथा श्यामनंदन शास्त्री.
योशधरा : एक अध्ययन. संशो. सं. ६. पटना, भारती भवन, १९७०. १०, २८६ पृ. ५.६०

बड़सूवाला, वीरेंद्रकुमार, संपा.
यशोधरा : काव्य-संदर्भ. दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन; एकमात्र वितरक : तेज प्रकाशन, १९७६. १७९ पृ. २०.००

भारतभूषण 'सरोज' तथा कृष्णदेव शर्मा.
साकेत. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, २३८ पृ. ३.००

राजूरकर, भ. ह., १९३५-
रामकथा के पात्र; वाल्मीकि, तुलसी, एवं मैथिलीशरण गुप्त के संदर्भ में. कानपुर, ग्रंथम, १९७२. ४५१ पृ. ४०.००

वर्मा, सहदेव, १९२६-
मैथिलीशरण गुप्त का खड़ी बोली के उत्कर्ष में योगदान. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७१. ४५० पृ. ३५.००
शोध प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

शर्मा, राजेश्याम, १९३७-
मैथिलीशरण गुप्त; प्रबंध काव्यों के प्रमुख पात्र और उनकी प्रवृत्तियां. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७५. ७, १२८ पृ. १५.००

शर्मा, शिवमूर्ति, १९४१-
साकेत-समीक्षा. इलाहाबाद, ऊर्जा प्रकाशन, १९७३. १४० पृ. १०.००

शर्मा, श्रीवल्लभ.
प्रिय प्रवास और साकेत की आदर्शगत तुलना. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७२. १८० पृ. १५.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
साकेत में काव्य, संस्कृति और दर्शन. संशो. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ३५५ पृ. १०.००

सिंह, रामविनोद, १९३९-
साकेत; एक नव्य परिबोध. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. १०३ पृ. १२.५०

सुनीता, एल, १९४४-
द्वापर; एक विश्लेषण. कोचिन, गीता प्रकाशन; वितरक : जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, १९७२. ११९ पृ. ३.५०

— गुप्त, सियारामशरण, १८९५-१९६३.

मिश्र, दुर्गाशंकर, १९३०-
सियारामशरण गुप्त की काव्य-साधना. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार; वितरक : विद्या मंदिर, बंगलौर, १९७५. २२४ पृ. २०.००

—गुरु, कामताप्रसाद

तिवारी, भवानीप्रसाद.
कामताप्रसाद गुरु; जीवन रेखाएँ और प्रतिनिधि रचनाएँ. भोपाल, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, १९७६. १४८ पृ. १५.००

—गुरुभक्तसिंह 'भक्त', १८९३-

गुप्त, किशोरीलाल, संपा.
गुरुभक्त सिंह 'भक्त' : व्यक्ति. जमानियां, भक्त अभिनंदन समिति; वितरक हिंदी प्रचारक संस्थान, १९६८. ८, ११२ पृ. २.५०

—गुलाब (दामोदरदास खंडेलवाल), १९२३-

शंभूशरण.
उषा : मूल्यांकन तथा विश्लेपण. दिल्ली, नवभारत प्रकाशन, १९६७. १०, १५० पृ. ३.००

—गोरखनाथ, १३वीं शती.

उपाध्याय, नागेंद्रनाथ.
गोरखनाथ. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा. २३२ पृ. ३०.००

—गोविंददास, १६वीं शती

झा, बदरी नारायण.
मैथिल कवि गोविंददास. बम्बई, अनुपमा प्रकाशन, १९७३. १७, २९२ पृ. ३०.००
शोध प्रबंध—बम्बई विश्व.

—गोविंददास, सेठ, १८९६-

शर्मा, ओमप्रकाश, १९२४- तथा अन्य, संपा.
गोविंददास संपूर्ण वाङ्मय. ६ भा. नई दिल्ली, साहित्य समारोह, १९७२-
भा. १. नाटककार सेठ गोविंददास. ३५.००;
भा. २. उपन्यासकार सेठ गोविंददास.
भा. ३. कविवर सेठ गोविंददास. २०.००

शर्मा, ओमप्रकाश, १९२४- तथा अन्य, संपा.
षट्कोण. ६ भा. नई दिल्ली, साहित्य समारोह, १९७२-
भा. १. आधुनिक नाटक. ३५.००;
भा. २. आधुनिक उपन्यास.
भा. ३. आधुनिक कविता.

सिंह, रामशंकर.
सेठ गोविंददास : व्यक्तित्व, कृतित्व तथा जीवन दर्शन. नई दिल्ली, एस. चांद एंड कंपनी, १९७१. ४०६ पृ. २५.००

—गोविंद साहब, १७१५-१८२२.

त्रिपाठी, राधिकाप्रसाद तथा कृष्ण कौल त्रिपाठी.
गोविंद साहब की हिंदी रचनाएं. फैजाबाद, आनंद प्रकाशन, १९७२. ६० पृ. १.००

—गोविंदसिंह, १६६६-१७०८.

सैनी, धर्मपाल, १९२६-
गुरु गोविंदसिंह के साहित्य में भारतीय संस्कृति के तत्त्व. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. १४१ पृ. १०.००

विनोदकुमार.
गुरु गोविंदसिंह का काव्य तथा दर्शन. अम्बाला, भागी पब्लिशर्स, १९७३. २४६ पृ. ३०.००

सुक्खसिंह, १७६८-१८३८.
गुर विलास. संपा. जयभगवान गोयल. पटियाला, भाषा विभाग, पंजाब, १९७०. ४३२ पृ. ५.३५

—ग्वाल, १९वीं शती

पचौरी, भगवान सहाय 'भवेश', १९२३-
महाकवि ग्वाल : व्यक्तित्व और कृतित्व. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७३. ४१३ पृ. ३०.००
शोध प्रबन्ध—आगरा विश्व.

पचौरी, भगवान सहाय 'भवेश', संपा.
महाकवि ग्वाल स्मृति-ग्रंथ. मथुरा, अखिल भारतीय व्रज साहित्य मंडल, १९६८. ४७ पृ. १.५०

—घनानंद, वि. १७१६-१७९६.

गुप्त, परमलाल, १९३३-
बिहारी और घनानंद. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७२. १२७ पृ. ७.५०

दीक्षित, रामप्रकाश, संपा.
घनानंद कवित्त का काव्य वैभव. सं. ६. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १६, १८० पृ. २.५०

वृद्धिराजा, राम, १९३७-
घनानंद : संवेदना और शिल्प. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. ११४ पृ. १५.००

मनोहरलाल, १९४८-
घनआनंद के काव्य में अप्रस्तुत योजना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. १८४ पृ. १०.००

वर्मा, कृष्णचंद्र, टीका.
चयनिका. ग्वालियर, रवीन्द्र प्रकाशन, १९७१. १७३ पृ. ५.००

शुक्ल, रामदेव, १९३८-
घनानंद का काव्य. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. ३२, १३० पृ. १६.००

शुक्ल, रामदेव, १९३८-
घनानंद का शृंगार काव्य. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. ११६ पृ. १२.००

सिंह, लखनलाल.
घनानंद का काव्यशिल्प. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७६. १५५ पृ. १५.००

—चंद वरदाई.

अग्रवाल, कृष्णचंद्र, संपा.
पृथ्वीराज रासो; एक प्रामाणिक पाठ. लखनऊ, प्रकाशन केंद्र, १९७१. १९५ पृ. ३.००

गौड़, विश्वनाथ, संपा.
पृथ्वीराज रासो : पद्मावती समय. सं. ५. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७४. ४, ७८ पृ. २.५०

टंडन, हरिहरनाथ, भाष्य.
पृथ्वीराज रासो (पद्मावती समय). सं. ११. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, १६० पृ. ३.००

बोरा, राजमल, १९३३-
पृथ्वीराज रासो : इतिहास और काव्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ३८, २३६, १६ पृ. २५.००

राकेश, संपा.
कयमास-वाद (पृथ्वीराज रासो). आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, २८७ पृ. ३.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९७३- भाष्य.
पृथ्वीराज रासो : शशिवृता-विवाह. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. १९२ पृ. २.५०

सोमशेखर 'सोम', व्याख्या.
रेवातट. धारवाड़, क्वालिटि पब्लिशर्स, १९७०. १४१ पृ. ५.००

—चंदूलाल, १८६२ या ३-१९१९.

नरेश, संपा.
चंदूलाल कृत बारामासे. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७५. ८२ पृ. १०.००

—चतुरसेन शास्त्री, १८९१-१९६०.

भारद्वाज, विद्याभूषण, १९३१-
चतुरसेन के उपन्यासों में इतिहास का चित्रण. मेरठ, प्रकाशन प्रतिष्ठान, १९७२. ६, ३०० पृ. ४०.००

हंस, सूतदेव, १९२३-
उपन्यासकार चतुरसेन के नारी-पात्र. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७४. १६, ४१४ पृ. ४२.००
शोध प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

—चतुर्वेदी, बनारसीदास, १८९२-

वृंदावनदास, संपा.
डा. बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७१. २९६ पृ. १५.००

—चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-

पुंज, वीना.
डा. बरसानेलाल चतुर्वेदी का हास्य-साहित्य. मथुरा, अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस. १९७०. ११२ पृ. ३.००
शोध प्रबन्ध—जम्मू तथा कश्मीर विश्व.

—चतुर्वेदी, हृषीकेश, १९०७-१९७०.

चतुर्वेदी, सतीशचंद्र, संपा.
हृषीकेश-रचनावली. आगरा, चंद्रादित्य प्रकाशन; मिलने का स्थान : विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. २८, ७५२ पृ. ३५.००

—चरनदास.

चरनदास, १७०३-१७८२.
चरनदासजी की बानी. इलाहाबाद, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स. १९६८-७२ भा. १. १.५०; भा. २. १.२५

—चौधरी, राजकमल, १९२९-१९६७.

जैन, प्रकाश तथा मनमोहिनी, संपा.
राजकमल चौधरी : कृतित्व और व्यक्तित्व. अजमेर, प्रकाशनालय, १९६८. १५८ पृ. १०.००

मिश्र, कीर्तिनारायण तथा वीरेंद्र मल्लिक.
राजकमल : जीवन आ साहित्य. कलकत्ता, आखर प्रकाशन, १९६८. १३८ पृ. ५.००

—चौहान, सुभद्रा कुमारी, १९०४-१९४८.

पाठक, कमलाकांत, १९२२-
सुभद्रा साहित्य और राष्ट्रीय कविता. जबलपुर, लोकचेतना प्रकाशन, १९७३. १०० पृ. ५.००

—जगजीवन साहब, वि. १७६१.

जगजीवन साहब, वि. १७६१.
जगजीवन साहब की बानी. २ भा. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६७-७२. भा. १. १.५०; भा. २. १.७५

—जसवंतसिंह, महाराजा, १६२५-१६७८.

मिश्र, विश्वनाथप्रसाद, संपा.
जसवंतसिंह ग्रंथावली. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७२. ५१, ४९३ पृ. २०.००

—जायसी, मलिक मुहम्मद.

अंसारी, निजामुद्दीन, १९५०-
सूफ़ी कवि जायसी का प्रेम निरूपण. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. १८४ पृ. २५.००

आशा किशोर.
जायसी कोश. नई दिल्ली, मैकमिलन, १९७६. ३६० पृ. ४४.००

उषा रानी.
पद्मावत के काव्य रूप का शास्त्रीय अध्ययन. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७४. ८, ८४ पृ. २०.००
शोध-प्रबंध, संशोधित—दिल्ली विश्व.

गौतम, मनमोहन, १९१८-
पद्मावत का काव्य वैभव. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७४. १५१ पृ. १०.००

गौतम, मनमोहन, १९१८- संपा.
पद्मावत-भाष्य. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७४. १६, ६७१ पृ. १८.००

त्रिगुणायत, गोविंद, १९२४-
जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्शन. सं. २. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७३. १२, ५४१ पृ. ३५.००

पांडेय, बृजनारायण, १९४५-
जायसी का सांस्कृतिक अध्ययन. इलाहाबाद, शोध साहित्य प्रकाशन, १९७३. २५५ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

पांडेय, सरोजनी.
जायसी का काव्य. दिल्ली, इंडियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १६८ पृ. ४.००

पाठक, शिवसहाय.
मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. ५१७ पृ. ३५.००

बिल्लौरे, रामचंद्र, १९१८-
जायसी की प्रेम-साधना. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७३. १६, ३८६ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध — विक्रम विश्व.

भारतभूषण 'सरोज'.
जायसी. सं. १०. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ८, १७९ पृ. २.५०

बाजपेयी, नारायण प्रसाद, १९२७-
सूफी महाकवि जायसी : वेदांत और रहस्यवाद. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७१. ९६ पृ. ६.५०

शर्मा, राजनाथ, १९२२- संपा.
जायसी ग्रंथावली (पद्मावत टीका सहित). सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ८, ७९५ पृ. १५.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- तथा प्रतापचंद जैसवाल, संपा.
कबीर और जायसी : एक मूल्यांकन. आगरा, समीक्षा-लोक कार्यालय, १९७४. १५० पृ. १५.००

शर्मा, शिवमूर्ति, १९४१-
कबीर और जायसी. इलाहाबाद, वीणा प्रकाशन, १९७२. ६, २०४ पृ. ५.५०

शर्मा, शिवमूर्ति, १९४१-
पदमावत-पराग. इलाहाबाद, वीणा प्रकाशन, १९७१. ८०, ८८ पृ. ५.००

श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, १९३५- तथा हरेंद्रप्रताप सिंहा.
जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७२. २८८ पृ. ६.००

सक्सेना, द्वारिका प्रसाद, १९२१-
पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ५६० पृ. २०.००

सिंह, राजदेव, १९३६- तथा उषा जैन.
पद्मावत नवमूल्यांकन. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७५. १४४ पृ. २०.००

, राजदेव, १९३६- तथा उपा जैन, टीका.
संक्षिप्त पद्मावत. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७५. ७४, ७५ पृ. २०.००

जैन, अक्षय कुमार, १९१५-

भारती, जयप्रकाश, संपा.
एक समर्पित पत्रकार. नई दिल्ली, हिंदी पत्रकारिता समिति के लिए हेमन्त प्रकाशन, १९७६. २०६ पृ. २०.००

—जैनेंद्रकुमार, १९०५-

कक्कड़, कुसुम.
जैनेंद्र का जीवन-दर्शन. दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७५. ३१४ पृ. ४०.००
कुलश्रेष्ठ, विजय.
जैनेंद्र के उपन्यासों की विवेचना : मौलिक शोधात्मक कृति. नई दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७६. ७,२४० पृ. ३५.००
गौतम, लक्ष्मणदत्त, १९३५-
जैनेंद्र और उनका 'त्यागपत्र'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७०. ७, ११८ पृ. ३.००
नूरजहाँ.
कहानीकार जैनेंद्र. लखनऊ, कलपकार प्रकाशन, १९७४. १०० पृ. १४.००
भिगारकर, सिंधू.
जैनेंद्र जी के उपन्यासों में नारी-चित्रण. दिल्ली, पुस्तक सदन, १९७३. ३२४ पृ. २५.००
मिश्र, रामदरश, १९२५-
'जयवर्धन' की पहचान; समीक्षाणक संकलन. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. ९३ पृ. ६.००
राजनारायण.
पुनर्नवा; चेतना और शिल्प. दिल्ली, विवेक प्रकाशन, १९७६. १२१ पृ. १६.००
शर्मा, ओम्प्रकाश, १९३९-
जैनेंद्र के उपन्यासों का शिल्प. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७५. १९७ पृ. २५.००
शर्मा, लक्ष्मीकांत.
जैनेंद्र के उपन्यासों का मनोविज्ञानपरक शैली-तात्विक अध्ययन. नई दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७५. ३०, २९२ पृ. ४५.००
शोध प्रबंध—राजस्थान विश्व.
श्रीवास्तव, परमानंद, १९३५-
जैनेंद्र और उनके उपन्यास. संपा. विजयेंद्र स्नातक तथा कमलकिशोर गोयनका. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. ८, १५१ पृ. १९.००
सहगल, मनमोहन, १९३२-
उपन्यासकार जैनेंद्र : मूल्यांकन और मूल्यांकन. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७६. ३०३ पृ. ४०.००
वर्णी, जिनेंद्र, १९२१-
जैनेंद्र सिद्धांत कोश. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७०-७३. ४ भा. २१०.००

—जोशी, लक्ष्मीलाल, १९०१-

भट्ट, चंद्रशेखर तथा बद्रीप्रसाद पंचोली, संपा.
शिक्षा के बढ़ते चरण; पं. लक्ष्मीलाल जोशी अभिनंदन ग्रंथ. अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स, १९७०. १३, २१, २०४ पृ. २५.००

—ज्ञानदेव, वि. १२९०.

ज्ञानदेव, वि. १२९०.
ज्ञानेश्वरी; अर्थात् गीता पर श्री ज्ञानेश्वर महाराज की भावार्थ दीपिका टीका का अनुवाद. संशो. सं० ३. प्रयाग, इंडियन प्रेस, १९७१. ६०६ पृ. ८.००
वानखड़े, कृ. गो., १९२८-
संत ज्ञानेश्वर. नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७३. ९, ७६ पृ. ३.००

—झा, चंदा, १८३०-१९०९.

झा, ललितेश्वर, १९२७.
कवीश्वर चंदा झा. दरभंगा, ग्रंथालय प्रकाशन, १९६४. १९, १९५ पृ. ५.००

—टंडन, पुरुषोत्तमदास, १८८२-१९६२.

मिश्र, ज्योतिप्रसाद 'निर्मल', संपा.
टंडन निबंधावलि. वर्धा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, १९७०. १५, १६६ पृ. ४.००

सिंह, लक्ष्मीनारायण तथा ओंकार शरद, १९११- संपा.
भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन : व्यक्तित्व एवं संस्मरण. इलाहाबाद, ज्योत्सना प्रकाशन, १९६७. ४१६ पृ. १०.००

—टंडन, प्रेमनारायण, १९१५-१९७३.

टंडन, तेजनारायण, संपा.
पुण्य स्मृतियाँ, राष्ट्रभारती के अमर-साधक डा. प्रेमनारायण टंडन के प्रति. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७४. २१६, ७२ पृ. ३०.००

—टोडरमल, १८वीं शती

भारिल्ल, हुकमचंद, १९३६-
पंडित टोडरमल : व्यक्तित्व और कृतित्व. जयपुर, पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, १९७३. ३५, ३६८ पृ. ७.००
शोध प्रबंध—इंदौर विश्व.

—ठाकुर, ज. १७३६.

मिश्र, चंद्रशेखर शास्त्री, संपा.
ठाकुर. अनुसंपादक विश्वनाथप्रसाद मिश्र. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७४? १६, १०५ पृ. १०.००

—ठाकुर दास, १७६६-१८२३.

मिश्र, चंद्रशेखर शास्त्री, संपा.
ठाकुर. अनुसंपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७४? १६, १०५ पृ. १०.००

—तुलसी, आचार्य, १९१४-

त्रिवेदी, शिवाशंकर, १९३४-
आचार्य श्री तुलसी कृत 'अग्नि-परीक्षा' की अग्नि-परीक्षा. सरदारशहर, राजस्थान, सृजन-चेतना, १९७०. १०७ पृ. २.००

—तुलसीदास.

अग्निहोत्री, प्रभुदयालु, संपा.
रामचरितमानस : एक विश्लेषण. भोपाल, रामचरितमानस चतुश्शताब्दी समारोह समिति, मध्यप्रदेश, १९७५. ७, २६७ पृ. १५.००

अग्रवाल, गिरिराजशरण, संपा.
तुलसी-स्मारिका. संभल, उ. प्र., मानस चतुश्शती आयोजन समिति, १९७३. २ भा. भा. १. ४.००; भा. २. ३.००

अग्रवाल, जगदीश नारायण, १९२९-
रामचरितमानस और रामचन्द्रिका; तुलनात्मक अध्ययन. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७२. ४१६ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

अग्रवाल, रामप्रकाश, संपा.
तुलसी-सुषमा. इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, ११८ पृ. २.२५

अग्रवाल, रामेश्वरदयालु.
कम्बरामायण और रामचरितमानस. मेरठ, कल्पना प्रकाशन, १९७३. ४५५ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

अभिलाषदास, संपा.
तुलसी पंचामृत (सटीक). गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६७. १२, १८० पृ. १.८०

अभिलाषदास, संपा.
मानस मणि. गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६७. ८, १९३, १८ पृ. २.००

अवस्थी, ललितमोहन तथा अन्य, संपा.
मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह स्मारिका. कानपुर, संयोजक, मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह समिति, १९७३. १५६ पृ. २.००

अवस्थी, विजय बहादुर, १९२०-
रामचरितमानस पर पौराणिक प्रभाव. दिल्ली, दिल्ली पुस्तक सदन, १९७४. ४९४ पृ. ७०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

आर्य, रामस्वरूप, १९३३- तथा गिरिराजशरण अग्रवाल.
तुलसी मानस संदर्भ. संभल, उ. प्र., मानस चतुश्शती आयोजन समिति; मुख्य वितरक: हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७४. ६३६ पृ. ५०.००

उपाध्याय, रामकिंकर.
मानस-मुक्तावली. कलकत्ता, बिरला अकादमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, १९७४-७५. ४ भा. २५.०० (प्र.)

कमलादेवी 'रागी'.
मानस शंका समाधान. झांसी. ३४ पृ. ०.७५

सिंह, लक्ष्मीनारायण तथा ओंकार शरद, १९११- संपा.
भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन : व्यक्तित्व एवं संस्मरण. इलाहाबाद, ज्योत्सना प्रकाशन, १९६७. ४१६ पृ. १०.००

—टंडन, प्रेमनारायण, १९१५-१९७३.

टंडन, तेजनारायण, संपा.
पुण्य स्मृतियाँ, राष्ट्रभारती के अमर-साधक डा. प्रेमनारायण टंडन के प्रति. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७४. २१६, ७२ पृ. ३०.००

—टोडरमल, १८वीं शती

भारिल्ल, हुकमचंद, १९३६-
पंडित टोडरमल : व्यक्तित्व और कृतित्व. जयपुर, पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, १९७३. ३५, ३६८ पृ. ७.००
शोध प्रबंध—इंदौर विश्व.

—ठाकुर, ज. १७३६.

मिश्र, चंद्रशेखर शास्त्री, संपा.
ठाकुर. अनुसंपादक विश्वनाथप्रसाद मिश्र. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९३४? १६, १०५ पृ. १०.००

—ठाकुर दास, १७६६-१८२३.

मिश्र, चंद्रशेखर शास्त्री, संपा.
ठाकुर. अनुसंपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९३४? १६, १०५ पृ. १०.००

—तुलसी, आचार्य, १९१४-

त्रिवेदी, शिवाशंकर, १९३४-
आचार्य श्री तुलसी कृत 'अग्नि-परीक्षा' की अग्नि-परीक्षा. सरदारशहर, राजस्थान, सृजन-चेतना, १९७०. १०७ पृ. २.००

—तुलसीदास.

अग्निहोत्री, प्रभुदयालु, संपा.
रामचरितमानस : एक विश्लेषण. भोपाल, रामचरितमानस चतुश्शताब्दी समारोह समिति, मध्यप्रदेश, १९७५. ७, २६७ पृ. १५.००

अग्रवाल, गिरिराजशरण, संपा.
तुलसी-स्मारिका. संभल, उ. प्र., मानस चतुश्शती आयोजन समिति, १९७३. २ भा. भा. १. ४.००; भा. २. ३.००

अग्रवाल, जगदीश नारायण, १९२६-
रामचरितमानस और रामचन्द्रिका; तुलनात्मक अध्ययन. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७२. ४१६ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

अग्रवाल, रामप्रकाश, संपा.
तुलसी-सुषमा. इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, ११८ पृ. २.२५

अग्रवाल, रामेश्वरदयालु.
कम्बरामायण और रामचरितमानस. मेरठ, कल्पना प्रकाशन, १९७३. ४५५ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

अभिलाषदास, संपा.
तुलसी पंचामृत (सटीक). गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६७. १२, १८० पृ. १.८०

अभिलाषदास, संपा.
मानस मणि. गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९६७. ८, १६३, १८ पृ. २.००

अवस्थी, ललितमोहन तथा अन्य, संपा.
मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह स्मारिका. कानपुर, संयोजक, मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह समिति, १९७३. १५६ पृ. २.००

अवस्थी, विजय बहादुर, १९२०-
रामचरितमानस पर पौराणिक प्रभाव. दिल्ली, दिल्ली पुस्तक सदन, १९७४. ४९४ पृ. ७०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

आर्य, रामस्वरूप, १९३३- तथा गिरिराजशरण अग्रवाल.
तुलसी मानस संदर्भ. संभल, उ. प्र., मानस चतुश्शती आयोजन समिति; मुख्य वितरक: हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७४. ६३६ पृ. ५०.००

उपाध्याय, रामकिंकर.
मानस-मुक्तावली. कलकत्ता, बिरला अकादमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, १९७४-७५. ४ भा. २५.०० (प्र.)

कमलादेवी 'रानी'.
मानस शंका समाधान. झांसी. ३४ पृ. ०.७५

कुलदीप नारायण 'झड़प'.
गोस्वामी तुलसीदास : जीवन वृत्त और व्यक्तित्व. कलकत्ता, जनता प्रेस, १९७२. ३१.००
कृष्णमूर्ति, सरगु, १९३६-
तुलसी रामायण और पंप रामायण. लखनऊ, हिंदी-साहित्य-भंडार; प्रमुख वितरक : विद्या मन्दिर, १९७४. ११६ पृ. १५.००
केणी, सज्जनराम.
रामचरितमानस; तुलनात्मक अनुशीलन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४. ४६३ पृ. ४५.००
शोध प्रवन्ध—पुणे विद्यापीठ.
गया सिंह, १९४८-
तुलसी-काव्य की लोकतात्विक संरचना. वाराणसी, संजय प्रकाशन, १९७३? २१५ पृ. २०.००
गुप्त, माताप्रसाद, १९०६-
तुलसीदास; एक समालोचनात्मक अध्ययन. प्रयाग, हिंदी परिषद प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, १९६५. २०, ५३५ पृ. १६.००
शोध-प्रवन्ध—प्रयाग विश्व.
गुप्त, सुरेशचंद्र, १९३३-
तुलसी का काव्यादर्श. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. ११२ पृ. १०.००
गुप्ता, शीलवती.
तुलसीदास का राजनीतिक चिंतन. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७७. १२८ पृ. २०.००
गुप्ता, सरोज, १९३९-
रामचरितमानस की सूक्तियों का विवेचनात्मक अध्ययन. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७५. २८८, ४७ पृ. ४०.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.
गोविंद, टीका.
रामचरितमानस अर्थात् रामायण, आठों काण्ड सचित्र. देहली, रतन एण्ड कं. १००० पृ. ४०.००
ग्रियर्सन, जार्ज अब्राहम.
तुलसीदास : व्यक्ति और रचना संदर्भ. संपा. भगवती प्रसाद सिंह. रूपा. शांतासिंह तथा भुवनेश्वरनाथ पांडेय. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. १६, १४८ पृ. १५.००
चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद, संपा.
मानस चतुःशती स्मारिका. नई दिल्ली, रामचरितमानस चतुःशती राष्ट्रीय समिति, १९७४. ९६ पृ.
चतुर्वेदी, परशुराम तथा कमला प्रसाद पांडेय, संपा.
मानस अभिनंदन ग्रंथ. सतना, मानस चतुश्शताब्दी समिति, १९७४. ८, ४६७ पृ. ३०.००
चतुर्वेदी, सीताराम, १९०७- तथा अन्य, संपा.
तुलसी-ग्रंथावली. काशी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७२-७३. ३ भा. ६६.००
चन्द्रशेखर, १९३३-
रामचरितमानस में पुराख्यान-तत्त्व. लखनऊ, नंदन प्रकाशन, १९७१. २०० पृ. १२.००
चौबे, त्रिभुवननाथ, १९३९-
रामचरितमानस का टीका-साहित्य. सुलतानपुर, सम्भावना प्रकाशन, १९७५. ३२२ पृ.
शोध-प्रबंध—गोरखपुर विश्व.
जैन, कुंदनलाल, संपा.
तुलसी वाङ्मय विमर्श. बरेली, रामचरितमानस प्रचार समिति; मुख्य वितरक : राज बुक डिपो, १९७४. ४६४ पृ. ४०.००
जैन, भानुकुमार, १९३६-
तुलसीकृत कवितावली का अनुशीलन. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७२. १४३ पृ. १२.००
जोशी, नारायण भास्कर, संपा.
सार्थ श्रीतुलसीरामायण. पूना, सारथी प्रकाशन, १९७०. २४, ८९२ पृ. ४०.००
हिंदी-मराठी में
टेसीटरी, एल. पी.
रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण. अनु. राधिकाप्रसाद त्रिपाठी. फैजाबाद, आनंद प्रकाशन, १९७४. १०७ पृ. १२.५०
तिवारी, गोपीनाथ, १९१३- तथा अन्य, संपा.
तुलसीदास : विभिन्न दृष्टियों का परिप्रेक्ष्य. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. १६६ पृ. ९.००
तिवारी, नंदकिशोर, १९४१-
तुलसी साहित्य में माया. सहसराम, रोहतास, हिंदी साहित्य-सम्मेलन, १९७४. ११८ पृ. १०.००
तिवारी, बद्रीनाथ.
मानस-हृदय अयोध्याकांड. सहसराम, रोहतास जिला हिंदी साहित्य-सम्मेलन; प्राप्ति स्थान : राजेंद्र पुस्तक भंडार, १९७६. १६, १७४ पृ. १५.००
तुलसीदास.
तुलसी ग्रंथावली. सं. २. काशी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७५. भा. १. रामचरितमानस. ४०.००
तुलसीदास.
तुलसी ग्रंथावली. वाराणसी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७३. भा. ३. गोस्वामी तुलसीदास जी की जीवनी के विभिन्न स्रोत तथा समीक्षात्मक निबंध. १२, ३७६ पृ. २०.००
तुलसीदास.
रामचरितमानस. कलकत्ता, बिड़ला एकाडेमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, १९६६. ४४६ पृ. ११०.००

तुलसीदास.
रामचरितमानस और एक नाथी भावार्थ रामायण. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन, १९७५. ६६ पृ. ८.५०

तुलसी मंजरी.
जबलपुर, मदनमहल जनरल स्टोर्ज, १९७३. ४, ६० पृ. १.००

त्रिपाठी, गोवर्द्धनदास.
तुलसीदास और राजापुर. बांदा, लक्ष्मी प्रकाशन माला, १९७४. १०, १३६ पृ. ६.००

त्रिपाठी, रमानाथ, १९२६-
रामचरितमानस और पूर्वांचलीय रामकाव्य. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७२. ४६६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

त्रिपाठी, राधिकाप्रसाद, अनु.
रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण. फैजाबाद, आनंद प्रकाशन, १९७४. ३४, २७७-७८८ पृ. १२.५०

त्रिपाठी, विश्वनाथ, १९३२-
लोकवादी तुलसीदास. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७४. १५९ पृ. १६.००

त्रिपाठी, विष्णु, संपा.
मानस पंचामृत; मानस मर्मज्ञ पं. रामकिंकर जी उपाध्याय के पांच प्रवचनों का संग्रह एवं विभिन्न विद्वानों के लेख. कानपुर, मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह समिति; वितरक : साहित्य रत्नालय, १९७३. १४९ पृ. ३.००

त्रिवेदी, ज्ञानवती.
गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और मानव जीवन में उसका महत्त्व. वाराणसी, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, १९७४. ३०० पृ. २५.००

देव, आचार्य, १९४२-
क्या तुलसी के मन में शूद्रों के प्रति घृणा थी? कानपुर, मानस तरंग; पुस्तक प्राप्ति केन्द्र : पंकज प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर, १९७३.

द्विवेदी, चारुचंद्र, संपा.
मानस-चतुश्शती-ग्रंथ. रायबरेली, द्विवेदी-स्मारक-संघ, १९७४. ४७८ पृ. ६५.००

द्विवेदी, राधेश्याम, संपा.
गो. तुलसीदास जी कृत श्री कृष्ण पदावली (रचना सं. १६२८ वि.) तथा श्री अविनाशराय ब्रह्मभट्टकृत तुलसी प्रकाश (रचना सं. १६७७ वि.). मथुरा, भारती अनुसंधान भवन, १९७३. २०, ६३ पृ. २.००

द्विवेदी, राधेश्याम, संपा.
श्री कृष्ण पदावली. मथुरा, भारती अनुसंधान भवन, १९७३. २४, ६४ पृ. २.००

नगेंद्र, १९१५- तथा रमानाथ त्रिपाठी, संपा.
रामचरितमानस : तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, रामचरितमानस-चतुःशती राष्ट्रीय समिति के निमित्त राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७४. ४९६ पृ. ५०.००

पांडेय, रत्नाकर.
तुलसीदास और उनका संदेश. लखनऊ, तुलसी प्रकाशन, १९७४. ११८ पृ. १०.००

पांडेय, राजकुमार, १९२७-
गोस्वामी तुलसीदास : प्रबंधकार एवं प्रगीतकार. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७४. १६, १६४ पृ. २०.००

पांडेय, रामलखन, १९२३-
तुलसीदासोत्तर हिंदी राम-साहित्य. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७२. १६, २८८ पृ. २२.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

पांडेय, वागीशदत्त.
मानस संदर्भ कोष. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. ३३६ पृ. २५.००

पांडेय, संगमलाल, १९२९-
रामायण-विद्या. इलाहाबाद, धर्मविज्ञान पीठ, १९७३. १२८ पृ. ५.००

पांडेय, सुधाकर, १९२७- संपा.
कवितावली. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. ३६, २०९ पृ. १६.००

पांडेय, सुधाकर, १९२७- संपा.
रामचरितमानस : साहित्यिक मूल्यांकन. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७२. २४५ पृ. १३.००

पुष्पाकुमारी.
'मानस' के रामेतर कथा-प्रसंगों में नाटकीयता. लखनऊ, नंदन प्रकाशन, १९७०. १६८ पृ. ७.००

बलदुआ, बालकृष्ण.
रामचरितमानस. कानपुर, १९७२. २.००

भट्ट, सूर्य नारायण.
मानस-दर्शन. इलाहाबाद, उर्जा प्रकाशन, १९७१. २१८ पृ. १०.००

मदान, इन्द्रनाथ, १९१०- संपा.
तुलसी-प्रतिभा. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. २४७ पृ. १२.००

महतो, गनौरी, १९४१-
रामचरितमानस : नानापुराण निगमागम सम्मत. बस्ती, साकेत प्रकाशन, १९७४. २८९ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—मगध विश्व.

माहेश्वरी, रामगोपाल तथा अन्य, संपा.
तुलसी-साहित्य-दर्शन. नागपुर, विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७४. १९९ पृ. ७.००

मित्र, बलदेवप्रसाद, संपा.
सुन्दर कांड (सटीक). सतना, मानस संघ, १९७३. १५४ पृ. ३.००
मिश्र, बलदेवप्रसाद, १९१३-१९६५.
तुलसी की राम कथा. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७४. १८, ८८ पृ. ६.००
मिश्र, भगीरथ, १९१४-
महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७३. २७५ पृ. १५.००
मिश्र, रघुनंदन, संपा.
तुलसीदास; विचार और विवेचन. कलकत्ता, मिलन मंदिर, १९७४. ३०१ पृ. २०.००
मिश्र, रामकृष्णप्रसाद.
रामचरितमानस का योगाध्यात्मिक विश्लेपण. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. ३९५ पृ. ४०.००.
शोध-प्रवन्ध—रांची विश्व.
मिश्र, रामप्रतिपाल.
मध्ययुगीन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर तुलसी-काव्य-चिंतन. नई दिल्ली, एस. चन्द एण्ड कंपनी, १९७६. ५३७ पृ. ४०.००
शोध-प्रवंध—विक्रम विश्व.
मिश्र, रामप्रसाद, १९३२-
विश्वकवि तुलसी और उनके काव्य. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७३. २९६ पृ. ३०.००
मिश्र, सत्यनारायण, १९३१-
संतकवि तुलसीदास निरंजनी, साहित्य और सिद्धान्त. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७४. ३५५ पृ. ४०.००.
शोध-प्रवन्ध—आगरा विश्व.
मेघ, रमेशकुन्तल.
तुलसी आधुनिक वातायन से. सं. २. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७३. ३०६ पृ. १८.००
युगेश्वर, १९३४-
तुलसीदास; आज के संदर्भ में. इलाहाबाद, अभिव्यक्ति प्रकाशन, १९६८. १९८ पृ. ५.५०
राजूरकर, भ. ह., १९३५-
कवितावली; संदर्भ और संदर्भ. कानपुर, ग्रंथम, १९७६. ५५ पृ. ५.००
राजूरकर, भ. ह., १९३५-
रामकथा और तुलसी. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४. १९८ पृ. २०.००
राजूरकर, भ. ह., १९३५-
रामकथा के पात्र; वाल्मीकि, तुलसी एवं मैथिलीशरण गुप्त के संदर्भ में. कानपुर, ग्रंथम, १९७२. ४५१ पृ. ४०.००

रानाडे, गोविंद मोरेश्वर.
तुलसी-मंजरी. जबलपुर, मदनमहल जनरल स्टोर्ज़, १९७३. ४, ६० पृ. १.००
रामन मेनन, टी. के.
रामचरितमानसम. चित्तूर, १९७४. ८, ११५६ पृ. २५.००.
पाठ्य मलयालम लिपि में.
रामलोचनशरण.
मैथिली श्रीरामचरितमानस : गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीरामचरितमानसक यथासंभव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली रूप. लहेरियासराय, पुस्तक भंडार, १९६८? ८, ५०५ पृ. १०.००
राय, कुलदीपनारायण 'झड़प'.
गोस्वामी तुलसीदास : जीवन वृत्त और व्यक्तित्व. हावड़ा, अ. भा. ब्रा. परिषद् (बंग), १९७२? ६८७, १२ पृ. ३१.००
वचनदेव कुमार, १९३४-
रामचरितमानस में अलंकार-योजना. दिल्ली, हिंदी-साहित्य संसार, १९७१. २८८ पृ. ४१.००.
शोध-प्रवन्ध—पटना विश्व.
वर्मा, राजेन्द्रप्रसाद, १९३५-
रामचरितमानस की नामानुक्रमणिका. दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, १९७६. २२, १७० पृ. २०.००
वर्मा, सुरेन्द्रनाथ तथा अन्य, संपा.
रामचरितमानस स्मारिका. शिमला, भाषा एवं सांस्कृतिक प्रकरण विभाग, हिमाचल प्रदेश, १९७५. ४, ९६ पृ. १.००
विनीत विहारीदास 'विनीत'.
मानस में अंतावस्था का प्रसंग. सतना, मानस संघ, १९७३. ३१ पृ. ०.३०
विनीत विहारीदास 'विनीत'.
मानस में प्राचीन दहेज प्रथा और आज उसकी व्यथा. रामवन, मानस संघ, १९७२. २, २९ पृ. ०.४५
विनीत विहारीदास 'विनीत'.
मानस में रुचिर-प्रसंग. रामवन, मानस संघ. १६ पृ. ०.२५
विनीत विहारीदास 'विनीत'.
श्रीरामचरितमानस में विकास. रामवन, मानस संघ, १९७३. २८ पृ. ०.५०
वियोगी हरि.
तुलसी सुधा सार; गोस्वामी तुलसीदास की विविध रचनाओं के सरस स्थलों का संकलन. आगरा, शिवलाल एण्ड कंपनी, १९७६. ३१२ पृ. २०.००
वियोगी हरि. संपा.
विनय-पत्रिका. टीका. हरि-तोषिणी. सं. ११. वाराणसी, गोपाल दास पोद्दार. ४४२ पृ. १०.००

वियोगी हरि, संपा.
सुबोध-दोहे. नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल, १९७४. ६४ पृ. १.००

विश्वनाथ, संपा.
हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास. नई दिल्ली, विश्वविजय प्रकाशन; वितरक : दिल्ली बुक कंपनी, १९७२. १५५ पृ. ८.००

विष्णुकांत शास्त्री तथा जगन्नाथ सेठ, संपा.
तुलसीदास आधुनिक संदर्भ में. कलकत्ता, बंगीय हिंदी परिषद्, १९७६. ३०.००

वीर सिंह.
सुख का स्रोत रामचरितमानस. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. ९५ पृ. ७.५०

व्यास, भवानीशंकर 'विनोद'.
मानस महर्षि गोस्वामी तुलसीदास. बीकानेर, कल्पना प्रकाशन, १९७३. ६४ पृ. ३.००

व्यौहार, राजेन्द्रसिंह.
तुलसी के द्वादस दल. रामवन, मानस संघ, १९७२. २२, २९२ पृ. ८.००

शर्मा, चतुर्भुज, १९००-
संध्या वंदन; रामचरितमानस में प्रतिपादित जीवन-दर्शन में अभिप्रेरित समसामयिक निवन्धों का संचयन. लखनऊ, तुलसी शोध संस्थान के लिए भार्गव प्रकाशन, १९७२. १०७ पृ. १०.००

शर्मा, ब्रह्मदत्त.
तुलसी. कलकत्ता, डावर (डा. एस. के बर्मन), १९७५. १५, २५४ पृ. २५.००

शर्मा, मुंशीराम, १९०१-
तुलसी का मानस. कानपुर, ग्रंथम, १९७२. २४५ पृ. २०.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२- संपा.
विनयपत्रिका. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १२, ५३६ पृ. ८.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
विनयपत्रिका : आलोचनात्मक अध्ययन. सं.७. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. ८, १७१ पृ. ३.००

शर्मा, विजयदत्त.
'मानस' में परसर्ग-योजना. आगरा, भारती भवन; प्रमुख विक्रेता, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १२२ पृ. १२.००

शर्मा, विनय मोहन, १९०५-
तुलसीदासी रामचरितमानस और एकनाथी भावार्थ रामायण : एक तुलनात्मक दृष्टि. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन : वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७५. ९८ पृ. ८.५०

शर्मा, शिवशंकर 'राकेश'.
'रामचरितमानस' में योग के स्रोत. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७६. १२८ पृ. ८.००

शर्मा, शीला, १९१९-
तुलसीकृत रामायण में उपनिषद्. बरेली, १९७१. भा. १. ३.२५

शर्मा, सुशीला.
तुलसी-साहित्य में बिम्ब-योजना. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७२. ३३२ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

शिवदयाल, संपा.
बाल मानस. जबलपुर, श्री गिरिजा प्रकाशन, १६, १५७ पृ. ३.५०

शुक्ल, उमाशंकर 'उमेश', १९३६-
मानस-मीमांसा. प्रयाग, ज्ञान प्रकाशन, १९७३. ११, ९६ पृ. ५.५०

शुक्ल, रमाकांत.
जैनाचार्य रविषेण-कृत 'पद्मपुराण' और तुलसी कृत 'रामचरितमानस'. दिल्ली, वाणी परिषद, १९७४. १६, ४८० पृ० ६०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

शुक्ल, रामचन्द्र.
गोस्वामी तुलसीदास. सं. ११. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७२. ११५ पृ. ५.००

शुक्ल, रामचन्द्र तथा अन्य, संपा.
तुलसी ग्रंथावली. वाराणसी, नागरी-प्रचारिणी सभा, १९७३-७४. भा. १. १५.००; भा. २. २०.००

श्रीरामचरितमानस. सुन्दरगढ़, उड़ीसा सीमेंट लि. ४०, ६, १५३४, १६ पृ.

श्रीवास्तव, दयानंद, संपा.
तुलसी प्रदक्षिणा. कलकत्ता, बड़ा बाजार लाइब्रेरी प्रकाशन, १९७३. २३० पृ. १५.००

श्रीवास्तव, वीरेन्द्रपाल, १९३२-
गोस्वामी तुलसीदास सम्बन्धी समीक्षाओं और शोधों का अनुशीलन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७४. २२, ६१७ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

संघी, संतोष, १९३६-
विनय पत्रिका में अंतःकथाएँ. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७३. ११२ पृ. १०.००
शोध-प्रबन्ध, संशोधित—राजस्थान विश्व.

सिंह, इंद्रपाल 'इंद्र', १९२९-
तुलसी, साहित्य और साधना. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ३०३ पृ. १०.००

सिंह, उदयभानु, संपा.
तुलसी-मुक्तावली. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७४. १९१ पृ. १२.००

सिंह, केशवप्रसाद तथा वासुदेव सिंह, संपा.
तुलसी, संदर्भ और दृष्टि. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७४. १२, ३०८ पृ. २०.००

सिंह, जनार्दन.
तुलसी की भाषा : अवधी भाषा तात्त्विक अध्ययन. कानपुर, साहित्य संस्थान, १९७६. २५९ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

सिंह, जया.
तुलसी काव्य की लोकतात्त्विक संरचना. वाराणसी, संजय प्रकाशन, १९७३? २१६ पृ. २०.००

सिंह, त्रिभुवन, १९२९- संपा.
तुलसी : संदर्भ और समीक्षा. वाराणसी, तुलसी शोध संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, १९७६. २०, ६६४, १४ पृ. ८०.००

सिंह, त्रिभुवन, १९२९- तथा अन्य, संपा.
स्मारिका : मानस चतुश्शती समारोह, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, जनवरी १९७४. वाराणसी, काशी हिंदू विश्वविद्यालय मानस चतुश्शती समारोह समिति, १९७४. ९९ पृ. ३.००

सिंह, धीरेन्द्र बहादुर, १९४४-
तुलसीदास की कलागत चेतना. इलाहाबाद, प्रतिभा प्रकाशन, १९७३. ३८७ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

सिंह, नारायण, १८९२-
क्रान्तदर्शी कवि तुलसी. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७४. १६, ३७७ पृ. ४०.००

सिंह, पुष्पपाल, १९४१- संपा.
तुलसी स्मारिका : मानस चतुश्शती जयंती. पटियाला, हिंदी साहित्य परिषद्, मुलतानीमल मोदी डिग्री कॉलेज, १९७४. ११०, १३ पृ.

सिंह, रामलाल, १९१८-
तुलसी-काव्य-दर्शन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. ३५८ पृ. १८.००

सिंह, विजयपाल, संपा.
तुलसी-संचयन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ९९ पृ. ३.००

सिंह, वैद्यनाथ, १९२१-१९६५.
मानस में रीतितत्त्व. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७३. २८, २९४ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—हिंदी विश्व., प्रयाग

सिंह, शम्भुनाथ, १९१६-
रामचरितमानस और उसका महाकाव्यत्व. वाराणसी, समकालीन प्रकाशन, १९७३. १९३ पृ. ८.००

सुदर्शन सिंह 'चक्र', संपा.
मानस के मंगलाचरण (प्रकाश पाठ). सतना, मानस संघ, १९७३. १०६ पृ. २.००

सुमन, अम्बाप्रसाद, १९१६-
मानस शब्दार्थ तत्त्व : 'रामचरितमानस' के शब्दों का अर्थतात्विक अध्ययन. दिल्ली, विज्ञान भारती, १९७१. १३८ पृ. १२.५०

सुमन, अम्बाप्रसाद, १९१६-
रामचरितमानस-भाषा-रहस्य : भाषा शास्त्रीय शोधपरक अध्ययन. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७४. १६, ४०७ पृ. २५.००

सुमन, अम्बाप्रसाद, १९१६-
रामचरितमानस : वाग्वैभव. नई दिल्ली, विज्ञान-भारती; प्रमुख वितरक : दिल्ली बुक हाउस, १९७३.

सूर्यकांत, १९०१-
तुलसी-रामायण शब्द-सूची. दिल्ली, मेहरचन्द लछमनदास, १९७३. ६७२, १३ पृ. ६०.००

हुक्कू, रूप, १९१५- तथा हरिहरनाथ हुक्कू.
श्री रामचरितमानस की काव्य-कला. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ३५५ पृ. १०.००

—तुलसी साहब, १७६३-१८४३.

तुलसी साहब, १७६३-१८४३.
घाट रामायण. इलाहाबाद, बेल्वेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६८-७३. भा. १. सं. ९. १९७३. ५.००; भा. २. १९६८. ५.००

तुलसी साहब, १७६३-१८४३.
तुलसी साहिब हाथरस वाले की शब्दावली और जीवन-चरित्र. इलाहाबाद, बेल्वेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६४-६६. भा. १. २.००; भा. २. १.५०

तुलसी साहब, १७६३, १८४३.
रत्नसागर; तुलसी साहब (हाथरस वाले) का जीवन चरित्र सहित. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६९. १७४ पृ. २.५०

—तेगबहादुर, गुरु, १६२१-१६७५.

गोयल, जयभगवान.
गुरु तेगबहादुर; चिंतन और कला. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७६. १०४ पृ. १०.००

महीप सिंह.
गुरु तेगबहादुर; जीवन और आदर्श. दिल्ली, उमेश प्रकाशन, १९७६. ७८ पृ. ५.००

शमीर सिंह, १९३५-
गुरु तेग बहादुर जी : जीवन, काव्य, व चिंतन. अमृतसर, सिंह, १९७६. २०३ पृ. ३०.००

शर्मा, ओमप्रकाश शास्त्री.
गुरु तेगबहादुर की वाणी ; साहित्यिक एवं दार्शनिक विवेचन. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. ९५ पृ. ६.००

सिंह, प्रेम प्रकाश, संपा.
गुरु तेगबहादुर : जीवन, दर्शन, और विवेचन. पटियाला, पंजाबी यूनिवर्सिटी, १९७६. १३, ३६६ पृ. ३०.००

—त्रिपाठी, अम्बिकादत्त, १८९७?-१९७१.

स्मारिका, १९७२. मुड़या कलां, जिला जौनपुर, श्री अम्बिका ग्रामोदय प्रतिष्ठान, १९७२. अनेक पृ. ५.००

—त्रिपाठी, कमलापति, १९०५-

पांडेय, सुधाकर, १९२७-
कमलापति त्रिपाठी : व्यक्ति और स्रष्टा. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७२. ८९ पृ. ३.००

—त्रिपाठी, रामनरेश, १८८९-१९६२.

पांडेय, जगदीश प्रसाद 'पीयूष', संपा.
पं. रामनरेश त्रिपाठी ; एक युग, एक व्यक्ति. सुलतानपुर, उ. प्र., सम्भावना प्रकाशन, १९७४. १९० पृ. २५.००

पालीवाल, कृष्णदत्त, १९४३-
पं. रामनरेश त्रिपाठी का काव्य. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. २१३ पृ. १६.००

शर्मा, राममूर्ति, १९३६-
रामनरेश त्रिपाठी और उनका साहित्य. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७२. १३, ४०८ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

—दयाबाई, वि. १७६१.

दयाबाई, वि. १७६१.
दयाबाई की बानी, दयाबोध और विनय मालिका. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६७. २६ पृ. ०.५०

—दरिया साहब.

दरिया साहब.
दरिया साहब (मारवाड़ के प्रसिद्ध महात्मा) की बानी और जीवन-चरित्र. इलाहाबाद, बेलवीडियर प्रिंटिंग प्रेस, १९७३. ५१ पृ. १.५०

दरिया साहब.
दरिया साहब बिहारवाले के चुने हुए पद और साखी. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६८. ४३ पृ. ०.७५

— दाउद, मौलाना, वि. १३८५.

शर्मा, ज्ञानचंद्र, १९३३-
चन्दायन का सांस्कृतिक परिवेश. पटियाला, विशाल प्रकाशन, १९७३. २०२ पृ. २०.००

—दादूदयाल, १५४४-१६०३.

नारायणदास, स्वामी, टीका.
श्री दादू वाणी ; श्री दादू गिरार्थ प्रकाशिका टीका सहित. जयपुर, दादू महाविद्यालय व छात्रावास, १९६९. ३२, ७४४ पृ. १४.००

सिंह, केशव प्रसाद.
दादूपंथ एवं उसके साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन. वाराणसी, काशी विद्यापीठ, १९७१? १६, ३५५ पृ. १८.००

—दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.

आदिश्वर राव, पी., १९३६-
दिनकर, वैचारिक क्रांति के परिवेश में. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. १११ पृ. १५.००

आर्य, धर्मपालसिंह.
दिनकर का वीरकाव्य. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७५. ८० पृ. १२.००

जयसिंह 'नीरद'.
आधुनिकता के हाशिए में उर्वशी. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७७. १६० पृ. २०.००

जैन, विमलकुमार.
महाकवि दिनकर; उर्वशी तथा अन्य कृतियाँ. दिल्ली, भारती साहित्य मंदिर, १९६५. ४५६ पृ. २२.००

जैन, शेखरचंद्र पन्नालाल
राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला. जयपुर, जयपुर पुस्तक सदन, १९७३. ११, ३१२ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध— गुजरात विश्व.

जसवाल, प्रतापचंद, संपा.
राष्ट्रकवि 'दिनकर' और उनकी साहित्य साधना. आगरा, समीक्षालोक कार्यालय, १९७६. १०, १९३ पृ. १५.००

तिवारी, यतीन्द्र.
दिनकर की काव्य भाषा. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ४३५ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—कानपुर विश्व.

दिनकर, रामधारी सिंह, १९०८-१९७४.
चेतना की शिखा. पटना, उदयाचल, १९७३. १२७ पृ. ६.००

दिनकर, रामधारी सिंह, १९०८-१९७४.
दिनकर की डायरी. पटना, उदयाचल, १९७३, ३३९ पृ. २०.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'वटुक', १९१८-
श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' और उनकी 'उर्वशी'. इलाहाबाद, अरविंद प्रकाशन; प्रमुख वितरक : हिंदी-भवन, जालंधर, १९६६? १५७, १०१ पृ. ४.८०

बाली, तारकनाथ, १९२३-
दिनकर और कुरुक्षेत्र : आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या. सं. ९. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २१५ पृ. ३.००

राय, गोपाल तथा सकलदेव शर्मा, संपा.
राष्ट्रकवि दिनकर. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७५. २८० पृ. २५.००

शंभूनाथ.
दिनकर; कुछ पुनर्विचार. हवड़ा, जन चेतना प्रकाशन, १९७६. १९२ पृ. १२.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
दिनकर और परशुराम की प्रतीक्षा. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. २१० पृ. ४.००

शर्मा, टीकाराम तथा सुशीला शर्मा.
उर्वशी; संवेदना और शिल्प. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. २२२ पृ. २५.००

शर्मा, राजपाल, १९३६-
युगचेता दिनकर और उनकी 'उर्वशी'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. ३१६ पृ. २५.००

सिंह, आदित्यनारायण.
समीक्षा-बिंदु. पटना, उदयाचल, १९६७. ९५ पृ. १.००

—दूलनदास, वि. १७५०.

दूलनदास, वि. १७५०.
दूलनदास जी की बानी ; जीवन-चरित्र सहित. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६४. ३८ पृ. ०.५६

—देव, १६७३-१७४५?

जायसवाल, पुष्पारानी, संपा.
देव ग्रंथावली. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७४. भा. १. ४०.००

नगेन्द्र, १९१५-
देव और उनकी कविता. सं. ४. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६९. ८, ३११ पृ. १२.००

वर्मा, कृष्णचंद्र, १९२९-
महाकवि देव ; समीक्षा और काव्य-संकलन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. ११८ पृ. ७.००

—देवप्रकाश, १९४१-१९७०.

शुक्ल, ललित तथा अन्य, संपा.
अनाहूत; देवप्रकाश स्मृति. नयी दिल्ली, अनाहूत प्रकाशन के लिए समता प्रकाशन, १९७१. १६८ पृ. १२.५०

—दौलतराम कासलीवाल, १८वीं शती.

कासलीवाल, कस्तूरचंद, संपा.
महाकवि दौलतराम कासलीवाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. जयपुर, प्रबन्धकारिणी कमेटी, दि. जैन. अ. क्षेत्र श्रीमहावीरजी, १९७३. १०३, ३१० पृ. १०.००

—द्विवेदी, महावीरप्रसाद, १८६८-१९५८.

सिंह, उदयभानु.
महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग. लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९५१. ४३०, ३ पृ. १२.००

—द्विवेदी, राधेश्याम, १८९९-

व्रजवाल, त्रिलोकीनाथ, संपा.
सेवक साधक श्री राधेश्याम द्विवेदी. सहसंपादक सुरेश पांडेय तथा मदन मोहन उपेंद्र. मथुरा, हिंदी प्रचार सभा, १९७१. अनेक पृ. ७.००

—द्विवेदी, शांतिप्रिय, १९०६-

रस्तोगी, मालती.
शांतिप्रिय द्विवेदी : जीवन और साहित्य. लखनऊ, कल्पकार प्रकाशन, १९७४. ३५८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध.

—द्विवेदी, सोहनलाल, १९०५-

सिंह, अमर बहादुर 'अमरेश', १९३५-
काव्य के इतिहास-पुरुष. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७१. १०, २०३ पृ. ६.००
जिल्द शीर्षक : काव्य के इतिहास पुरुष सोहनलाल द्विवेदी.

—द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-

आच्छा, बालूलाल, १९५०-
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास : इतिहास के दो ललित अध्याय. उदयपुर, भारतीय शोध प्रकाशनालय; वितरक : जैन ब्रदर्स, १९७१. १३० पृ. १०.००
भटनागर, राजेंद्रमोहन.
बाणभट्ट की आत्मकथा : एक अध्ययन. संशो. सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. १२, २८८ पृ. ५.००
राजनारायण.
पुनर्नवा : चेतना और शिल्प. दिल्ली, विवेक प्रकाशन, १९७६. १२१ प. १६.००
सत्यनारायण, वंदा कृष्ण.
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व. तिरुपति, श्री वेङ्कटेश्वर विश्वविद्यालय, १९६८. १४, २६४ पृ. ४.५०
शोध-प्रबन्ध, संशोधित—श्री वेंकटेश्वर विश्व.

—ध्रुवदास, १७वीं शती.

द्विवेदी, केदारनाथ 'यतींद्र', १९३०-
श्रीहित ध्रुवदास और उनका साहित्य. देहरादून, साहित्य सदन, १९७१. ४५८ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

—नंददास, वि. १५६८.

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
अष्टछाप और नंददास. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १९६ पृ. २२.००
झारी, कृष्णदेव, १९२७-
नंददास : अष्टछाप के कवि नंददास के जीवन और कृतित्व का सर्वांगीन विवेचन. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७२. २०८ पृ. १०.००
तिवारी, भगवानदास, १९३२-
भंवरगीत विमर्श ; शोध और समीक्षा. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७२. १६, १८४ पृ. ११.००
तिवारी, भगवानदास, १९३२-
महाकवि नंददास-प्रणीत भंवरगीत : पाठानुशीलन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७२. २४, १६४ पृ. ९.००
शर्मा, मक्खनलाल तथा रणवीर सिंह.
भवरगीत : एक पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, कल्याणी प्रकाशन, १९७०. १३९ पृ. ९.००
श्रीवास्तव, स्नेहलता, १९२२-
नंददास और उनका भंवरगीत : विवेचन और विश्लेषण. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७०. २७८ पृ. १०.००

—नगेन्द्र, १९१५-

पंत, सुमित्रानंदन तथा अन्य, संपा.
डॉ. नगेन्द्र अभिनंदन ग्रंथ (तुलनात्मक साहित्यशास्त्र से युक्त). नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. ६७२, २६ प. १५०.००

जयसिंह 'नीरद'.
आधुनिकता के हाशिए में उर्वशी. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७७. १६० पृ. २०.००

जैन, विमलकुमार.
महाकवि दिनकर; उर्वशी तथा अन्य कृतियाँ. दिल्ली, भारती साहित्य मंदिर, १९६५. ४५६ पृ. २२.००

जैन, शेखरचंद्र पन्नालाल
राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला. जयपुर, जयपुर पुस्तक सदन, १९७३. ११, ३१२ पृ. २५.००
शोध-प्रवन्ध— गुजरात विश्व.

जसवाल, प्रतापचंद, संपा.
राष्ट्रकवि 'दिनकर' और उनकी साहित्य साधना. आगरा, समीक्षालोक कार्यालय, १९७६. १०, १६३ पृ. १५.००

तिवारी, यतीन्द्र.
दिनकर की काव्य भाषा. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ४३५ पृ. ५०.००
शोध-प्रवन्ध—कानपुर विश्व.

दिनकर, रामधारी सिंह, १९०८-१९७४.
चेतना की शिखा. पटना, उदयाचल, १९७३. १२७ पृ. ६.००

दिनकर, रामधारी सिंह, १९०८-१९७४.
दिनकर की डायरी. पटना, उदयाचल, १९७३, ३३९ पृ. २०.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'वटुक', १९१८-
श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' और उनकी 'उर्वशी'. इलाहाबाद, अरविंद प्रकाशन; प्रमुख वितरक : हिंदी-भवन, जालंधर, १९६६? १५७, १०१ पृ. ४.८०

वाली, तारकनाथ, १९२३-
दिनकर और कुरुक्षेत्र : आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या. सं. ९. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २१५ पृ. ३.००

राय, गोपाल तथा सकलदेव शर्मा, संपा.
राष्ट्रकवि दिनकर. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७५. २८० पृ. २५.००

शंभूनाथ.
दिनकर; कुछ पुनर्विचार. हवड़ा, जन चेतना प्रकाशन, १९७६. १६२ पृ. १२.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
दिनकर और परशुराम की प्रतीक्षा. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. २१० पृ. ४.००

शर्मा, टीकाराम तथा सुशीला शर्मा.
उर्वशी; संवेदना और शिल्प. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. २२२ पृ. २५.००

शर्मा, राजपाल, १९३६-
युगचेता दिनकर और उनकी 'उर्वशी'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. ३१६ पृ. २५.००

सिंह, आदित्यनारायण.
समीक्षा-बिंदु. पटना, उदयाचल, १९६७. ६५ पृ. १.००

—दूलनदास, वि. १७५०.

दूलनदास, वि. १७५०.
दूलनदास जी की बानी ; जीवन-चरित्र सहित. इलाहाबाद, वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६४. ३८ पृ. ०.५६

—देव, १६७३-१७४५?

जायसवाल, पुष्पारानी, संपा.
देव ग्रंथावली. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७४. भा. १. ४०.००

नगेन्द्र, १९१५-
देव और उनकी कविता. सं. ४. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६९. ८, ३११ पृ. १२.००

वर्मा, कृष्णचंद्र, १९२९-
महाकवि देव ; समीक्षा और काव्य-संकलन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. ११८ पृ. ७.००

—देवप्रकाश, १९४१-१९७०.

शुक्ल, ललित तथा अन्य, संपा.
अनाहत; देवप्रकाश स्मृति. नयी दिल्ली, अनाहत प्रकाशन के लिए ममता प्रकाशन, १९७१. १६८ पृ. १२.५०

—दौलतराम कासलीवाल, १८वीं शती.

कासलीवाल, कस्तूरचंद, संपा.
महाकवि दौलतराम कासलीवाल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. जयपुर, प्रबन्धकारिणी कमेटी, दि. जैन. अ. क्षेत्र श्रीमहावीरजी, १९७३. १०३, ३१० पृ. १०.००

सिहल, धर्मपाल तथा रोशनलाल आहूजा, संपा.
गुरु परमेसर नानक. जालंधर, राज पब्लिशर्ज़, १९६९. २५६ पृ. ८.००

—नामदेव, १२७०-१३५०.

आडकर, शं. के.
हिंदी निर्गुण-काव्य का प्रारम्भ और नामदेव की हिंदी कविता. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ३४० पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—पुणे विद्यापीठ.
मौर्य, राजनारायण.
संत नामदेव : भक्ति और काव्य. पूना, शारदा प्रकाशन, १९७३. ९४ पृ. ४.५०

—नारायण प्रसाद 'बेताब', १८७२-१९४५.

नम्र, विद्यापति लक्ष्मणराव, १९१७-
हिंदी रंगमंच और पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' (१८५३-१९६० ई.). वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. १७, ५६६ पृ. ६०.००

—नाहटा, अगरचंद, १९११-

शर्मा, दशरथ तथा अन्य, संपा.
श्री अगरचंद नाहटा अभिनंदन ग्रंथ. बीकानेर, श्री अगरचंद नाहटा अभिनंदन-ग्रंथ प्रकाशन समिति : प्राप्ति स्थान : श्री अभय जैन ग्रंथालय, १९७६. भा. १. १०१.००

—निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी), १८९६-१९६१.

ओंकार शरद, संपा.
निराला ग्रंथावली. लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, १९७३. भा. १-३. ४०.०० (प्र.)
उपेंद्र, १९३४-
निराला का काव्य. दिल्ली, इण्डियन युनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १५२ पृ. ४.००
गुप्त, शांतिस्वरूप.
राम की शक्ति-पूजा का काव्य वैभव. देहली, एस. ई. एस. एंड कं., १९७१. १४७ पृ. ४.५०
गोकाककर, सुधाकर तथा गो. रा. कुलकर्णी.
निराला : साहित्यिक मूल्यांकन. कोल्हापुर, फडके बुकसेलर्स, १९७४. ३०८ पृ. १७.००
गोयल, सन्तोष, १९३८-
निराला का काव्य. आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९७२. ३४६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.
घोष, श्यामसुन्दर, १९३४-
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला. नागपुर, विश्वभारती प्रकाशन, १९७३. २२४, २८ पृ. २०.००
चतुर्वेदी, राजेश्वरप्रसाद, १९१९-
निराला और 'अपरा'; विस्तृत व्याख्या और आलोचना. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ८, ११६, २९० पृ. ५.००
जिंदल, निर्मल.
निराला का गद्य साहित्य. दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७१. ४४८ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध— दिल्ली विश्व.
तिवारी, नंदकिशोर, १९४१- तथा बद्रीनाथ तिवारी.
नीलकण्ठ निराला; एक परिचय. सहसराम, सुदर्शन प्रकाशन, १९७३. १२३ पृ. ३.५०
दीक्षित, सूर्यप्रसाद, १९३८-
अलक्षित 'निराला'. जोधपुर, कलम घर प्रकाशन, १९७३. १३४ पृ. ११.५०
द्विवेदी, जनार्दन, १९४५-
निराला-काव्य का अभिव्यंजना-शिल्प. दिल्ली, कुमार ब्रदर्स; वितरक : राजेश पब्लिकेशंस, १९७२. ११८ पृ. १०.००
द्विवेदी, रामअवध.
निराला : व्यक्ति और कवि. वाराणसी, साहित्य निकुंज; विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. १४, २२३ पृ. २२.००
द्विवेदी, शिवशेखर.
निराला-साहित्य और युगदर्शन. लखनऊ, सूर्यप्रसाद शुक्ल; वितरक : हिन्द प्रकाशन, लखनऊ, १९७२. २६८ पृ. २०.००
निराला साहित्य-सन्दर्भ. प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, १९७३. २४१ पृ. १०.५०
नीहार, बुद्धसेन, १९३५-
विश्वकवि निराला. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७३. १६, ४२४ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध, संशोधित—अलीगढ़ मुस्लिम विश्व.
पांडेय, शशिभूषण 'शीतांशु'.
'निराला' का अलक्षित अर्थ गौरव. दिल्ली, सरस्वती प्रेस, १९७६. १४० पृ. १५.००

..., एस.
डॉ. नगेन्द्र : विश्लेषण और मूल्यांकन. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७१. २७५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—श्री वेंकटेश्वर विश्व.

नजीर अकबराबादी, १७२५?-१८२५?

वासिष्ठ, दामोदरप्रसाद.
कविवर नज़ीर अकबराबादी के हिंदी काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध-प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७३. ४३२ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध —कुरुक्षेत्र विश्व.

—नरहरदास वारहट, १५९१-१६७६.

शर्मा, बलराज, १९२२-
नरहरदास वारहटकृत पौरुषेय रामायण का आलोचनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. ३९२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

—नरोत्तमदास.

मिश्र, विश्वनाथप्रसाद, संपा.
नरोत्तमदास. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७४. ८, ६५ पृ. १०.००
विषय सूची : सुदामाचरित—ध्रुवचरित.
रामन नायर, एन., १९३१- संपा.
सुदामा-चरित. सं. २. कोचिन, गीता, १९७२. ३५, ४६ पृ. १.५०

—नागर, अमृतलाल, १९१६-

अग्रवाल, विजयकुमार.
अमृत और विष : एक अध्ययन. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७४. १२८ पृ. ३.००
भूषण स्वामी, १९२०-
बूंद और समुद्र; समीक्षा. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. २५६ पृ. ४.५०
मिश्र, प्रकाशचंद्र.
अमृतलाल नागर का उपन्यास-साहित्य. दिल्ली, साहित्य भारती. २८४ पृ. १८.००
रामअवध शास्त्री, १९४४-
शतरंज के मोहरे ; एक दृष्टि. वाराणसी, प्रमोद ट्रेडिंग कारपोरेशन, १९७२. १०५ पृ. ६.००
वासिष्ठ, दामोदरप्रसाद एवं आशा बागड़ी.
उपन्यासकार अमृतलाल नागर. कैथल, मुदित प्रकाशन, १९७५. १७७ पृ. १८.५०

—नागरीदास, १६९९-१७६४.

नागरीदास, १६९९-१७६४.
श्री नागरीदास जी की वाणी. मथुरा, प्रदीप प्रकाशन, १९६३? ३८, ३३२ पृ. २०.००
फ़ैयाज़ अली खां, संपा.
नागरीदास ग्रंथावली. नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७४. १०३० पृ. २४.५०

—नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र), १९११-

भट्ट, प्रकाशचंद्र, १९४१-
नागार्जुन : जीवन और साहित्य. रामपुरा, म.प्र., सेवा सदन प्रकाशन, १९७४. ३०४ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

—नानक, १४६९-१५३८.

ओझा, गिरीश, १९४४-
नानक संदेश. होशियारपुर, विश्वेश्वरानंद वैदिक शोध संस्थान, १९७६. १०, २०१ पृ. १२.००
गुरचरन सिंह.
गुरु नानक : एक विवेचन. जालंधर, के. लाल एंड कंपनी, १९७१. २४८, २२ पृ. १८.००
माथुर, सोहन तथा श्याम शंकर शर्मा.
महान संत गुरु नानक. जयपुर, रेखा प्रकाशन, १९७०. ६, ६४ पृ. ३.००
मिश्र, जयराम.
गुरु नानकदेव; जीवन और दर्शन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. २९६ पृ. १५.००

—पंत, सुमित्रानंदन, १९००-

आदेश्वर राव, पी., १९३६-
कवि पंत और उनकी छायावादी रचनाएँ. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १६, १५४ पृ. १२.५०

उपेंद्र, १९३४-
पंत का काव्य. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १६६ पृ. ४.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत-काव्य में बिम्ब-योजना. हैदराबाद, दक्षिण प्रकाशन, १९७४. १२, ४०८ पृ. ५०.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत : छायावादी व्यक्तित्व और कृतित्व. हैदराबाद, साहित्य प्रकाशन, १९७५. १६, २३८ पृ. २०.००

जोशी, नेमनारायण, १९२६-
सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य, १९३७ ई. से १९६९ ई. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कं., १९७१. २०, २७६ पृ. २०.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'बटुक', १९१८-
पंत की काव्य प्रतिभा और रश्मिबंध; मूल्यांकन और व्याख्या. जालंधर, हिंदी भवन, १९७१. ६, १५७, २१२ पृ. ३.००

नगेंद्र, १९१५-
सुमित्रानंदन पंत. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १०, १७५ पृ. ७.५०

पंत, सुमित्रानंदन, १९००-
साठ वर्ष और अन्य निबन्ध. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १७४ पृ. १०.००

बच्चन, हरिवंशराय.
सुमित्रानंदन पंत के दो सौ पत्र. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. २७१ पृ. १०.००

भार्गव, ब्रिजरानी.
पंत के काव्य में कल्पना का कर्तृत्व. जयपुर, बाफना प्रकाशन, १९७२. ११, २६६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

भूषण 'स्वामी', १९२०-
पंत और उनका 'रश्मिबंध'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. ४४० पृ. ५.००

मदान, इन्द्रनाथ, संपा.
सुमित्रानंदन पंत : मूल्यांकन इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ८, २५१ पृ. १०.००

मानव, विश्वंभर, १९१२-
पंत और लोकायतन. इलाहाबाद, किताब महल, १९७०. ८, १०२ पृ. ३.००

वाजपेयी, नंददुलारे, १९०६-१९६७.
कवि सुमित्रानंदन पंत. प्रस्तोता : शिवकुमार मिश्र. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इण्डिया, १९७६. १०४ पृ. १५.००

शर्मा, देवेंद्र 'इन्द्र'.
'रश्मिबंध' तथा सुमित्रानंदन पंत ; आलोचनात्मक अध्ययन तथा व्याख्या. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १४, ४३७ पृ.

शर्मा, रमेश, १९४१- तथा कन्हैयालाल अवस्थी.
पंत की काव्य साधना : 'रश्मिबंध' और 'तारापथ' के संदर्भ में, प्रमुख कविताओं की व्याख्या सहित. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७५. २१८ पृ. ६.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
कवि सुमित्रानंदन पंत. आगरा, समीक्षालोक कार्यालय; मुख्य वितरक सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, १९७१. १७० पृ. १०.००

श्रीरामरेड्डी, अन्नपुरेड्डी.
पंत-काव्य में सौंदर्य-भावना. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७६. १२, ३५८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—आंध्र विश्व.

श्रीवास्तव, वेंकटेश नारायण, १९४७-
तारापथ : एक विवेचन. इलाहाबाद, वीना प्रकाशन, १९७१. ४, १६६ पृ. १०.००

सतीशकुमार, १९३७-
कविवर पंत समीक्षा. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७३. १६६ पृ. ३.००

—पद्माकर भट्ट, १७५३-१८३३.

तैलंग, भालचंद्रराव, संपा.
रामरसायनः युद्धकांड. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधान शाला, १९७२. २४, २३० पृ. ११.००

—परमानंददास.

झारी, कृष्णदेव.
अष्टछाप और परमानंददास. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १२४ पृ.

भटनागर, रामरतन, १९१६-
निराला : नवमूल्यांकन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. २३२ पृ. १५.००

भट्ट, प्रेमप्रकाश.
निराला का गद्य साहित्य. जयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७२. २०० पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

भाटी, देशराजसिंह तथा राजेश शर्मा.
निराला और उनकी कविश्री; कविश्री का आलोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक अध्ययन. दिल्ली अशोक प्रकाशन, १९७४. २५६ पृ. ४.००

मदान, इन्द्रनाथ, संपा.
निराला. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. २१८ पृ. १०.००

मिश्र, दुर्गाशंकर, १९३०-
महाकवि निराला का काव्य. लखनऊ, हिंदी साहित्य भण्डार, १९७२. १२३ पृ. ७.५०

मिश्र, सरजूप्रसाद तथा रा. तु. भगत.
निराला कवि और कथाकार. कोल्हापुर, युनीव्हर्सल पब्लिकेशन्स, १९७४. ७, २०९ पृ. २०.००

रामअवध शास्त्री, १९४४-
निराला : व्यक्ति और कवि. वाराणसी, साहित्य निकुंज; प्रमुख वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. २२३ पृ. २०.००

वर्मा, धनंजय, १९३५-
निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७३. २४० पृ. २०.००
शोध-प्रबंध, संशोधित.

वात्स्यायन, सेवक तथा मदन मोहन अग्निहोत्री.
निराला : तुलसीदास. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७२. ११, १९५ पृ. ३.७५

वार्ष्णेय, कुसुम.
निराला का कथा साहित्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७१. ११२ पृ. ४.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
निराला; आलोचनात्मक अध्ययन. सं. ६. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, २२८ पृ. ३.००

शर्मा, रामविलास.
निराला की साहित्य साधना. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९६९-७६. भा. १-३. ४०.०० (प्र.)

शर्मा, वेदव्रत.
निराला के काव्य-बिम्ब और प्रतीक. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. १७९ पृ. १२.५०

शिवमंगल सिद्धांतकर, १९४२-
निराला और मुक्त छन्द. दिल्ली, मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, १९७४. १२८ पृ. १८.००

श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, १९३५-
निराला का काव्य. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४ २५६ पृ. २५.००

सिंघवी, नरपत चन्द, १९२५-
महाकवि निराला का कथा-साहित्य. जयपुर, बाफना प्रकाशन, १९७१. ८, २९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

सिंह, दूधनाथ, १९३६-
निराला : आत्महन्ता आस्था. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७२. ३६१ पृ. २५.००

सिंह, रामकुमार, १९२६-
निराला और उनका तुलसीदास. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. १४३ पृ. १६.००

—निर्गुण (द्विजेन्द्रनाथ मिश्र), १९७३-

बेढब बनारसी, संपा.
कथाकार निर्गुण. वाराणसी, नवयुग प्रकाशन, १९७५. १०, ८२ पृ. ७.००

—नीरज (गोपालदास सक्सेना), १९२६-

नीरज-अभिनन्दन-समिति.
नीराजन. संपा. पराग तथा डंठल. बिजनौर, नीरज अभिनंदन स्मारिका; प्राप्ति स्थान : एल. एस. रस्तोगी एण्ड संस, १९६८. ६६ पृ. ०.८०

मिश्र, सरजूप्रसाद.
नीरज की काव्य साधना. कोल्हापुर, अजब पुस्तकालय, १९७५. १४१ पृ. १२.००

—नेवाज, १७वीं शती.

शर्मा, राजेन्द्र, संपा.
नेवाजकृत सकुन्तला नाटक; व्रजभाषा पद्यानुवाद. जयपुर, मंगल प्रकाशन. भा. २. १५.००

—पंत, सुमित्रानंदन, १९००-

आदेश्वर राव, पी., १९३६-
कवि पंत और उनकी छायावादी रचनाएँ. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १६, १५४ पृ. १२.५०

उपेंद्र, १९३४-
पंत का काव्य. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १६६ पृ. ४.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत-काव्य में बिम्ब-योजना. हैदराबाद, दक्षिण प्रकाशन, १९७४. १२, ४०८ पृ. ५०.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत : छायावादी व्यक्तित्व और कृतित्व. हैदराबाद, साहित्य प्रकाशन, १९७५. १६, २३८ पृ. २०.००

जोशी, नेमनारायण, १९२६-
सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य, १९३७ ई. से १९६६ ई. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कं., १९७१. २०, २७६ पृ. २०.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'बटुक', १९१८-
पंत की काव्य प्रतिभा और रश्मिबंध; मूल्यांकन और व्याख्या. जालंधर, हिंदी भवन, १९७१. ६, १५७, २१२ पृ. ३.००

नगेंद्र, १९१५-
सुमित्रानंदन पंत. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १०, १७५ पृ. ७.५०

पंत, सुमित्रानंदन, १९००-
साठ वर्ष और अन्य निबन्ध. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १७४ पृ. १०.००

बच्चन, हरिवंशराय.
सुमित्रानंदन पंत के दो सौ पत्र. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. २७१ पृ. १०.००

भार्गव, ब्रिजरानी.
पंत के काव्य में कल्पना का कर्तृत्व. जयपुर, बाफना प्रकाशन, १९७२. ११, २९९ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

भूषण 'स्वामी', १९२०-
पंत और उनका 'रश्मिबंध'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. ४४० पृ. ५.००

मदान, इन्द्रनाथ, संपा.
सुमित्रानंदन पंत : मूल्यांकन इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ८, २५१ पृ. १०.००

मानव, विश्वंभर, १९१०-
पंत और लोकायतन. इलाहाबाद, किताब महल, १९७०. ८, १०२ पृ. ३.००

वाजपेयी, नंददुलारे, १९०६-१९६७.
कवि सुमित्रानंदन पंत. प्रणेता शिवकुमार मिश्र. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इण्डिया, १९७६. १०४ पृ. १५.००

शर्मा, देवेंद्र 'इन्द्र'.
'रश्मिबंध' तथा सुमित्रानंदन पंत ; आलोचनात्मक अध्ययन तथा व्याख्या. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १४, ४३७ पृ.

शर्मा, रमेश, १९४१- तथा कन्हैयालाल अवस्थी.
पंत की काव्य साधना : 'रश्मिबंध' और 'तारापथ' के संदर्भ में, प्रमुख कविताओं की व्याख्या सहित. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७५. २१८ पृ. ६.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
कवि सुमित्रानंदन पंत. आगरा, समीआलोक कार्यालय; मुख्य वितरक सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, १९७१. १७० पृ. १०.००

श्रीरामरेड्डी, अन्नपुरेड्डी.
पंत-काव्य में सौंदर्य-भावना. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७६. १२, ३५८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—आंध्र विश्व.

श्रीवास्तव, वेंकटेश नारायण, १९४७-
तारापथ : एक विवेचन. इलाहाबाद, वीना प्रकाशन, १९७१. ४, १६६ पृ. १०.००

सतीशकुमार, १९३७-
कविवर पंत समीक्षा. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७३. १९६ पृ. ३.००

—पद्माकर भट्ट, १७५३-१८३३.

तैलंग, भालचंद्र राव, संपा.
रामरसायनः युद्धकांड. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधान शाला, १९७२. २४, २३० पृ. ११.००

—परमानंददास.

झारी, कृष्णदेव.
अष्टछाप और परमानंददास. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १२४ पृ.

भटनागर, रामरतन, १९१६-
निराला : नवमूल्यांकन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. २३२ पृ. १५.००

भट्ट, प्रेमप्रकाश.
निराला का गद्य साहित्य. जयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७२. २०० पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

भाटी, देशराजसिंह तथा राजेश शर्मा.
निराला और उनकी कविश्री; कविश्री का आलोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक अध्ययन. दिल्ली अशोक प्रकाशन, १९७४. २५६ पृ. ४.००

मदान, इन्द्रनाथ, संपा.
निराला. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. २१८ पृ. १०.००

मिश्र, दुर्गाशंकर, १९३०-
महाकवि निराला का काव्य. लखनऊ, हिंदी साहित्य भण्डार, १९७३. १२३ पृ. ७.५०

मिश्र, सरजूप्रसाद तथा रा. तु. भगत.
निराला कवि और कथाकार. कोल्हापुर, युनीव्हर्सल पब्लिकेशन्स, १९७४. ७, २०९ पृ. २०.००

रामअवध शास्त्री, १९४४-
निराला : व्यक्ति और कवि. वाराणसी, साहित्य निकुंज; प्रमुख वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. २२३ पृ. २०.००

वर्मा, धनंजय, १९३५-
निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७३. २४० पृ. २०.००
शोध-प्रबंध, संशोधित.

वात्स्यायन, सेवक तथा मदन मोहन अग्निहोत्री.
निराला : तुलसीदास. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७२. ११, १९५ पृ. ३.७५

वार्ष्णेय, कुसुम.
निराला का कथा साहित्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७१. ११२ पृ. ४.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
निराला; आलोचनात्मक अध्ययन. सं. ६. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, २२८ पृ. ३.००

शर्मा, रामविलास.
निराला की साहित्य साधना. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९६९-७६. भा. १-३. ४०.०० (प्र.)

शर्मा, वेदव्रत.
निराला के काव्य-बिम्ब और प्रतीक. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. १७९ पृ. १२.५०

शिवमंगल सिद्धांतकर, १९४२-
निराला और मुक्त छन्द. दिल्ली, मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, १९७४. १२८ पृ. १८.००

श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, १९३५-
निराला का काव्य. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४. २५६ पृ. २५.००

सिंघवी, नरपत चन्द, १९२५-
महाकवि निराला का कथा-साहित्य. जयपुर, बाफना प्रकाशन, १९७१. ८, २९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

सिंह, दूधनाथ, १९३६-
निराला : आत्महन्ता आस्था. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७२. ३६१ पृ. २५.००

सिंह, रामकुमार, १९२६-
निराला और उनका तुलसीदास. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. १४३ पृ. १६.००

—निर्गुण (द्विजेन्द्रनाथ मिश्र), १९७३-

बेढब बनारसी, संपा.
कथाकार निर्गुण. वाराणसी, नवयुग प्रकाशन, १९७५. १०, ८२ पृ. ७.००

—नीरज (गोपालदास सक्सेना), १९२६-

नीरज-अभिनन्दन-समिति.
नीराजन. संपा. पराग तथा डंठल. बिजनौर नीरज अभिनंदन स्मारिका; प्राप्ति स्थान : एल. एस रस्तोगी एण्ड संस, १९६८. ६६ पृ. ०.८०

मिश्र, सरजूप्रसाद.
नीरज की काव्य साधना. कोल्हापुर, अजब पुस्तकालय १९७५. १४१ पृ. १२.००

—नेवाज, १७वीं शती.

शर्मा, राजेन्द्र, संपा.
नेवाजकृत सकुन्तला नाटक; व्रजभाषा पद्यानुबद्ध. जयपुर, मंगल प्रकाशन. भा. २. १५.००

—पंत, सुमित्रानंदन, १९००-

आदेश्वर राव, पी., १९३६-
कवि पंत और उनकी छायावादी रचनाएँ. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १६, १५४ पृ. १२.५०

उपेंद्र, १९३४-
पंत का काव्य. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १९६ पृ. ४.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत-काव्य में बिम्ब-योजना. हैदराबाद, दक्षिण प्रकाशन, १९७४. १२, ४०८ पृ. ५०.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
पंत : छायावादी व्यक्तित्व और कृतित्व. हैदराबाद, साहित्य प्रकाशन, १९७५. १६, २३८ पृ. २०.००

जोशी, नेमनारायण, १९२६-
सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य, १९३७ ई. से १९६९ ई. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कं., १९७१. २०, २७६ पृ. २०.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'वटुक', १९१८-
पंत की काव्य प्रतिभा और रश्मिबंध; मूल्यांकन और व्याख्या. जालंधर, हिंदी भवन, १९७१. ६, १५७, २१२ पृ. ३.००

नगेंद्र, १९१५-
सुमित्रानंदन पंत. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १०, १७५ पृ. ७.५०

पंत, सुमित्रानंदन, १९००-
साठ वर्ष और अन्य निबन्ध. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १७४ पृ. १०.००

बच्चन, हरिवंशराय.
सुमित्रानंदन पंत के दो सौ पत्र. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. २७१ पृ. १०.००

भार्गव, ब्रिजरानी.
पंत के काव्य में कल्पना का कर्तृत्व. जयपुर, बाफना प्रकाशन, १९७२. ११, २९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

भूषण 'स्वामी', १९२०-
पंत और उनका 'रश्मिबंध'. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. ४४० पृ. ५.००

मदान, इन्द्रनाथ, संपा.
सुमित्रानंदन पंत : मूल्यांकन इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ८, २५१ पृ. १०.००

मानव, विश्वंभर, १९१२-
पंत और लोकायतन. इलाहाबाद, किताब महल, १९७०. ८, १०२ पृ. ३.००

वाजपेयी, नंददुलारे, १९०६-१९६७.
कवि सुमित्रानंदन पंत. प्रणेता : शिवकुमार मिश्र. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इण्डिया, १९७६. १०४ पृ. १५.००

शर्मा, देवेंद्र 'इन्द्र'.
'रश्मिबंध' तथा सुमित्रानंदन पंत ; आलोचनात्मक अध्ययन तथा व्याख्या. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १४, ४३७ पृ.

शर्मा, रमेश, १९४१- तथा कन्हैयालाल अवस्थी.
पंत की काव्य साधना : 'रश्मिबंध' और 'तारापथ' के संदर्भ में, प्रमुख कविताओं की व्याख्या सहित. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७५. २१८ पृ. ६.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
कवि सुमित्रानंदन पंत. आगरा, समीक्षालोक कार्यालय; मुख्य वितरक सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, १९७१. १७० पृ. १०.००

श्रीरामरेड्डी, अन्नपुरेड्डी.
पंत-काव्य में सौंदर्य-भावना. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७६. १२, ३५८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—आंध्र विश्व.

श्रीवास्तव, वेंकटेश नारायण, १९४७-
तारापथ : एक विवेचन. इलाहाबाद, वीना प्रकाशन, १९७१. ४, १६६ पृ. १०.००

सतीशकुमार, १९३७-
कविवर पंत समीक्षा. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७३. १९६ पृ. ३.००

—पद्माकर भट्ट, १७५३-१८३३.

तेलंग, भालचंद्रराव, संपा.
रामरसायनः युद्धकांड. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधान शाला, १९७२. २४, २३० पृ. ११.००

—परमानंददास.

झारी, कृष्णदेव.
अष्टछाप और परमानंददास. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १२४ पृ.

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
'प्रसाद' के चार काव्य ; महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' द्वारा लिखित 'प्रेमपथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्व', और 'कानन कुसुम' का विशद आलोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७३. ३१४ पृ. २५.००

शर्मा, चित्रा, १९४४-
कामायनी में प्रतीक-विधान. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७२. ९४ पृ. ८.००

शर्मा, विनयमोहन, १९०५-
कवि प्रसाद : 'आंसू' तथा अन्य कृतियां. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९६६. २०४ पृ. ३.००

शुक्ल, भगवतीप्रसाद, १९२६-
प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १२, २८८ पृ. ११.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र, १९३९-
जयशंकर प्रसाद : जीवन और साहित्य. इलाहाबाद, साहित्यालोचन; एक मात्र वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७१. १६७ पृ. १०.००

श्रीवास्तव, अविनाश, १९३६-
कवि प्रसाद की सौंदर्य-भावना. अहमदाबाद, जयभारत प्रकाशन, १९७२. ११५ पृ. २.५०

श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, १९३५-
प्रसाद के नाटक : रचना और प्रक्रिया. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. २५४ पृ. १५.००

श्रीवास्तव, जगदीशप्रसाद, १९३५-
'प्रसाद'-साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि. कानपुर, चैतन्य प्रकाशन मंदिर, १९६८-७३. भा. १. २०.००; भा. २. ३०.००; भा. २. प्रसाद की दार्शनिक पृष्ठ-भूमि. प्रकाशक : कानपुर, पुस्तक संस्थान.

श्रोत्रिय, प्रभाकर, १९३८-
प्रसाद का साहित्य : प्रेमतात्त्विक दृष्टि. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७५. १२, ४७९ पृ. ६०.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
आंसू भाष्य ; आंसू-काव्य की सर्वांगपूर्ण व्याख्या. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. २१७ पृ. ७.५०

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१- संपा.
कामायनी भाष्य ; कामायनी महाकाव्य की सर्वांगपूर्ण व्याख्या. संशो. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ६८३ पृ. १५.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन. सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. २०, ४८४ पृ. १२.५०
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
लहर-समीक्षा ; लहर काव्य की सर्वांगीण समालोचना. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. १७० पृ. २०.००

सिंह, कामेश्वर प्रसाद.
कामायनी की काव्य-प्रवृत्ति. कानपुर, पुस्तक संस्थान १९७३. २३० पृ. १८.००

सिंह, वीर.
कामायनी की कथा गवेषणात्मक अनुशीलन. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह १९७६. ४२३ पृ. ४०.००

सिंह, सुरेंद्रनाथ, १९४२-
प्रसाद के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७२. ४०७ पृ. ३२.५०
शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

हरींद्र.
प्रसाद का नाट्य-साहित्य: परंपरा एवं प्रयोग. मेरठ, प्रकाशन प्रतिष्ठान, १९७२. २८८ पृ. ४०.००

हांडा, बनवारीलाल.
प्रसाद का नाट्य-शिल्प. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. १९९ पृ. १२.५०

—प्राणनाथ, १६१८-१६९४.

पंड्या, नरेश, १९३७-
प्राणनाथ : संप्रदाय एवं साहित्य. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७३. १६, ३३२ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—गुजरात विश्व.

प्राणनाथ, १६१८-१६९४.
श्री महामति प्राणनाथ प्रणीत श्री तारतम वानी : श्री कुलजम स्वरूप. दिल्ली, श्री प्राणनाथ प्रकाशन, १९७२. अनेक पृ. ४५.००

मिश्रीलाल शास्त्री, १९२४-
महाप्रभु श्री प्राणनाथ ; जीवन साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन. पन्ना, म. प्र., श्री १०८ प्राणनाथ जी मंदिर ट्रस्ट बोर्ड, १९७०. १०, १६८ पृ. २.००

मेहता, विमला.
श्री प्राणनाथ वचनामृत का संक्षिप्त परिचय. इलाहाबाद, श्री निजानंद साहित्य सदन; प्राप्ति स्थान : श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, १९६६. १६६ पृ. १.५०

श्री प्राणनाथ स्मारिका, १२ नवम्बर १९७० (विजयाभिनंद शाके २९२). दिल्ली, अखिल भारतीय परनामी परिषद, १९७०. ७८ पृ. २.००

सिडाना, राजबाला.
श्री प्राणनाथ जी और उनका साहित्य. संपा. देवकृष्ण शर्मा. जामनगर, साहित्य प्रकाशन कमेटी, श्री ५ नवतनपुरी धाम, १९६९. १६, ३७४ पृ. १०.००
शोध-प्रवन्ध—वम्बई विश्व.

—प्रेमघन (बद्रीनारायण चौधरी उपाध्याय), १८५५-१९२२.

पुरोहित, रामचंद्र.
प्रेमघन और उनका कृतित्व. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७२. ३२४, ५० पृ ३५.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

—प्रेमचंद, १८८१-१९३६.

ऋषि, उषा.
प्रेमचंद और उनके उपन्यास. दिल्ली, पृथ्वीराज पब्लिशर, १९.४. २७७ पृ. २५.००
खन्ना, त्रिलोकीनाथ.
गोदान : एक नव्य परिबोध. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. ११३ पृ. १०.००
गुप्त, शीला, १९३४-
प्रेमचंद और उनका साहित्य. संपा. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय. इलाहावाद, साहित्य भवन, १९७२. ३११ पृ. १६.००
शोध प्रवन्ध—इलाहावाद विश्व.
गुरु, राजेश्वर, संपा.
गोदान. नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७६. १३६ पृ. १२.००
गोयनका, कमलकिशोर, १९३८-
प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प-विधान. दिल्ली, सरस्वती प्रेस, १९७४. ५७४ पृ. ५०.००
शोध प्रवन्ध—दिल्ली विश्व.
गौड़, सरोज, १९४२-
प्रेमचंद की कहानियों में ग्राम्यजीवन का चित्रण. सुलतानपुर, करुण-प्रकाशन, १९७६. १९५ पृ. १८.००
शारी, कृष्णदेव, १९२७-
प्रेमचंद की उपन्यास-कला का उत्कर्ष, गोदान. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७५. २२७ पृ. २८.००

टंडन, प्रतापनारायण.
प्रेमचंद की कहानी कला और साहित्य. इलाहावाद, साहित्य भवन, १९७६. १९७ पृ. २०.००
नूरजहां.
कहानीकार प्रेमचंद. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७५. ११४ पृ. १५.००
प्रसाद, सरोज.
प्रेमचंद के उपन्यासों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफलन. इलाहावाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ११, ३१६ पृ. २५.००
शोध प्रवन्ध—विहार विश्व.
बागड़ी, आशा.
प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास-साहित्य में पारिवारिक-जीवन. दिल्ली, शोध-प्रवन्ध-प्रकाशन; वितरक : सूर्य-प्रकाशन, १९७४. ४४० पृ. ५०.००
शोध-प्रवन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.
विष्ट, लक्ष्मणसिंह.
प्रेमचंद-पूर्व के कथाकार और उनका युग. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. २३८ पृ. २०.००
भरतसिंह, १९३७-
प्रेमचंद के नारी पात्र. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७३. ३६० पृ. ३०.००
शोध प्रवन्ध—आगरा विश्व.
मदान, इंद्रनाथ, १९१०- संपा.
गोदान : मूल्यांकन और मूल्यांकन. इलाहावाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७१. २०३ पृ. १०.००
मिश्र, चंद्रभानु 'प्रभाकर'.
प्रेमचंद की कहानीकला : मानसरोवर के संदर्भ में. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार ; विक्रेता : विद्यामंदिर, वंगलौर, १९७४. १७० पृ. ७.५०
मेहरोत्रा, सुमन, १९२९-
हिंदी कहानियों में द्वन्द्व : प्रेमचंद युग से आधुनिक युग तक. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. १६, २३८ पृ. ४०.००
शोध प्रवंध—राजस्थान विश्व.
रामसुन्दर लाल, १९२०-
प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान, सन् १९३६ से १९६० तक. वाराणसी, दीपक प्रकाशन; वितरक : चौखंभा विश्वभारती, १९७६. २३, ४८५ पृ. ४०.००
शोध-प्रवन्ध—काशी हिंदू विश्व.
शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
गवन-समीक्षा. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७०. १३९ पृ. २.५०

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
गोदान. संशो. सं. १३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. ८, २०० पृ. ३.००

शर्मा, राजपाल, १९३६-
गोदान : पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. २९६ पृ. १५.००

श्रीनिवासाचार्य, वेलुगलेटि, १९३२-
प्रेमचंद एवं तेलुगु के युगीन प्रतिनिधि उपन्यासकार. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७२. ३९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—उस्मानिया विश्व.

श्रीवास्तव, धनपतराय, १८८१-१९३६.
प्रेमचंद : सुभाषित और सूक्तियां. दिल्ली, एन. डी. सहगल, १९६३. २१९ पृ. ४.२५

सत्येन्द्र, संपा.
प्रेमचंद. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७६. १५१ पृ. १२.००

सिन्हा, इंद्रमोहन कुमार,
प्रमचंदयुगीन भारतीय समाज. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. ४२८ पृ. १५.००

सुभद्रा.
प्रेमचंद साहित्य में ग्राम्य-जीवन. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७२. १७६ पृ. १२.५०

हैकरवाल, जगतनारायण, १९२३-
प्रेमचन्द. इलाहाबाद, अक्षरपीठ प्रकाशन, १९७२. २१४ पृ. १५.००
शोध प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

—प्रेमी, मिर्ज़ा अब्दुर्रहमान, ज. १८८१.

प्रेमी, मिर्ज़ा अब्दुर्रहमान, ज. १८८१.
मिर्ज़ा अब्दुर्रहमान 'प्रेमी' कृत नख-शिख. संपा. इक़बाल अहमद. वंबई, महात्मा गांधी मेमोरियल रिसर्च सेंटर, १९७२. ९, १११ पृ. ५.००

—प्रेमी, हरिकृष्ण, १९०७-१९७४.

कालड़ा, जीवनलाल, १९४६-
हरिकृष्ण 'प्रेमी' के नाटकों में राष्ट्रीय-भावना. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७६. ११९ पृ. १५.००

—बख्शी, पदुमलाल पन्नालाल, १८९४-१९७१.

खरे, नर्मदाप्रसाद, १९१३-
साहित्य-जगत के विनोबा : बख्शी जी. जबलपुर, लोक चेतना प्रकाशन, १९७२. १३२ पृ. ५.००

मानव, महेंद्रकुमार, संपा.
रेवा : बख्शी-स्मृति अंक. ग्वालियर, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ४, १०३ पृ. २.००

—बच्चन, हरिवंशराय, १९०७-

जोशी, जीवन प्रकाश, १९३१-
गद्यकार बच्चन : बच्चन की गद्य-कृतियों पर एक समीक्षात्मक दृष्टि. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. २८० पृ. ३५.००

पंड्या, कृष्णचंद्र, १९४०-
बच्चन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७२. ३५३ पृ. २०.००

पारीक, हरस्वरूप,
बच्चन का परवर्ती काव्य. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७३. ८० पृ. १०.००

बच्चन, हरिवंशराय, १९०७-
टूटी-छूटी कड़ियां. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. १८४ पृ. १५.००

बच्चन, हरिवंशराय, १९०७-
प्रवास की डायरी : सन् १९५२ में लिखित, सन् १९७१ में सम्पादित. दिल्ली, राजपाल एंड सन्स, १९७१. ५९८ पृ. १६.००

बच्चन, हरिवंशराय, १९०७-
बच्चन के पत्र : निरंकारदेव सेवक के नाम. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७२. १०३ पृ. ४.००

मलहोत्रा, रेणु.
बच्चन का परवर्ती काव्य. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७२. १९२ पृ. १२.५०
शोध-प्रबंध

—बाबूजी महाराज, १८६१-१९४९.

बाबूजी महाराज, १८६१-१९४९.
वचन बाबूजी महाराज. आगरा, राधास्वामी सतसंग, १९७२. भा. १. ६.५०

—बिहारी.

अग्रोल, अरुण कुमारी.
बिहारी-सतसई में नायिका वर्णन. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७६. ११० पृ. १२.५०

ओमप्रकाश, संपा.
बिहारी. सं. २. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७०. १९४ पृ. १०.००

कणवरकर, शरद.
बिहारी-काव्य-वैभव. कोल्हापुर, एम. व्ही. फडके एण्ड कंपनी, १९७५. ७४ पृ. ५.००

किशोरीलाल, १९३१-
बिहारी काव्य की उपलब्धियां. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. २०८ पृ. १५.००

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
महाकवि बिहारी का शृंगार निरुपण. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १४० पृ. ९.००
शोध-प्रबन्ध, उत्तरार्ध भाग—पंजाब विश्व.

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
हिंदी काव्य में शृंगार-परंपरा और महाकवि बिहारी. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २७४, १४० पृ. २५.००

गुप्त, परमलाल, १९३३-
बिहारी और घनानंद. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७२. १२७ पृ. ७.५०

गुप्त, रमेशचंद्र, १९४०-
बिहारी : व्यक्तित्व एवं जीवन-दर्शन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. १५६ पृ. १५.००

गौड़, मनोहरलाल तथा श्रीराम शर्मा, संपा.
बिहारी-वैभव. नया सं. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, १५२ पृ. ५.००

जैन, रवींद्रकुमार, १९२५-
बिहारी नवनीत. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. ११७ पृ. ८.००

तिवारी, रामचंद्र, १९२४-
बिहारी-वैभव. सं. ५. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७०. ९८ पृ. १.००

दीक्षित, विश्वप्रकाश 'बटुक', १९१८- तथा रामधार मिश्र.
संक्षिप्त बिहारी : एक अध्ययन. इलाहाबाद, अरविंद प्रकाशन ; वितरक : हिंदी भवन, जालंधर, १९७२. ८, २४२ पृ. ५.००

वाजपेयी, आनंद मंगल.
बिहारी का काव्य. दिल्ली, इंडियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १५१ पृ. ४.००

भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
बिहारी और उनका साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ३२४ पृ. ७.५०

मिश्र, रामकुमारी, १९३२-
बिहारी विभूति : बिहारी सतसई का प्रामाणिक पाठ, भावार्थ, एवं व्याख्या. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९६९-७०. भा. १. १२.००; भा. २. १८.००
शोध-प्रबंध, संशोधित—प्रयाग विश्व.

मिश्र, विश्वनाथप्रसाद.
बिहारी-प्रकाश : बिहारी के ५० दोहों का भाष्य और विस्तृत आलोचना. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. १३८ पृ. ३.५०

राय, लल्लन, १९३६-
रीतिकालीन हिंदी-साहित्य, विशेषतः बिहारी सतसई में उल्लिखित वस्त्राभूषणों का अध्ययन. चण्डीगढ़, पब्लिकेशन ब्यूरो, १९७४. २०, ४२४, २२ पृ. ५०.००
शोध प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

शर्मा, देवेंद्र 'इन्द्र'.
बिहारी-सतसई. सं. ७. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ८, ५२२ पृ. ५.००

शर्मा, पद्मसिंह, १८७७-१९३२.
बिहारी सतसई : संजीवन भाष्य. गुड़गांव, ज्ञानदीप प्रकाशन; एकमात्र वितरक : गीताञ्जलि पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, १९७२. १९८ पृ. १५.००

शर्मा, शिवचरण 'मधुर'.
बिहारी-सतसई में बिम्ब-विधान. मेरठ, अनु प्रकाशन, १९७६. १२, ३६८ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

शर्मा, श्रीभगवान, संपा.
बिहारी सतसई (प्रारम्भ के दो सौ रस दोहे). सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, ३२७ पृ. ३.५०

सिंह, विजयपाल, संपा.
बिहारी वैभव. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, ६६ पृ. १.२५

सिन्हा, हरेंद्र प्रताप.
बिहारी सतसई का मूल्यांकन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७१. १५८ पृ. ५.००

—बिहारीलाल, जानी पंडित, ज. १८३८ ?

द्विवेदी, राधेश्याम, तथा त्रिलोकी नाथ ब्रजलाल. संपा.
दंपति भूषण ; ब्रजभाषा काव्य. मथुरा, भारती अनुसंधान भवन, १९७०. २०, १०४ पृ. ३.००

—बुधसिंह चारण, १८२९-१९०१.

चतुर्वेदी, हुक्मचंद, संपा.
देवीचरित. २ भा. जोधपुर, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, १९६८-६९. भा. १. १३.२५ ; भा. २. २१.००

—बुल्ला साहेब, वि. १७३०.

बुल्ला साहेब, वि. १७३०.
बुल्ला साहेब का शब्दसार. इलाहाबाद, वेल्वीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९७३. ३२ पृ. १.५०

—बेचन.

महावीरदास.
एक मज़दूर कलम का : डाक्टर बेचन अभिनन्दन ग्रंथ. भागलपुर, शताब्दी, १९७३. ८, १४६ पृ. ७.५०

—बोद्धादास

सुभद्रादास, स्वामी.
भक्ति-विवेक. सं. २. वाराणसी, श्री सद्गुरु कबीर हनुमंत-पुस्तकालय, १९७२. ३०, ५० पृ. ०.५०

—बोधा, १८वीं शती.

मिश्र, विश्वनाथप्रसाद, संपा.
बोधा ग्रंथावली. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७४. ३३८, ३६ पृ. १७.५०
विषय सूची : विरही-सुभान-दंपति (इश्कनामा).—माधवानल-काम-कंदला (विरहवारीश).

—भटनागर, बांकेविहारी.

बच्चन, हरिवंशराय, १९०७- संपा.
हिंदी पत्रकारिता के गौरव : बांकेबिहारी भटनागर. दिल्ली, आत्माराम, एंड संस, १९६७. ३२६ पृ. १२.००

—भटनागर, महेंद्र, १९२६-

झाला, दुर्गाप्रसाद, १९३३-
कवि महेंद्र भटनागर : सृजन और मूल्यांकन. ग्वालियर, रवीन्द्र प्रकाशन, १९७२. १५१ पृ. १५.००

—भट्ट, उदयशंकर, १८९७-१९६६.

शर्मा, मनोरमा.
उदयशंकर भट्ट : व्यक्तित्व और कृतित्व. नई दिल्ली, के. वी. पब्लिकेशन, १९७७. ५०.००
शर्मा, सुरेशचंद्र, १९३६-
उदयशंकर भट्ट : काव्य और नाटक. गाजियाबाद, विमल प्रकाशन, १९७२. १५, २३१ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ मुस्लिम विश्व.

—भट्ट, बालकृष्ण, १८४४-१९१४.

भट्ट, मधुकर, १९४२-
पंडित बालकृष्ण भट्ट : व्यक्तित्व और कृतित्व. वाराणसी, बालकृष्ण प्रकाशन; मुख्य वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. १६, ४९६ पृ. ३०.००
शोध प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

—भरतिया, शिवचंद्र.

नाहटा, किरण.
शिवचंद्र भरतिया. संपा. रावत सारस्वत. जयपुर, राजस्थान भाषा प्रचार सभा; वितरक : चम्पालाल रांका एंड कं., १९७०. ६६ पृ. ५.००

—भारती, धर्मवीर, १९२६-

गौतम, लक्ष्मणदत्त, १९३५- संपा.
धर्मवीर भारती. नई दिल्ली, कुमार प्रकाशन, १९७४. २४६ पृ. ३०.००

गौतम, सुरेश.
अंधा युग : एक सृजनात्मक उपलब्धि. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७३. १४० पृ. १२.००
लघु शोध प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

जोशी, कैलाश, १९४९-
धर्मवीर भारती का उपन्यास साहित्य. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७३. १०२ पृ. १०.००

वर्मा, हरिश्चंद्र, १९३४-
अंधायुग . एक विवेचन. दिल्ली, नवभारती सहकार प्रकाशन प्रतिष्ठान, १९७३. १३८ पृ. १०.००

शर्मा, [illegible].
अंधायुग : एक विवेचन. दिल्ली, कला मंदिर, १९७४. २१८ पृ. ६.००

शर्मा, ब्रजमोहन.
धर्मवीर भारती : [illegible] तथा अन्य कृतियाँ. दिल्ली, भारती भाषा प्रकाशन; प्रमुख वितरक : सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६ १६४ पृ. २०.००

तनेजा, सत्येन्द्रकुमार, १९३३-
नाटककार भारतेंदु की रंगपरिकल्पना. दिल्ली, भारती भाषा प्रकाशन; प्रमुख वितरक : सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. ११० पृ. १५.००

तिवारी, गोपीनाथ, १९१३-
भारतेंदु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. ३०९ पृ. १८.००

त्रिपाठी, जयशंकर, १९२९- संपा.
श्रीचंद्रावली नाटिका. संशो. सं. २. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९६९. १४४ पृ. २.५०

दीक्षित, श्यामसुन्दरलाल, संपा.
सत्य हरिश्चंद्र नाटक. नया सं. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १११ पृ. २.५०

धीर, सुशीला, १९३६-
भारतेंदु-युगीन नाटक. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २२५ पृ. ११.००

प्रसाद, वासुदेवनंदन, १९२५-
भारतेंदु-युग का नाट्य-साहित्य और रंगमंच. पटना, भारती भवन, १९७३. १७. २६६ पृ. १८.००

भारतेंदु हरिश्चंद्र, १८५०-१८८५.
भारतेंदु-ग्रंथावली. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७०. भा. १-३.

मदन गोपाल, १९१९-

शर्मा, प्रेमनारायण.
भारतेंदु की नाट्य-कला. कानपुर, आचार्य शुक्ल साधना सदन, १९५९. १२, ३१४ पृ. ३.००

शर्मा, रामविलास.
भारतेंदु-युग और हिंदी भाषा की विकास-परम्परा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. ३५२ पृ. २५.००

शुक्ल, प्रेमनारायण, १९१४-
भारतेंदु की नाट्य-कला. कानपुर, ग्रन्थम, १९७२. २१० पृ. १२.००

शुक्ल, भानुदेव, १९३०-
भारतेंदु के नाटक. कानपुर, ग्रन्थम, १९७२. १६३ पृ. ११.००

श्रीवास्तव, रामचंद्र 'चंद्र' तथा कैलाशनंद अग्रवाल, संपा.
भारतेंदु काव्यामृत. सं. २. आगरा, रवि प्रकाशन, १९७३. ८, २१५ पृ. ४.००

श्रीवास्तव, श्याम कुमारी.
भारतेंदु की खड़ी बोली का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. इलाहाबाद, कृति केन्द्र प्रकाशन, १९७३. १४, ४३८ पृ. ४०.००

—भिखारीदास, वि. १७३४-१७५०.

त्रिपाठी, नागेश्वर सहाय, १९२१-
आचार्य भिखारीदास. प्रतापगढ़, १९७२. ११४, २५१ पृ. १६.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व.

तिवारी, रामप्यारे, संपा.
शिवाबावनी. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७०. ११२ पृ. ३.००

फड्णीस, नारायण नरसिंह, अनु.
अलंकार शिवभूषण. संपा. वासुदेव नारायण फड्णीस. जलगांव, १९६९. १८, १९६ पृ. ४.००
हिंदी-मराठी में.

—भैयाजी बनारसी (गुप्त, मोहन लाल)

वेढब बनारसी तथा अन्य, संपा.
भैयाजी बनारसी स्वर्ण-समारोह. वाराणसी, शनिवार गोष्ठी प्रकाशन, १९६४. ११४ पृ. १.००

—मंझन, वि. १५९५.

बुद्धिराजा, राज, १९३७-
मधुमालती-पुनर्मूल्यांकन : मूल पाठ सहित. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन : वितरक : तेज प्रकाशन, १९७६. ११२ पृ. १२.५०

सक्सेना, लालताप्रसाद 'ललित', १९२४-
मंझन का सौंदर्य-दर्शन. जयपुर, निर्मल प्रकाशन संस्थान, १९७४. १०, २०८ पृ. २०.००

सेठी, दर्शनलाल, १९३३-
मंझन कृत मधुमालती का काव्य-सौंदर्य. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. ८, १८० पृ. १५.००

भाटी, कर्णसिंह.
समस्या नाटककार लक्ष्मी नारायण मिश्र. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७६. १७८ पृ. २५.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
सिंदुर की होली : एक मूल्यांकन. संशो. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १०, २१९ पृ. ३.५०

शुक्ल, रामअचल.
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों की समीक्षा. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. ३०७ पृ. ३०.००

—मिश्र, विश्वनाथप्रसाद.

विजयेन्द्र स्नातक, संपा.
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अभिनंदन ग्रंथ. दिल्ली, प्रेम पुस्तक भंडार, १९७६. १२७, ४३८ पृ. ६०.००

—मिश्र, सूरति.

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश'.
सूरति मिश्र का काव्यशास्त्र. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७५. ८४ पृ. १०.००

—मीराबाई.

घनश्याम शलभ तथा अन्य, संपा.
मीरां स्मृति-ग्रंथ. अजमेर, साहित्य निकेतन, १९७२. २२८ पृ. २५.००

शर्मा कृष्णदेव, १९२७-
मीरां बाई. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७२. १०४ पृ. ७.००

तिवारी, भगवानदास, १९३२-
मीरां की प्रामाणिक पदावली. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७४. २७६ पृ. २५.००
शोध प्रबन्ध—सागर विश्व.

तिवारी, भगवानदास, १९३२-
मीरां की भक्ति और उनकी काव्य-साधना का अनुशीलन. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७४. ३५८ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध, संशोधित—सागर विश्व.

त्रिवेदी, जेठालाल नारायण, संपा.
नरसीजी रो माहेरो. जोधपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, १९७२. ५०, १८२ पृ. ७.२५

पद्मावती शबनम, १९१७-
मीरां : व्यक्तित्व और कृतित्व. लखनऊ, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. ५१२, १५ पृ. ५०.००

पुरोहित, हरिनारायणजी, संपा.
मीरां बृहत्पदावली. जोधपुर, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, १९६८. भा. १. ७.५०

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी.
मतवाली मीरा. प्रयाग, संकीर्तन भवन, १९६९? १६, १८४ पृ. २.५०

मीराबाई,
मीराबाई की शब्दावली और जीवन चरित्र. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६४. ५,६० पृ. १.००

रामप्रकाश, १९३१-
मीरांबाई की काव्य-साधना. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. १२७ पृ. ७.५०

लीलाधर 'वियोगी'.
काव्य की किला मीराबाई. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७४. १२८ पृ. ७.००

शक्ति प्रकाश, संपा.
मीरा पदावली. पटियाला, भाषा विभाग, १९६२. ८, ११४ पृ.

शर्मा ओमप्रकाश, १९३९- संपा.
मीराबाई की पदावली. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. २४, १९१ पृ. ७.५०

शर्मा, कृष्णदेव, १९२७
मीरां की काव्य कला : मीरांबाई की पदावली का आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली, मंगल बुक डिपो, १९७२. १८६ पृ. १०.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
मीराबाई-पदावली. दिल्ली, मंगल बुक डिपो, १९७२. १२, ३८२ पृ. २५.००

शशि प्रभा, १९४८-
मीरां की भाषा. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७५. २०३ पृ. १५.००
शोध प्रबंध— मेरठ विश्व.

शशिप्रभा, १९४८-
मीरा कोश. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७५. १६५ पृ. १८.००

शेखावत, कल्याणसिंह, १९४२-
मीरांबाई का जीवनवृत्त एवं काव्य. जोधपुर, हिंदी साहित्य मंदिर, १९७४. २८३, २० पृ. ३०.००
शोध प्रबन्ध—राजस्थान यूनि.

सुंदरम, ना., १९३०-
मीरा और आण्डाल का तुलनात्मक अध्ययन. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. २३, ३९९ पृ. ३०.००
शोध प्रबंध—जबलपुर विश्व.

— मिलिंद, जगन्नाथप्रसाद.

वर्मा, कृष्णचंद्र, संपा.
कविश्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'. झांसी, सेतु प्रकाशन, १९७०? ८२ पृ. ३.००

—मुक्तिबोध, गजानन माधव, १९१७-१९६४.

ऋतुपर्ण, सुरेश, १९४८-
मुक्तिबोध की काव्य-सृष्टि. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७५. ६, १७६ पृ. १५.००

गौतम, लक्ष्मणदत्त, १९३५- संपा.
गजानन माधव मुक्तिबोध. दिल्ली, विद्यार्थी प्रकाशन, १९७२. १८. ३०६ पृ. २५.००

चक्रधर, अशोक, १९५१-
मुक्तिबोध की काव्यप्रक्रिया; मुक्तिबोध के चिंतन के संदर्भ में उनके काव्य की रचना-प्रक्रिया और अर्थ-प्रक्रिया का अध्ययन. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, १९७५. १७६ पृ. १९.००

चौहान, चंचल, १९४१-
मुक्तिबोध : प्रतिबद्ध कला के प्रतीक. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७६. १४० पृ. २०.००

भटनागर, महेश.
गजानन माधव मुक्तिबोध : जीवन और काव्य. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७६. ११० पृ. २०.००

मिश्र, कृष्ण मुरारी
आत्मबिम्ब और मुक्तिबोध की कविता. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७७. १४० पृ. २५०.०

राठौर, पुष्पलता.
मुक्तिबोध के आलोचना-सिद्धान्त. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७६. ६, १६० पृ. २०.००

वर्मा, मोतीराम, १९३९-
मुक्तिबोध का गद्य साहित्य. दिल्ली, विद्यार्थी प्रकाशन, १९७३. १५४ पृ. १५.००

वर्मा, मोतीराम, संपा.
लक्षित मुक्तिबोध. दिल्ली, विद्यार्थी प्रकाशन, १९७२. २२२ पृ. ८.००

शर्मा, जगदीश, १९३५-
मुक्तिबोध : एक साहित्यक इकाई. इलाहाबाद, किताब महल, १९७२. १०९ पृ. ५.००

शर्मा, रमेश.
कवि मुक्तिबोध; एक विश्लेषण. दिल्ली, सस्ता साहित्य भंडार, १९७२. ८८ पृ. ७.५०

शर्मा, श्रीराम, १९२०-
नया सप्तक : विवेचनात्मक अध्ययन (अज्ञेय एवं मुक्तिबोध). आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २०० पृ. ३.५०

—मेहता, नरेश, १९२१-

बोहरा, शशि, १९५१-
नरेश मेहता के उपन्यास : शोध-कार्य. आगरा, न्यू रत्नाश्रम प्रकाशन, १९७२? ७५ पृ. ७.००

शर्मा, कृष्णदेव.
यह पथ बन्धु था; समीक्षा. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७४. २२४ पृ. ७.५०

—मोहनलाल मिश्र, वि. १५५०-१५६०.

तेलंग, भालचंद्रराव, संपा.
मोहनलाल मिश्र रचित शृंगारसागर : हिंदी साहित्य के रीतिकाल का मुखबंध. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधान शाला, १९७४. ९८. ३५३ पृ. ४०.००

—यशपाल, १९०३-१९७६.

गुप्त, शांतिस्वरूप, १९२५-
यशपाल और उनकी दिव्या. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. १९६ पृ. ५.००

द्विवेदी, सदाशिव, १९४८-
यशपाल और मानिक वंद्योपाध्याय : कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली, प्रासंगिक प्रकाशन, १९७६. ४, १४७ पृ. २०.००
शोध-प्रबंध, संशोधित रूप—भागलपुर विश्व.

मधुरेश, संपा.
यशपाल के पत्र. दिल्ली, मैकमिलन, १९७७. १३४ पृ. १६.५०

मल्होत्रा, सुदर्शन.
यशपाल के उपन्यासों का मूल्यांकन. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. २१६ पृ. २०.००

मिश्र, पारसनाथ, १९२३-
मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. ३७३ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—बम्बई विश्व.

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
यशपाल और उनका झूठा सच. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७३. २६८ पृ. ६.२५

शर्मा, राजपाल, १९७६-
यशपाल और उनकी दिव्या. दिल्ली, कला मंदिर, १९७२. २२० पृ. १५.००

सहगल, मनमोहन, १९३२-
अमिता : कृति और कृतिकार. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७५. १६४ पृ. ९.००

—यारी साहब, १६६८-१७२३.

यारी साहब, १६६८-१७२३.
यारी साहब की रत्नावली और जीवन-चरित्र. इलाहाबाद, वेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९७१. १७ पृ. ०.४०

—रत्नाकर, जगन्नाथदास, १८६६-१९३२.

बुद्धिराजा, राज.
उद्धवशतक; पुर्नमूल्यांकन. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७६. ७३ पृ. १०.००

भट्ट, विश्वम्भरनाथ, १९१५-
रत्नाकर : उनकी प्रतिभा और कला. दिल्ली, उपलब्धि प्रकाशन, १९७२. ३८८ पृ. ३०.००

—रविदास, १५वीं शती.

जाटव, वख्शीदास.
रहदास रामायण : रविदास जीवन चरित्र. दिल्ली, देहाती पुस्तक भण्डार, १९७०. १५२ पृ. ३०.००

पृथ्वीसिंह आज़ाद.
गुरू रविदास. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १९७५. १०० पृ. ३.२५

पृथ्वीसिंह आज़ाद.
रविदास दर्शन, श्री गुरू रविदास जी की साखियाँ. संपा. बंसीप्रसाद शर्मा तथा पीताम्बर नारायण. चंडीगढ़, श्रीगुरु रविदास संस्थान, १९७३. १२५, १९२ पृ. १०.००

शर्मा, बी. पी., १९१६-
संत गुरु रविदास. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. ८, १०१ पृ. २.५०

—रसखान.

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
रसखान. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसायटी, १९७२. ९९ पृ. ७.००

लीलाधर वियोगी, १९३५-
रसखान : भक्त और कवि. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. १४४ पृ. ५.००

—रसरासि (रामनारायण), वि. १७५०-१८००.

उमेश शास्त्री.
महाकवि रसरासि : रीतिकालीन अपेक्षित कवि. जयपुर, देवनगर प्रकाशन, १९७२. १६, १९२, ६४ पृ. २५.००
हिंदी-प्रचार-परिषद्, राजस्थान, जयपुर के तत्वावधान में अनुसंधानित.

—रसिक सुंदर, १९वीं शती.

गोविलकर, म. वि., १९१७-
रसिक सुन्दर और उनका हिंदी काव्य. नासिक, रसिक प्रकाशन, १९७४. ३१२, ४ पृ. ४०.००
शोध प्रबन्ध—पुणे विश्व.

—रहीम.

अकिंचन, बालकृष्ण, १९३२-
भारतीय नीति-काव्य परम्परा और रहीम. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७४. २२, ५८१ पृ. ५०.००
शोध प्रवन्ध —सागर विश्व.

अकिंचन, बालकृष्ण, १९३२-
रहीम का नीति-काव्य. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७२. २०, ३८८ पृ. ३०.००
शोध-प्रवन्ध—सागर विश्व.

अग्रवाल, सरयूप्रसाद, १९२२-
अब्दुर्रहीम खानखाना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. नई दिल्ली, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, १९७१. ३१४ पृ. ५.२५

भट्ट, नटवर जगन्नाथ, १९३०-
कवि रहीम. बंबई, परिचय ट्रस्ट, १९७४. ३२ पृ. ०.७५

विश्वम्भर 'अरुण', सपा.
रहीम सतसई. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, १२४ पृ. १.५०

—राकेश, मोहन, १९२५-१९७२.

अग्रवाल, सुषमा.
समकालीन नाट्य-साहित्य और मोहन राकेश. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७५. १५८ पृ. १५.००

कथूरिया, सुंदरलाल, १९४१-
नाटककार मोहन राकेश. नई दिल्ली, कुमार प्रकाशन, १९७४. २४६ पृ. ३०.००

चातक, गोविंद.
आधुनिक नाटक का मसीहा : मोहन राकेश. दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, १९७५. १७६ पृ. २५.००

जोशी, जीवन प्रकाश, १९३१-
नाटककार मोहन राकेश : एक सर्वेक्षण. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७५. १०० पृ. १२.५०

तनेजा, जयदेव, १९४३-
लहरों के राजहंस : : विविध आयाम. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १२८ पृ. २२.००

राकेश, अनीता.
मोहन राकेश : साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १७५ पृ. १८.००

राकेश, मोहन, १९२५-१९७२.
बकलम खुद. दिल्ली, राजपाल, १९७४. १४४ पृ. १५.००

राकेश, मोहन, १९२५-१९७२.
मोहन राकेश, साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १७५ पृ. १८.००

शर्मा, जगदीश, १९३५-
मोहन राकेश की रंग-सृष्टि. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. ९६ पृ. ९.००

शर्मा, तिलकराज, १९२६-
अपने नाटकों के दायरे में नाटककार मोहन राकेश. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. २२० पृ. १८.००

—राघव, रांगेय, १९२३-१९६२.

सिंह, लालसाहब, १९४०-
डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास. बंबई, अनुपमा प्रकाशन, १९७२. ११, ३७४, १० पृ. ३०.००
शोध प्रवन्ध—बंबई विश्व.

— राधेश्याम कथावाचक, १८९०-१९६३.

राधेश्याम कथावाचक, १८९०-१९६३.
मेरा नाटक काल. बरेली, राधेश्याम पुस्तकालय, १९५७. ६, ३०४ पृ. २.५०

—रामतीर्थ, स्वामी, १८७३-१९०६.

सूरती, उर्वशी, १९२४-
स्वामी रामतीर्थ और उनकी कविता. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७२. १६७ पृ. १२.००

—रामसूरत.

अभिलाषदास, भाष्य.
विवेक प्रकाश (सटीक). सं. २ गोंडा, श्री कबीर मंदिर, १९७१. ३२, ७७०, ६ पृ. १०.००

—रेणु, फणीश्वरनाथ, १९२१-

पूर्णदेव, १९४१-
'रेणु' का आंचलिक कथा-साहित्य. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. ९८ पृ. ६.००

—रैदास, १५वीं शती.

जिज्ञासु, श्रीचन्द्रिकाप्रसाद.
संत रैदास साहेब. लखनऊ, बहुजन कल्याण प्रकाशन, १९६४-६८. भाग १. ३.५०, भाग २. ३.००
सिंह, योगेंद्र
संत रैदास : कृतित्व, जीवन और विचार. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७२. २१९ पृ. १२.००

—लाल, महात्मा.

सिंह, महेंद्रप्रताप, संपा.
छत्रप्रकाश. नई दिल्ली, श्रीपटल प्रकाशन, १९७३. २०० पृ. २५.००

—लाल बलबीर, १८५७-१९२०?

व्रजवल्लभशरण तथा अन्य, संपा.
व्रज विनोद : लाल बलबीर का हजारा एवं उनके अनुज प्रेमसखी की कविताएँ. मथुरा, प्रदीप प्रकाशन, १९७४. ६, १७४ पृ. १५.००

—वर्मा, भगवतीचरण, १९०३-

क्षारी, कृष्णदेव, १९२७-
भगवती चरण वर्मा और उनका टेढ़े-मेढ़े रास्ते. दिल्ली, शोभा प्रकाशन, १९७२. २४४ पृ. ७.००
देवेंद्रप्रताप.
भूले बिसरे चित्र. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७०. ४, १०२ पृ. २.००
वार्ष्णेय, कुसुम.
भगवतीचरण वर्मा : 'चित्रलेखा' से 'सबहिं नचावत राम गोसाईं' तक. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७१. २२३ पृ. ११.००
वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' की पहचान. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. ८५ पृ. ८.००
शर्मा, रतनलाल.
भगवतीचरण वर्मा और उनका भूले-बिसरे चित्र. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७२. २२४ पृ. ४.५०
शुक्ल, वैजनाथ प्रसाद, १९४८-
भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना. दिल्ली, प्रेम प्रकाशन मंदिर, १९७७. १५, ४६२ पृ. ६०.००
शोध-प्रबंध—लखनऊ विश्व.
श्रीवास्तव, शिवनारायण, १९१३- तथा सुरेशचंद्र पांडेय.
उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा और भूले बिसरे चित्र. वाराणसी, सरस्वती मंदिर, १९७०. २१० पृ. ३.००
सिंह, व्रजनारायण.
उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७२. ३०१ पृ. १६.००

—वर्मा, महादेवी, १९०७-

अरविंदाक्षन, १९४९-
महादेवी के रेखाचित्र. कोचिन, गीता प्रकाशन, १९७४. १११ पृ. ६.००
शोध-प्रबंध—केरल विश्व.
गोस्वामी, व्रजलाल, १९२३-
महादेवी की कविता : संशय और समाधान. दिल्ली, भावना प्रकाशन; वितरक : स्टूडेण्ट्स स्टोर्ज, १९७१, ३३५ पृ. २५.००
गौतम, लक्ष्मणदत्त, १९३५-
महादेवी वर्मा : कवि और गद्यकार. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७२. १६४ पृ. १५.००
चौधरी, पद्मसिंह.
महादेवी साहित्य : एक नया दृष्टिकोण. जयपुर, अपोलो प्रकाशन, १९७४. २१३ पृ. २५.००
भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
महादेवी वर्मा और 'नीहार' : व्याख्या और आलोचना. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. १२, ३४६ पृ. ४.५०
भूषण स्वामी, १९२०-
'अतीत के चलचित्र' और महादेवी वर्मा. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. ९५ पृ. २.००

मानव, विश्वंभर, १९१२-
महादेवी की रहस्य साधना. संशो. सं.६. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन, १९६९. २१६ पृ. ५.००

वर्मा, महादेवी, १९०७-
स्मृति चित्र. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १३७ पृ. ११.५०

शर्मा, मनोरमा.
महादेवी के काव्य में लालित्य विधान. कानपुर, साहित्य संस्थान, १९७६. ३७९ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—मराठावाडा विश्व.

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
महादेवी वर्मा और 'स्मृति की रेखाएं'. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ८, २०८ पृ. ३.००

हरि हरीश.
पथ के साथी की रेखाएं : महादेवी विरचित पथ के साथी का समीक्षात्मक अनुशीलन. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७४. १०४ पृ. ४.००

—वर्मा, रामकुमार, १९०५-

श्रीवास्तव, राधेकृष्ण.
रामकुमार वर्मा. दिल्ली, राजपाल एंड सन्स, १९७५. १२२ पृ. ५.००

सक्सेना, शीला.
डॉ. रामकुमार वर्मा के ऐतिहासिक नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन. लखनऊ, भारती प्रकाशन, १९७२. ९१ पृ. ८.००
शोध-प्रबंध.

—वर्मा, रामेश्वरप्रसाद, १९४२-

अरुणमोहन 'भारवी', १९५०-
कथाकार वर्मा : उपलब्धि और संभावनाएं. शाहाबाद, अरुणोदय प्रकाशन, १९७१. ७८ पृ. १.००

—वर्मा, वृंदावनलाल, १८८९-१९६९.

पाठक, जितेंद्रनाथ, १९३६-
ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा और मृगनयनी. वाराणासी, सरस्वती मंदिर, १९६३. २७७ पृ. ३.५०

माथुर, कमलेश.
वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नैतिकता. जयपुर, मलिक एंड कंपनी, १९७२. ७२ पृ. ७.००

—वाजपेयी, भगवती प्रसाद, १८९९-१९७३.

गौड़, विश्वनाथ तथा अन्य.
वाजपेयी अभिनंदन ग्रंथ : ७०वां जन्म दिवस, ११ १०-१९६९. कानपुर, अलका प्रकाशन, १९६९. ५८९ पृ. ५०.००

छाबड़ा, गोविंदलाल, १९३७- तथा लक्ष्मणदत्त गौतम.
कहानीकार भगवतीप्रसाद वाजपेयी : संवेदना और शिल्प. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७२. १९८ पृ. १५.००

राजेंद्र कुमार.
भगवतीप्रसाद वाजपेयी का कर्मपथ. इंदौर, विद्या भवन, १९७०? २०४ पृ. ६.००

—वारिसशाह, वि. १७७६.

पद्म, बाबूराम, १९४७-
सय्यद वारिसशाह एवं उनकी अमर कृति 'हीर-रांझा'. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७२. ८, ९४ पृ. ६.००

पदम, बाबूराम, १९४७-
हरि वारिसशाह : जीवन रचना तथा काल. दिल्ली, साहित्य केन्द्र प्रकाशन, १९७५. ११२ पृ. ८.००

—विद्यापति, १५वीं शती.

कणवरकर, शरद.
विद्यापति-काव्य-वैभव. कोल्हापुर, एम. व्ही. फडके एंड कंपनी, १९७५. १२४ पृ. ६.००

किशोर, श्यामनंदन, १९२३- संपा.
काव्य-प्रवाह. दिल्ली, अनिल प्रकाशन, १९७१. ८५ पृ. २.५०

गौड़, मनोहरलाल.
विद्यापति, कीर्तिलता और पदावली का संकलन. वाराणसी, विद्या-मंदिर, १९७०. ४२, ६५ पृ. ३.००

चौधरी, अमरनाथ, १९३९-
विद्यापतिक भक्ति-दर्शन. पनिचोभ, ज्योति प्रकाशन; दरभंगा : नवरत्न गोष्ठी, १९७३. ९४ पृ. १०.००

जुयाल, गुणानंद तथा विश्वंभर 'अरुण'.
विद्यापति वैभव. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ८, १८३ पृ. २.५०

झा, उमानाथ, संपा.
विद्यापति गीत शती. नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, १९७२. १६, १०४ पृ. ५००

झा, उमानाथ तथा आनंद मिश्र, संपा.
स्मारिका. पटना, चेतना समिति, १९७१. अनेक पृ. ७.००

झा, राजेश्वर, १९२५-
विद्यापतिक संगीत में वर्णित नायक-नायिका-भेद एवं राग-रागिनी-वर्गीकरण. पटना, मैथिली साहित्य संस्थान, १९७०? ५५ पृ. २.००

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
मैथिल-कोकिल विद्यापति, नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १२८ पृ. १५.००

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
विद्यापति : मैथिल-कोकिल विद्यापति के जीवन और कृतित्व का आलोचनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७२. १३६ पृ. ८.००

दुबे, महेंद्रनाथ, संपा.
गीत विद्यापति. वाराणसी, शक्ति प्रकाशन; वितरक : हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७५. १३, ८७७ पृ. ८०.००

पांडेय, सिद्धनाथ.
विद्यापति और उनका काव्य सौंदर्य. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७४. १४८, ७२ पृ. ९.००

मिश्र, परमेश्वर, १९३४-
अभिनव जयदेव विद्यापति : विद्यापति विषयकनिबंध-संग्रह. हरिपुर, कादम्बरी प्रकाशन, १९७२. १०, ६८ पृ. २.५०

मिश्र, विश्वेश्वर.
महाकवि विद्यापति : विद्यापतिक काव्य प्रतिभा का समालोचनात्मक अध्ययन. दरभंगा, ग्रंथालय प्रकाशन, १९७०. ७२ पृ.

विद्यापति, १३५०-१४०३.
विद्यापति पदावली. सं. २. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, १९७२. भा. १. नेपाल में प्राप्त विद्यापति के पदों का संग्रह. १३.००

शर्मा, कृष्णदेव.
विद्यापति की काव्य-साधना. सं. २. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. ३०४ पृ. ५.००

शर्मा, कृष्णा, १९२९-
विद्यापति और सूरकाव्य में राधा. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. ११६ पृ. १०.००
शोध-प्रबंध—पंजाबी विश्व.

श्रीवास्तव, वीरेंद्र, संपा.
विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन. पटना, बिहार, हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. भा. १-२. १९.००

सहगल, मनमोहन, १९३२-
विद्यापति : मूल्यांकन तथा उपलब्धि. ग्वालियर, विश्व-विद्यालय प्रकाशन, १९७४. ८, ९२, ८० पृ. ७.००

सिंह, प्रमोद कुमार, १९४२-
विद्यापति-पदावली में लोक-संस्कृति का चित्रण. दलसिंह सराय, दरभंगा, कल्पना तीर्थ, १९७०. ५, ६० पृ. ७.००

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
विद्यापति. संशो. सं. ४. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ६, ३०० पृ, १२.५०

—विष्णुदास, १५वीं शती.

तिवारी, बलभद्र.
कविवर विष्णुदास और उनकी रामायण-कथा (पंद्रहवीं शताब्दी का राम काव्य). इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. १९५ पृ. ११.००

—वृंद, १६४३-१७२३.

जनार्दन राव, चेलेर, १९३४-
वृंद और उनका साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ३५९ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—श्रीवेंकटेश्वर विश्व.

जनार्दन राव, चेलेर, संपा.
वृन्द ग्रंथावली; कविवर वृन्द की अप्रकाशित मूल रचनाएँ. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ३६७ पृ. २०.००

श्रीवास्तव, स्नेहलता, १९२२-
चाचा वृन्दावनदास कृत भ्रमर गीत. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७२. १०० पृ. १०.००

—वृंदावनदास, १९०६-

पाठक, आनंद स्वरूप तथा कन्हैयालाल 'चंचरीक', संपा.
बाबू वृन्दावनदास अभिनंदन-ग्रंथ. नई दिल्ली, बाबू वृन्दावनदास अभिनंदन ग्रंथ समिति, १९७५. ४६, ७२०, २४ पृ. १०१.००

—व्यास, अंबिकादत्त, १८५८-१९००.

कृष्णकुमार, १९२५-
पं. अम्बिकादत्त व्यास; एक अध्ययन. बरेली, प्रकाश बुक डिपो, १९७१. १२, ४५६ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

—व्यास, काशीराम, १८७२-१९७०.

ओझा, दीनदयाल, १९२८-
काशीराम व्यास; एक परिचय. जैसलमेर, मूमल प्रकाशन, १९७१. ५४ पृ. १.००

—व्यास, गणेशीलाल, १८७७-१९६५.

सारस्वत, रावत तथा रामेश्वरदयाल श्रीमाली, संपा.
जनकवि उस्ताद : स्व. श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' री राजस्थानी कवितावां, गीतां, अर निरत-गीत रूपकां रो संग्रह अर वां रै व्यक्तित्व अर कृतित्व री समीक्षा. जयपुर, राजस्थान भासा प्रचार सभा; वितरक: चम्पालाल रांका एंड कंपनी, १९७२. २१६ पृ. १०.००

—व्यास, सूर्यनारायण, १९०२-

श्रोत्रिय, प्रभाकर, संपा.
अनुष्टुप. भोपाल. मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, १९७२? २३, ३०० पृ. १२.००

—शंकरदेव, १४४९-१५६९.

गुप्त, लक्ष्मीशंकर, संपा.
महापुरुष शंकरदेव-व्रजबुलि-ग्रंथावली. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७५. २८, ४३६ पृ. ३५.००

—शर्मा, नरेंद्र, १९१३-

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५- तथा अन्य, संपा.
ज्योति-कलश, संदर्भ ग्रंथ के परिप्रेक्ष्य में : कविवर पंडित नरेंद्र शर्मा अभिनंदन ग्रंथ. बम्बई, भारत-भारती-परिषद्, १९७५. ४४८, १६ पृ. ५०.००

—शर्मा, पद्मसिंह, १८७७-१९३२.

चतुर्वेदी, बनारसीदास तथा अन्य, संपा.
आचार्य पं. पद्मसिंह शर्मा, व्यक्ति और साहित्य : स्मृति ग्रंथ. मुरादाबाद, भगत; मुख्य वितरण: हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७४. ४५६ पृ. ४०.००

—शर्मा, पद्मसिंह 'कमलेश', १९२०-१९७४.

सुमन, क्षेमचंद्र, संपा.
आत्म-शिल्पी कमलेश : डॉ. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के कर्ममय जीवन और कुशल कृतित्व का सर्वांगीण अध्ययन दिल्ली, बंसल, १९७५. २९९, १६ पृ. ६०.००

—शुक्ल, गयाप्रसाद.

शर्मा, राजकुमार तथा रामचंद्र पुरी, संपा.
साधना और परख. दिल्ली, लोकवाणी प्रकाशन, १९७५. ३०२ पृ. ४०.००

—शुक्ल, गिरिजादत्त 'गिरीश', १८९९-१९५९.

शुक्ल, विजयकुमार, १९३४-
स्व. गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश : व्यक्तित्व एवं साहित्य. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. ३२६ पृ. ३०.००
शोध-प्रवन्ध—जबलपुर विश्व.

—शुक्ल, राजाराम 'राष्ट्रीय आत्मा', १८९८-१९६२.

दास, पुष्पलता.
राजाराम शुक्ल 'राष्ट्रीयआत्मा' : वर्चस्व एवं कृतित्व, सन् १८९८-१९६२. आगरा, दुर्गा प्रकाशन, १९७६. ८, ३५९ पृ. ४८.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

—शुक्ल, रामचंद्र, १८८४-१९४१.

अजित कुमार तथा प्रेमचंद पातंजलि, संपा.
आचार्य शुक्ल विचार कोश दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. २७२ पृ. २२.००

जुयाल, गुणानंद तथा विश्वंभर 'अरुण'.
विद्यापति वैभव. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ८, १८३ पृ. २.५०

झा, उमानाथ, संपा.
विद्यापति गीत शती. नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, १९७२. १६, १०४ पृ. ५.००

झा, उमानाथ तथा आनंद मिश्र, संपा.
स्मारिका. पटना, चेतना समिति, १९७१. अनेक पृ. ७.००

झा, राजेश्वर, १९२५-
विद्यापतिक संगीत में वर्णित नायक-नायिका-भेद एवं राग-रागिनी-वर्गीकरण. पटना, मैथिली साहित्य संस्थान, १९७०? ५५ पृ. २.००

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
मैथिल-कोकिल विद्यापति, नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. १२८ पृ. १५.००

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
विद्यापति : मैथिल-कोकिल विद्यापति के जीवन और कृतित्व का आलोचनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७२. १३६ पृ. ८.००

दुबे, महेंद्रनाथ, संपा.
गीत विद्यापति. वाराणसी, शक्ति प्रकाशन; वितरक : हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७५. १३, ८७७ पृ. ८०.००

पांडेय, सिद्धनाथ.
विद्यापति और उनका काव्य सौंदर्य. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७४. १४८, ७२ पृ. ९.००

मिश्र, परमेश्वर, १९३४-
अभिनव जयदेव विद्यापति : विद्यापति विषयकनिबंध-संग्रह. हरिपुर, कादम्बरी प्रकाशन, १९७२. १०, ६८ पृ. २.५०

मिश्र, विश्वेश्वर.
महाकवि विद्यापति : विद्यापतिक काव्य प्रतिभा का समालोचनात्मक अध्ययन. दरभंगा, ग्रंथालय प्रकाशन, १९७०. ७२ पृ.

विद्यापति, १३५०-१४०३.
विद्यापति पदावली. सं. २. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, १९७२. भा. १. नेपाल में प्राप्त विद्यापति के पदों का संग्रह. १३.००

शर्मा, कृष्णदेव.
विद्यापति की काव्य-साधना. सं. २. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. ३०४ पृ. ५.००

शर्मा, कृष्णा, १९२९-
विद्यापति और सूरकाव्य में राधा. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. ११६ पृ. १०.००
शोध-प्रबंध—पंजाबी विश्व.

श्रीवास्तव, वीरेंद्र, संपा.
विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन. पटना, बिहार, हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. भा. १-२. १९.००

सहगल, मनमोहन, १९३२-
विद्यापति : मूल्यांकन तथा उपलब्धि. ग्वालियर, विश्व-विद्यालय प्रकाशन, १९७४. ८, ९२, ८० पृ. ७.००

सिंह, प्रमोद कुमार, १९४२-
विद्यापति-पदावली में लोक-संस्कृति का चित्रण. दलसिंह सराय, दरभंगा, कल्पना तीर्थ, १९७०. ५, ६० पृ. ७.००

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
विद्यापति. संशो. सं. ४. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ६, ३०० पृ. १२.५०

—विष्णुदास, १५वीं शती.

तिवारी, बलभद्र.
कविवर विष्णुदास और उनकी रामायण-कथा (पंद्रहवीं शताब्दी का राम काव्य). इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. १६५ पृ. ११.००

— वृंद, १६४३-१७२३.

जनार्दन राव, चेलेर, १९३४-
वृंद और उनका साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ३५९ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—श्रीवेंकटेश्वर विश्व.

जनार्दन राव, चेलेर, संपा.
वृन्द ग्रंथावली; कविवर वृन्द की अप्रकाशित मूल रचनाएँ. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ३६७ पृ. २०.००

श्रीवास्तव, स्नेहलता, १९२२-
चाचा वृन्दावनदास कृत भ्रमर गीत. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७२. १०० पृ. १०.००

—वृंदावनदास, १९०६-

पाठक, आनंद स्वरूप तथा कन्हैयालाल 'चंचरीक', संपा.
बाबू वृन्दावनदास अभिनंदन-ग्रंथ. नई दिल्ली, बाबू वृन्दावनदास अभिनंदन ग्रंथ समिति, १९७५. ४६, ७२०, २४ पृ. १०१.००

—व्यास, अंबिकादत्त, १८५८-१९००.

कृष्णकुमार, १९२५-
पं. अम्बिकादत्त व्यास; एक अध्ययन. बरेली, प्रकाश बुक डिपो, १९७१. १२, ४५६ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

—व्यास, काशीराम, १८७२-१९७०.

ओझा, दीनदयाल, १९२८-
काशीराम व्यास; एक परिचय. जैसलमेर, मूमल प्रकाशन, १९७१. ५४ पृ. १.००

—व्यास, गणेशीलाल, १८७७-१९६५.

सारस्वत, रावत तथा रामेश्वरदयाल श्रीमाली, संपा.
जनकवि उस्ताद : स्व. श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' री राजस्थानी कवितावां, गीतां, अर निरत-गीत रूपकां रो संग्रह अर वां रै व्यक्तित्व अर कृतित्व री समीक्षा. जयपुर, राजस्थान भासा प्रचार सभा; वितरक : चम्पालाल रांका एंड कंपनी, १९७२. २१६ पृ. १०.००

—व्यास, सूर्यनारायण, १९०२-

श्रोत्रिय, प्रभाकर, संपा.
अनुष्टुप. भोपाल. मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, १९७२? २३, ३०० पृ. १२.००

—शंकरदेव, १४४९-१५६९.

गुप्त, लक्ष्मीशंकर, संपा.
महापुरुष शंकरदेव-व्रजबुलि-ग्रंथावली. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७५. २८, ४३६ पृ. ३५.००

—शर्मा, नरेंद्र, १९१३-

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५- तथा अन्य, संपा.
ज्योति-कलश, संदर्भ ग्रंथ के परिप्रेक्ष्य में : कविवर पंडित नरेंद्र शर्मा अभिनंदन ग्रंथ. बम्बई, भारत-भारती-परिषद्, १९७५. ४४८, १६ पृ. ५०.००

—शर्मा, पद्मसिंह, १८७७-१९३२.

चतुर्वेदी, बनारसीदास तथा अन्य, संपा.
आचार्य पं. पद्मसिंह शर्मा, व्यक्ति और साहित्य : स्मृति ग्रंथ. मुरादाबाद, भगत; मुख्य वितरण : हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७४. ४५६ पृ. ४०.००

—शर्मा, पद्मसिंह 'कमलेश', १९२०-१९७४.

सुमन, क्षेमचंद्र, संपा.
आत्म-शिल्पी कमलेश : डॉ. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' के कर्ममय जीवन और कुशल कृतित्व का सर्वांगीण अध्ययन दिल्ली, बंसल, १९७५. २९६, १६ पृ. ६०.००

—शुक्ल, गयाप्रसाद.

शर्मा, राजकुमार तथा रामचंद्र पुरी, संपा.
साधना और परख. दिल्ली, लोकवाणी प्रकाशन, १९७५. ३०२ पृ. ४०.००

—शुक्ल, गिरिजादत्त 'गिरीश', १८९९-१९५९.

शुक्ल, विजयकुमार, १९३४-
स्व. गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश : व्यक्तित्व एवं साहित्य. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. ३२६ पृ. ३०.००
शोध-प्रवन्ध—जबलपुर विश्व.

—शुक्ल, राजाराम 'राष्ट्रीय आत्मा', १८९८-१९६२.

दास, पुष्पलता.
राजाराम शुक्ल 'राष्ट्रीयआत्मा' : वर्चस्व एवं कृतित्व, सन् १८९८-१९६२. आगरा, दुर्गा प्रकाशन, १९७६. ८, ३५९ पृ. ४८.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

—शुक्ल, रामचंद्र, १८८४-१९४१.

अजित कुमार तथा प्रेमचंद पातंजलि, संपा.
आचार्य शुक्ल विचार कोश दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. २७२ पृ. २२.००

कृष्णानंद, संपा.
त्रिवेणी : आचार्य रामचंद्र शुक्ल के तीन समालोचक प्रबंधों के विशिष्ट अंशों का संग्रह. काशी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७१. ११५ पृ. ३.२५

नवलकिशोर, १९३२-
हिंदी निबन्ध और आचार्य रामचंद्र शुक्ल. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७४. ११२ पृ. ५.००

पांडेय, सुधाकर, संपा.
आचार्य शुक्ल : प्रतिनिधि निबंध. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७१. १९५ पृ. १२.००

बोरा, राजमल, १९३३-
चिंतामणि (भाग १) मीमांसा. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७१. १५२ पृ. १०.००

मिश्र, दुर्गाशंकर, १९३०-
आचार्य रामचंद्र शुक्ल और उनकी कृतियां. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७५. १४४ पृ. १५.००

राय, श्याम बिहारी, १९३६-
शुक्लोत्तर काव्य-चिंतन : पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य. दिल्ली, यूनाइटिड बुक हाउस, १९७३. ६५६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—सागर विश्व.

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
आचार्य रामचंद्र शुक्ल चिंतामणि. सं. १२. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १२, २४५ पृ. ४.००

शर्मा, रामविलास.
आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना. सं. ३. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. २६६ पृ. १५.००

सक्सेना, ललताप्रसाद 'ललित', १९२४-
निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल. जयपुर, निर्मल प्रकाशन, १९७३. २३१ पृ. २०.००

सिंह, राजकिशोर.
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और चिंतामणि, लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, १९७३. ३३८ पृ. ६.५०

सिंह, रामलाल, १९१८-
निबंधकार रामचंद्र शुक्ल, इलाहाबाद, साहित्य सहयोग सहकारी समिति, १९७४. १९० पृ. २०.००

—शुक्ल, रामेश्वर 'अंचल', १९१५-

गुप्ता, रेशम.
पं. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का काव्य. भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन, १९७२. १०, १५९ पृ. १५.००

गौतम, वीणा, १९५०-
उपन्यासकार रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७५. १३४ पृ. २०.००
शोध प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

—श्यामसुंदरदास, १८७५-१९४५.

पांडेय, सुधाकर, संपा.
श्यामसुंदरदास-शती-स्मृति-ग्रंथ. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७६. १०, ३२९ पृ. ५१.००

—श्रीकृष्णलाल, १९१२-

जैन, नेमिचंद, १९२७-
हिंदी कहानियां (डा. श्रीकृष्णलाल) : एक आलोचनात्मक अध्ययन. जयपुर, पदम बुक कम्पनी, १९६९. २५९ पृ. ६.००

—श्रीधर पाठक, १८५८-१९२८.

क. मा. इंस्टीट्यूट, आगरा, संपा.
श्रीधर पाठक के ग्रंथों की शब्दानुक्रमणिका. नई दिल्ली, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, १९७२. ३७१ पृ. ११.५०

—श्रीधर व्यास, १५वीं शती.

मूलचंद 'प्राणेश', संपा.
रणमल्ल छंद : वीररसात्मक राजस्थानी चरित-काव्य. बीकानेर, भारतीय विद्या मंदिर शोध-प्रतिष्ठान, १९७२. १४, ६५ पृ. ७.५०

—श्रीवास्तव, प्रतापनारायण, १९०४-

गंभीर, उर्मिल.
प्रतापनारायण श्रीवास्तव के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७२. ३११ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

—श्रीवास्तव, प्रतापनारायण.

गौड़, कैलाशनाथ.
वरदान-समीक्षा. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७२. ४, ६३ पृ. १.५०

— श्रीवास्तव, रामानुजलाल, १८९८-

परसाई, हरिशंकर, १९२४- संपा.
रामनुजलाल श्रीवास्तव : प्रतिनिधि रचनाएं. भोपाल, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद, १९७२. २९५ पृ. १०.००

—संसारचंद्र, १९१७-

चंद्रशेखर, १९३३-
डॉ. संसारचंद्र के हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध : कथ्य एवं शिल्प संचेतना. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७२. २१६ पृ. १५.००

—सत्यनारायण.

राजगोपालकृष्णय्या, उन्नव तथा अन्य, संपा.
श्री सत्यनारायण अभिनंदन ग्रंथ : हिंदी प्रचार का इतिहास. विजयवाड़ा, आंध्र राष्ट्र हिंदी प्रचार संघ, १९५८. अनेक पृ. १०.००

—सहजो बाई, वि, १७४३.

सहजो बाई, वि. १७४३.
सहजो बाई की बानी : जीवन चरित्र सहित. इलाहाबाद, बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६७. ६३ पृ. १.२५

—सहल, कन्हैयालाल, १९११-

भारद्वाज, होतीलाल, संपा.
डॉ. कन्हैयालाल सहल : व्यक्तित्व और कृतित्व. नीम का थाना, मनीषा प्रकाशन, १९७२. १५, ५६० पृ. ४०.००

—सांकृत्यायन, राहुल, १८९३-१९६३.

आनंद रवेलचंद्र.
कथाकार राहुल सांकृत्यायन. दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७३. १८४ पृ. १८.००

आनंद, रवेलचंद.
महापंडित राहुल सांकृत्यायन का गद्यात्मक साहित्य. नयी दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७३. २७५ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—पंजाब विश्व.

आनंद, रवेलचंद.
राहुल सांकृत्यायन : विचारक और निबन्धकार. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७३. ९६ पृ. १०.००

ब्रह्मानंद, १९३०- संपा.
राहुल सांकृत्यायन : व्यक्तित्व और कृतित्व. दिल्ली, हरियाणा प्रकाशन; एकमात्र वितरक : अक्षर प्रकाशन, १९७१. ८, २४७ पृ. १७.५०

सहगल, जनकदुलारी.
राहुल जी का जीवनी-यात्रा-साहित्य. नई दिल्ली, चिल्ड्रन बुक सोसाइटी, १९७३. १३२ पृ. १२.००

सांकृत्यायन, राहुल.
राहुल निबंधावली. नई दिल्ली, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १४३ पृ. १५.००

—सिंह, कामताप्रसाद 'काम', १९१६-१९६३.

सिन्हा, लक्ष्मणप्रसाद, संपा.
कामताप्रसाद सिंह 'काम'; पावन स्मृति. देव, जिला गया, कामता-वाद-विवाद-प्रतियोगिता समिति, १९७१. १२९ पृ. ५.००

—सिंह, नामवर.

सिनहा, रणधीर, संपा.
आलोचक नामवरसिंह. नयी दिल्ली, पक्षधार प्रकाशन, १९७७. १८४ पृ. २५.००

—सिंह, रघुवंशप्रसाद, १८९८ ?-

मंडल, अनुपलाल.
रघुवंशप्रसाद सिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व. पटना, ज्ञानपीठ, १९६६. १४, २४८ पृ. ६.००

—सिंह, राधिकारमणप्रसाद, १८९०?-१९७१.

जैनेंद्रकुमार तथा अन्य, संपा.
राजा राधिकाप्रसाद सिंह अभिनंदन ग्रंथ. जमालपुर, मुंगेर, भारती साहित्य मंदिर; वितरक : पुस्तक सदन, गोल, आरा, १९६९. अनेक पृ. २०.००

—सिंह, शिवमंगल 'सुमन', १९१६-

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५- संपा.
शिवमंगलसिंह 'सुमन'. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७२. १५२ पृ. ४.००

शेषारत्नम, सूरपनेनि.
डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' : व्यक्तित्व और कृतित्व. विशाखापटनम, अन्नपूर्णा पब्लिकेशन्स, १९७६. ६, १३१ पृ. १५.००

श्रोत्रिय, प्रभाकर.
सुमन : मनुष्य और स्रष्टा. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७१. १२९ पृ. १०.००

—सिनहा, बदरी नारायण, १९३०-

अरविंद, गोस्वामी मदनगोपाल, १९१०- तथा नृपेंद्रनाथ गुप्त, संपा.
साहित्यकार बदरी नारायण सिनहा; कृति विश्लेपण. कहलगांव, जिला भागलपुर, विक्रमशिला साहित्य सम्मेलन, १९६६. अनेक पृ. २.००

—सिन्हा, सावित्री, १९२३-१९७२.

नगेंद्र, १९१५- तथा अन्य, संपा.
सावित्री सिन्हा : स्मृति-लेख. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७३. १४३ पृ. १६.००

—सुंदरदास, १५९६?-१६८९?

गुप्त, किशोरीलाल, संपा.
सुंदर-विलास. वाराणसी, कल्याणदास एंड ब्रदर्स; वितरक : मंगल बुक सेंटर, १९७४. ३५४ पृ. ३०.००

गुप्त, मोतीलाल, संपा.
सुंदर-अष्टक. जयपुर, साहित्य-प्रकाशन उपसमिति, १९७२. १०, ७५ पृ. ५.००

सुंदरदास, १५९६?-१६८९?
सुंदर विलास; सुंदरदासजी के जीवन-चरित्र सहित. सं. ४. इलाहाबाद, वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६८. ६, १५५ पृ. २.००

—सुमति (शिवप्रसाद पांडेय), १८७६-१९३८.

सुमति (शिवप्रसाद पांडेय), १८७६-१९३८.
सुमति-ग्रंथावली. पटना, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् सोल एजेंट्स : मोतीलाल बनारसीदास, १९७३. ५९४ पृ. २०.००
विषय : अलंकार-परिचय.—तुलसी भूपण.— श्रीकृष्ण रसायन.

—सूरति मिश्र, वि. १७०९-१७३७.

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
भक्ति-विनोद; रीतिकालीन कवि सूरति मिश्र कृत अज्ञात भक्ति काव्य. उदयपुर, उमेश पुस्तक प्रकाशन, १९७१. १३६ पृ. १२.५०

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', संपा.
सूरतिमिश्र ग्रंथावली. उदयपुर, उमेश पुस्तक प्रकाशन, १९७१.

शुक्ल, दयाशंकर, संपा.
कामधेनु. बड़ौदा, कात्यायन प्रकाशन; मथुरा, वितरक: जवाहर पुस्तकालय, १९७२. ८, ५१ पृ. ६.००

—सूर्यमल्ल मिश्रण, १८१५-१८६८.

शेखावत, सौभाग्यसिंह, संपा.
बलवद् विलास. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी, १९७२. २४, १३५ पृ. १०.००

—सूरदास

अग्निहोत्री, शैलबाला.
सूर-साहित्य का मनोवैज्ञानिक विवेचन. कानपुर, अभिलाषा प्रकाशन, १९७७. ३७७ पृ. ४८.००

आत्रेय, कमला.
आधुनिक मनोविज्ञान और सूर-काव्य. साहिबाबाद, विभू प्रकाशन, १९७६. २७६ पृ. ५०.००
शोध प्रबन्ध—आगरा विश्व.

आर्य, रामस्वरूप, १९३३- तथा गिरिराजशरण अग्रवाल, संपा.
सूर साहित्य संदर्भ. बिजनौर, सूर पंचशती समारोह समिति; नई दिल्ली, प्रमुख वितरक : हिंदी बुक सेंटर, १९७६. १०, ६८७ पृ. ६०.००

ओझा, धर्मनारायण.
सूर-साहित्य में पुष्टिमार्गीय सेवा-भावना. इलाहाबाद, शोध साहित्य प्रकाशन, १९७३. ५०३ पृ. ४०.००
शोध प्रवन्ध—मगध विश्व.

कणवरकर, शरद.
सूर-काव्य-वैभव. कोल्हापुर, एम. व्ही. फडके एंण्ड कंपनी, १९७६. ११० पृ. ५.००

गुप्त, बालमुकुंद.
सूर का काव्य. दिल्ली, इंडियन युनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पॉकेट बुक्स, १९७३. २०० पृ. ४.००

गौतम, मनमोहन, संपा.
साहित्य-लहरी. दिल्ली, रीगल बुक डिपो, १९७२. २४० पृ. १०.००

चतुर्वेदी, सीताराम, १९०९- संपा.
सूर ग्रंथावली. वाराणसी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७४. भा. १. ३०.००

ज्योती, लीला.
सूरदास और पोतना : वात्सल्य की अभिव्यक्ति. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार; प्रमुख विक्रेता : विद्या मंदिर, हिंदी बुक सेंटर, बंगलोर, १९७६. २५६ पृ. ३२.००
शोध-प्रबंध—उस्मानिया विश्व.

तिवारी, जगन्नाथ, संपा.
सूर सौरभ. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १८, ६६ पृ. २.००

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
सूर-साहित्य. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १९० पृ. ८.००

पटेल, भोलाभाई, १९४४-
सूरदासना कविता. बंबई, परिचय ट्रस्ट, १९७२. ३२ पृ. ०.६०

परेश, १९३९-
सूरदास की लालित्य चेतना. नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपाठ प्रकाशन, १९७२. २२४ पृ. १५.००
शोध-प्रबंध, संशोधित—पंजाब विश्व.

पांडेय, सिद्धनाथ, संपा.
संक्षिप्त सूरसागर. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७५. ४७८ पृ. २५.००

बाहरी, हरदेव, १९०७- तथा राजेंद्रकुमार, संपा.
सूरसागर सटीक. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. भा. १. ५०.००

भटनागर, मंजु.
सूर-काव्य में भ्रमर-प्रतीक. अजमेर, अर्चना प्रकाशन, १९७२. ९८ पृ. ५.००

भाटी, देणराजसिंह, १९२९-
सूरदास और उनका साहित्य. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ५०३ पृ. ८.००

लक्ष्मय्यपट्टी, बुसेट्टि, १९४१-
सूरसागर में प्रतीक योजना. दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साईसिस. १६, २१२ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

वर्मा, धीरेंद्र, १८९७- संपा.
सूरसागर-सार. सं. ४. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७०. २६२ पृ. ८.५०

वर्मा, व्रजेश्वर, १९१३-
सूरदास. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, १९६९. १२८ पृ. १.७५

वाजपेयी, नंददुलारे.
सूर सुषमा. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७३. ५९ पु. ४.५०

वाजपेयी, नारायणप्रसाद, १९२७-
सूर के दार्शनिक विचार. दिल्ली, ज्ञानभारती, १९६९. ८३ पृ. ४.००

वाजपेयी, पुरुषोतम, १९२६-
सूरदास : भ्रमरगीतसार समीक्षा. वाराणसी, हिंदी प्रकाशन, १९६६. ११६ पृ. ४.००

वृंदावनदास तथा गोपालप्रसाद कौशिक, संपा.
सूरसागर. मथुरा, श्याम काशी प्रेस. ६५६ पृ. १२.००

शर्मा, कृष्णा, १९२९-
विद्यापति और सूर काव्य में राधा. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. ११६ पृ. १०.००
शोध-प्रबंध—पंजाबी विश्व.

शर्मा, मुंशीराम.
भ्रमरगीत-भाष्य. कानपुर, प्रत्यूष प्रकाशन, १९७२. ५६, ३४२ पृ. १०.००

शर्मा, मुंशीराम.
सूरदास का काव्य वैभव. सं. २. कानपुर, ग्रंथम, १९७१. २४१ पृ. १५.००

शर्मा, मुंशीराम 'सोम', संपा.
सूर सुषमा. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, ५० पृ. १.५०

शर्मा, राजनाथ १९२२- संपा.
भ्रमर गीत सार. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १०, ५०४ पृ. १०.००

शर्मा, हरवंशलाल.
सूर और उनका साहित्य. नया सं. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७१. ४३६ पृ. १५.००
शोध-प्रबंध—नागपुर विश्व.

शुक्ल, रामचंद्र, संपा.
भ्रमर गीत-सार. वाराणसी, गोपालदास पोरवाल, १९७१. १३० पृ. ५.००

शुक्ल, रामचंद्र, १८८४-१९४१.
सूरदास. संपा. विश्वनाथप्रसाद मिश्र. सं. ६. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७०? १२, १८७ पृ. ४.५०

सेट्ठी, लक्ष्मम्मा सी.
सूरसागर में प्रतीक योजना. दिल्ली, विमर्श, १९७२. ७, २२२ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—आन्ध्र विश्व.

—सेनापति, १७वीं शती.

शर्मा, चंद्रपाल.
ऋतु-वर्णन परंपरा और सेनापति का काव्य. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७३. २५६ पृ. २५.००
शोध प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

सिंह, सोमनाथ.
भक्तिकाल में रीतिकाव्य की प्रवृत्तियां और सेनापति. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन; वितरक : हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई, १९७२. ३३६ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व.

—सोमनाथ

पांडेय, सुधाकर, १९२७- संपा.
सोमनाथ ग्रंथावली. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७२-७३. ३ भा. १२०.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- संपा.
शशिनाथ विनोद : आचार्य सोमनाथ कृत रीतिकालीन अज्ञात ग्रंथकाव्य. जयपुर, हिंदी अनुसंधान परिषद्, उदयपुर विश्वविद्यालय के निमित्त राजस्थान प्रकाशन, १९७१. ८६ पृ. ६.००

—सोमीजी महाराज, १८१८-१८७८.

वेदप्रकाश शास्त्री १९३४-
प्रियप्रवास दर्शन. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७४. ३३० पृ.

शर्मा, राजेश.
प्रियप्रवास समीक्षा. संशो. सं. २. दिल्ली, अशोक प्रकाशन १९७३. १६८ पृ. ३.००

शर्मा, श्रीवल्लभ.
प्रियप्रवास और साकेत की आदर्शगत तुलना. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७२. १८० पृ. १५.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
प्रियप्रवास में काव्य, संस्कृति और दर्शन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६९. ३३८ पृ. ४.००

—हरिकृष्ण 'कमलेश', १८९३-१९६७.

शर्मा, श्याम, संपा.
व्रज माधुरी. जयपुर, रोशनलाल जैन एण्ड संस, १९७१. ८४ पृ. ४.००

—हरिचरणदास, १७०८-१७८७.

तिवारी, कृपाशंकर तथा रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ.
मोहन लीला, जयपुर, रोशनलाल जैन एंड संस, १९७३. ३२, ७२ पृ. १०.००

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५- संपा.
हरिचरणदास ग्रंथावली. मेरठ, मनीषी प्रकाशन; वितरक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, १९७४. १२८, १४६ पृ. २८.००

—हरिदास, स्वामी, १४९०-१५७५.

गोपाल दत्त.
स्वामी हरिदास जी का संप्रदाय और उसका वाणी-साहित्य. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७७. १३, ३११ पृ. ६०.००

—हरिराय, १५९०-१७१५.

चतुर्वेदी, विष्णु 'विराट.'
गोस्वामी हरिराय जी और उनका व्रजभाषा साहित्य. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७६. ३०७ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—महाराजा सयाजीराव विश्व.

—हित हरिवंश गोस्वामी.

झारी, कृष्णदेव, १९२७-
हितहरिवंश गोस्वामी. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७६. ९२ पृ. १०.००

प्रेमदास, टीका.
हितचौरासी. संपा. विजयपाल सिंह तथा चन्द्रभान रावत. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७१. २०७ पृ. १६.००

—हेमचंद्र, १०८८-११७२.

मुसलगांवकर, वि. भा.
आचार्य हेमचंद्र. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २०७ पृ. ७.५०

सिंह, प्रमोद कुमार, १९४२-
पुरानी हिंदी का हेमचंद्रीय वीर-काव्य. दलसिंह सराय, जिला दरभंगा, कल्पना-तीर्थ, १९७०. ८, ६७ पृ. ५.००

—हेमरतन, वि. १५८८.

भटनागर, उदयसिंह, संपा.
गोरा बादल पदमिणि चौपाई. जोधपुर, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, १९६६. ४, २४, १०० पृ. ५.००

आशाकिशोर, १९३५-
आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य का स्वरूप और विकास, १९२० ई. से १९६० ई. तक. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७१. ८, ३५६ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—बिहार विश्व.

आसोपा, पुरुषोत्तम प्रसाद.
आदिकाल की भूमिका. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७३. १७६ पृ. १५.००

ईशर सिंह, १९३४-
गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी का रीतिकाव्य. अंबाला शहर, दीप प्रकाशन, १९७२. ४३२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

उपाध्याय, विश्वंभरनाथ, १९२५-
समकालीन सिद्धांत और साहित्य. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. ६, २३० पृ. २५.००

उपाध्याय, विश्वंभरनाथ १९२५- तथा मंजुल उपाध्याय, संपा.
समकालीन कविता की भूमिका. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. २५० पृ. २५.००

उप्रेती, भवानीदत्त, १९३५-
कुमाऊंनी लोक-साहित्य तथा गीतकार. इलाहाबाद, कुमाऊंनी समिति, १९७६. ७, १५८ पृ. १२.५०

ओम्प्रकाश.
मध्यकालीन हिंदी और पंजाबी प्रेमाख्यान. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. १५, ४६० पृ. ४०.००
शोध-प्रवन्ध—दिल्ली विश्व.

ओम्प्रकाश.
मध्ययुगीन काव्य, विवेचनात्मक एवं समीक्षात्मक निबंध. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७३. १५६ पृ. १२.५०.

ओमप्रकाश शास्त्री तथा रामप्रकाश गुप्त.
आधुनिक कवि : हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग से लेकर आधुनिक युग तक के प्रमुख कवियों का काव्यानुशीलन. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७१. २१२ पृ. ४.५०

कपूरिया, नंदलाल.
नई कविता और रस सिद्धांत. दिल्ली. विद्यार्थी प्रकाशन, १९७७. ६१ पृ. १५.००

कलवडे, सुधाकर शंकर.
आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७३. २६२ पृ. २५.००

कांति, विमलेश.
भारतेन्दुयुगीन हिंदी काव्य में लोकतत्व. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७४. ४६४ पृ. ६०.००
शोध-प्रबंध—इलाहाबाद विश्व.

कांति कुमार, १९३२-
नयी कविता. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १६, ३४८ पृ. १३.५०

कावरा, किशोर.
रीतिकालीन काव्य में शब्दालंकार. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७५. ३१६ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—गुजरात यूनी.

कामत, अशोक प्रभाकर, १९४२-
महाराष्ट्र के नाथपंथीय कवियों का हिंदी काव्य. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७६. ४२२ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

कामत, अशोक प्रभाकर, १९४२-
हिंदी और महाराष्ट्र का स्नेहबंध. पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, १९७१. १६० पृ. ४.५०

किशोर, श्यामनदंन, १९२३- संपा.
प्रबंध-नवनीत. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७१. ९३ पृ. २.७५

किशोरीलाल, १९३१-
रीतिकाव्य शब्दकोश. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७६. १०, २४० पृ. ३५.००

कुलदीप, १९२३-
लोक-गीतों का विकासात्मक अध्ययन. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १२, ३७४ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

कुलश्रेष्ठ, मथुरेश नदंन, १९३६-
स्वाभाविकता और आधुनिक हिंदी काव्य. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ४१२ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

कृष्णमूर्ति, एम. एस., १९३१-
हिंदी एवं कन्नड़ साहित्य की प्रमुख धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७६. ५५१ पृ. ४५.००

कृष्णमूर्ति, सरगु, १९३६-
हिंदी और तेलुगु की आधुनिक कविता में मानवतावाद. अजमेर, मीनाक्षी प्रकाशन; बेंगलूर, प्रमुख विक्रेता : विद्या मंदिर, १९७६. ३२, ३८४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—कर्नाटक विश्व.

कृष्णा शारदा.
आधुनिक हिंदी काव्य पर अरविंद दर्शन का प्रभाव. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७२. २२, ५८९ पृ. ३०.००

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.
मध्यकालीन काव्य-संग्रह. सं. २. वाराणसी, विश्व-विद्यालय प्रकाशन, १९७०. २४० पृ. ४.५०

कौल, ओंकार, १९४१-
कश्मीरी और हिंदी रामकथा-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन. चंडीगढ़, बाहरी पब्लिकेशंज, १९७४. १०, ३४८ पृ. ५०.००

खंडेलवाल, रामकुमार, १९२७-
हिंदी काव्य में प्रेम-भावना, सम्वत् १४००-१७०० वि. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७६. ५५१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—उस्मानिया विश्व.

खंडेलवाल, रामेश्वरलाल तथा अन्य, संपा.
गुजराती संतों की हिंदी-वाणी. वल्लभविद्यानगर, सरदार पटेल युनिवर्सिटी; सोल एजेन्ट्स : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, १९७१. ७, १५९ पृ. ५.००

खरे, गणेश, १९३७-
आधुनिक काव्य-प्रवृत्तियां: एक पुनर्मूल्यांकन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. २०० पृ. २५.००

गर्ग, शेरजंग, १९३७-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७३. ४३२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—इन्दौर विश्व.

गहलोत, जगदीशसिंह, १९०३-१९५८.
राजस्थानी-लोकगीत. संपा. पूर्णिमा गहलोत. जयपुर, यूनिक ट्रेडर्स, १९७१. २३० पृ. ६.००

गिरिधारीलाल शास्त्री.
हिंदी कृष्णभक्ति-काव्य की पृष्ठभूमि. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७७. २६० पृ. ३०.००

गुप्त, किरणकुमारी.
विशिष्टाद्वैतवाद और उसका हिंदी भक्ति-काव्य पर प्रभाव. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७३. १९९ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

गुप्त, गणपतिचन्द्र, १९२८-
भारतीय साहित्य में श्रृंगार रस. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २७४ पृ. १५.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

गुप्त, गणपतिचन्द्र, १९२८-
हिंदी काव्य में श्रृंगार-परम्परा और महाकवि बिहारी. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २७४, १४० पृ. २५.००

गुप्त, चंद्रकला, १९५२-
हिंदी कृष्णकाव्य में स्वच्छंदतामूलक प्रवृत्तियां. नयी दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. १६, १३२ पृ. १२.५०
शोध-प्रबंध, संशोधित—पंजाब विश्व.

गुप्त, जगदीश, १९२६-
कवितांतर. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. २६२ पृ. २०.००

गुप्त, जगदीश, १९२६-
त्रयी; कविता वृत्त की प्रथम प्रस्तुति. इलाहाबाद, नयी कविता प्रकाशन, १९७४. भा. १. ८.००

गुप्त, जगदीश, १९२६-
रीतिकाव्य-संग्रह. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७०. १०, ३८४ पृ. १५.००

गुप्त, जगदीश, १९२६-
स्वच्छंदतावादी काव्यधारा का दार्शनिक विवेचन. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७७. ४९६ पृ. ६५.००

गुप्त, दीनदयालु, १९०४-
अष्टछाप और वल्लभ-सम्प्रदाय; एक गवेषणात्मक अध्ययन. सं. २. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७०. भा १. २६.००; भा. २. २७.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

गुप्त, देवीप्रसाद, १९३६-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महाकाव्य. बीकानेर, गाडोदिया पुस्तक भंडार, १९७३. भा. १. ३५.००

गुप्त, देवीप्रसाद, १९३६-
हिंदी के आधुनिक पौराणिक महाकाव्य. उदयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७२. १६, ४२६ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

गुप्त, नत्थूलाल.
बरार के सूफी शायर. नागपुर, चेतना प्रकाशन, १९७६. ११६ पृ. १०.००

गुप्त, परमलाल, १९३३-
हिंदी के आधुनिक राम-काव्य का अनुशीलन. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७३. ४८६ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—नागपुर विश्व.

गुप्त, परमानंद.
नयी कविता : संस्कार और शिल्प. नयी दिल्ली, चेतना प्रकाशन, १९६७. २२४ पृ. ८.००

गुप्त, माताप्रसाद, १९०६- संपा.
हमीर रासो. दिल्ली, पब्लिकेशन ब्रांच. ८, ११९ पृ. ५.५०

गुप्त, शांतिस्वरूप.
हिंदी के प्रतिनिधि काव्य. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७५. ३२६ पृ. २०.००

गुप्त, सुरेशचंद्र, १९३३-
भक्तिकालीन कवियों के काव्य-सिद्धांत. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७१. ५३६ पृ. ५०.००

गुप्ता, मंजु.
आधुनिक गीतिकाव्य का शिल्पविधान. मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७४. ३२७ पृ. ३५.००

गुप्ता, सुधा, १९४३-
छायावादोत्तर काव्य में शब्दार्थ का स्वरूप. जयपुर, वाफना प्रकाशन, १९७२. ३, ६, ४१९ पृ. ३६.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

गुलाटी, यश, संपा.
बारह हिंदी काव्य. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७६. २९६ पृ. ३५.००

गोकाककर, सुधाकर, १९३८- तथा गो. रा. कुलकर्णी.
आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद से नई कविता तक. कोल्हापुर, फड़के बुक सेलर्स, १९७४. ३० पृ. १७.००

गोदरे, विनोद, १९४१-
छायावादोत्तर हिंदी प्रगीत. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७५. ३३६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—बंबई विश्व

गोयल, जयभगवान, १९३१-
मध्ययुगीन काव्य : नया मूल्यांकन. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७५. १४८ पृ. २०.००

गोयल, जयभगवान, १९३१-
रीतिकाल का पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७१. ११५ पृ. १०.००

गोयल, श्यामबाला.
भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण-काव्य की नारी-भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन. साहिबाबाद, विभू प्रकाशन, १९७६. २७६ पृ ५०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

गोस्वामी, युगलवल्लभ तथा वृंदावन वल्लभ गोस्वामी.
द्वादश यश. मथुरा, राधावल्लभ ग्रंथमाला. २४० पृ. १२.५०

गौतम, प्रेमप्रकाश, १९२९-
आधुनिक कविता की प्रवृत्तियां, द्विवेदी युगोत्तर हिंदी कविता की प्रवृत्तियां एवं दर्शन शैली. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १९७२. २०४ पृ. १२.००

गौतम, सुरेश तथा वीणा गौतम.
त्रिलोण में उभरती आधुनिक संवेदना. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७६. २१४ पृ. ३०.००

गौरीशंकर 'कमलेश', १९२८- तथा हरिमोहन प्रधान.
हाड़ौती अंचल के राजस्थानी कवि. कोटा, राजस्थान विद्यापीठ हाड़ौती शोध-प्रतिष्ठान, १९७३. १८८ पृ. ८.२५

चंदेल, उमापति राय, १९२२-
पौराणिक आख्यानों का विकासात्मक अध्ययन. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७५. १२, २१९ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

चंदेल, उमापति राय, १९२२-
हिंदी सूफी काव्य में पौराणिक आख्यान. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७६. ३७६ पृ. ५५.००

चंद्रकांत, एन., १९२६-
तमिल और हिंदी का भक्ति साहित्य. मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, १९७१. ८, ४९० पृ. २०.००

चतुर्वेदी, जगदीश, संपा.
आधुनिक हिंदी कविता. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १५, २१५ पृ. १८.००

चतुर्वेदी, नरेन्द्रनाथ.
गत दो दशकों के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, सन् १९४८ से १९६७ तक. अजमेर, अनुराग प्रकाशन, १९६८. १३१ पृ. ८.००

चतुर्वेदी, परशुराम.
संत साहित्य के प्रेरणा-स्रोत. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. २०८ पृ. २०.००

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
आधुनिक हिंदी-काव्य में व्यंग्य. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७३. १७५ पृ. १५.००

चतुर्वेदी, मालारविन्दम् १९३७-
गुजरात की हिंदी-काव्य-परंपरा तथा आचार्य कवि गोविंद गिल्ला भाई. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७०. ४०५ पृ. १८.५०

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, १९३१-
कविता यात्रा: रत्नाकर से रघुवीर सहाय. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. १२५ पृ. १६.००

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, १९३१-
नयी कविताएं : एक साक्ष्य. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. १२३ पृ. १२.००

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, १९३१-
मध्यकालीन हिंदी काव्य भाषा. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. २३० पृ. १६.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

चतुर्वेदी, सुधा, १९४४-
द्वारकालीलापरक हिंदी कृष्ण काव्य. लखनऊ, अशोक प्रकाशन, १९७४. ४८२ पृ. ५०.००

चौधरी, रूपचंद गोविंद, १९२६-
कामसूत्र और फ्रायड के सन्दर्भ में हिंदी काव्य का अनुशीलन. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७३. भा. १. १५.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

चौहान, प्रताप सिंह, १९१६-
प्रयोगवादी काव्य. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिये हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १४० पृ. ४.००

चौहान, प्रताप सिंह, १९१६-
संतमत. कानपुर, ग्रन्थम, १९७३. १८८ पृ. १०.००

चौहान, विद्या.
लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि: भोजपुरी और अवधी के संदर्भ में. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १६, ३७६ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

जगदीश कुमार, १९३६-
नयी कविता की चेतना. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. ९० पृ. १०.००

जगदीश कुमार, १९३६-
नयी कविता, विलायती संदर्भ. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. १२४ पृ. १५.००

जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', १८५९-१९४७.
काव्यप्रभाकर. संपा. सुधाकर पांडेय. नवसंपादित १. संस्करण. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७१? अनेक पृ. ५१.००

जफर हसन 'असीम'.
उर्दू में हिंदुस्तानी शायरी. बंबई, महात्मा गांधी मेमोरियल रिसर्च सेंटर, १९७२. ८, ८ पृ. ४.००

जयसिंह नीरज, १९२९-
राजस्थानी चित्रकला और हिंदी कृष्ण-काव्य. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. १२, २७९, २० पृ. ४५.००.

जानकीवल्लभ शास्त्री १९१६-
आधुनिक कवि. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७३. २०४ पृ. ५.००

जाफरी, जमीला आली, १९३२-
हिंदी कविता : इस्लामी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में, १२वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९.५. भा. १. ३५.००

जैन, प्रेमचंद्र.
अपभ्रंश कथाकाव्य एवं हिंदी प्रेमाख्यानक. अमृतसर, सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति, १९७३. १२, ३६६ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—बनारस हिंदू विश्व.

जैन, प्रेम सुमन, १९४२- तथा कृष्णकुमार शर्मा.
अपभ्रंश काव्यधारा. अहमदाबाद, सरस्वती पुस्तक भंडार, १९७४. १२३ पृ. ६.००

जैन लालचंद.
जैन कवियों के ब्रजभाषा-प्रबंध-काव्यों का अध्ययन, वि. सं. १७००-१९००. भरतपुर, भारती पुस्तक मंदिर, १९७६. ४१० पृ. ४५.००
शोध प्रबंध—राजस्थान विश्व.

जोशी, जीवन प्रकाश, १९३१-
आधुनिक हिंदी-गीतकाव्य; विषय और शिल्प. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७४. ३२२ पृ. ४०.००
शोध प्रबंध—आगरा विश्व.

जोशी, शशि.
काव्य-रूढ़ियां आधुनिक कविता के परिप्रेक्ष्य में. जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाऊस. २७५ पृ. ३५.००

झा, शैलेन्द्र मोहन, १९२९-
परिचय-नियम: मैथिलीक पांच कविक आलोचनात्मक अध्ययन. दरभंगा, भारती पुस्तक केंद्र, १९६६. १३२ पृ. २.२५

झारी, कृष्ण देव.
उदात्त रस-सिद्धांत और नयी कविता. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. ७, २८० पृ. २०.००

झारी, कृष्णदेव.
मध्यकालीन कृष्ण काव्य. सं. २. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७२. ३५२ पृ. १५.००

टंडन, प्रतापनारायण.
संस्कृत समीक्षा की रूपरेखा. नई दिल्ली, सौमैया, १९७२. ३०२ पृ. १२.००

टोपा, विद्या,
भारतीय महाकाव्यों की परम्परा में कामायनी. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७३. १६, ३८२ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

डागा, सावित्री.
आधुनिक हिंदी मुक्तक काव्य में नारी. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७७. ४१६ पृ. ५०.००

तपेश्वरनाथ.
हिंदी काव्य में कृष्णचरित का भावात्मक स्वरूप-विकास. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७२ ४३९ पृ. ३५.००

तिवारी, गिरीशचंद्र, १९३३-
कवित्रयी. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७३. १८० पृ. ७.५०

तिवारी, नंदकिशोर, १९४१-
प्रबंध-मंजूषा : सौंदर्य और समीक्षा. गया, अरुण प्रकाशन, १९७४? ९७ पृ. ३.७५

तिवारी, नंदकिशोर, १९४१-
मध्ययुग के भक्तिकाव्य में माया. इलाहाबाद, शोध-साहित्य प्रकाशन, १९७४. ३९८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—मगध विश्व.

तिवारी, पूनमचंद्र, १९२४-
द्विवेदीयुगीन काव्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १७, ५८० पृ. २०.००

तिवारी, भगवान दास.
हिंदी काव्य के विविध परिदृश्य, आलोचनात्मक निबंध संग्रह. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. १९६ पृ. १६.००

तिवारी, वल्लभदास, १९१५-
हिंदी-काव्य में नारी. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७४. ६६४ पृ. ५०.००

तिवारी, संतोषकुमार.
छायावादी काव्य की प्रगतिशील चेतना. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७४. २०, ३१८ पृ. ३२.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

तिवारी, सियाराम, १९३४-
काव्य भाषा. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. ११, २०४ पृ. २१.००

त्यागी, सुरेशचंद्र, १९४३-
छायावादी काव्य में सौंदर्य दर्शन. मेरठ, अनुराधा प्रकाशन, १९७६. २७८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

त्रिपाठी, कृष्णदत्त, १९१५-
रीतिकाल और आधुनिक काल के सन्धिसूत्र, सं. १८५७ १९०७ विक्रमी. कानपुर, बद्री विशाल विधि विशाल १९७३. १२, २३५ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध —आगरा विश्व.

त्रिपाठी, जगदीशनारायण, १९४४-
हिंदी काव्य की प्रवृत्तियां. दिल्ली, इंडियन युनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमाचल पाकेट बुक्स १९७३. १५९ पृ. ४.००

त्रिपाठी, राधिकाप्रसाद, १९३६-
रामसनेही सम्प्रदाय. फैजाबाद, आनन्द प्रकाशन, १९७३. ३७४ पृ. २८.००
शोध-प्रबन्ध—गोरखपुर विश्व.

त्रिपाठी, रामफेर.
कवित्रयी. लखनऊ, रामा प्रकाशन,१९७५. २०२ पृ. २०.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९-
आदिकालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पीठिका. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १२, ३२८ पृ. १५.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९-
आधुनिक काव्य : कला और दर्शन. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७३. ३५१ पृ. १८.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२४-
तंत्र और संत : तंत्रवाद के आलोक में हिंदी निर्गुण साहित्य की नई व्याख्या. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. ४४७ पृ. ३५.००

दरगन, रवीन्द्रनाथ, १९४२-
छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७३. १५८ पृ. १२.०

दर्शनलाल 'मामा', १९४२-
शाकद्वीपीय ब्राह्मण कवियों का राजस्थानी साहित्य में योगदान. बीकानेर, भवानी शंकर शर्मा, १९७५. २५६ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

दामोदर, हरि.
आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना. पटना, भारत बुक डिपो, १९७५. ५५२ पृ. ५१.००

दामोदर, हरि.
छायावाद : प्रगतिवाद. पटना, भारत बुक डिपो, १९७५. ३१२ पृ. १८.००

दीक्षित, छोटेलाल, १९३६-
रामकृष्णकाव्येतर हिंदी सगुण भक्ति काव्य. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९६८. २३६ पृ. १२.००

दीक्षित, प्रकाश, १९३८-
अस्तित्ववाद और नयी कविता. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन; एकमात्र वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७२. १०, १३९ पृ. ८.००

दीक्षित, लक्ष्मीनारायण, संपा.
राजस्थानी साहित्य संग्रह. जोधपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, १९६६. ६, ६०, २५८ पृ. ५.५०

दीक्षित सूर्यप्रसाद, १९३८-
छायावादी कवियों का सौंदर्यविधान. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७४. ८, ३२३ पृ. ४०.००

दीनानाथ 'शरण', १९३७-
छायावाद : विश्लेषण और मूल्यांकन. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७३. ३१५ पृ. १८.००

दूबे, राधेश्याम.
संत-साहित्य; औपनिषद विचारधारा के परिवेश में. वाराणसी, वृन्दा दूबे; वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. २४२ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व.

देवराज, १९१७-
छायावाद : उत्थान, पतन, पुनर्मूल्यांकन. लखनऊ, कल्पकार प्रकाशन, १९७५. १६८ पृ. २२.००

देवेन्द्रकुमार शास्त्री, १९३३-
भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा काव्य. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७०. १६, ४७४ पृ. २०.००

द्वारकेशलाल, १९००-१९६३.
व्रजमाधुरी-सुधा : व्रजभाषा के उत्कृष्ट.तमपदों का सुसंपादित संकलन. मथुरा, श्रीद्वारकेश स्मारक समिति, १९६८. ४४, ८८ पृ. ४.००

द्विवेदी, गोविंद, १९४४-
नई कविता में बिंब का वस्तुगत परिप्रेक्ष्य. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. ६, २२२ पृ. २३.००

द्विवेदी, सोहनलाल.
काव्य के इतिहास पुरुष. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७१. २०३ पृ. ६.००

धवन, कृष्णकुमार, १९२६-
उपनिषदों में काव्यतत्त्व. होशियारपुर, विश्वेश्वरानन्द वैदिक-शोध-संस्थान, १९७६. २२, ३५१ पृ. ५०.००

नरेंद्र मोहन, १९३५-
आधुनिक हिंदी काव्य में अप्रस्तुत-विधान. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २७४ पृ. ३२.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

नरेंद्र मोहन, १९३५- तथा महीप सिंह, संपा.
विचार कविता की भूमिका. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. २३२ पृ. २०.००

नरेश, १९४२-
आधुनिक हिंदी कविता में उर्दू के तत्व. दिल्ली, राजपाल, १९७३. १३२ पृ. १०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

नरेश, १९४२-
जिज्ञासा. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. ८२ पृ. ८.००

नागपाल, रतन.
आधुनिक हिंदी काव्य में पलायनवाद. साहिबाबाद, विभू प्रकाशन १९७७. २६० पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

नागर, अंबाशंकर, १९२५- संपा.
गुजरात के संतों की हिंदी वाणी; गुजरात के ५१ संतों की हिंदी वाणी का संकलन. अहमदाबाद, गुर्जर-भारती; वितरक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९६९. १८, ४८४ पृ. ४०.००

नागेन्द्र सिंह, कमलेश.
विन्ध्याचल का आधुनिक हिंदी काव्य. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ३८० पृ. २५.००

नायर, रामचन्द्रन.
छायावादी काव्य दर्शन. दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, १९७६. १०४ पृ. १५.००

नूरजहां.
हिंदी काव्य में यथार्थवाद. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७६. ३४४ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

नेमिचन्द्र शास्त्री, १९२१-
संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७१. २९, ६८३ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—मगध विश्व.

पवौरी, भगवान सहाय.
व्रज साहित्य का मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ३७६ पृ. २०.००

पद्म, प्यारा सिंह, १९२१- संपा.
पंच नद; श्री गुरु गोबिंद सिंह के पांच दरबारी कवियों की पांच रचनाएं. पटियाला, भाषा विभाग, पंजाब, १९६९, १५, ३८९ पृ. ३.५०
विषय सूची : चाणक्य नीति शास्त्र. चंद्रसेन सेनापति—अध्यातम प्रकाश. सुखदेव.—वृंद विनोद सतसैया. वृंद—चित्र विलास. अमृतराय—जंगनामा श्री गुरु गोबिंद सिंह. अणीराय.

पवार, इन्द्र.
हिंदी और मराठी का श्रृंगारकाल. कानपुर, ग्रंथम, १९७४. ४५६, ५१ पृ. ५०.००

पांचाल, परमानंद.
हिंदी के मुस्लिम साहित्यकार. दिल्ली, भारत भारती प्रकाशन, १९७१. १३८ पृ. ९.००

पांडेय, अंबादत्त, १९३७-
छायावादी काव्य में लोक-मंगल की भावना. दिल्ली, प्रेम प्रकाशन मंदिर, १९७३. १४, ३७३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

पांडेय, उमरावसिंह प्रेम', १९०२-
हिंदी काव्य मे भाव-साम्य. आगरा, चतुर्वेदी प्रकाशन समिति, १९७०. १६, ३६४ पृ. ६ ००

पांडेय, कमलाप्रसाद, १९३८-
छायावाद : प्रकृति और प्रयोग. इलाहाबाद, साहित्य-वाणी, १९७२. २२० पृ. १४.००

पांडेय, कमलाप्रसाद, १९३८-
छायावादोत्तर हिंदी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ५०७ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध —सागर विश्व.

पांडेय गंगाप्रसाद, १९१८-१९६८.
छायावाद के आधार स्तम्भ. संपा. रामजी पांडेय. दिल्ली; लिपि प्रकाशन; प्राप्ति-स्थान : सरस्वती प्रेस बुक-डिपो, १९७१. २८२ पृ. २२.००

पांडेय, गंगाप्रसाद.
तीन महाकवि. संपा. रामजी पांडेय. साहित्य सहकार; १९७६. अनेक पृ. १२.००

पांडेय, चतुर्वेदी उमरावसिंह 'प्रेम विशारद', १९०२-
हिंदी काव्य में भाव-साम्य. आगरा, चतुर्वेदी प्रकाशन समिति; प्राप्ति-स्थान : भारतीय पुस्तक भंडार, हैदराबाद, १९७०. २०, ३६४ पृ. ६.००

पांडेय, छेदीलाल.
छायावादोत्तर काव्य-शिल्प. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७६. ३०७ पृ. ३०.००

पांडेय, राजकिशोर, १९२०-
हिंदी साहित्य का उत्तर मध्ययुग. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७१. ५३६ पृ. ३५.००

पांडेय, रामलखन.
तुलसीदासोत्तर हिंदी राम-साहित्य. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७२. १६, २८८ पृ. २२.००

पांडेय, रामव्यास तथा अन्य, संपा.
अकविता : स्थितियां और अन्तर्धाराएं. कलकत्ता, मणिमय प्रकाशन, १९७१. १८२ पृ. ६.००

पांडेय शिवाशंकर, १९३५-
रामस्नेही-सम्प्रदाय की दार्शनिक पृष्ठभूमि. दिल्ली, रामस्नेही साहित्य शोध-संस्थान, १९७३. ३५४ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध —कुरुक्षेत्र विश्व.

पांडेय, सरोजनी.
हिंदी-सूफी-काव्य में प्रतीक-योजना. कानपुर, युगवाणी प्रकाशन, १९७४. ४१९ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

पाठक, आनंदस्वरूप, संपा.
व्रज-साहित्य और संस्कृति. मथुरा, शिक्षा ग्रंथागार, १९७५. २५६ पृ. ४०.००

पाठक, जितराम, १९२८-
आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास : सन् १८५७ से सन् १९५७ ई. तक. इलाहाबाद, राजीव प्रकाशन, १९७६. ३६८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पटना विश्व.

पालीवाल, कृष्णदत्त, १९४३-
नया सृजन : नया बोध. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७३. २२३ पृ. १५.००

पालीवाल, कृष्णदत्त, १९४३-
मध्ययुगीन हिंदी महाकाव्यों में नायक. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७२. ३८४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

पुण्यमचंद 'मानव', १९३२-
हिंदी लावनी-साहित्य पर हिंदी संत-साहित्य का प्रभाव. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १९७२. २०, ३२७ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—मैसूर विश्व.

पुरोहित, मंजुला.
नयी कविता : संवेदना और शिल्प (बीकानेर की नयी कविता के विशेष संदर्भ में). जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७३. १०४ पृ. १०.००

पुष्पलता, १९३८-
रीतिकालीन शृंगारिक सतसइयों का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन; नई दिल्ली, एकमात्र वितरक : तेज प्रकाशन, १९७७. २४० पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—कुरुक्षेत्र विश्व.

प्रदीप, मोहन, १९३१-
प्रयोगवादी नई कविता और हस्ताक्षर-परिशोध. हाथरस, सद्भावना प्रकाशन, १९७५. २०० पृ. १२.५०

प्रसाद, तपेश्वरनाथ, १९३९-
हिंदी काव्य में कृष्णचरित का भावात्मक स्वरूप विकास. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७२. ११, ४३९ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—भागलपुर विश्व.

प्रसाद, विश्वनाथ, १९०५-
मध्यकाल के पांच कवि. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७१. ८, १९१ पृ. ७.५०

प्रसाद, शिवनंदन.
बिंब विधान और आधुनिक हिंदी कविता. भागलपुर, भागलपुर विश्वविद्यालय, १९७४. ७०८ पृ. ४५.००

प्रेमशंकर, १९३०—
भक्तिकाव्य की भूमिका. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७७. १५५ पृ. २५.००

प्रेमशंकर, १९३०-
हिंदी स्वच्छंदतावादी काव्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १२, ३९४ पृ. १६.००

फिलिप, वी. एन.
मध्ययुगीन हिंदी भक्ति-साहित्य में विरह-भावना. इलाहाबाद, संगम प्रकाशन, १९७६. १४, ३६१ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—कालीकट विश्व.

बंसल, पुष्पा.
हिंदी काव्य-शास्त्र में कविता का स्वरूप-विकास. दिल्ली, शोध-प्रबंध-प्रकाशन : वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७६. २४, ३४१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

बत्रा, श्रीनिवास.
हिंदी और फारसी सूफी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७०. ७८१ पृ. ३०.००

बालकृष्ण अकिंचन, १९३२-
भारतीय नीति-काव्य परम्परा और रहीम. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७४. २२, ५८१ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

बालकृष्ण राव, सी., १९१३-१९७५ तथा गोविंद रजनीश, नयी कविता परिवेश; प्रवृत्ति एवं अभिव्यक्ति. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७५. ४, २११ पृ. १८.००

बुल्के, कामिल.
रामकथा. सं. ३. प्रयाग, हिंदी परिषद प्रकाशन, १९७१. ८१५ पृ. ३०.००

भंडारी, कमला
मध्यकालीन हिंदी कविता पर शैवमत का प्रभाव. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७१. ३६८ पृ. ३०.००

भगत, रा. तु., १९४२- तथा सरजूप्रसाद मिश्र.
आधुनिक हिंदी कविता के चार दशक, सन् १९२० से १९६० ई. तक. कोल्हापुर, अजब पुस्तकालय, १९७४. ३२१ पृ. २२.००

भटनागर, रामरतन, १९१६ -
हिंदी कविता; सिंहावलोकन. लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, १९७१. २२, २४३ पृ. ६.७५

भट्ट, गंगाधर.
संस्कृत काव्य में नीति-तत्त्व. जयपुर, बाफना प्रकाशन, ६, ३५, ३७९ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

भरीतया, कांतिकिशोर.
रामायण और महाभारत में प्रकृति. कानपुर, १९६९. ३९५ पृ. १०.२५

भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
छायावादोत्तर काव्य : समीक्षा. ग्वालियर, साहित्य प्रकाशन मंदिर. ४, ३०७ पृ. ७.५०

भाटी, देशराजसिंह, १९२९-
समकालीन हिंदी कविता. ग्वालियर, साहित्य प्रकाशन मंदिर, १९७२. १४१ पृ. १२.५०

भायाणी, ह. चू. तथा अगरचंद नाहटा, संपा.
प्राचीन गूर्जर काव्य संचय. अहमदाबाद, लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, १९७५. २४, १५४ पृ. १६.००

भारद्वाज, जगदीश, १९२०-
कृष्ण काव्य में लीला-वर्णन. नयी दिल्ली, निर्मल कीर्ति प्रकाशन, १९७२. ३१, ४१६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, १९३३-
मध्यकालीन रोमांस; हिंदी प्रेमाख्यान और पंजाबी किस्सा-काव्य के तुलनात्मक संदर्भ में. दिल्ली, रिसर्च, १९७२. १६, ३३५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

भार्गव, ज्वालाप्रसाद.
उर्दू काव्य में ईश्वर भक्ति. इलाहाबाद, यूनाइटेड पब्लिशर्स, १९७१. ११४ पृ. ५.००

भार्गव, निर्मला.
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, भृगु ऋषियों के योगदान के परिपार्श्व में. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७२. १६, २७७,३४ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

भार्गव, भागीरथ तथा जयसिंह 'नीरज', संपा.
कविता-८. अलवर, कविता प्रकाशन, १९७३. १०२ पृ. ६.००

भार्गव, शकुन्तला 'अर्चना'.
दृष्टिकोण. अजमेर, प्रदीप प्रकाशन, १९७२. २०६ पृ. १२.५०

मलिक मोहम्मद, १९३५-
वैष्णव भक्ति आंदोलन का अध्ययन. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७१. ४७६ पृ. ३०.००

मल्होत्रा, रेणु.
बच्चन का परवर्ती काव्य. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७२. १९२ पृ. १२.५०
शोध-प्रबन्ध.

माचवे, प्रभाकर, १९१७-
व्यक्ति और वाङ्मय. दिल्ली, साहनी प्रकाशन; वितरक : हिंदी साहित्य केन्द्र, १९७०. ७, ३११ पृ. २५.००

माथुर, गिरिजकुमार, १९१९-
नयी कविता : सीमाएं और संभावनाएं. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. १२, १४८ पृ. ११.००

मानव, विश्वंभर, १९१२-
आधुनिक महाकाव्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. १८२ पृ. १५.००

मिश्र, उमेश, १९१८-
स्वच्छन्दतावाद. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १५७ पृ. ४.००

मिश्र, नीलमणि, १९२९-
उत्कलीय राम साहित्य. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. १९४ पृ. २१.००

मिश्र, भगीरथ, १९१४- संपा.
रीतिकाव्य नवनीत. कानपुर, ग्रन्थम. १०३ पृ. १२.००

मिश्र, भगीरथ, १९१४- तथा बलभद्र तिवारी.
अधुनिक हिंदी काव्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ६३२ पृ. २२.००

मिश्र, राजेंद्र, १९३७-
समकालीन कविता : सार्थकता और समझ. रांची, कमल प्रकाशन, १९७३. ७९ पृ. १०.००

मिश्र, रामजी.
रीतिकाव्य के स्रोत. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. ३२४ पृ. ३२.५०

मिश्र, रामप्रसाद.
विश्वकवि होमर और उनके काव्य. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७६. २२८, ८ पृ. ३०.००

मिश्र, रामेश्वरदयाल, १९२७-
आधुनिक हिंदी कविता और रवीन्द्र. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७३. ३२६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

मिश्र, सरजूप्रसाद.
आधुनिक हिंदी कविता में व्यक्तित्व अंकन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७७. ४६७ पृ. ६०.००

मिश्रबंधु.
हिंदी-नवरत्न; अर्थात् हिंदी के नव सर्वोत्कृष्ट कवि. संशो. सं. ६. हैदराबाद, गंगा ग्रंथागार, १९७५. ४८८ पृ. ६५.००

मुखेजा, धर्मचंद.
हिंदी साहित्य में नाट्यात्मक काव्य का स्वरूप तथा अंधायुग, कनुप्रिया, उर्वशी, और एक कंठ विषपायी का आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७१. ८८ पृ. ८.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

मूलचन्द 'प्राणेश', संपा.
रगमल्ल छंद. बीकानेर, भारतीय विद्या मन्दिर, १९७२. ६५ पृ. ७.५०

मेहता, नरेश, १९२४-
काव्य का वैष्णव व्यक्तित्व. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. १०७ पृ. १०.००

मैनी, धर्मपाल, १९२९-
मध्ययुगीन निर्गुण चेतना. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. २१७ पृ. १५.००

मोहन प्रदीप.
प्रयोगवादी नई कविता और हस्ताक्षर परिशोध. हाथरस, सद्भावना प्रकाशन, १९७५. २०० पृ. १२.५०

यादव, चौथी राम, १९४१-
छायावादी काव्य : एक दृष्टि. इलाहाबाद, किताब महल, १९७१. ६, २३५ पृ. १०.००

यादव, चौथी राम, १९४१-
मध्यकालीन भक्ति-काव्य में विरहानुभूति की व्यंजना. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७४. १६, ४२३ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

रंजन.
भारतेंदुयुगीन काव्य में भक्तिधारा. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७५. ३७४ पृ. ७५.००
शोध-प्रबन्ध—पटना विश्व.

रघुवंश, १९२१-
समसामयिकता और आधुनिक हिंदी कविता : स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद. आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, १९७२. ८५ पृ. ६.००

रजनीश, गोविंद, १९३८-
फागु काव्य; स्वरूप विकास एवं मूल्यांकन. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७७. १७७ पृ. २२.००

रजनीश, गोविंद, १९३८-
समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७३. १९५ पृ. १८.००

रजनीश, गोविंद, १९३८-
हिंदी की आदि और मध्यकालीन फागु कृतियां. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७४. २७५ पृ. २८.००

रणजीत, १९३७-
हिंदी के प्रगतिशील कवि; निराला से वेणु गोपाल तक लगभग सौ प्रगतिशील कवियों की सर्वेक्षणमूला समीक्षा. नई दिल्ली, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, १९७३. ४१५ पृ. ३०.००

रत्नावली. वाराणसी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७३. १२, ४१३ पृ. १६.००

रमण, जी. वी., १९२६-
कवित्रय : समाज दर्शन. मदनपल्ली, चित्तूर जिला, महेश प्रकाशन, १९७१. ६, १८८ पृ. १२.००
शोध-प्रबन्ध—उस्मानिया विश्व.

रमाकांत शास्त्री.
वैदिक वाङ्मय का इतिहास. वाराणसी, चौखंभा विद्याभवन, १९७०. ८, १२८ पृ. ४.००

रवीन्द्र भ्रमर, १९३४-
छायावाद : एक पुनर्मूल्यांकन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. १९९ पृ. १२.००

रवीन्द्र भ्रमर, १९३४-
समकालीन हिंदी कविता. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७२. १७९ पृ. १५.००

रस्तोगी, प्रेमप्रकाश, १९३५-
छायावाद और वैदिक-दर्शन. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७१. ४५४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध

राजपाल, हुकुमचंद.
नयी कविता की नाट्य-मुखी भूमिका. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. २६८ पृ. ३५.००

राजशेखरगिरि राव, कर्ण, १९२७-
आंध्र के लोक गीत. वाल्तेर, आंध्र विश्वविद्यालय, १९७४. ३२२ पृ. ३४.५०

राजूरकर, भ. ह., १९३५-
रामकथा के पात्र : वाल्मीकि, तुलसी एवं मैथिलीशरण गुप्त के संदर्भ में. कानपुर, ग्रन्थम, १९७२. ४५१ पृ. ४०.००

राजेंद्रकुमार.
परवर्ती हिंदी कृष्णभक्ति-काव्य (सन् १७००-१९०० ई.). इलाहाबाद, शब्दपीठ, १९७२. ४९७ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

राजे, सुमन, १९३८-
हिंदी रासो काव्य परम्परा. कानपुर, ग्रन्थम, १९७३. ५२० पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

रामचंद्रन नायर, जे.
छायावादी काव्य दर्शन. दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, १९७६. १०४ पृ. १५.००

रामेश्वर दयाल, १९३८-
मध्ययुगीन कृष्ण-भक्ति-परम्परा और लोक-संस्कृति, १६वीं-१७वीं शती. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७५. २७७ पृ. ४०.००

राय, पूर्णमासी, १९२८-
हिंदी कृष्ण-भक्ति साहित्य में मधुरभाव की उपासना. इलाहाबाद, अभिनव भारती प्रकाशन, १९७४. १६, ४४० पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

राय, महेंद्रनाथ, १९५०-
नव-जागरण और छायावाद. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. ३४३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

राय, रामवचन, १९४३-
नई कविता : उद्भव और विकास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. २८१ पृ. ११.५०

राय, ललन, १९३६-
रीतिकालीन हिंदी-साहित्य, विशेषत: बिहारी-सतसई में उल्लिखित वस्त्राभरणों का अध्ययन. चंडीगढ़, पब्लिकेशन ब्यूरो, १९७४. २०, ४२४, २२ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

राय, श्यामबिहारी, १९३६-
शुक्लोत्तर काव्य-चिंतन; पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य. दिल्ली, यूनाइटिड बुक हाउस, १९७३. ६५६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

राव, बालकृष्ण.
नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति एवं अभिव्यक्ति. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७५. २११ पृ. १८.००

राव, बालकृष्ण तथा गोविंद रजनीश.
अभिव्यक्ति. आगरा, रंजन प्रकाशन. १६७ पृ. १०.००

राव, बालकृष्ण तथा गोविंद रजनीश.
उपलब्धि. आगरा, रंजन प्रकाशन. २२९ पृ. २०.००

रिजवी, अतहर अब्बास तथा शैलेश जैदी.
अलख बानी. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७१. १४८ पृ. ३०.००

रुक्मिणी.
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी और तेलुगू कविता का तुलनात्मक अनुशीलन. हैदराबाद, साईंटिफिक सर्विसस, १९७४. १२, ३५९ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

रैणा, कृष्णा.
कश्मीरी निर्गुण संत-काव्य, दर्शन और भक्ति. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७७. १७८ पृ. २०.००

रैणा, कृष्णा.
हिंदी और कश्मीरी निर्गुण संत-काव्य : तुलनात्मक अध्ययन. नई दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७७. २३९ पृ. ५०.००

रैणा, कृष्णा.
हिंदी निर्गुण संत-काव्य; दर्शन और भक्ति. दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७७. १६३ पृ. २५.००

रोहतगी, सरोजनी, १९१६-
अवधी का लोक साहित्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ५९६ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

लक्ष्मय्यशेट्टी, बी.
रीतिकाल : एक सर्वेक्षण. उरवकोंडा, शांति निकेतन, १९६४. ६० पृ. १.००

वर्मा, कृष्णचंद्र, १९२९-
छायावादी काव्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १०, ३८३ पृ. १५.००

वर्मा, जनेश्वर, १९१३-
हिंदी काव्य में मार्क्सवादी चेतना. कानपुर, ग्रंथम, १९७४. ५१९ पृ. ५०.००

वर्मा, नरेंद्रदेव, १९३९-
आधुनिक पाश्चात्य काव्य और समीक्षा के उपादान. सागर, साथी प्रकाशन, १९७१. २८२ पृ. १५.००

वर्मा, प्रमोद.
अंग्रेजी की स्वच्छंद कविता. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १५, १७४ पृ. ७.५०

वर्मा, भगवतीचरण.
साहित्य के सिद्धांत तथा रूप. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. १९३ पृ. १५.००

वर्मा, हरिश्चन्द्र.
नयी कविता के नाट्य-काव्य. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन, १९७७. ३६३ पृ. ६०.००

वर्मा, हरिश्चन्द्र.
संस्कृत कविता में रोमांटिक प्रवृत्ति. मेरठ, लीला-कमल प्रकाशन. २०.००

वसंता, एस.
आधुनिक हिंदी कविता में दुरूहता. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७५. ३२० पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—श्री वेंकटेश्वर विश्व.

वाजपेयी, नंददुलारे, १९०६-१९६७.
नई कविता. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. १४० पृ. १८.००

विजयवर्गीय, दयाकृष्ण 'विजय', १९२९-
राजस्थानी-काव्य में शृंगार भावना, विक्रम सम्वत् १०००-१९००. अजमेर, चित्रगुप्त प्रकाशन, १९७१. ८, ३८० पृ. ३२.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

विजयवर्गीय, प्रेमचंद.
आधुनिक हिन्दी कवियों का सामाजिक दर्शन. जयपुर, वाफना प्रकाशन, १९७२. १६, ४२१ पृ. ३६.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

विमल.
प्राचीन प्रमुख हिंदी कवियों का मूल्यांकन. कानपुर, कमला प्रकाशन, १९६८. ३२० पृ. ८.५०

विमल, कुमार, १९३२- संपा.
काव्य-रचना-प्रक्रिया. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. २५३ पृ. ६.५०

विष्णुदत्त राकेश, १९४१-
उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. २३० पृ. १६.००

वेंकट रमण राव, वें., १९४०-
रीतिकालीन काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७२. ४५५ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—श्री वेंकटेश्वर विश्व.

वैश्य, गायत्री देवी, १९२५-
आधुनिक हिंदी काव्य में समाज. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७७. २०, २५१ पृ. ४०.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

वोहरा, कमलेश.
छायावादी काव्य के उदात्त तत्त्व. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. १४२ पृ. १६.००

व्यथित हृदय, १९०८-
ब्रज के सिद्ध संत. जयपुर, एस. पी. आर. सहारिया एजुकेशन सोसायटी, १९७३. ८, २६४ पृ. १५.००

व्यास, भोलाशंकर, १९२५-
संस्कृति-कवि-दर्शन. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, १९६८. ११, ५७५ पृ. ७.००

व्यास, शीला.
छायावादी कवियों का आलोचना साहित्य. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७७. २०.००

शर्मा, अयोध्यानाथ.
समीक्षायण; कबीर-जायसी-सूर-तुलसी पर आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. १५० पृ. ६.००

शर्मा, ओमप्रकाश, संपा.
आधुनिक कविता. नई दिल्ली, साहित्य समारोह, १९७२. ५६, २१६ पृ. २५.००

शर्मा, ओमप्रकाश, १९३६-
मध्यकालीन हिंदी और पंजाबी प्रेमाख्यान. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. १६, ४६० पृ. ४०.००

शर्मा, कृष्णकुमार, १९३४-
राजस्थानी लोकगाथा का अध्ययन. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७२. २७१ पृ. २५.००
शोध प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

शर्मा, कृष्णलाल 'सूदन', १९३२-
वैदिक साहित्य में शकुन एवं अद्‌भुत घटनाएं. सहारनपुर, सूदन प्रकाशन, १९७०. अनेक पृ. २५.००

शर्मा, गजानन, १९२२-
प्रचीन भारतीय साहित्य में नारी. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७१. ७, २४२ पृ. ३०.००
शोध-प्रवन्ध—सागर विश्व.

शर्मा, गजानन, १९२२-
भक्तिकालीन काव्य में नारी. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ६३४ पृ. ४५.००
शोध-प्रवन्ध—सागर विश्व.

शर्मा, गोपीलाल.
चौरासी वैष्णवों की पद्यात्मक वार्ता. जयपुर, श्री पुष्टिमार्गीय वैष्णव मंडल, १९७२. १६, ५०८ पृ. ५.००

शर्मा, चंद्रपाल.
ऋतु-वर्णन परंपरा और सेनापति का काव्य. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७३. २५६ पृ. २५.००
शोध-प्रवंध—मेरठ विश्व.

शर्मा, दयानंद 'मधुर', १९४३-
रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव केवल शृंगारिक सन्दर्भ में. कानपुर, साहित्य संस्थान, १९७६. ८, ३२७ पृ. ४५.००
शोध-प्रवन्ध—पूना विश्व.

शर्मा, नित्यानंद, १९२१-
उत्तरमध्यकालीन हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७५. २८० पृ. ३२.५०
शोध-प्रवन्ध—मगध विश्व.

शर्मा, नित्यानंद, १९२१- तथा विष्णुदत्त राकेश.
हिंदी साहित्य का मध्यकाल. अलीगढ़, भारत प्रकाशन मंदिर, १९७४. १२, ३३६ पृ. १५.००

शर्मा, फूलबिहारी.
छायावादी कवियों पर अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७७. २३८ पृ. ३५.००

शर्मा, बनवारीलाल.
स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी प्रबन्ध काव्य; परम्पराओं और प्रयोगों के परिपार्श्व में. जयपुर, रामा पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १४, ४८७ पृ. ३५.००
शोध प्रबन्ध— राजस्थान विश्व.

शर्मा, ब्रह्मानंद.
संस्कृत साहित्य में दृश्यमूलक अलंकारों का विकास. अजमेर, १९६४. ४१२ पृ. १२.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

शर्मा, भक्तराम.
द्विवेदी-युगीन काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७३. १९९ पृ. २०.००

शर्मा, मुरारीलाल 'सुरस'.
हिंदी कृष्ण-काव्य परम्परा का स्वरूप-विकास. दिल्ली, प्रेम प्रकाशन, १९७७. ३४६ पृ. ४५.००

शर्मा, मोहनलाल, १९३६-
ब्रज-वार्त्ता. कोसीकलां, ब्रजभाषा प्रकाशन; वितरक : गुलाबचन्द, मथुरा, १९६६ १०८ पृ. ३.००

शर्मा, राजपाल, १९३६-
हिंदी-वीरकाव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७४. ४५६ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- संपा.
आधुनिक काव्य : बोध और परंपरा. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी, १९७०. १९७ पृ. ६.००

शर्मा, रामदत्त, १९४१-
संस्कृत काव्यों में पशु-पक्षी. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७१. १८४ पृ. ३२.००

शर्मा, रामदत्त, १९४१-
संस्कृत साहित्य की पृष्ठभूमि में काव्य एवं काव्यकार; एक समीक्षात्मक शोध-संग्रह. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७१. ६५ पृ. ७.००

शर्मा, रामपतिराय.
निर्गुण काव्य पर सूफी प्रभाव. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७७. ३३८ पृ. ३५.००

शर्मा, रामेश्वर, १९३१-
मान्यता. नागपुर, अस्तेय प्रकाशन, १९६९. ८७ पृ. ६.००

शर्मा, रामेश्वर, १९३१-
स्थापना. नागपुर, अस्तेय प्रकाशन, १९६६. १५९ पृ. ११.००

शर्मा, शिवशंकर.
भक्तिकालीन हिंदी-साहित्य में योग-भावना. अलीगढ़, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, १९७०. ३९५, १३ पृ. १५.००

शर्मा, सत्याकुमारी, १९३३-
पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य का सैद्धान्तिक तथा भक्तिपरक अध्ययन. अलीगढ, प्रभात प्रकाशन, १९७१. १२, २२, २९९ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ विश्व.

शर्मा, सुमन, १९४९-
मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का सामाजिक विवेचन. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. ८, २५९ पृ. ३०.००

शर्मा, हरिचरण, १९३९-
नयी कविता का मूल्यांकन; परम्परा और प्रगति की भूमिका पर. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७२. १०, ४८४ पृ. ४.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

शर्मा, हरिचरण, १९३९-
पुनश्च, सातवें दशक की नयी हिंदी कविता के संदर्भ स. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७५. ३९६ पृ, ४५.००

शारदा, कृष्णा.
आधुनिक हिंदी काव्य पर अरविंद-दर्शन का प्रभाव. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७२. अनेक पृ. ३०.००

शाह, रमेशचन्द्र, १९३७-
छायावाद की प्रासंगिकता. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. १५७ पृ. ६.००

शिवाप्रिया महापात्र.
छायावादोत्तर प्रबन्ध-काव्यों का कलापक्ष. नयी दिल्ली, प्राची प्रकाशन, १९७७. ४२१ पृ. ६०.००

शुक्ल, परशुराम 'विरही', १९३१-
आधुनिक कवियों का जीवन-दर्शन. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. २२३ पृ. १५.००

शुक्ल, भगवतीप्रसाद, १९२२-
बावरी-पंथ के हिंदी काव्य. दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७२. ३७२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

शुक्ल, मत्स्येंद्र, १९३९-
आधुनिक अवधी जनकाव्य का अध्ययन. इलाहाबाद, साहित्य सरोवर, १९७२. ४२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

शुक्ल, मत्स्येंद्र.
कविता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य. गौरीगंज, जि. सुलतानपुर, सम्भावना प्रकाशन, १९७५. १९५ पृ. १८.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र.
जनकवियों का मूल्य और मूल्यांकन. इलाहाबाद, साहित्य सरोवर, १९७२. २३१ पृ. १८.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र.
भारतीय जनकाव्य की परम्परा. इलाहाबाद, शोध साहित्य प्रकाशन, १९७२. २०० पृ. १८.००

शुक्ल, मत्स्येन्द्र.
हिंदी साहित्य; विविध प्रसंग. इलाहाबाद, सर्वराकेश प्रकाशन, १९७४. १९२ पृ. १८.००

शुक्ल, ललित, १९३७-
नया काव्य, नये मूल्य. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. ३०८, १४ पृ. ३२.००

शुक्ल, सावित्री.
निरंजनी सम्प्रदाय के हिंदी कवि. भोपाल, मध्यदेश शासन साहित्य परिषद् १९७४. २०, ६१८ पृ. ३२.००

शुक्ल, हरिप्रसाद गजानन 'हरीश', १९३५-
गुर्जर जैन कवियों की हिंदी साहित्य को देन : जैन गुर्जर कवियों की हिंदी कविता. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७६. ३४६ पृ ३०.००
शोध-प्रवन्ध—गुजरात विश्व.

शेखावत, सौभाग्यसिंह, संपा.
राजस्थानी वीर गीत संग्रह. जोधपुर, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, १९६८-१९७२. ३ भा. २२.००

श्रीवास्तव, उदयशंकर, १९४४-
मध्ययुगीन हिंदी के सूफी-इतर मुसलमान कवि. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७३. ४५० पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध – काशी हिंदू विश्व.

श्रीवास्तव, परमानंद, १९३५-
कवि-कर्म और काव्य भाषा, संदर्भ : छायावाद. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. ८७ पृ. ७.५०

श्रीवास्तव, मीरा, १९३८-
कृष्ण-काव्य में सौन्दर्य-बोध एवं रसानुभूति, १३७५-१७००. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७६. १४, २८८ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—इलाहाबाद विश्व.

श्रीवास्तव, मीरा, १९३८-
मध्ययुगीन हिंदी कृष्णभक्ति धारा चैतन्य सम्प्रदाय. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७४. ४४० पृ. १६.००

श्रीवास्तव, स्नेहलता, १९२२- संपा.
भ्रमर गीत संग्रह; मध्ययुगीन कवियों के भ्रमर गीतों का संग्रह. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७३. ४०० पृ. ३०.००

श्रीहरि दामोदर.
आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना, सन् १८५७-१९४७. भागलपुर, भारत बुक डिपो, १९७५. ५५२, १० पृ. ५१.००

श्रुतिकांत, १९२२-
भारतीय देव-भावना और मध्यकालीन हिंदी-साहित्य. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७३. ४९६ पृ. ४२.००
शोध प्रवन्ध—आगरा विश्व.

संघी, कमला, टीका.
कृष्ण रस सागर. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७०. ४८८ पृ. २५.००

संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह. इलाहाबाद, वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १९६९. ८८ पृ. १.२५

सक्सेना, ओमप्रकाश, १९४०-
प्रणामी कवि और काव्य. इलाहाबाद, प्रणामी प्रकाशन, १९७३. ८७ पृ ४.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. १८, ५९२ पृ. २०.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि. संशो. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १९, ४६८ पृ. १२.५०

सक्सेना, ललताप्रसाद 'ललित', १९२४-
आधुनिक हिंदी काव्य : समस्याएं एवं समाधान. उदयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७१. २८२ पृ. २५.००

सक्सेना, ललताप्रसाद 'ललित, १९२४-
मध्यकालीन महाकाव्य : व्यक्तित्व विश्लेषण. जयपुर, निर्मल प्रकाशन संस्थान, १९७४. १७२ पृ. २०.००

सक्सेना, ललताप्रसाद 'ललित', १९२४-
हिंदी-महाकाव्यों में मनोवैज्ञानिक तत्त्व. जयपुर, निर्मल प्रकाशन संस्थान, १९७३-७४. २ भा. ११०.००
शोध-प्रबंध —लखनऊ विश्व.

सचदेव, पद्मा.
मेरी कविता : मेरे गीत. नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, १९७४. ९९ पृ. ७.००

सतीशकुमार, संपा.
कवितावली. दिल्ली, गोयल प्रकाशन, १९७१. २४० पृ. ३.५०

सरला देवी.
हिंदी साहित्य में नारी. कोचीन, केरल हिंदी साहित्य मंडल, १९७१. १२, १६२ पृ. ५.००

सरीन, धर्मपाल.
हिंदी साहित्य और स्वाधीनता संघर्ष. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७३. १५९ पृ. १२.५०

सहगल, मनमोहन.
पंजाब के निर्गुण-काव्य का दार्शनिक अध्ययन. दिल्ली, सूर्य-प्रकाशन, १९७३. २७२ पृ. ३०.००

सहगल, शशि.
नयी कविता में मूल्य बोध. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७६. १९० पृ. ३०.००

सहाय, राजवंश 'हीरा', १९२९-
अपभ्रंश साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियां. वाराणसी, चौखंबा विद्या भवन, १९७०. ११९ पृ. २.५०

सिंह, अजब, १९४१-
आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियां, १९२१ ई. से १९४७ ई. तक. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. १४, २२४ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ मुस्लिम विश्व.

सिंह, अजब, १९४१-
स्वच्छन्दतावाद, छायावाद. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. १४, १४७ पृ. १५.००

सिंह, अमर बहादुर 'अमरेश'.
काव्य के इतिहास-पुरुष. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७१. २०३ पृ. ६.००

सिंह, उमराव 'कारुणिक'.
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य. माछरा (मेरठ), ज्ञान प्रकाश मंदिर; वितरक : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, १९७२. १९९ पृ. ८.००

सिंह, कन्हैया, १९३५-
हिंदी सूफी काव्य में हिंदू संस्कृति का चित्रण और निरूपण. इलाहाबाद, भारती भंडार, १९७३. १४, ४५० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—गोरखपुर विश्व.

सिंह, केदारनाथ, १९३४-
आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान. दिल्ली भारतीय ज्ञानपीठ, १९७१. ३२५ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—बनारस हिंदू विश्व., १९६४.

सिंह नागेंद्र 'कमलेश', १९३९-
विंध्यांचल का आधुनिक हिंदी काव्य. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ३८० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

सिंह, पुष्पपाल, १९४१-
आधुनिक हिंदी-कविता में महाभारत के कुछ पात्र. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७१. ११६ पृ. ८.००

सिंह, प्रमोदकुमार.
पुरानी हिंदी का हेमचंद्रीय वीर-काव्य. दरभंगा, कल्पना तीर्थ, १९७०. ६८ पृ. ५.००

सिंह, ब्रजभूषण, १९३१-
मध्यप्रदेश के मध्यकालीन साहित्यकार. जबलपुर, मदनमहल जनरल स्टोर्स, १९७१. २०० पृ. ४.५०

सिंह, भगवतीप्रसाद, १९२१-
रामकाव्यधारा : अनुसंधान एवं अनुचिंतन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. ३२८, २७ पृ. ३०.००

सिंह, भगवतीप्रसाद, १९२१-
रामभक्ति, परम्परा और साहित्य. कलकत्ता, हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए हिंदी पुस्तक एजेन्सी, १९७४. २३० पृ. २५.००

सिंह, रविनाथ, १९३०-
नयी कविता की भाषा. बंबई, हिंदी साहित्य संसद, १९७६. ३२७ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—बंबई विश्व.

सिंह, राजदेव, १९३६-
संत साहित्य की भूमिका. नयी दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. १३३ पृ. १५.००

सिंह, राजदेव, १९३६-
संत-साहित्य : पुनर्मूल्यांकन. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७३. ११, ३९१ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

सिंह, राजदेव, १९३६-
संतो की सहज साधना. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. २३१ पृ. २०.००

सिंह, राजेंद्रप्रसाद, संपा.
प्रक्रिया : समकालीन दस हिंदी कवियों की अनाग्रही कविताएं और रचना-प्रक्रिया से सम्बद्ध वक्तव्य. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७२. २४० पृ. १६.००

सिंह, रामेश्वरप्रसाद.
संत-काव्य में योग का स्वरूप. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७७. ४२४ पृ. ५०.००

सिंह, विजयपाल तथा चंद्रभान रावत, संपा.
हितचौरासी और प्रेमदास कृत व्रजभाषा टीका. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७१. २०० पृ. १६.००

सिंह, विजय बहादुर.
वृहत्त्रयी. दिल्ली, मैकमिलन, १९७५. २५८ पृ. ३०.००

सिंह, वीरेंद्र, १९३४-
आधुनिक कविता और विज्ञान बोध. जयपुर, उपमा प्रकाशन, १९६८. ८९ पृ. ४.००

सिंह, वीरेंद्र, १९३४-
आधुनिक कविता, नये संदर्भ. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७५. ८३ पृ. १२.००

सिंह, शोभनाथ.
भक्तिकाल में रीतिकाव्य की प्रवृत्तियां और सेनापति. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन; वितरक: हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई, १९७२. ३६६ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

सिंहल, वैजनाथ.
नयी कविता का इतिहास. दिल्ली, संजय प्रकाशन, १९७७. २१२ पृ. ३०.००

सिनहा, प्रमोद.
छायावादी कवियों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, रामकुमार वर्मा). इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. २२, ४१० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

सिन्हा, अमरनाथ, १९३९-
रीति-साहित्य को विहार की देन. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १६, ३१५ पृ. ३०.००

सिन्हा, मंजु, १९४२-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी और गुजराती नयी कविता. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. २७८ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

सीता, १९१६- तथा अन्य.
धूलि-धूसरित मणियां; लोकगीतों पर एक विवेचन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६४. ५२० पृ. १५.००

सुखदेव.
भक्तिकाव्य में प्रकृति-चित्रण. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७४. ३६४ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

सुधींद्रकुमार, १९४०-
रीतिकालीन शृंगार-भावना के स्रोत. दिल्ली, पुस्तक प्रचारक, १९७४. २७८ पृ. ३५.००

सुरेश, १९३३-
आधुनिक हिंदी और उर्दू काव्य की प्रवृत्तियां. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७३. ४४६ पृ. ४८.००
शोध प्रबन्ध—आगरा विश्व.

सुमन, रामनाथ, १९०३-
छायावादयुगीन स्मृतियां. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १९५ पृ. २०.००

सुरेशचंद्र 'निर्मल', १९३९-
हिंदी प्रबंधकाव्य में रावण, चरित्र विकास की दृष्टि से. नई दिल्ली, भावना प्रकाशन, १९७५. ३१२ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

हंडू, जवाहरलाल.
कश्मीरी और हिंदी के लोकगीत; एक तुलनात्मक अध्ययन. कुरुक्षेत्र, विशाल पब्लिकेशन्ज़, १९७१. १४, ३८८, १५ पृ. ३९.००

हंडू, जियालाल.
कश्मीरी और हिंदी सूफी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७३. १६, ५०४ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

हंस, कृष्णलाल, १९०९-
प्रगतिवादी काव्य-साहित्य. भोपाल, मध्यदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १२, ३८५ पृ. २०.००

हनुमानदास.
सटीकाध्यात्मतत्त्वसंवाद. वाराणसी, श्री सद्गुरु कबीर हनुमत पुस्तकालय, १९६८. २८, ३४८ पृ. २.५०

हुजूर महाराज, १८२९-१८९८.
प्रेमबानी राधास्वामी. आगरा, राधास्वामी सतसंग, १९७२. भा. १. ५.५०

उपन्यास-कहानी

अग्निहोत्री, श्रीनारायण, १९१२-
उपन्यास कला के तत्व. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पॉकेट बुक्स, १९७३. १७५ पृ. ४.००

अग्रवाल, प्रह्लाद, १९४७-
हिंदी कहानी; सातवां दशक. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १७६ पृ. १८.००

अग्रवाल, भारतभूषण.
हिंदी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं सन्तति, १९७१. ४९६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

अरोड़ा, अतुलवीर, १९४६-
आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिंदी उपन्यास, १९३६ से १९६८ तक. चंडीगढ़, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी, १९७४. २९९ पृ. ३६.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

अवस्थी, देवीशंकर, १९३०-१९६६.
नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. २४८ पृ. १५.००

अश्क, उपेंद्रनाथ, १९१०-
कहानी के इर्द-गिर्द. इलाहाबाद नीलाभ प्रकाशन, १९७१. २१० पृ. १५.००

उपाध्याय, देवराज, १९०८-
कथा-साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा-सिद्धांत. इलाहाबाद, सौभाग्य प्रकाशन, १९७४. १६, २३६ पृ. २५.००

उपाध्याय, देवराज, १९०८-
कथा-साहित्य, मेरी मान्यताएं. इलाहाबाद, सौभाग्य प्रकाशन, १९७५. ७, ११९ पृ. १२.००

उपाध्याय, विश्वम्भरनाथ.
समकालीन कहानी की भूमिका. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७७. ८० पृ. ५.००.

कपूरिया, देव, १९२८-
हिंदी कहानी-साहित्य में प्रेम एवं सौंदर्य-तत्व का निरूपण. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७४. ४०४ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

कुंवरपालसिंह.
हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७६. २१५ पृ. ३०.००

कोहली, नरेंद्र, १९४०-
हिंदी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत. दिल्ली, सौरभ प्रकाशन, १९७७. २९५ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

कौशिक, राधेश्याम.
स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यास का शिल्प विकास. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७६. २०८ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

खुल्लर, गुरदीपसिंह, १९४५-
ऐतिहासिक उपन्यास और ऐतिहासिक रोमांस, प्रेमचंद पूर्व. दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइंसेज, १९७४. २३, २७० पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

खोसला, माधुरी.
हिंदी के लघु उपन्यासों का शिल्प. नयी दिल्ली, विजयंत प्रकाशन, १९७३. १६९ पृ. १०.००

गर्ग, लक्ष्मीनारायण, १९३२-
हिंदी कथा-साहित्य में इतिहास. इलाहाबाद, अभिनव भारती प्रकाशन, १९७४. १६, २७० पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—उदयपुर विश्व.

गर्जे, चंद्रकान्त.
हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक उपन्यास. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ३२७ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—इलाहाबाद विश्व.

गुप्त, ज्ञानचंद, १९४२-
आंचलिक उपन्यास; संवेदना और शिल्प. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७५. ११२ पृ. १५.००

गुप्त, ज्ञानचंद, १९४२-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-उपन्यास और ग्राम-चेतना. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७४. ३०४ पृ. ३६.००
शोध-प्रबंध—मेरठ विश्व.

गुप्त, परमानंद, संपा.
सांप्रतिक हिंदी कहानी. बेंगलूर, सप्तांशु प्रकाशन, १९७४. २४६ पृ. १५.००

गुप्त, राधेश्याम, १९३७-
कहानी की कहानी. अजमेर, हिंदी साहित्य संस्थान, १९७१. ९८ पृ. १०.००

गुप्त, लालचंद 'मंगल', १९४६-
अस्तित्ववाद और नयी कहानी. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन, १९७५. १५, २९८ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

गुप्त, शांतिस्वरूप, १९२५-
हिंदी उपन्यास : महाकाव्य के स्वर. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७१. ७, १९८ पृ. १०.००

गुप्त, सूर्यकांत.
हिंदी उपन्यास-कोश; १९७४ में प्रकाशित उपन्यासों के समीक्षात्मक परिचय सहित. दिल्ली, सूर्य-प्रकाशन, १९७५. १९९ पृ. २०.००

गोविंदजी, १९३२-
हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास-प्रयोग. मेरठ, कल्पना प्रकाशन, १९७४. १५, ३४१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

गौतम, लक्ष्मणदत्त, १९३५-
आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७२. ५४४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

चुघ, सत्यपाल, १९२७-
ऐतिहासिक उपन्यास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ४८४ पृ. ३५.००

चौधरी, भूपेन्द्र कुमार.
मैथिली उपन्यास और उपन्यासकार. दरभंगा, ग्रंथालय प्रकाशन, १९७२. ९० पृ. ४.००

जायसवाल, शंकरलाल.
हिंदी गद्य-साहित्य पर समाजवाद का प्रभाव. इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, १९७३. ४८२ पृ. ४०.००

जैन, नगीना, १९३५-
आंचलिकता और हिंदी उपन्यास. नयी दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७६. २२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

जैन, महेंद्रकुमार, १९३५-
हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण. नई दिल्ली, जैन ब्रदर्स, १९७४. २८७ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—जोधपुर विश्व.

जैन, रवीन्द्रकुमार, १९२५-
उपन्यास : सिद्धांत और संरचना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २११ पृ. १४.००

जोशी, इन्दिरा.
भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, ६५५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

जोशी, कैलाश १९४९-
आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्वप्न-मनोविज्ञान. जयपुर, संघी प्रकाशन, १९७६. २२८ पृ. ३०.००

टंडन, प्रतापनारायण, १९३५-
हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास. लखनऊ, कल्पकार प्रकाशन, १९७४. २२३ पृ. ३०.००

ठाकुर, देवेश.
हिंदी कहानी का विकास. नयी दिल्ली, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७७. १४८ पृ. १०.००

ठाकुर, देवेश, संपा.
हिंदी की पहली कहानी. नयी दिल्ली, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७७. १०५ पृ. १५.००

ठाकुर, बलिराज.
हिंदी उपन्यास : आरंभ और विकास. पटना, बिहार ग्रंथ कुटीर, १९७३. ७४ पृ. ६.००

तिवारी, रमेश.
हिंदी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन : प्रारम्भ से १९४७ ई. तक, प्रेमचंद को छोड़कर. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. १२, ४२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—प्रयाग विश्व.

तिवारी, शारदा प्रसाद, १९२६-
मेघों के सेतु : प्रमुख उपन्यासों का अनुशीलन. रायपुर, महानदी प्रकाशन, १९७४. १३७ पृ. ८.५०

त्रिपाठी, सरोजनी.
आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. ३१० पृ. २५.००

दुबे, पुरुषोत्तम, १९२१-
व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास. बंबई, अनुपमा प्रकाशन, १९७३. ४१५ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—बंबई विश्व.

नरेंद्र मोहन, १९३५- संपा.
आधुनिक हिंदी उपन्यास. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. ८, ३०० पृ. २८.००

नवलकिशोर, १९३२- तथा रामचरण महेंद्र.
राजस्थान में हिंदी कथा और नाटक साहित्य के सौ वर्ष : सर्वेक्षण ग्रंथ. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७५. १२६ पृ. ७.५०

नूरजहां.
हिंदी कहानी में यथार्थवाद. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७९. ३४८ पृ. ३५.००

पंत, बसंती, १९३९-
हिंदी उपन्यास : रचना विधान और युगबोध. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७३. १२४ पृ. १०.००

पट्टनायक, अजयकुमार.
हिंदी-उड़िया उपन्यास-साहित्य. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७७. ११० पृ. ७.००

पांडेय, शशिभूषण 'शितांशु'.
नयी कहानी के विविध प्रयोग. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. ३४० पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—बिहार विश्व.

पाठक, अमरेश.
मैथिली उपन्यास का आलोचनात्मक अध्ययन. पटना, आलोक प्रकाशन; वितरक : अनामिका प्रकाशन, १९७५. २०१ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—बिहार विश्व.

पानेरी, हेमेंद्रकुमार, १९४२-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य-संक्रमण. जयपुर, संघी प्रकाशन, १९७४. ३२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—उदयपुर विश्व.

फणीश्वरनाथ 'रेणु'.
आंचलिक कथा-साहित्य. संपा. पूर्णदेव. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. ९८ पृ. ६.००

बक्शी, योगेंद्र, १९३९-
हिंदी तथा पंजाबी उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७६. १५, ५६८ पृ. ७५.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

बटरोही, १९४६-
कहानी : रचना-प्रक्रिया और स्वरूप. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७३. ११६ पृ. ८.००

बागड़ी, आशा.
प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास-साहित्य में पारिवारिक जीवन. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७४. ४४० पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

बिष्ट, लक्ष्मणसिंह.
प्रेमचंद-पूर्व के कथाकार और उनका युग. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. २३८ पृ. २०.००

बेचन, १९३१-
आधुनिक हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. ३०४ पृ. २५.००

बोरा, राजमल, १९३३-
हिंदी उपन्यास : प्रयोग के चरण. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७२. १३, २२० पृ. १०.५०

ब्युरैक, ए. एस.
उपन्यास लेखन शिल्प. अनु. रामभिन चतुर्वेदी तथा अन्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २०७ पृ. ८.००

मटियानी, शैलेश, संपा.
समकालीन हिंदी कहानी : संदर्भ और परिदृश्य. इलाहाबाद, विकल्प प्रकाशन. ६१६ पृ. २५.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०-
हिंदी उपन्यास : एक नयी दृष्टि, १९३४ से १९७४ तक. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. १२४ पृ. १२.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०- संपा.
हिंदी उपन्यास : पहचान और परख. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७३. २४२ पृ. १८.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०- संपा.
हिंदी कहानी : पहचान और परख. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७३. २३९ पृ. १८.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०- तथा राकेश.
कहानी और कहानी समीक्षा का मूल्यांकन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. २८० पृ. २५.००

मिश्र, जयदेव तथा वासुकीनाथ झा, संपा.
समकालीन कथा साहित्य. पटना, चेतना समिति, १९७६. ९१ पृ. ४.००
मैथिली, हिंदी, अंग्रेजी में.

गुप्त, ज्ञानचंद, १९४२-
आंचलिक उपन्यास; संवेदना और शिल्प. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७५. ११२ पृ. १५.००

गुप्त, ज्ञानचंद, १९४२-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-उपन्यास और ग्राम-चेतना. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७४. ३०४ पृ. ३६.००
शोध-प्रबंध—मेरठ विश्व.

गुप्त, परमानंद, संपा.
सांप्रतिक हिंदी कहानी. बेंगलूर, सप्तांशु प्रकाशन, १९७४. २४६ पृ. १५.००

गुप्त, राधेश्याम, १९३७-
कहानी की कहानी. अजमेर, हिंदी साहित्य संस्थान, १९७१. ९८ पृ. १०.००

गुप्त, लालचंद 'मंगल', १९४६-
अस्तित्ववाद और नयी कहानी. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन, १९७५. १५, २६८ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

गुप्त, शांतिस्वरूप, १९२५-
हिंदी उपन्यास : महाकाव्य के स्वर. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७१. ७, १६८ पृ. १०.००

गुप्त, सूर्यकांत.
हिंदी उपन्यास-कोश; १९७४ में प्रकाशित उपन्यासों के समीक्षात्मक परिचय सहित. दिल्ली, सूर्य-प्रकाशन, १९७५. १९९ पृ. २०.००

गोविंदजी, १९३२-
हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास-प्रयोग. मेरठ, कल्पना प्रकाशन, १९७४. १५, ३४१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

गौत्तम, लक्ष्मणदत्त, १९३५-
आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७२. ५४४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

चुघ, सत्यपाल, १९२७-
ऐतिहासिक उपन्यास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ४८४पृ. ३५.००

चौधरी, भूपेन्द्र कुमार.
मैथिली उपन्यास और उपन्यासकार. दरभंगा, ग्रंथालय प्रकाशन, १९७२. ९० पृ. ४.००

जायसवाल, शंकरलाल.
हिंदी गद्य-साहित्य पर समाजवाद का प्रभाव. इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, १९७३. ४८२ पृ. ४०.००

जैन, नगीना, १९३५-
आंचलिकता और हिंदी उपन्यास. नयी दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७६. २२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

जैन, महेंद्रकुमार, १९३५-
हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण. नई दिल्ली, जैन ब्रदर्स, १९७४. २८७ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—जोधपुर विश्व.

जैन, रवीन्द्रकुमार, १९२५-
उपन्यास : सिद्धांत और संरचना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २११ पृ. १४.००

जोशी, इन्दिरा.
भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ८, ६५५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

जोशी, कैलाश १९४९-
आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्वप्न-मनोविज्ञान. जयपुर, संघी प्रकाशन, १९७६. २२८ पृ. ३०.००

टंडन, प्रतापनारायण, १९३५-
हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास. लखनऊ, कल्पकार प्रकाशन, १९७४. २२३ पृ. ३०.००

ठाकुर, देवेश.
हिंदी कहानी का विकास. नयी दिल्ली, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७७. १४८ पृ. १०.००

ठाकुर, देवेश, संपा.
हिंदी की पहली कहानी. नयी दिल्ली, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७७. १०५ पृ. १५.००

ठाकुर, बलिराज.
हिंदी उपन्यास : आरंभ और विकास. पटना, बिहार ग्रंथ कुटीर, १९७३. ७४ पृ. ६.००

तिवारी, रमेश.
हिंदी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन : प्रारम्भ से १९४७ ई. तक, प्रेमचंद को छोड़कर. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. १२, ४२३ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—प्रयाग विश्व.

तिवारी, शारदा प्रसाद, १९२६-
मेघों के सेतु : प्रमुख उपन्यासों का अनुशीलन. रायपुर, महानदी प्रकाशन, १९७४. १३७ पृ. ८.५०

त्रिपाठी, सरोजनी.
  आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. ३१० पृ. २५.००

दुबे, पुरुषोत्तम, १९२१-
  व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास. बंबई, अनुपमा प्रकाशन, १९७३. ४१५ पृ. ३५.००
  शोध-प्रबन्ध—बंबई विश्व.

नरेंद्र मोहन, १९३५- संपा.
  आधुनिक हिंदी उपन्यास. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. ८, ३०० पृ. २८.००

नवलकिशोर, १९३२- तथा रामचरण महेंद्र.
  राजस्थान में हिंदी कथा और नाटक साहित्य के सौ वर्ष : सर्वेक्षण ग्रंथ. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७५. १२६ पृ. ७.५०

नूरजहां.
  हिंदी कहानी में यथार्थवाद. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७६. ३४४ पृ. ३५.००

पंत, वसंती, १९३९-
  हिंदी उपन्यास : रचना विधान और युगबोध. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७३. १२४ पृ. १०.००

पट्टनायक, अजयकुमार.
  हिंदी-उड़िया उपन्यास-साहित्य. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७७. ११० पृ. ७.००

पांडेय, शशिभूषण 'शितांशु'.
  नयी कहानी के विविध प्रयोग. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. ३४० पृ. २५.००
  शोध-प्रबंध—बिहार विश्व.

पाठक, अमरेश.
  मैथिली उपन्यास का आलोचनात्मक अध्ययन. पटना, आलोक प्रकाशन; वितरक : अनामिका प्रकाशन, १९७५. २०१ पृ. २५.००
  शोध-प्रबंध—बिहार विश्व.

पानेरी, हेमेंद्रकुमार, १९४२-
  स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य-संक्रमण. जयपुर, मंघी प्रकाशन, १९७४. ३२३ पृ. ३५.००
  शोध-प्रबन्ध—उदयपुर विश्व.

फणीश्वरनाथ 'रेणु'.
  आंचलिक कथा-साहित्य. व्या. पूर्णदेव. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. ९८ पृ. ६.००

बख्शी, योगेंद्र, १९३९-
  हिंदी तथा पंजाबी उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७६. १५, ५६८ पृ. ७५.००
  शोध-प्रबन्ध—पंजाबी विश्व.

बटरोही, १९४६-
  कहानी : रचना-प्रक्रिया और स्वरूप. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७३. ११६ पृ. ८.००

बागड़ी, आशा.
  प्रेमचंद-परवर्त्ती उपन्यास-साहित्य में पारिवारिक जीवन. दिल्ली, शोध-प्रबन्ध प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७४. ४४० पृ. ५०.००
  शोध-प्रबन्ध—कुरुक्षेत्र विश्व.

बिष्ट, लक्ष्मणसिंह.
  प्रेमचंद-पूर्व के कथाकार और उनका युग. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. २३८ पृ. २०.००

बेचन, १९३१-
  आधुनिक हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७१. ३०४ पृ. २५.००

बोरा, राजमल, १९३३-
  हिंदी उपन्यास : प्रयोग के चरण. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७२. १३, २२० पृ. १०.५०

ब्युरैक, ए. एस.
  उपन्यास लेखन शिल्प. अनु. रामभित्र चतुर्वेदी तथा अन्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. २०७ पृ. ८.००

मटियानी, शैलेश, संपा.
  समकालीन हिंदी कहानी : संदर्भ और परिदृश्य. इलाहाबाद, विरला प्रकाशन. ६१६ पृ. २५.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०-
  हिंदी उपन्यास : एक नयी दृष्टि, १९३४ से १९६४ तक. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९६५. १२४ पृ. १२.००

मिश्र, सरजूप्रसाद.
हिंदी कहानी के आधार स्तंभ. कोलहापुर, अजब पुस्तकालय, १९७५. १७८ पृ. १२.००

मीतल, सुशीला, १९३४-
आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिकाएं. बंबई, अनुपमा प्रकाशन, १९७४. ११, २८७ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—बंबई विश्व.

मेहरोत्रा, सुमन, १९२९-
हिंदी कहानियों में द्वन्द्व : प्रेमचंद युग मे आधुनिक युग तक. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. १६, २३८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—राजस्थान विश्व.

रस्तौगी, शैल.
हिंदी उपन्यासों में नारी. साहिबाबाद, विभू प्रकाशन, १९७७. ३३४ पृ. ५५.००

रामसुंदर लाल, १९२०-
प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान, सन् १९३६ से १९६० तक. वाराणसी, दीपक प्रकाशन; वितरक : चौखंभा विश्वभारती, १९७६. २३, ४८५ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

राय, गोपाल.
उपन्यास का शिल्प. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १७६ पृ. ६.५०

राय, विवेकी, १९२७-
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य और ग्राम-जीवन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. ५५८ पृ. ३५.००

लक्ष्मीनारायण लाल.
हिंदी कहानियों की शिलपविधि का विकास. सं. ३. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७४. ३४५ पृ. २०.००

लवानिया, रमेशचंद्र, १९४०-
हिंदी कहानी में जीवन-मूल्य. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७३. २७६ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

लोढ़ा, महावीरमल.
हिंदी उपन्यासों का शास्त्रीय विवेचन, सन् १९५० १९६५ तक. जयपुर, रोशनलाल जैन एंड संस, १९७२. १८, ३०३ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

वर्मा, भगवानदास, १९३४-
कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धांत और प्रयोग, नई कहानी के संदर्भ में. कानपुर, ग्रंथम, १९७२. २९०, २१ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—मराठवाड़ा विद्यापीठ.

वाजपेयी, पुरुषोतम, १९२९-
हिंदी-कथा-साहित्य पर सोवियत-क्रांति का प्रभाव. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ३८४ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—कानपुर विश्व.

वाट, इयन, १९१७-
उपन्यास का उदय. अनु. धर्मपाल सरीन. चंडीगढ़, हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १२, ४४७ पृ. २०.००

वार्ष्णेय, कुसुम, १९३८-
हिंदी उपन्यासों में नायक. इलाहाबाद, शोध-साहित्य प्रकाशन, १९७३. २८० पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—प्रयाग विश्व.

वार्ष्णेय, रघुवर दयाल, १९३६-
हिंदी कहानी; बदलते प्रतिमान. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७५. २४६ पृ. ३५.००

विश्वन, टी. एन., १९३८-
कहानी, स्वर और स्वरूप. कोचिन, केरल हिंदी साहित्य मंडल प्रकाशन, १९७४. ९६ पृ. ४.००

शर्मा, जगन्नाथप्रसाद, १९०६-
कहानी का रचना-विधान. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७४. ५, २९८ पृ. २०.००

शर्मा, रत्नलाल.
कथा-यात्रा विवेचन. संपा. राजेंद्र यादव. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७१. १५८ पृ. २.५०

शर्मा, राजेंद्रप्रसाद, १९३२-
हिंदी कहानियों में व्यक्तित्व-विश्लेपण. इलाहाबाद, भार्गव; वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, १९७१. ३१८ पृ. १८.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

शर्मा, राजेश.
आधुनिक कथा-साहित्य : मान और मूल्य. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७३. ३६४ पृ. १२.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- तथा प्रतापचंद जैसवाल.
नए उपन्यास : स्वरूप और तत्व. आगरा, समीक्षा-लोक कार्यालय, १९७२. १५४ पृ. ८.००

शर्मा, सुभाषिनी.
स्वातंत्र्योत्तर आंचलिक उपन्यास. नयी दिल्ली, संजीव प्रकाशन, १९७६. १४० पृ. १८.००

शर्मा, सुषमा.
उपन्यास और राजनीति. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७६. २१९ पृ. १७.५०

शुक्ल, रामलखन, १९३४-
हिंदी उपन्यास कला. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२ १९३ पृ. १५.००

शैलबाला, १९२२-
हिंदी उपन्यास का प्रारम्भिक विकास. बाराबंकी, सत्य सदन; वितरक : गोपाल शंकर, लखनऊ, १९७३. १५८ पृ. १५.००

श्रीनिवासाचार्य, वेलुगलेटि, १९३२-
प्रेमचंद एवं तेलुगु के युगीन प्रतिनिधि उपन्यासकार. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार, १९७२. ३९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—उस्मानिया विश्व.

श्रीवास्तव, परमानंद, १९३५-
उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा : प्रमुख हिंदी उपन्यासों के आधार पर यथार्थ और भाषा के संबंधों की खोज. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. १७४ पृ. २०.००

सक्सेना, आदर्श.
हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७१. ३९७ पृ. ३२.००

सक्सेना, उषा, १९३४-
हिंदी उपन्यासों का शिल्पगत विकास. इलाहाबाद, शोध-साहित्य प्रकाशन, १९७२. ३९६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

सक्सेना, वीरेंद्र, १९४१-
काम-सम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७५. ११, ३१६ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

सहगल, मनमोहन, १९३२-
हिंदी-उपन्यास के पद-चिह्न. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७३. २३, ३३६ पृ. ३५.००

सहस्रबुद्धे, विमल, १९३१-
हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७४. ४१९ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

साहनी, भीष्म तथा अन्य.
आधुनिक हिंदी उपन्यास, भीष्म साहनी, रामजी मिश्र तथा भगवती प्रसाद निदारिया. दिल्ली, जाकिर हुसैन कालेज, १९७६. ५९३ पृ. २५.००

सिंह, त्रिभुवन, १९२९-
हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. ४१६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—भागलपुर विश्व.

सिंह, नामवर.
कहानी : नयी कहानी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. २४८ पृ. ७.५०

सिंह, रामविनोद, १९३९-
हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी-चरित्र. इलाहाबाद, शोध साहित्य प्रकाशन, १९७३. ३१० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—मगध विश्व.

सिंह, रामसेवक.
भारतीय अंग्रेजी कथा-साहित्य. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७२. १८० पृ. १६.००

सिंह, विजय मोहन, १९४२-
आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ४३० पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

सिंह, श्रीनारायण.
बीसवीं शताब्दी, हिंदी उपन्यास : नए दो पहलू. दिल्ली, लोकवाणी प्रकाशन, १९७६. ११७ पृ. १५.००

सिंह, संतबख्श, १९४२-
नई कहानी : कथ्य और शिल्प. इलाहाबाद, अभिनव भारती प्रकाशन, १९७३. २५, २७६ पृ. २५.००
संशो. शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

सिंहल, शशिभूषण, १९३३-
उपन्यास का स्वरूप. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन; प्रमुख विक्रेता : लायल बुक डिपो, १९७५. १५१ पृ. १६.००

सिनहा, सुरेश, १९४०-१९७२.
हिंदी उपन्यास; मानव-मूल्यों के सन्दर्भ में हिंदी उपन्यासों का नया परिप्रेक्ष्य. संशो. सं.२. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. ४०३ पृ. २५.००

सिनहा, रघुवीर.
आधुनिक हिंदी कहानी; समाजशास्त्रीय दृष्टि. नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७७. ११४ पृ. १०.००

सिन्हा, सुशील कांत, १९४१-
हिंदी के प्रगतिवादी उपन्यास : एक अध्ययन. इलाहाबाद, चित्रलेखा प्रकाशन, १९७६. ३०७ पृ. ३५.००

सुभद्रा, १९४०-
हिंदी उपन्यास; परम्परा और प्रयोग. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७४. ५८७ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध — अलीगढ़ मुस्लिम विश्व.

सुषमा प्रियदर्शिनी, १९३५- संपा.
हिंदी उपन्यास. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७२. २८२ पृ. १४.००

स्वर्णलता, १९३२-
स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी-उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. जयपुर, विवेक पब्लिशिंग हाउस, १९७५. ३२४ पृ. ३७.५०
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

नाटक-एकांकी

अग्रवाल, कुंवरजी, १९३३-
रंगमंच : एक माध्यम. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. ८८ पृ. १५.००

अग्रवाल, सुषमा.
समकालीन नाट्य-साहित्य और मोहन राकेश के नाटक. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७५. १५८ पृ. १५.००

अज्ञात.
रंगमंच : सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली, हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १९१ पृ. ६.००

अरोड़ा, ज्ञानवती.
हिंदी साहित्य में प्रहसन. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. २१६ पृ. ३५.००

अल्काज़ी, इब्राहिम तथा अन्य, संपा.
आज के रंग-नाटक. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. ४२४, १६ पृ. ५०.००

आद्य रंगाचार्य.
भारतीय रंगमंच. अनु. कृष्ण शर्मा. नयी दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, १९७४. १६६ पृ. ९.००

उपाध्याय, रामजी. १९२०-
मध्यकालीन संस्कृत-नाटक : समीक्षा, तथा इतिहास. सागर, संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, १९७४. १०, ५०४ पृ. २५.००

ओझा, दशरथ, १९१०-
नाट्य-निकष. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १२, २२६ पृ. २०.००

ओझा, दशरथ, १९१०-
हिंदी नाटक-कोश : सन् १९२५ से १९७० तक के हिंदी-नाटकों का ऐतिहासिक अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. २२, ६५४ पृ. ३५.००

ओझा, मान्धाता.
हिंदी नाट्य-समालोचना. दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, १९७६. १९४ पृ. २५.००

कीथ, ए. बेरीडेल, १८७९-१९४४.
संस्कृत नाटक. अनु. उदयभानु सिंह. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, १९६५. १५, ५१२ पृ.

कुसुमकुमार.
हिंदी नाट्य चिंतन. दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, १९७७. २८४ पृ. ४०.००

गाडगिल, म. के., १९१९-
हिंदी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. १०, ३४८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

गायकवाड़, ज्ञानराज काशीनाथ, १९३८-
आधुनिक हिंदी नाटकों में संघर्ष तत्त्व. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७५. ४१६ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

गार्गी, संतोष, १९२६-१९७३.
आधुनिक हिंदी और पंजाबी नाटक. पटियाला, भाषा विभाग, पंजाब, १९७४. ३२२ पृ. ५.२५

गुप्त, गंगा प्रसाद, १९३६-
हिंदी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार. रांची, कमल प्रकाशन, १९७१. १६, ६४ पृ. ४.००

गुप्त, रामकुमार, १९३७-
आधुनिक नाटक और नाट्यकार. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७३. २५२ पृ. २०.००

गुप्त, लाजपतराय, १९४०-
बीसवीं शताब्दी के हिंदी नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन. मेरठ, कल्पना प्रकाशन, १९७४. १५, ३०१ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—मेरठ विश्व.

चातक, गोविंद.
प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना. दिल्ली, साहित्य भारती, १९७५. ३२० पृ. ४०.००

चातक, गोविंद.
रंगमंच : कला और दृष्टि. नयी दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७६. १८४ पृ. २५.००

जैन, नेमिचंद्र, १९२७- तथा सुरेश अवस्थी, संक.
अंग्रेजी हिंदी थियेटर शब्दावली. नई दिल्ली, लिटिल थियेटर ग्रुप, १९६४. ६४ पृ. १.५०

जोध, प्र. रा.
संस्कृत नाटकों में प्राकृतभाषिणी स्त्रियां. नागपुर, १९६५. २, ३४ पृ. १.००

झा, प्रतापनारायण, १९३९-
मैथिली नाटक का उद्‌भव और विकास. बड़ौदा, कला संकाय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, १९७३. १३, २४१ पृ. १३.००
शोध-प्रबन्ध—म. स. विश्व.

झा, सीताराम 'श्याम', १९४१-
हिंदी नाटक : समाजशास्त्रीय अध्ययन. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. २४, ३९२ पृ.

ठाकुर, रवींद्रनाथ, १८६१-१९४१.
रवींद्रनाथ के नाटक. नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, १९६६-६७. २ भा. १६.००

तनेजा, जयदेव, १९४३-
समसामयिक हिंदी नाटकों में चरित्र-सृष्टि. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७१. २०८ पृ. २०.००
लघु-शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

तनेजा, सत्येंद्र.
हिंदी नाटक; पुनर्मूल्यांकन. कानपुर, ग्रंथम, १९७१. ३४० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—संशो. संस्करण.

तिवारी, रमेश.
हिंदी एकांकी : स्वरूप और विश्लेपण. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. १२, १८५ पृ. ६.००

त्रिपाठी, कृष्णकांत, १९३२-
संस्कृत साहित्य में रूपक कथात्मक नाटक. कानपुर, कमला प्रकाशन, १९७०. ६, १८३ पृ. ७.५०
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

त्रिपाठी, रमाकांत.
संस्कृत नाट्य सिद्धांत. वाराणसी, चौखंभा विद्या-भवन, १९६९. १२, २०८ पृ. १०.००

त्रिपाठी, विष्णुकुमार 'राकेश'.
नाटक के तत्त्व; सिद्धांत और समीक्षा. संपा. हीरालाल दीक्षित. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. १७१ पृ. ७.००

दीक्षित, दुर्गा.
नाटक और नाट्यशैलियां. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. ९० पृ. ७.००

दुबे, चंदूलाल, १९२६-
हिंदी रंगमंच का इतिहास. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७४. भा. १. ३५.००

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७- तथा पृथ्वीनाथ द्विवेदी.
नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक. सं. २. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. ३६५ पृ. १८.००

धीर, सुशीला, १९३६-
भारतेंदुयुगीन नाटक. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २२५ पृ. ११.००

नगेंद्र, १९१५-
आधुनिक हिंदी नाटक. नया सं. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. ८, ११४ पृ. ५.००

नवलकिशोर, १९३२- तथा रामचरण महेंद्र.
राजस्थान में हिंदी कथा और नाटक साहित्य के सौ वर्ष : सर्वेक्षण ग्रंथ. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७५. १२६ पृ. ७.५०

नम्र, विद्यावती लक्ष्मणराव, १९१७-
हिंदी रंगमंच और पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' (१८५३-१९६० ई.). वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. १७, ५६६ पृ. ६.००

नारायणन्, एन. आई., १९१९-
हिंदी और मलयालम के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७२. ३३१ पृ. २२.५०
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

पांडुरंगराव 'मुरली', १९३०-
आंध्र हिंदी रूपक. पटना, नागरी प्रकाशन, १९६०. १०, २३९ पृ. ७.५०
शोध-प्रबंध—नागपुर विश्व.

प्रसाद, वासुदेवनंदन, १९२५-
भारतेंदु-युग का नाट्य-साहित्य और रंगमंच. पटना, भारती भवन, १९७३. १७, २९६ पृ. १८.००

बापट, विजय, १९३६-
प्रसादोत्तर नाट्य-साहित्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. ८, २४६ पृ. १२.००

मनोत, राजेन्द्र कृष्ण.
हिंदी नाटक में नायक का स्वरूप; आदि से सन् १९४२ तक. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, १९७४. १६, ४६४ पृ. ६०.००
शोध-प्रवन्ध—पंजाव विश्व.

भरतिया, कांतिकिशोर, १९२८-
संस्कृत नाटककार. लखनऊ, सूचना विभाग, प्रकाशन शाखा, १९५९. १८, २५६ पृ. ४.००

भानावत, महेंद्र, १९३७-
लोकनाट्य : परंपरा और प्रवृत्तियां. जयपुर, वाफना प्रकाशन, १९७१. २८, ३४६ पृ. ३०.००

भानावत, महेंद्र, १९३२- संपा.
लोकरंग : भारतीय लोकनाट्यों की प्रतिनिधि विधाओं का प्रामाणिक विवेचन. उदयपुर, अनुसंधान विभाग, भारतीय लोक कला मंडल, १९७१. २७, ३७७ पृ. ३०.००

भारद्वाज, लक्ष्मीनारायण.
हिंदी-मराठी के ऐतिहासिक नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७३. ३९६ पृ. ५०.००
शोध-प्रवन्ध—दिल्ली विश्व.

मदान, इंद्रनाथ, संपा.
हिंदी नाटक और रंगमंच; पहचान और परख. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७५. २१४ पृ. २४.००

मल्होत्रा, सुषमा पाल.
प्रसाद के नाटक और रंगमंच. दिल्ली, राजपाल एंड सन्स, १९७४. १८३ पृ. २०.००

महेंद्र, रामचरण, १९१९-
हिंदी एकांकी और एकांकीकार. आगरा, सरस्वती प्रकाशन, १९५३.

माथुर, जगदीशचंद्र तथा दशरथ ओझा.
प्राचीन भाषा नाटक : मध्यकालीन नाटकों का संग्रह और विवेचन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. १६, ७७७ पृ. ७०.००

माली, शिवराम.
स्वच्छंदतावादी नाटक और मनोविज्ञान. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. ३५२ पृ. ४५.००
शोध-प्रवन्ध—शिवाजी विश्व.

माहेश्वर, १९३०-
हिंदी वंगला नाटक. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७४. १४, ३६७ पृ. ४०.००

मिश्र, नीलमणि. १९२९-
उड़िया नाटक और रंगमंच. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७२. १५९ पृ. २१.००

मिश्र, विभुराम, १९४७-
राष्ट्रीयता और हिंदी नाटक. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७३. २७० पृ. २५.००
शोध-प्रवन्ध—इलाहाबाद विश्व.

मिश्र, सुदर्शन.
नाट्यकला : प्राच्य एवं पाश्चात्य; एक विवरणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन. वाराणसी, भारत मनीषा, १९७४. १५, २६० पृ. ३०.००
शोध-प्रवंध—काशी-हिंदू विश्व.

रंगाचार्य, आद्य.
भारतीय रंगमंच. अनु. शुभा वर्मा. नयी दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १९७१. १९९ पृ. ६.००

राजपाल, हुकुमचंद्र.
नयी कविता की नाट्यमुखी भूमिका. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७६. २९८ पृ. ३५.००

राजेंद्र 'संजय' तथा अन्य, संपा.
रेडियो-रंगमंच नाट्य शिल्प. कुरसेंग, कलाभारती नाट्य संघ, १९६९. ६६ पृ. २.००

लाल, लक्ष्मीनारायण, १९२५-
आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७३. १३८ पृ. १५.००

लाल, लक्ष्मीनारायण, १९२५-
पारसी-हिंदी रंगमंच. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. २१३ पृ. २०.००

शर्मा, जयचंद्र, १९१९-
रंगमंच और नृत्य-प्रदर्शन. बीकानेर, श्री संगीत भारती, शोध विभाग, १९७१. ५६ पृ. २.५०

शर्मा, वीरवाला.
संस्कृत में एकांकी रूपक. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १०, ३८३ पृ. १४.००

शर्मा, विश्वनाथ.
भारत की हिंदी नाट्य संस्थाएं एवं नाट्यशालाएं. जोधपुर, कलम घर प्रकाशन, १९७३. ११५ पृ. १०.००

शर्मा, श्याम.
संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७४. २२, ४८४ पृ. ५०.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

शर्मा, सुंदरलाल.
हिंदी नाटक का विकास. दिल्ली, संजय प्रकाशन, १९७७. ३१२ पृ. ४०.००

शर्मा, सूरजकांत.
हिंदी नाटक में पात्र-कल्पना और चरित्र-चित्रण. दिल्ली, एस. ई. एस. बुक कम्पनी, १९७३. २०, ३१० पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—रांची विश्व.

शशिप्रभा शास्त्री, १९२३-
हिंदी के पौराणिक नाटकों का मूल स्रोत. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १३, ४१६ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

शुक्ल, भगवतीप्रसाद, १९२६-
प्रसादयुगीन हिंदी-नाटक. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १२, २८८ पृ. ११.००

शुक्ल सुरेशचंद्र 'चंद्र' तथा मसंद नीलम.
हिन्दी-नाटक और नाटककार. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७७. १५५ पृ. २०.००

श्यामसुंदरदास, १८७५-१९४५.
रूपक-रहस्य. संशो. सं. ५. इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, १९६७? १९१ पृ. ३.५०

सिंह, इंद्रपाल 'इंद्र', १९२६-
संस्कृत नाटक समीक्षा. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९६०. ८, २८५ पृ. ४.००

सिंह, गोरधन.
भरत और अरस्तू के नाट्य तत्त्वों की तुलना. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७४-७५. १३८ पृ. १५.००

सुरेंद्रदेव शास्त्री.
कालिदास और भवभूति के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन. मेरठ, साहित्य भंडार, १९६९. ३२३ पृ. २५.००

हेमंत, निर्मला, १९३८-
आधुनिक हिंदी नाट्यकारों के नाट्य-सिद्धांत. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७३. ४९३ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

साहित्यशास्त्र तथा आलोचना

अग्निहोत्री, प्रभुदयाल, संपा.
काव्यशास्त्र-प्रवेशिका. ग्वालियर, किताब घर. ७२ पृ. ३.००

अग्निहोत्री, श्रीनारायण, १९१२-
उपन्यास कला के तत्व. दिल्ली, इंडियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १७५ पृ. ४.००

अग्रवाल, माया.
भारतीय काव्य-शास्त्र. नई दिल्ली, कला मंदिर, १९७४. १२० पृ. ६.००

अग्रवाल, सुरेश तथा जगदीश शर्मा.
बृहत् भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य-शास्त्र. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७६. ४१६ पृ. ४०.००

अजितसेन.
अलंकारचिंतामणि. संपा. नेमीचंद्र शास्त्री. वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७३. ८६, ३८७ पृ. १८.००

अज्ञात.
रंगमंच : सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली, हिमालय पाकेट बुक, १९७३. १९१ पृ. ६.००

अभिनव गुप्त.
अभिनव भारती के तीन अध्याय; मूल संस्कृत और विश्वेश्वर सिद्धांत शिरोमणि द्वारा हिंदी भाष्य सहित. दिल्ली, विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, १९६०. ६२, ६४८ पृ. २५.००

अरस्तू.
काव्यशास्त्र. अनु. नगेंद्र तथा महेंद्र चतुर्वेदी. इलाहाबाद, भारती भंडार, १९७४. १६५,७५, ६, ४ पृ. १५.००

अवतरे, शंकरदेव, १९२६-
रस प्रक्रिया: रससिद्धांत का प्रामाणिक, परिष्कृत और मौलिक विवेचन. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १३, ३३८ पृ. ३४.००

अवतरे, शंकरदेव, १९२६-
साधारणीकरण; सांगोपांग, प्रामाणिक और परिष्कृत विवेचन. दिल्ली, यूनाइटिड बुक हाउस, १९७१. १३२ पृ. ७.५०

अवस्थी, ओउम्प्रकाश, १९३७-
आलोचना की फिसलन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७६. १३४ पृ. १५.००

अवस्थी, कृष्णदत्त, १९२७- तथा यतींद्रनाथ तिवारी.
काव्यशास्त्र. कानपुर, प्रत्यूष प्रकाशन, १९७२. ३१६ पृ. ८.००

अवस्थी, बच्चूलाल 'ज्ञान', १९१८-
ध्वनि-सिद्धांत तथा तुलनीय साहित्य-चिंतन. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. २०, ५७६ पृ. २५.००

अवस्थी, विजय बहादुर, १९३०-
काव्यांगदर्पण. दिल्ली, दिल्ली पुस्तक सदन, १९७२. ५८८ पृ. ४०.००

आनंदवर्धनाचार्य.
ध्वन्यालोक. अनु. पारसनाथ द्विवेदी. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १२, ११५ पृ. ३.५०

ओमप्रकाश, १९२४-
अलंकारों का स्वरूप-विकास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. १६, ४०० पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

कथूरिया, संदरलाल, १९४१-
आधुनिक युग में नवीन रसों की परिकल्पना. दिल्ली, विद्यार्थी प्रकाशन, १९७६. ८५ पृ. १२.५०

कथूरिया, सुंदरलाल, १९४१-
रस-सिद्धांत : आक्षेप और समाधान. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७२. १४० पृ. १२.००

कलवडे, सुधाकर.
साहित्यशास्त्र परिचय. कानपुर, पुस्तक संस्थान. २११ पृ. २०.००

कुलश्रेष्ठ, मथुरेश नंदन, १९३६-
टिलियर्ड का वक्रोक्ति-सिद्धांत. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७५. १११ पृ. १५.००

कृष्णकुमार.
अलंकारशास्त्र का इतिहास. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७५. ५२६ पृ. २०.००

केवलिया, मदन, १९३५-
पाश्चात्य साहित्यशास्त्र की भूमिका. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९७२. १८, २८८ पृ. २५.००

केशरी, विसेश्वरप्रसाद.
साहित्य के तत्त्व और आयाम. रांची, कमल प्रकाशन, १९७२. २१६ पृ. १०.००

खंडेलवाल, जयकिशनप्रसाद.
साहित्य दर्पण : आलोचनात्मक अध्ययन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. २१० पृ. ५.००

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. २१, २३३ पृ. १०.००

गुप्त, राकेश, १९२०- तथा ऋषि कुमार चतुर्वेदी.
साहित्यानुशीलन. इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९७२. ५५६ पृ. ३५.००

गुप्त, शांतिस्वरूप, १९३५-
कल्पना-तत्व. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७४. १६० पृ. १०.००

गुप्त, सुरेशचंद्र, १९३३-
काव्यशास्त्र : सिद्धांत और वाद. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७२. २२२ पृ. १५.००

गुप्त, सुरेशचंद्र, १९३३-
काव्यशास्त्रीय चिंतन : काव्यशास्त्र-रूपों और अनुसंधान प्रक्रिया संबंधी विवेचन. ग्वालियर, रवीन्द्र प्रकाशन, १९७२. १९३ पृ. १५.००

गुलाबराय, १८८३-१९६३.
काव्य के रूप. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७०. ८, २५० पृ. ७.५०

गुलाबराय, १८८३-१९६३.
सिद्धांत और अध्ययन. संशो. सं. ६. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७०. १२, २९९ पृ. ७.५०

गौतम, प्रेमप्रकाश, १९२९-
काव्यांगिनी. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७४. ३०६ पृ. २०.००

गौतम, प्रेमप्रकाश, १९२९-
चिंतन. दिल्ली, साहित्य-प्रकाशन, १९७३. १३५ पृ. १५.००

चतुर्वेदी, व्रजमोहन.
महिम भट्ट; संस्कृत साहित्यशास्त्र में अनुमितिवाद के प्रवर्तक ध्वनि विरोधी आचार्य महिमभट्ट की कृति एवं काव्य सिद्धांतों का गवेषणात्मक अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६८. १४, ३४७ पृ. २५.००

चौधरी, रामस्वार्म 'अभिनव'.
मधुर रस : स्वरूप और विकास. २ भा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९६८-७२. भा. १. मधुर रस : सैद्धांतिक विवेचन. २०.००; भा. २. मधुर रस : ऐतिहासिक विकास क्रम. ३०.००
शोध प्रबन्ध—पटना विश्व.

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
अलंकार, रीति और वक्रोक्ति. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७३. २८४ पृ. २०.००

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
काव्य का स्वरूप. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७४. १८४ पृ. १२.५०

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
काव्यशास्त्र के परिदृश्य : वैदिक युग से आधुनिक युग तक. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७५. ३६० पृ. ४०.००

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
भारतीय काव्यशास्त्र. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७४. ३८, ७९२ पृ. ६०.००

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
रस-सिद्धांत की प्रमुख समस्याएं. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७३. २६८ पृ. २०.००

चौधरी, सत्यदेव, १९२१-
शब्दशक्ति और ध्वनि-सिद्धान्त. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७३. १५४ पृ. १०.००

जगन्नाथप्रसाद 'भानु', १८५९-१९४७.
काव्य-प्रभाकर. संपा. सुधाकर पांडेय. नवसंपादित १. संस्करण. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७१? अनेक पृ. ५१.००

जायसवाल, हरीशचंद्र.
आलोचना; इतिहास एवं सिद्धांत. इलाहाबाद, वीना, १९७२. २०४ पृ. १५.००

जैतली, रमाशंकर, १९१५-
शृंगार रस: भावना और विश्लेषण. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. २२४, २४ पृ. १२.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ विश्व.

जैन, जगदीशचंद्र.
पाश्चात्य समीक्षा दर्शन. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. १६, ५१६ पृ. १८.००

जैन, निमर्ला, संपा.
नयी समीक्षा के प्रतिमान. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७७. १६० पृ. २४.००

जैन, निर्मला.
हिंदी आलोचना: बीसवीं शताब्दी. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. ९५ पृ. ११.००

जैन, निर्मला तथा भारतभूषण अग्रवाल.
उदात्त के विषय में; लोंगिनुस के कला-सिद्धांतों का अध्ययन और 'पेरि ह्प्सुस' का हिंदी अनुवाद. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७०. १६७ पृ. ११.००

जोशी, कृष्णवल्लभ, १९२९-
हिंदी साहित्यशास्त्र की भूमिका. इलाहाबाद, वसुमती प्रकाशन; एकमात्र वितरक: स्मृति प्रकाशन, १९७३. १६३ पृ. ९.००

जोशी, कृष्णवल्लभ, १९२९-
हिंदी साहित्यशास्त्र. इलाहाबाद, वसुमति प्रकाशन; वितरक: स्मृति प्रकाशन, १९७३. १०, २२७ पृ. १२.५०

जोशी, शशि.
काव्य-रूढ़ियां: आधुनिक कविता के परिप्रेक्ष में. जयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७२. ६, २७५ पृ. २८.००
शोध-प्रवन्ध—राजस्थान विश्व.

झा, शंभुदत्त.
रिचर्ड के आलोचना सिद्धांत. पटना, भारती भवन, १९६७. १०, १७७ पृ. ५.५०

झारी, कृष्णदेव.
उदात्त रस-सिद्धांत और नयी कविता. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. ७, २८० पृ. २०.००

झारी, कृष्णदेव.
रस-सिद्धांत और बीभत्स-रस का शास्त्रीय विवेचन. दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७७. २४१ पृ. ३०·००

झारी, कृष्णदेव.
हिंदी-साहित्य में बीभत्स-रस. दिल्ली, शारदा प्रकाशन, १९७७. ४७९ पृ. ३०.००

दंडी.
काव्यादर्श. अनु. रामचंद्र मिश्र. सं. २. वाराणसी, चौखंबा विद्याभवन, १९७२. २८, ३०४ पृ. १०.००

डे, सुशीलकुमार.
संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास. अनु. मायाराम शर्मा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २ भा. २५.००

तिवारी, भोलानाथ १९२३-
शैलीविज्ञान. दिल्ली, शब्दकार, १९७७. २०० पृ. २५.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा कृष्णदत्त शर्मा, अनु.
अभिव्यक्ति विज्ञान. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७४. ११६ पृ. १०.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा महेंद्र चतुर्वेदी, संपा.
काव्यानुवाद की समस्याएं. दिल्ली, शब्दकार, १९७४. १३२ पृ. ८.००

तिवारी, रामपूजन, १९१४-
पाश्चात्य काव्यशास्त्र. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७१. २७७ पृ. १३.००

तिवारी, विश्वनाथप्रसाद, १९४०-
नये साहित्य का तर्कशास्त्र. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १५५ पृ. १६.००

त्रिगुणायत, गोविंद.
शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत. दिल्ली, भारती साहित्य मंदिर, १९७०. भा. १. १० ००

त्रिपाठी, गिरिजादत्त, १९१०-
साहित्य के सिद्धांत; विश्लेपण एवं समीक्षा. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. ३०, ३०८ पृ. २५.००

त्रिपाठी, छविनाथ, १९२३-
मध्यकालीन कवियों के काव्य सिद्धांत : १६०० ईस्वी तक. दिल्ली, रिसर्च, १९७२. ४, २७० पृ. ३०.००

त्रिपाठी, रमाकांत.
संस्कृत नाट्य सिद्धांत. वाराणसी, चौखंबा विद्या भवन, १९६९. १२, २०८ पृ. १०.००

त्रिपाठी राममूर्ति, १९२९-
भारतीय काव्यशास्त्र; नई व्याख्या. इलाहाबाद, राका प्रकाशन; एकमात्र वितरक : साहित्य भवन, १९७४. २०७ पृ. १४.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९-
भारतीय काव्यशास्त्र : नये संदर्भ. दिल्ली, इण्डियन यूनिवर्सिटी प्रेस के लिए हिमालय पाकेट बुक्स, १९७३. १६० पृ. ४.००

त्रिपाठी, रामसागर तथा श्याम मिश्र.
समीक्षाशास्त्र के भारतीय तथा पाश्चात्य मानदंड. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. ५४४ पृ. ३०.००

त्रिपाठी, रुद्रदेव, १९२५-
संस्कृत-साहित्य में शब्दालंकार. दिल्ली, श्रीलाल-बहादुरशास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, १९७२. १६, ५५४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

त्रिपाठी, विष्णुकुमार 'राकेश'.
नाटक के तत्व : सिद्धांत और समीक्षा. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. १७५ पृ. ४.५०

दीक्षित, आनन्दप्रकाश, १९२५- संपा.
आलोचना : प्रक्रिया और स्वरूप. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. १६० पृ. २०.००

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५-
रस-सिद्धांत : स्वरूप-विश्लेषण. सं. २. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७२. ४६७ पृ. १८.००

दीक्षित, दुर्गा.
नाटक और नाट्यशैलियां. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. ९० पृ. ७.००

दीक्षित, दुर्गा.
रससिद्धांत का सामाजिक मूल्यांकन. पुणे, पुणे विद्यापीठ, १९७४. २२, २५९ पृ. १५.००
शोध-प्रबन्ध—पुण विश्व.

देमेत्रियस.
अभिव्यक्ति विज्ञान. अनु. भोलानाथ तिवारी तथा कृष्णदत्त शर्मा. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७४. ११६ पृ. १४.००

देवराज, नंदकिशोर, १९१७-
साहित्य समीक्षा और संस्कृतिबोध. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७७. ६, १६५ पृ. २३.५०

द्विवेदी, दशरथ.
अभिनव रस सिद्धांत. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ७९ पृ. ६.००

द्विवेदी, रेवाप्रसाद, १९३५-
आनंदवर्धन; आचार्य आनंदवर्धन के काव्यशास्त्रीय सिद्धांत-क्रम, पुनर्निर्धारण, चिंतन. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १०, १४, ५७६ पृ. २२.००

द्विवेदी, सूर्यनारायण.
भारतीय समीक्षा-सिद्धांत. वाराणसी, संजय बुक सेन्टर, १९७६. २७१ पृ. २५.००

द्विवेदी, हजारीप्रसास, १९०७- तथा पृथ्वीनाथ द्विवेदी.
नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक. सं. २. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. ३६५ पृ. १८.००

द्विवेदी, हरिहरनाथ.
निबंध : सिद्धांत और प्रयोग. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १६, १९१ पृ. ७.००

धनंजय.
दशरूपकम्. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ३७४ पृ. १६.००

धनमुनि.
वक्तृत्व-कला के बीज. आगरा, संजय साहित्य संगम, १९७२. भा. १-५. १०.०० (प्र.)

धनमुनि.
वक्तृत्व-कला के बीज. जयपुर, समन्वय मार्ग १९७३. ३१६, १२ पृ. १०.००

नगेंद्र, १९१५- संपा.
भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५-७६. २ भा. भा. १. भारत से लेकर वर्तमान हिंदी-आलोचकों तक के सैद्धांतिक वक्तव्यों का संचयन. सं ३. ५०.००; भा. २. संस्कृत-हिंदी के इतर ११ भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि आलोचकों के सैद्धांतिक वक्तव्यों का सार-संकलन. ३०.००

नगेंद्र, १९१५-
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका; रीति तथा वक्रोक्ति सिद्धांत. दिल्ली, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, १९६३. ३४९ पृ. १७.५०

नगेंद्र, १९१५- संपा.
भारतीय समीक्षा. लखनऊ, उत्तरप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७५. ४१७ पृ. १७.००

नगेंद्र, १९१५-
भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. २१२ पृ. २०.००

नगेंद्र, १९२५-
शैलीविज्ञान. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. ९५ पृ. १२.५०

नय्यर, एन. रामन.
होरेस की काव्य कला. जयपुर, रोशन लाल जैन एंड संस, १९७२. ७७ पृ. १०.००

नरोत्तमदास स्वामी.
अलंकार-पारिजात. सं. ५. आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९७२. ७, २०५ पृ. ३.००

नागर, रविशंकर.
व्यंजना विमर्श. दिल्ली, वन्दना प्रकाशन, १९७६. २९० पृ.

पांडेय, अरविंद.
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : एक दृष्टि. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७२. १६३ पृ. १०.००

पांडेय, राम व्यास तथा श्रीनिवास शर्मा, संपा.
समकालीन आलोचना के प्रतिमान. कलकत्ता, मणिमय प्रकाशन, १९७४. १९२ पृ. १०.००

पांडेय, शंभुनाथ, १९२३-
रस-अलंकार-पिंगल. संशो. सं. १२. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १६, १४९ पृ. २.५०

पांडेय, सुरेशचंद्र.
ध्वनि सिद्धांत : विरोधी सम्प्रदाय, उनकी मान्यताएं. इलाहाबाद, वसुमती प्रकाशन; वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७२. ३७६ पृ. २२.००
शोध-प्रबन्ध—इलाहाबाद विश्व.

पारेख, नगीनादास.
अभिनव का रस विवेचन. अनु. प्रेमस्वरूप गुप्त तथा अन्य. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. २७३ पृ. ३०.००

पालीवाल, कृष्णदत्त तथा रीतारानी पालीवाल.
यूनानी और रोमी काव्यशास्त्र. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७७. २०१ पृ. २५.००

पुरोहित, शांतिगोपाल, १९३२-
नाट्यदर्शन. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७०. ८, १९२ पृ. १५.००

पुरोहित, शांतिगोपाल, १९३२-
पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७२. १२४ पृ. ६.००

प्रशांतकुमार वेदालंकार, १९३७-
रसाभास. दिल्ली, शोध-प्रबंध-प्रकाशन, १९७२. १५, ३८४ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

प्रसाद, रामचंद्र.
आधुनिक हिंदी आलोचना पर पाश्चात्य प्रभाव. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. ५७५ पृ. ३५.००

प्रसाद, रामचन्द्र.
शैली. संपा. देवेन्द्रनाथ शर्मा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १९९ पृ. ७.००

प्रसाद, विश्वनाथ.
कला एवं साहित्य; प्रवृत्ति और परंपरा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २३९ पृ. ८.००

प्रसाद, शिवनंदन.
छंदशास्त्र. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७२. ८८ पृ. २.५०

प्रेमसागर, १९२८-
उदात्त भावना : एक विश्लेषण. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २०९ पृ. ११.००
शोध-प्रवन्ध—पंजाब विश्व.

बंसल, पुष्पा.
हिंदी काव्य-शास्त्र में कविता का स्वरूप-विकास, दिल्ली, शोध-प्रबंध प्रकाशन; वितरक : सूर्य प्रकाशन, १९७६. २४, ३४१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—पंजाब विश्व.

बालकृष्णराव, सी., १८७३-१९७५ तथा गोविंद रजनीश, संपा.
अभिव्यक्ति. आगरा, रंजन प्रकाशन. ८, १६८ पृ. १२.००

बाली, तारकनाथ, १९२३-
पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, १९७४. २८३ पृ. ३८.००

बोरा, राजमल, १९३३-
संवेदना और सौंदर्य. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७६. १८३ पृ. २०.००

ब्युरैक, ए. एस.
उपन्यास लेखन शिल्प. अनु. राममित्र चतुर्वेदी तथा अन्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २०७ पृ. ८.००

भट्ट, देवर्षि श्रीकृष्ण 'लाल'.
शृंगार रस माधुरी. संपा. लालचंद्रराव तेलंग. बेगमपुर, पद्माकर अनुसंधानशाला, १९७३. १३, ८०, १९५, ३५ पृ. २१.००

भट्टाचार्य, कांतिचंद्र, संग्रा.
काव्यदीपिका (अष्टमशिखा) : अलंकार-निरूपणम. संपा. रामकृष्ण आचार्य. सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, ७२ पृ. १.२५
हिंदी-संस्कृत में.

भरत मुनि.
नाट्यशास्त्रम् : 'प्रदीप'. संपा. एवं व्या. बाबूलाल शुक्ल. वाराणसी, चौखंबा संस्कृत सीरीज, १९७२. ८, ५७१ पृ. १५.००

भाटी, देशराजसिंह.
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र. सं. ४. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७३. ३५२ पृ. ८ ००

भानावत, महेंद्र, संपा.
लोकरंग; भारतीय लोकनाट्यों की प्रतिनिधि विधाओं का प्रामाणिक विवेचन. उदयपुर, अनुसंधान विभाग, भारतीय लोक कला मंडल, १९७१. २७, ३७७ पृ. ३०.००

भारतभूषण 'सरोज'.
साहित्यालोचन. सं. १२. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७०. ८, २६८ पृ. २.५०

मदान, इंद्रनाथ.
आधुनिकता और हिंदी आलोचना. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १८४ पृ. १६.००

मदान, इंद्रनाथ, संपा.
हिंदी आलोचना : पहचान और परख. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७४. २२४ पृ. २०.००

मम्मट.
काव्यप्रकाश. संपा. एस. एन. घोशाल शास्त्री. वाराणसी, चौखंबा संस्कृत सीरीज, १९७३. भा. १. ५०.००

मम्मट.
काव्यप्रकाश. संपा. मधुसूदन शास्त्री. वाराणसी, ठाकुरप्रसाद, १९७२. ३२, ५५४ पृ. १६.००

मम्मट.
काव्यप्रकाश. व्या. सत्यव्रत सिंह. वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, १९७३. ४७५ पृ. १२ ००

माथुर, के. सी.
हिन्दी अंग्रेजी पत्र-लेखन कला. दिल्ली, रतन एण्ड कम्पनी. २०० पृ. ५.००

मानव, विश्वंभर.
आधुनिक आलोचना के सिद्धांत. इलाहाबाद, किताब घर, १९७२. ७९ पृ. २.५०

मानव, विश्वंभर.
रस, छंद, अलंकार. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ६४ पृ. २.००

माहेश्वरी, चिन्मयी, १९४६-
रसगंगाधर; एक समीक्षात्मक अध्ययन. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १६, ५८२ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

मिश्र, गौरीशंकर 'द्विजेंद्र', १९१३-
हिन्दी-साहित्य का छंदोविवेचन. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७५. ५. ५९६ पृ. १८.५०

मिश्र, जगदीशप्रसाद.
पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७६. ४१६ पृ. १४.००

मिश्र, जगदीशप्रसाद.
पाश्चात्य साहित्यशास्त्र. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७४. ४१६ पृ. २०.००

मिश्र, भगवत्स्वरूप, १९२०-
आधुनिक समीक्षा. देहरादून, साहित्य सदन, १९७२. ३३६ पृ. २०.००

मिश्र, भगवत्स्वरूप, १९२०-
हिंदी-आलोचना; उद्भव और विकास. सं. ३. देहरादून, साहित्य सदन, १९७२. ६५० पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

मिश्र, भगीरथ.
काव्यशास्त्र : काव्य के स्वरूप, सिद्धांत और समस्याओं का प्रामाणिक विवेचन. सं. ५. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. ३१६ पृ. १२.५०

मिश्र, भगीरथ.
काव्यशास्त्र. सं. ६. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. ३१६ पृ. २०.००

मिश्र, भगीरथ तथा बालभद्र तिवारी.
काव्यांग-विवेचन. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७६. २०४ पृ. ११.००

मिश्र, रमेशचंद्र,
पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांत. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७४. ५१२ पृ: ३०.००

मिश्र, रामजी.
रीति काव्य के स्रोत. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. ३२४ पृ. ३२.५०
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

मिश्र, रामदरश, १९२५-
हिंदी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ. दिल्ली, मैकमिलन, १९७४. ३७६ पृ. ३८.००

मिश्र, रामप्रसाद.
आलोचना की कुछ नई दिशाएं. दिल्ली, प्रेम प्रकाशन, १९७७. १७३ पृ. २०.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
रीतिविज्ञान; सर्जनात्मक समीक्षा का नया आयाम. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. १९१ पृ. २०.००.

मिश्र, शोभाकांत, १९३६-
अलंकार-धारणा : विकास और विश्लेषण. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ८३२ पृ. २९.००

मिश्र, शोभाकांत, १९३६-
काव्यगुणों का शास्त्रीय विवेचन. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ४७७ पृ. १६.००

मिश्र, सत्यदेव.
पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धांत और वाद. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १२, ३१६ पृ. १८.००

मिश्र, सत्यप्रकाश, १९४५-
गीतिकाव्य : प्रकृति एवं स्वरूप. इलाहाबाद, अभिव्यक्ति प्रकाशन, १९७३. २०८ पृ. १८.००

मिश्र, सुदर्शन.
नाट्यकला : प्राच्य एवं पाश्चात्य; एक विवरणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन. वाराणसी, भारत मनीषा, १९७४. १५, २६० पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व., १९७१.

मुंडशेरी, जोसेफ.
काव्यपीठिका. अनु. रामचंद्र देव. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७३. ८८ पृ. ८.००

मेघ, रमेश कुंतल, १९३१-
कलाशास्त्र और मध्ययुगीन भाषिकीक्रांतियां. अमृतसर, हिंदी विभाग, गुरु नानक यूनिवर्सिटी, १९७५. ५४ पृ. ६.००

मेघ, रमेश कुंतल, १९३१-
सौंदर्य, मूल्य और मूल्यांकन. अमृतसर, गुरु नानक यूनिवर्सिटी, १९७५. ९१ पृ. १०.००

रघुवीरशरण.
संचारी भावों का शास्त्रीय अध्ययन. दिल्ली, श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, १९७३. १६, ३३९ पृ. २०.००

रामनाथन, के., १९३६-
तुलनात्मक अनुसंधान और आलोचना. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७४. १४७ पृ. १५.००

राय, कुबेरनाथ.
रस-आखेटक. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७०. २९०, ३ पृ. ८.५०

राय, कुबेरनाथ.
रीतिकालीन काव्यशास्त्र और पद्मनदास. बाराणसी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, १९७७. ३९१ पृ. ३५.००

राय, गोपाल.
उपन्यास का शिल्प. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १७६ पृ. ६.५०

वर्मा, भगवतीचरण, १९०३-
साहित्य के सिद्धांत तथा रूप. नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. १९३ पृ. १५.००

वर्मा, भगवानदास, १९३४-
साहित्यशास्त्र : प्रश्न और समाधान. कानपुर, ग्रन्थम, १९७३. १९१ पृ. १०.००

वर्मा, राजेन्द्र, १९१८-
साहित्य समीक्षा के पाश्चात्य मानदण्ड. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७०. १३, २२७ पृ. १०.००

वर्मा, रामकुमार, १९०५-
साहित्य-शास्त्र. परि. सं. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९६८. १६५ पृ. ७.५०

वर्मा, रामचंद्र, १९२९-
भारतीय काव्यशास्त्र. दिल्ली, अनिता प्रकाशन; वितरक : कला मंदिर, १९७४. ४०८ पृ. २५.००

वर्मा, रामचंद्र, १९२९-
शांत रस का काव्य-शास्त्रीय अध्ययन. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७४. ९६ पृ. १२.५०

विमल कुमार, संपा.
काव्य रचना-प्रक्रिया. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. २५१ पृ. ९.००

विश्वनाथ.
साहित्यदर्पण : विमलाख्यया हिंदी व्याख्यया विभूषित. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, १९७०. ३७१, १४ पृ. १३.००

विश्वनाथ.
साहित्यदर्पण. संपा. निरूपण विद्यालंकार. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७४. ८, ६१२ पृ. २०.००

वीरेंद्र सिंह, १९३४-
प्रतीक दर्शन. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७७. ११२ पृ. १५.००

शर्मा, अशोकशील.
समीक्षा-शास्त्र. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार. ४, १०४ पृ. ४.००

शर्मा, किशोरीलाल, १९२८-
पद-रचना : हिंदी के विशेष संदर्भ में. आगरा, श्रीराम मेहरा, १९७२? ६, ४३ पृ. २.००

शर्मा, कृष्णकुमार, १९३४-
ध्वनि-सिद्धान्त का काव्यशास्त्रीय, सौंदर्यशास्त्रीय और समाज मनोवैज्ञानिक अध्ययन. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. ३०० पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—इलाहाबाद विश्व.

शर्मा, कृष्णकुमार, १९३४-
व्यंजना : सिद्धि और परंपरा. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, १९७२. ६, १६८ पृ. ८.००

शर्मा, कृष्णकुमार, १९३४-
शैली-विज्ञान की रूपरेखा. जयपुर, संघी प्रकाशन, १९७४. १७६ पृ. २०.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
भारतीय काव्यशास्त्र : भारतीय काव्य-सिद्धांतों एवं काव्य-रूपों का अध्ययन. संशो. सं. ५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. १६, ३१५ पृ. ५.००

शर्मा, जगदीशदत्त, १९३०-
हिंदी तथा आंग्ल-भाषा के अलंकारों का तुलनात्मक अध्ययन. मुजफ्फरनगर, सुधा कमल ग्रंथालय, १९७५. ८, २२४ पृ. ३५.००
शोध प्रबन्ध—आगरा विश्व.

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८-
अलंकार-मुक्तावली. संशो. सं. पटना, भारती भवन, १९७१. २०, १७६ पृ. ४.२५

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८-
आचार्य भामह विरचित काव्यालंकार. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९६२. १९७ पृ. ५.००

शर्मा, प्यारेलाल शास्त्री.
आलोचना-प्रवेश. सं. ४. इलाहाबाद, हिंदी भवन, १९७२. २५० पृ. ३.९०

शर्मा, रामदत्त, १९४१-
पौरस्त्य एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७३. ३०, ११४ पृ. १२.००

शर्मा, रामसकल तथा अन्य.
हिंदी निबंध और रचना. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कंपनी, १९७१. १४१ पृ. ३.७५

शर्मा, रामाधार, १९३३-
समीक्षा के नये सन्दर्भ : शोध कृति. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७४. १६० पृ. १५.००

शर्मा, रामेश्वर, १९३१-
नये मान, पुराने प्रतिमान. नागपुर, अस्तेय प्रकाशन, १९६९. १०० पृ. ७.००

शर्मा, वेंकट, १९२४-
काव्य-सर्जना और काव्यास्वाद. दिल्ली, आत्माराम, १९७३. १८, ६७० पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

शर्मा, शिवशरण, १९२८-
आचार्य भरत. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १९६ पृ. १०.००

शर्मा, हरद्वारीलाल.
चिंतन के नये आयाम. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७६. १९५ पृ. १३.००

शर्मा, हरद्वारीलाल.
सुंदरम. लखनऊ, हिंदी समिति, १९७५. २५० पृ. ८.००

शिवमंगल.
आलोचना से आलोचना और अनुसन्धान से अनुसन्धान. पटना, दिल्ली पुस्तक सदन, १९७२. १०३ पृ. ८.००

शुक्ल, रामलखन, १९३४-
भारतीय साहित्य-शास्त्र के सिद्धान्त. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७३. २१२ पृ. १५.००

शुक्ल, रामलखन, १९३४-
साहित्य की विधाएं. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७२. १३६ पृ. ११.००

शुक्ल, रामलखन, १९३४-
हिंदी उपन्यास कला. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. १६३ पृ. १५.००

शुक्ल, सरला.
पाश्चात्य जीवनी कला. लखनऊ, हिंदी समिति, १९७३. १३० पृ. ५.००

श्यामसुंदरदास, १८७५-१९४५.
रूपक-रहस्य. संशो. सं. ५. इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, १९६७? १९१ पृ. ३.५०

श्रीवास्तव, देवकीनंदन, १९२८-
काव्यशास्त्र-चर्चा. लखनऊ, नंदन प्रकाशन, १९७२. २६४ पृ. १५.००

श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, १९३६-
शैलीविज्ञान और आलोचना की नई भूमिका. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७२. ९६ पृ. ६.००

श्रीवास्तव, सुखस्वरूप.
रीति-काव्य में शृंगार-निरूपण. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. १५५ पृ. १२.५०

संतराम.
अच्छी चिट्ठी लिखने की रीति. संपा. विश्ववंधु. होशियारपुर, वि. वै. शोध संस्थान, १९७०. ७३, ६ पृ. १.७५

संसारचंद्र.
आकलन और समीक्षा. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. १७२ पृ. १०.००

संसारचंद्र.
छंदोलंकार-प्रदीप. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. १२, २१४ पृ. ५.००

सप्रे, धुंडिराज गोपाल.
आचार्य मम्मट. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १०, १६० पृ. ६.००

सहाय, राजवंश 'हीरा', १९२९-
अलंकारों का ऐतिहासिक विकास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १२, ६९१ पृ. ३५.५०

सहाय, राजवंश 'हीरा', १९२९-
भारतीय आलोचनाशास्त्र. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७६. ८५६ पृ. ३१.००

सहाय, राजवंश 'हीरा', १९२९-
भारतीय साहित्यशास्त्र कोश. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १४६३ पृ. ५०.००

सिंह, गोरधन.
भरत और अरस्तू के नाट्य तत्वों की तुलना. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७४-७५. १३८ पृ. १५.००

सिंह, चंद्रप्रकाश.
शोध साधना. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. भा. १ (२४० पृ.). १२.००

सिंह, पुष्पपाल, १९४१-
काव्य-मिथक. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७१. ६४ पृ. ६.००

सिंह, राजकिशोर.
आचार्य मम्मट और काव्य प्रकाश. लखनऊ, प्रकाशन केंद्र, १९७१. २८७ पृ. ६.००

सिंह, शंभुनाथ, १९१६-
हिंदी आलोचना के ज्योति-स्तम्भ. वाराणसी, समकालीन प्रकाशन, १९७२. १०३ पृ. ४.००

सिंहल, ओमप्रकाश तथा असद माजदा.
संक्षेपण कला. दिल्ली, एस. ई. एस. प्रकाशन, १९७०. ७९ पृ. ४.००

सीतारामदीन.
साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७१. १०, २१४ पृ. ८.५०

सुखबीर सिंह.
समीक्षा के नए प्रतिमान. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. १७१ पृ. २५.००

सुरेशकुमार.
शैलीविज्ञान; संपा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा रमानाथ सहाय. दिल्ली, मैकमिलन, १९७७. २६१ पृ. २७.००

सुरेशकुमार तथा रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, संपा.
शैली और शैलीविज्ञान. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७६. ८, २२८ पृ. १८.५०

सेन, अजित.
अलंकार चिन्तामणि. संपा. नेमचंद्र शास्त्री. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७३. ३८३ पृ. १८.००

हंस, कृष्णलाल, १९०९-
समीक्षा-शास्त्र. कानपुर, ग्रन्थम, १९७५. १६, ६३१, २३ पृ. ७५.००

हेमंत, निर्मला, १९३८-
आधुनिक हिंदी नाट्यकारों के नाट्य-सिद्धांत. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७३. ४६३ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

भाषाविज्ञान तथा व्याकरण

आकाशवाणी शब्दकोश. नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, सूचना तथा प्रसार मंत्रालय, १९७०. ४, ४३२ पृ. १०.५०

अग्रवाल, जादव प्रसाद, १९११- तथा प्रतिमा अग्रवाल. शब्दार्थ प्रकाश; आधुनिक भाषा-विज्ञान की सभी मान्यताओं का तर्कपूर्ण खंडन. लखनऊ, भारतीय विद्या संस्थान, १९७४. १४, ३७६ पृ. २४.००

अग्रवाल, दामोदर, १९३२- संपा. अंग्रेजी साहित्य कोष. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. ६, ३७६ पृ. २०.००

अग्रवाल, सरयूप्रसाद, १९२२- अवध के स्थान-नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. लखनऊ, विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, लखनऊ विश्वविद्यालय, १९७३. २०, ३१८, १८ पृ. २५.०० शोध प्रबंध—लखनऊ विश्व

अङगामी, शर्ह्‌ जोलिस तथा राधेश्यामसिंह गौतम. अङगामी हिंदी स्वयं शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, ६२ पृ. ३.००

अरुण, अवधेश्वर. वज्जिका, हिंदी और भोजपुरी; तुलनात्मक अध्ययन. मुजफ्फरपुर, कुमुद प्रकाशन, १९७२. ५९ पृ. ३.५०

अरुण, अवधेश्वर. हिंदी भाषा का स्वरूप विकास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १९२ पृ. ७.००

अवधेश प्रतापसिंह यूनिवर्सिटी, रेवा. सामान्य हिंदी संकलन. रेवा, पुस्तक निकेतन, १९७०. भा. १. ४.२५

आंजनेयशर्मा, वेमूरी. हिंदी-तेलुगु स्वयं शिक्षक. दिल्ली, मैनेजर आफ पब्लिकेशन. ६, १९२ पृ. १.५०

आप्टे, वामन शिवराम. संस्कृत-हिंदी कोष. सं. ३. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, १९७३. १३६४ पृ. २०.००

आर्य, सदाविजय तथा रमेश मिश्र. हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास. अजमेर, चित्रगुप्त प्रकाशन, १९७१. १२० पृ. १२.००

आसोपा, रामकर्ण शर्मा, १८५६-१९४३. मारवाड़ी व्याकरण. संपा. राजकृष्ण दूगड़ तथा अन्य. जयपुर, पं. रामकर्ण आसोपा राजस्थान-विद्या शोध संस्थान, १९७५. १२० पृ. १५.००

इंदिरा 'नूपुर'. भाषा शिक्षण : कुछ नये विचार-बिंदु. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ७६ पृ. २.५०

इंदूलेखा रूसी भाषा और संस्कृत में आंतरिक समानता. दिल्ली, नवभारती सहकार प्रकाशन प्रतिष्ठान. ३२ पृ. १.२५

इंद्रा, १९४५- प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन. वाराणसी, १९७३. १०, २९८ पृ. २५.०० शोध प्रबन्ध —काशी हिंदू विश्व.

उत्तरप्रदेश. भाषा विज्ञान. न्यायालय कोश; उत्तर प्रदेश के न्यायलयों में प्रयुक्त अरबी-फारसी शब्दों के हिंदी पर्याय. इलाहाबाद, राजकीय मुद्रणालय, उत्तर प्रदेश, १९६४. १२३ पृ. १.००

उपाध्याय, रामजी, १९२०- संस्कृत व्याकरण; रचना तथा निबन्ध. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९६६. ३४९ पृ.

उपाध्याय, लालजी, संपा. हिंदी ही क्यों? पूना, करमरकर सत्कार समिति, १९७१. ७२ पृ.

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
चखेसां व्याकरण की रूपरेखा (चोकरी बोली). कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, १४ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
पोचुरी व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, २८ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
फोम् व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, २० पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
यिमचुङर व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, २० पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
रेनमा व्याकरण की रूप रेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, २९ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
लियांनाई-शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ८, २२ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
लोथा हिंदी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ४, १४० पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
साङतम व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा पपिपद, १९७२. ४, १४ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
सोमा हिंदी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ६, १२४ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
हिंदी गाङ्ते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
हिंदी मिजो कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ११९ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
हिंदी वाङ्चो अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
हिंदी सिमुते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३० पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा एच. एम. साइवोर्त.
हिंदी खासी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २०० पृ. १०.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा एस. लोली चा.
हिंदी माओ कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. १५२ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा केन्तोःअत.
हिंदी-आदि अंग्रेजी शब्द-सूची; गालोङ् बोली. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा तात हुइ.
हिंदी हिल-मिरी अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी १९४१- तथा तारिन् मालो.
हिंदी निशी अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा तोहुआ आल्लुङ्, संपा.
हिंदी नोक्ते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा थाङ्खोन्हेल, संपा.
हिंदी कुकी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, ८६ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा थाङ्खोन्हेल.
हिंदी ह्मार कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १२० पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा थिमासे पोचुरी, संपा.
हिंदी पोचुरी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा परमहंस प्रमोद.
हिंदी अनाल शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. २८ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा परमहंस प्रमोद.
हिंदी वाइफे शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. २८ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा रेती पुलु.
हिंदी इदू शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १६ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा सामुलेक योङ्साम.
हिंदी ताङ्सा अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा हरिप्रसाद गोर्खा राय, संपा.
हिंदी कर्वी (मिकिर) कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ६० पृ. ६.००

उपाध्याय, वासुदेव.
गुप्त अभिलेख. पटना, विहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. २८, ४४४ पृ. ५१.००

उपाध्याय, शालिग्राम, अनु-
आचार्य हेमचंद्र का अपभ्रंश व्याकरण. वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९६५. ४६, ११४ पृ. ५.५०

उप्रेती, भवानीदत्त, १९३५-
कुमाउंनी भाषा का अध्ययन : पिठौरागढ़-क्षेत्र के विशिष्ट संदर्भ में कुमाउंनी-बोलियों का भाषाशास्त्रीय-संकालिक अध्ययन. इलाहाबाद, कुमाउंनी-समिति के लिए स्मृति प्रकाशन, १९७६. १५, २६० पृ. २५.००
शोध-प्रवन्ध—इलाहाबाद विश्व.

उप्रेती, भवानीदत्त, १९३५-
हिंदी भाषा और लिपि का विकास स्वरूप. इलाहाबाद, रामदयाल अग्रवाल, १९७२. १२, २४२ पृ. ४.००

उर्दू-हिन्दी शब्द कोष. सं. २. लखनऊ, हिन्दी समिति, १९७२. ७५५ पृ. १८.००

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, १८६३-१९४७.
भारतीय प्राचीन लिपिमाला. सं. ३. नई दिल्ली, मुंशीराम मनोहरलाल, १९७१. १५, १९६, ८४ पृ. ७५.००

ओझा, रसिक विहारी 'निर्भीक', १९३५-
भोजपुरी शब्दानुशासन. जमशेदपुर, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, १९७५. १४८ पृ. ११.००

ओम्प्रकाश.
अलंकारों का स्वरूप-विकास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. १६ ४०० पृ. ४५.००

ओल्डेनवर्ग, एच.
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा और धर्म. अनु. उमेशचंद्र. वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९७१. ९६ पृ. ४.००

कत्रे, एम. एम.
प्राकृत भाषाएं और भारतीय संस्कृति में उनका अवदान. अनु. रमाशंकर जैतली. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ९४ पृ. ६.००

कपिलदेव शास्त्री.
संस्कृत व्याकरण में गणपथ की परंपरा और आचार्य पाणिनी, गणपाठों का एक तुलनात्मक अध्ययन. अजमेर, भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, १९६१. १९४ पृ.

कपूर, बदरीनाथ, संपा.
लोकभारती मुहावरा कोश. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. ४८६ पृ. ३०.००

कपूर, सीताराम.
सरस्वती व्याकरण. संशो. गोपाल शंकर नागर. सं. १७. मथुरा, सरस्वती प्रकाशन, १९७४. ४, ९६, ३६ पृ. १.५०

कर्णसिंह.
भाषाविज्ञान. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७४. ३२९ पृ. १२.००

कांगड़ी शब्द-संग्रह. पटियाला, भाषा विभाग, १९६४. १२, १७४ पृ. ११.७५

काचरू, यमुना, १९३३-
हिंदी रूपांतरणात्मक व्याकरण के कुछ प्रकरण. आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, १९७३. ५९ पृ. १०.००

कानत, पी. जी.
अन्य भाषा शिक्षण; एक भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि. शुरावूर, उमा ऐंटरप्राईज़िज़, १९७२. १३६ पृ. ५.००

कामता कमलेश.
व्यावहारिक हिंदी : प्रयोग एवं विधि. इलाहाबाद, अभिव्यक्ति प्रकाशन, १९७३. १३६ पृ. १०.००

किराड़ू, भगवानदास, १९४६-
बीकानेरी-प्रत्यय; बीकानेरी आवद्ध रूपों का वर्णनात्मक अध्ययन. बीकानेर, श्री गणेश शक्ति प्रकाशन, १९७१. १६. १४० पृ. १२.५०
शोध-प्रवंध, संशोधित—राजस्थान विश्व.

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
अङगामी हिंदी-अंग्रेज़ी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ४, १५२ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी १९४१- संपा.
आओ-हिंदी-अंग्रेजी-कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ८, १०९ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
आओ हिंदी स्वयं शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ३४, ६ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१-
कोन्यक व्याकरण की रूप रेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, २६ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- संपा.
सेमा हिंदी स्वयं शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा-परिषद, १९७३. ४२ पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
चखेसां व्याकरण की रूपरेखा (चोकरी बोली). कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, १४ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
पोचुरी व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, २८ पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
फोम् व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, २० पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
यिमचुङर व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, २० पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
रेनमा व्याकरण की रूप रेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, २९ पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- संपा.
लियांनाई-शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ८, २२ पृ. ३.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- संपा.
लोथा हिंदी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ४, १४० पृ. ५.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
साङतम व्याकरण की रूपरेखा. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, १४ पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- संपा.
सोमा. हिंदी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७१. ६, १२४ पृ. ५.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी गाङ्ते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी मिजो कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ११९ पृ. ५.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी वाङ्चो अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी सिमूते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३० पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा एच. एम. साइवोर्त.
हिंदी खासी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २०० पृ. १०.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा एस. लोली चा.
हिंदी माओ कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. १५२ पृ. ५.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा केन्तो अत.
हिंदी आदि अंग्रेजी शब्द-सूची; गालोङ् बोली. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा तात् हुइ.
हिंदी हिल-मिरी अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी १९४१- तथा तारिन् मालो.
हिंदी निशी अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २८ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा तोहुथा आलुक्, संपा.
हिंदी नोक्ते अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा थाङ्खोव्हेल, संपा.
हिंदी कुकी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, ८६ पृ. ३.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा थाङ्खोव्हेल.
हिंदी ह्मार कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १२० पृ. ५.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा थिप्रासे पोचुरी, संपा.
हिंदी पोचुरी अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा परमहंस प्रमोद.
हिंदी अनाल शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. २८ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा परमहंस प्रमोद.
हिंदी वाइफे शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. २८ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा रेती पुलु.
हिंदी इदू शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १६ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा सामलेक योङ्साम.
हिंदी ताङसा अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३१ पृ. १.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा हरिप्रसाद गोर्खा राय, संपा.
हिंदी कर्बी (मिकिर) कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ६० पृ. ६.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी आपातानी अंग्रेजी शब्द सूची. कोहिमा, नागालैंड भापा परिषद, १९७४. ३२ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी कोन्यक अंग्रेजी कोप. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७३. ४, १५६ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी कोम शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७५. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी खियमङ्न अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७४. २९ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी खेजा अंग्रेजी कोश. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७४. १९९ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी गारो कोश. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७४. १८० पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी चन अंग्रेजी कोप. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७३. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी चाखेसांग अंग्रेजी कोप (चोकरी वोली). कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७२. ६, १३८ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी जेरियां अंग्रेजी कोप (जेमी वोली). कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७३. ४, ९५ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी जोउ शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७५. २७ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी दिमासा कछारी कोश. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७५. ७६ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी पाइते कोश. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७५. १२८ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी फोम् अंग्रेजी कोप. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७३. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी नराम शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भापा परिपद, १९७५. १६ पृ. १.००

कुमार, व्रजकुमार, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी मेम्वा शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिपद, १९७५. १६ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी यिमचुङ्र अंग्रेजी कोप. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, १०४ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी रेङ्मा अंग्रेजी कोप. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिपद, १९७३. १२६ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी साङ्तम अंग्रेजी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. १०४ पृ. ४.००

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
देवनागरी का क्रमिक विकास. नई दिल्ली १९७०. १०० पृ. ३.४५

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
वृहत् पारिभापिक शब्द संग्रह (विज्ञान). दिल्ली, निर्माण तथा प्रकाशन, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, १९७३. २०२८ पृ. ३४.५०

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
वार्पिक रिपोर्ट, १९६५-६६, १९६६-६७, १९६७-६८. नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, १९६९. ४, ९१ पृ.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोप. नई दिल्ली, १९६६. १६, ३०७ पृ.

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी की आधारभूत शब्दावली. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६७. ५, १४३ पृ. २.००

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी की क्रियाएं : प्रयोग, आवृत्ति और रचना. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान. ६, ६८ पृ. १.५०

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी-परसर्ग. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६८. ४, ३३ पृ. १.००

केशरी, विसेश्वरप्रसाद, १९३३-
नागपुरी भापा और साहित्य. रांची, कमल प्रकाशन, १९७१. ६७ पृ. ३.००

कौयिक, देवदत्त, १९४०-
भापा विज्ञान. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. १६, ३३६ पृ. १०.००

कौसल्यायन, भदंत आनंद, १९०५- संपा.
पाली हिंदी कोप. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. ३६७ पृ. ५०.००

कौसल्यायन, भदंत आनंद, १९०५-
सिंहल भाषा और साहित्य. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १४४ पृ. १०.००

खंडेलवाल, जयकिशनप्रसाद, १९३२-
आदर्श हिंदी व्याकरण तथा पत्र-लेखन. ग्वालियर, किताब घर. ६, १७० पृ. ३.०

खंडेलवाल, जयकिशनप्रसाद, १९३२-
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान : आलोचनात्मक अध्ययन. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १२, १८४ पृ. २.५०

गाणार, वी. आर. 'राव'
अशोक के अभिलेख. नागपुर, विश्वभारती प्रकाशन, १९७१. १२, ८८ पृ. २.५०

गुप्त, ओमप्रकाश, १९३९-
हिंदी-डोगरी-परप्रत्यय. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कंपनी, १९७४. ३८४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—जम्मू विश्व.

गुप्त, ओमप्रकाश, १९३९-
हिंदी-डोगरी-परसर्ग; विवरणात्मक भाषा-वैज्ञानिक पद्धति पर परिनिष्ठित हिंदी तथा डोगरी के परसर्गो का तुलनात्मक अध्ययन. जम्मू, रश्मि प्रकाशन, १९६६. १७६ पृ. ६.००
शोध-प्रबन्ध—केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

गुप्त, गणेशप्रसाद.
अर्थग्रहण परीक्षण. नई दिल्ली, गुप्ता प्रकाशन, १९६८. १९२ पृ. २.५०

गुप्त, मोतीलाल, १९१०-
आधुनिक भाषा विज्ञान; चिंतन की कतिपय दिशाएं. दिल्ली, रिसर्च, १९७२. १२३ पृ. २५.००

गुप्त, मोतीलाल, १९१०-
भाषा-विश्लेषण. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, १९७४. भा. १. १५.००

गुप्त, मोतीलाल, १९१०- तथा रघुवीर सहाय भटनागर.
आधुनिक भाषाविज्ञान की भूमिका. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. ३०० पृ. १७.००

गुप्ता, वेद.
राष्ट्र-भाषा रचना. नई दिल्ली, रचना प्रकाशन, १९७४. १२८ पृ. २.००

गुरु, अरविंद.
भाषा बोधिनी. सं. २. रेवा, पुस्तक निकेतन, १९७२. ८, १८३ पृ. ४.००

गोस्वामी, श्रवणकुमार, १९३८-
नागपुरी भाषा. पटना, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७६. ८, १२८ पृ. ८.००

गोस्वामी, श्रवणकुमार, १९३८-
नागपुरी शिष्ट साहित्य. दिल्ली, रिसर्च, १९७२. १४६ पृ. २५.००

गौतम, राधेश्यामसिंह.
अङगामी व्याकरण. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद १९७०. १२, ११७ पृ. ५.००

गौतम, राधेश्यामसिंह.
आओ भाषा का व्याकरण. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९६९. २०, १५५ पृ. ६.००

गौतम, राधेश्यामसिंह.
लोथा व्याकरण. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७०. ८, ६५ पृ. ५.००

ग्रियर्सन, जार्ज अब्राहम, १८५१-१९४१.
भारत का भाषा सर्वेक्षण. अनु. हरदेव बाहरी. लखनऊ, हिंदी समिति. भा. ९. पंजाबी. १९७०. १६, २३४ पृ. ८.००; भा. ९. पश्चिमी हिंदी. १९६७. १६, ३२० पृ. ८.५०

चंद्रशेखर आजाद.
गढ़वाली-हिंदी कहावत कोश. नई दिल्ली, तक्षशीला प्रकाशन, १९७७. २२२ पृ. ३५.००.

चतुर्वेदी, नर्मदेश्वर, १९१५-
विश्व हिंदी का भविष्य. इलाहाबाद, पूर्वांचल प्रकाशन, १९७५. १२, १७९ पृ. १२.५०

चतुर्वेदी, महेंद्र, १९२५- तथा ओमप्रकाश गाबा.
व्यावहारिक पर्याय कोश. दिल्ली, शब्दकार, १९७२. १९७ पृ. १२.५०

चतुर्वेदी, महेंद्र, १९२५- तथा भोलानाथ तिवारी.
व्यावहारिक हिंदी अंग्रेजी कोश. संशो. सं. २. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. १६, ८७५ पृ. ३५.००

चतुर्वेदी, महेंद्र, १९२५- तथा भोलानाथ तिवारी.
संक्षिप्त हिंदी अंग्रेजी कोश. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. ३६२ पृ. १३.००

चतुर्वेदी, शिवनारायण.
आवेदन प्रारूप. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७२. २१४ पृ. १२.००

चतुर्वेदी, सीताराम, १९०९-
लेखन-कला. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, ११५ पृ. २.२५

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी आपातानी अंग्रेजी शब्द सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. ३२ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी कोन्यक अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, १५६ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी कोम शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. ३१ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी खियमङ्न अंग्रेजी शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. २९ पृ. २.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी खेजा अंग्रेजी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. १९९ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी गारो कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७४. १८० पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी चन अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी चाखेसांग अंग्रेजी कोष (चोकरी बोली). कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ६, १२८ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी जेरियां अंग्रेजी कोष (जेमी बोली). कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, ६५ पृ. ३.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी जोउ शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. २७ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी दिमासा कछारी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. ७६ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी पाउते कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १२८ पृ. ५.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी फोम् अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, १०० पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी मराम शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १९ पृ. १.००

कुमार, व्रजकुमार, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी मेम्वा शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. १६ पृ. १.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी यिमचुङ्र अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. ४, १०४ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य, संपा.
हिंदी रेङ्मा अंग्रेजी कोष. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. १२६ पृ. ४.००

कुमार, व्रजविहारी, १९४१- तथा अन्य.
हिंदी साङ्तम अंग्रेजी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७३. १०४ पृ. ४.००

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
देवनागरी का क्रमिक विकास. नई दिल्ली १९७०. १०० पृ. ३.४५

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
वृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (विज्ञान). दिल्ली, निर्माण तथा प्रकाशन, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, १९७३. २०२८ पृ. ३४.५०

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
वार्षिक रिपोर्ट, १९६५-६६, १९६६-६७, १९६७-६८. नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय, १९६९. ४, ९१ पृ.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली.
व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोष. नई दिल्ली, १९६६. १६, ३०७ पृ.

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी की आधारभूत शब्दावली. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६७. ५, १४३ पृ. २.००

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी की क्रियाएं : प्रयोग, आवृत्ति और रचना. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान. ६, ६८ पृ. १.५०

केंद्रीय हिंदी संस्थान.
हिंदी-परसर्ग. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६८. ४, ३३ पृ. १.००

केशरी, विशेश्वरप्रसाद, १९३३-
नागपुरी भाषा और साहित्य. रांची, कमल प्रकाशन, १९७१. ६७ पृ. ३.००

कौशिक, देवदत्त, १९४०-
भाषा विज्ञान. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. १६, ३३६ पृ. १०.००

कौसल्यायन, भदंत आनंद, १९०५- संपा.
पाली हिंदी कोष. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. ३६७ पृ. ५०.००

जोहारी, गजानन.
शब्दसुधा. पूना, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, १९६९. ४, ५८ पृ. १.००

झा, उमानाथ तथा अन्य, संपा.
पूर्वांचलीय भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक पारस्परिक प्रभाव : विचार गोष्ठी, विद्यापति पर्व समारोह, १९७२. पटना, चेतना समिति. १९७२. २५५ पृ. ४.००
मैथिली, अंग्रेजी, हिंदी में.

झा, गोविंद, १९२३-
मैथिली भाषा का विकास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १४, ३३६ पृ. १३.००

झा, गोविंद, १९२३-
लघुविद्योतन : मिथिला-भाषा-विद्योतनक संक्षिप्त औ सरल रूप. दरभंगा, दरभंगा प्रेस कम्पनी, १९६९. ८, १७४ पृ. ४.५०

झा, गोविंद, १९२३-
व्याकरण-रचना-विजय. पटना, भारती भवन, १९७१. १४४ पृ. १.७५

झा, तारिणीश तथा अन्य, संपा.
संस्कृत-लोकोक्ति-संग्रह. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७४. १४, ३८३ पृ. १५.००

झा, दीनबंधु.
मिथिलाभाषाकोष. इसहपुर, जिला दरभंगा, १९५९. ६०, ३५५ पृ. मैथिली में.

झा, बालगोविंद 'व्यथित', १९३२-
आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना. सं. ३. दरभंगा, भारती प्रकाशन केंद्र; सोल एजेंट : भारती पुस्तक केंद्र, १९७६. २५२ पृ. ६.५०

झा, राजेश्वर, १९२५-
अवहट्ट : उद्भव ओ विकास. पटना, मैथिली साहित्य संस्थान, १९७५. १११ पृ. १०.००
मैथिली में.

झा, राजेश्वर, १९२५-
मिथिलाक्षरक उद्भव और विकास. रसुआर, जिला सहरसा, शंभुनाथ झा, १९७१. ७, ११७ पृ. १५.००

ठाकुर, मोलूराम.
पहाड़ी भाषा, कुलुई के विशेष संदर्भ में. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७५. ३२७ पृ. ४०.००

त्याम, पूर्णसिंह, १९३८-
हिंदी में देशज शब्द. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २२७ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

तिवारी, उदयनारायण.
पाणिनि के उत्तराधिकारी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. २३४ पृ. १२.००

तिवारी, पुरुषोत्तमलाल.
सर्वोपयोगी हिंदी सुधार कार्यक्रम. अजमेर, मित्रा ब्रदर्स, १९७५. १०० पृ. ७.००

तिवारी, पुरुषोत्तमलाल.
हिंदी ध्वनियों का शिक्षण. अजमेर, मित्रा ब्रदर्स, १९७६. १११ पृ. ८.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
अनुवादविज्ञान, दिल्ली, शब्दकार, १९७२. २२८ पृ. १२.५०

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
भाषाविज्ञान. संशो. सं. १०. इलाहाबाद, किताब महल, १९७४. १६, ५७६ पृ. १४.००
प्रथम सं. १९५१.

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
सोवियत संघ में बोली जाने वाली हिंदी बोली ताजुजबेकी: ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन तथा संक्षिप्त शब्द-कोष. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. २४, २०१ पृ. ८.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
हिंदी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण. दिल्ली, शब्दकार, १९७३. २०८ पृ. १६.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
हिंदी भाषा. संशो. सं. २. इलाहाबाद, किताब महल, १९७२. १६, ७०४ पृ. १५.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा ओमप्रकाश गाबा.
सामान्य हिंदी. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७६. १५० पृ. १४.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा महेंद्र चतुर्वेदी.
पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएं. दिल्ली, शब्दकार, १९७३. १२४ पृ. ८.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, संपा.
भाषिकी; भाषा विषयक लेखों का संकलन. दिल्ली, भारतीय भाषा परिषद् की ओर से नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. भा. १. ८.००

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा अन्य.
भारतीय भाषाविज्ञान की भूमिका. दिल्ली, पं. मोहन वल्लभ पंत स्मारक समिति के निमित्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. ११, ४७८ पृ. ३२.००

चाम्स्की, नोअम.
वाक्यविन्यास का सैद्धान्तिक पक्ष. अनु. रामनाथ सहाय. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७५. २५७ पृ. १४.००

चारुदेव शास्त्री, १८९६-
व्याकरणचन्द्रोदय. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, १९६९-७३. ५ भा. १४५.५०

चौधरी, अनन्त.
नागरी लिपि और हिंदी-वर्तनी. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ४३२ पृ. २४.००

चौधरी, अनन्त.
हिंदी व्याकरण का इतिहास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ११, ७०३ पृ. २७.००

चौधरी, सत्यनारायण.
प्रवेशिका संस्कृत व्याकरण. पटना, भारती भवन, १९६४. ४११ पृ.

चौबे, व्रजबिहारी.
वैदिक-स्वर-बोध. होशियारपुर, वैदिक साहित्य सदन, १९७२. १६, १४६ पृ. ७.००

चौबे, व्रजबिहारी.
वैदिक-स्वरित-मीमांसा. होशियारपुर, वैदिक साहित्य सदन, १९७२. १२, १३० पृ. १२.००

जगदीश तर्कालंकार.
शब्दशक्ति-प्रकाशिका. सं. २. वाराणसी, चौखम्बा, १९७३. १२, ४६९ पृ. ३५.००

जगन्नाथन, वी. रा., १९४२-
हिंदी और तमिल की समानस्रोतीय भिन्नार्थी शब्दावली; एक शोध प्रबंध. आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, १९६९. ९२ पृ. २.९०

जनगणना में मातृभाषा पहाड़ी (हिमाचली) क्यों ?
शिमला, राज्यभाषा संस्थान, हिमाचल प्रदेश, १९७१? १२ पृ.

जयकुमार 'जलज'.
ऐतिहासिक भाषाविज्ञान : सिद्धांत और व्यवहार. लखनऊ, हिंदी समिति, उत्तर प्रदेश, १९७२. १३, ३४४ पृ. १०.००

जयरामन, पी.
हिंदी-तमिल स्वयं-शिक्षक, नई दिल्ली, मैनेजर आफ पब्लिकेशन्स, १९६८. १०, १६५ पृ. ३.८५

जस, जसवंत सिंह, १९२९-
आधुनिक हिंदी-शिक्षण. जालन्धर, न्यू बुक कम्पनी, १९७५. ४, २७२ पृ. १५.००

जाधव, पंजाबराव रामराव, १९२८-
हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन में ईसाई मिशनरियों का योगदान. पूना, कर्मवीर प्रकाशन, १९७३. १४, ३६७ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

जैन, कोमलचन्द्र.
पालि-प्रवेशिका. वाराणसी, तारा, १९७३. १८८ पृ. ६.५०

जैन, दीपचंद्र, १९१७- तथा कैलाश तिवारी.
हिंदी और उसकी विविध बोलियां. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. १५, २५५ पृ. १०.००

जैन, नेमीचन्द्र, १९२७-
भीली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन. इन्दौर, इन्दौर विश्वविद्यालय, १९७१. भा. १. २०.००
शोध-प्रबन्ध —विक्रम विश्व.

जैन, फूलचंद्र 'सारंग', १९७३-
सुबोध हिंदी व्याकरण. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. ८, ९६ पृ. १.५०

जैन, महावीर सरन, १९४१-
परिनिष्ठित हिंदी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. १२, २१९ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध का प्रथम खंड—जबलपुर विश्व.

जैन, श्रीचंद्र, १९०९-
भारतीय कहावतें. उज्जैन, मानकचंद बुक डिपो; प्राप्तिस्थान : कमल प्रकाशन, इन्दौर, १९७०. १६, १५२ पृ. ४.५०

जैन, संतोष.
हिंदी और बंगला भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, शब्दकार, १९७४. २०० पृ. १५.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

जोशी, काशीनाथ.
प्रशासनिक हिंदी शासन में प्रयुक्त भाषा व लेखन प्रचार के सम्बन्ध में दिशा निर्देशक पुस्तक. ग्वालियर, वेणु प्रकाशन, १९७४. २४२ पृ. ७.००

जोशी, बाबूराव, १९१९-
प्रबंध-प्रसून. संशो. सं. २. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७२. ८, २६३ पृ. ६.००

जोशी, हेमचंद्र.
भाषाविज्ञान; हिंदी पर भाषावैज्ञानिक निबंध. लखनऊ, रामा प्रकाशन, १९७३. १९८ पृ. १५.००

जोहरापुरकर, विद्याधर पी., संपा.
जैन शिलालेख संग्रह. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७१. भा. ५. ३.००

धल, गोलोक बिहारी.
ध्वनि-विज्ञान. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७५. ३१३ पृ. १५.००

नथमल, मुनि, १९२०-
हिंदी जन जन की भाषा. नई दिल्ली, अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, १९६६?. १६ पृ. ०.२५

नरेन्द्रनाथ.
प्राकृत भाषाओं का रूपदर्शन. लखनऊ, रामा प्रकाशन, १९७३. २४० पृ. १५.००

नांढला, झूंथालाल, १९१८- संपा.
ढूंढाली लोक भासा-कोस. जयपुर, राजस्थान भाषा प्रचार सभा, १९७४. ११२ पृ. ७.५०

नागपाल, सी. आर.
संस्कृत व्याकरण सौरभ. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७५. ३२८ पृ. २०.००

नागप्पा, ना.
अभिनव हिंदी व्याकरण. दिल्ली, राजपाल एंड संज़, १९७१. ८.००

नागर, अंबाशंकर, १९२५-
राष्ट्रभाषा हिंदी और गांधीजी. इन्दौर, कमल प्रकाशन; प्राप्तिस्थान : मानकचंद बुक डिपो, उज्जैन, १९७०. १११ पृ. ५.००

नाथ, भूपेंद्र.
सरल हिंदी व्याकरण. गोहाटी, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, १९७४. ८, ७६ पृ. १.४५

नायर, पी. आर., संपा.
सरल हिंदी मलयालम कोष. सं. ४. कुनामकुलम, सरल, १९७४. २७६ पृ. ५.००
प्रथम सं. १९६२.

निशांतकेतु, १९३८-
शब्दान्तर; साहित्य-संस्कृति-शब्द-संदर्भ ग्रंथ. पटना, संप्रति-प्रकाशन की ओर से दिल्ली पुस्तक सदन, १९७२. २२७ पृ. १५.००

नेने, गो. प., १९१३-
भाषा-समस्या के कई आयाम. पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्र-भाषा सभा, १९७३. १२२ पृ. ५.००

नौटियाल, देवेंद्रदत्त रामकिशोर शर्मा, संपा.
भाषा त्रैमासिक, विश्व हिंदी सम्मेलन अंक. नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७५. ८, १८७ पृ. १०.००

पंजाबी-हिंदी कोष. पटियाला, भाषा विभाग, १९६३. भा. १. ९.२५

पंत, मोहनवल्लभ.
कारक-दीपिका : सिद्धांत-कौमुदी के कारकप्रकरण की 'सरल' हिंदी व्याख्या. इलाहाबाद, रामनारायणलाल बेनीमाधव, १९६५. २२१ पृ.

पहाड़ी (हिमाचली) भाषा : वर्तमान और भविष्य. शिमला, राज्य भाषा संस्थान, हिमाचल प्रदेश, १९७१. ४४ पृ.

पांडेय, अमरनाथ, १९३७-
शब्दविमर्श. वाराणसी, मनीषा प्रकाशन, १९७५. १२० पृ. १६.००

पांडेय, इंदुप्रकाश, १९२४-
अवधी कहावतें. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७७. १८४ पृ. २५.००

पांडेय, उमेशचंद्र.
वैदिक व्याकरण. सं. ३. वाराणसी, चौखंबा विद्या भवन, १९७२. ६, ९१ पृ. ३.००

पांडेय, रामअवध तथा रविनाथ मिश्र, संपा.
लघुसिद्धांत कौमुदी : प्रकाशिका हिंदी व्याख्या सहित. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७०. ६, २८२ पृ. ४.००

पाठक, आनंदस्वरूप, १९२८- संपा.
साहित्य और भाषाशास्त्र. मथुरा, शिक्षा ग्रंथागार, १९७५. ८, २४८ पृ. ४०.००

पाठक, आनंद स्वरूप, १९२८-
हिंदी का लिंग विधान. मथुरा, प्रमोद प्रकाशन, १९७६. १०, २७१, ६ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

प्रसाद, स्वर्णलता, १९३२- संकलन.
हिंदी-मुण्डारी शब्दकोष. रांची, बिहार सरकार, कल्याण एवं वन विभाग के लिए बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, १९७६. २३८ पृ. १०.००

बंसीधर, १९३६-
मालवी की उत्पत्ति और विकास. इलाहाबाद, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, १९७३. १४, २९६ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

बद्रीदास तथा गोपालजी झा 'गोपेश', संपा.
बिहार हिंदीकरण की ओर. पटना, १९७१. २६, ७१.

तिवारी, भोलानाथ, १९२३- तथा अन्य, संपा.
व्यावहारिक हिंदी कोष. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ८, ३८९ पृ. ११.००

तिवारी, मुक्तेश्वर 'बेसुध', १९१८-
भोजपुरी लोकोक्तियां और मुहावरे; समीक्षात्मक शोध-प्रबंध. चितबड़ागांव, बिहार हिंदी परिषद्, १९७१. २३७ पृ. ११.००

तिवारी, मोहनलाल, १९३०-
माध्यमभाषा : सिद्धांत और समीक्षा. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७३. १७, १६० पृ. १०.००

तिवारी, सियाराम.
काव्यभाषा. नई दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७६. ११, २०४ पृ. २१.००

तिवारी, सियाराम.
बज्जिका भाषा और साहित्य. पटना, बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद, १९६४. ४० पृ.

तेलंग, भालचंद्रराव, १९०९-
हिंदुई बनाम दक्खिनी : भाषिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधानशाला, १९७५. २५१ पृ. २१.००

त्यागी, चंद्रप्रकाश.
देशी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७२. २३२ पृ. २२.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व.

त्रिपाठी, बाबूराम, संपा.
व्याकरण कौमुदी. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२- भा. १. २.५०

त्रिपाठी, रमाकांत.
अनुवाद-रत्नाकर. वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, १९७३. ६७२ पृ. १८.००

त्रिपाठी, रमाकांत.
नवीन अनुवाद चंद्रिका. सं. २. वाराणसी, चौखंबा संस्कृत सीरीज़ आफिस, १९७२. १२, ४२४ पृ. ३.५०

त्रिपाठी, रामसुरेश, १९२१-
संस्कृत व्याकरण-दर्शन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७२. ५१५ पृ. ४०.००
शोध-प्रवन्ध, संशोधित—आगरा विश्व.

त्रिपाठी, विश्वनाथ, १९३२-
प्रारम्भिक अवधी का अध्ययन. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. १४, २३४ पृ. २०.००
शोध-प्रवन्ध—पंजाब विश्व.

त्रिपाठी, सत्यनारायण, १९२७-
परिनिष्ठित हिंदी का स्वरूप. फैजाबाद, साकेत प्रिंटिंग प्रेस, १९७२? ६ पृ.

दक्षिणमूर्ति, एन. एस.
कन्नड़-हिंदी शब्द कोष. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. १०, ४३२ पृ. ४०.००

दीक्षित, राजेश, १९२८-
सरल हिंदी गुजराती शिक्षा. दिल्ली, देहाती पुस्तक भंडार, १९७१. ८० पृ. २.५०

दीक्षित, राजेश, १९२८- संपा.
भार्गव आदर्श हिंदी पर्यायायवाची कोष. वाराणसी, भार्गव बुक डिपो, १९७४. २३२ पृ. ९.००

देव, राधाकांत.
शब्द कल्पद्रुम. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास. १९४.७५

देवेंद्रकुमार शास्त्री, १९३३-
अपभ्रंश भाषा और साहित्य की शोध-प्रवृत्तियां; शोध-अध्ययन. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७२. ८, २५६ पृ. १४.००

देवेंद्रकुमार शास्त्री, १९३३-
भाषाशास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ३५२ पृ. १२.५०

द्वारकाप्रसाद द्वारिकेश.
हिंदी भाषा का वैज्ञानिक इतिहास (प्रश्नोत्तर). दिल्ली, रीगल बुक डिपो. १.५०

द्विभाषिक वार्तालाप पुस्तिका, हिंदी-अंग्रेजी.
नई दिल्ली, भारत सरकार, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, १९७३. १३, ८१ पृ. १.२५

द्विवेदी, कपिलदेव.
प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी. सं. ४. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ४४६ पृ. १८.००

द्विवेदी, राधेश्याम, १९२१-
हिंदी भाषा और साहित्य में ग्वालियर क्षेत्र का योगदान; तोमर युगीन ग्वालियर संस्कृति, भाषा-साहित्य, १५-१६वीं शती ई. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७२. २०, ४८२ पृ. २५.००

द्विवेदी, विश्म्भरनाथ.
संस्कृत व्याकरण. कानपुर, ग्रंथम प्रकाशन, १९७६. ३८० पृ. १५.००

द्विवेदी, शंभूनाथ.
भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा का इतिहास. इलाहाबाद, विवेकी प्रकाशन, १९७१. ३०२ पृ. १२.००

मिश्र, पारसनाथ, १९२३- तथा रविनाथ सिंह.
रचना सौरभ. संशो. सं. ४. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७०. २०० पृ. ४.००

मिश्र, भगवतस्वरूप, १९२०- तथा अन्य.
हिंदी व्याकरण और संरचना. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, १८४ पृ. ४.००

मिश्र, रमानाथ 'मिहिर', १९३९-
मैथिली मुहावरा एवं लोकोक्ति प्रकाश. सं. २. दरभंगा, नूतन पुस्तक भवन, १९६८. ६, ७८ पृ. १.५०
मैथिली में.

मिश्र, रामचंद्र, १९२०-
हिंदी की उपभाषाएं और ध्वनियां. नागपुर, विश्वभारती प्रकाशन, १९७१. अनेक पृ. २०.००

मिश्र, रामेश्वर, १९२३-
राष्ट्रभाषा हिंदी का स्वरूप-विधान. दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन १९७५. ४५८ पृ. ५५.००
शोध-प्रबन्ध—भागलपुर विश्व.

मिश्र, विदुमाधव.
हिंदी भाषा का परिचय. नयी दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७३. २४८ पृ. १५.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
हिंदी की शब्द सम्पदा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७०. २१६ पृ. ८.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६- तथा अन्य, संपा.
भारतीय भाषाशास्त्रीय चिंतन. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७६. ८, १७५ पृ. ११.००

मीनाक्षीसुंदरम्, टी. पी., १९०१-
तमिल भाषा का इतिहास. अनु. रमेशचंद्र मेहरोत्रा. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १२, २८० पृ. १२.००

मुळे, गुणाकर, १९३५-
भारतीय लिपियों की कहानी. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७४. १८१ पृ. ११.२५

मैक्समूलर, फ्रेडरिक, १८२३-१९००.
भाषाविज्ञान पर भाषण. अनु. हेमचंद्र जोशी. लखनऊ, हिंदी समिति, १९६८. भा. २. १२.५०

युधिष्ठिर मीमांसक, १९०९-
संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास. बहालगढ़, रामलाल कपूर ट्रस्ट, १९७३. ३ भा. ६०.००

योगेन्द्रजीत, भाई.
हिंदी भाषा-शिक्षण. सं. ६. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ८, ४१२ पृ. ७.००

रस्तोगी, कृष्ण गोपाल, १९२८-
भाषा सम्प्राप्ति मूल्यांकन. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७३. ९६ पृ. ६.००

रस्तोगी, कृष्ण गोपाल, १९२८-
हिंदी क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन. दिल्ली, अर्चना प्रकाशन, १९७३. ५०८ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

रस्तोगी, कृष्ण गोपाल, १९२८- तथा शशिकुमार शर्मा.
प्रयोगात्मक हिंदी व्याकरण. नई दिल्ली, पीताम्बर बुक डिपो, १९७६. २५६ पृ. २५.००

रस्तोगी, प्रेम प्रकाश, १९३५-
हिंदी भाषा : उद्‌भव और विकास. दिल्ली, बाली प्रकाशन, १९७५. १७८ पृ. २०.००

राजहंस, सत्यदेव.
शब्दांतर. इलाहाबाद, विवेक प्रतिष्ठान, १९७४. ३.५०

रामस्वरूप शास्त्री, १८८८-
शब्द-दर्शन. मुजफ्फरनगर, शारदा-सदन, १९७२. १२, ९२ पृ. ८.००

राय, हरप्रसाद, १९३१-
हिंदी-चीनी ग्राइमर : देवनागरी लिपि में. नई दिल्ली, गांधी स्मारक निधि, १९७५. ६, २३६ पृ. २०.००

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.
राष्ट्रभाषा का विकास विस्तार. वर्धा, १९७१. ४, २१६ पृ. ३.००

रेड्डी, विजयराघव.
समानस्रोत और भिन्न वर्तनी की शब्दावली, ओड़िया-हिंदी और हिंदी ओड़िया : एक शोध परियोजना. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७४. ८, ९२ पृ. ६.००

रैना, शिवन कृष्ण, १९४२-
कश्मीरी भाषा और साहित्य. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. २६२ पृ. २५.००

रोहरा, सतीशकुमार, १९२९-
भाषा एवं हिंदी भाषा. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७२. १०, २८० पृ. ६.००

लाइंस, जॉन.
सैद्धांतिक भाषाविज्ञान. अनु. सत्यकाम वर्मा. नई दिल्ली, मुंशीराम मनोहरलाल, १९७२. १२, ५२६ पृ. ३८.००

बाजोरिया, रतनलाल, संपा., १९२२-
बृहत राष्ट्रभाषा कोश. वर्धा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, १९७२. ६०४ पृ. १६.००

बाहरी, हरदेव, १९०७-
व्यावहारिक हिंदी व्याकरण. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. २०० पृ. ७.००

बाहरी, हरदेव, १९०७-
शुद्ध हिंदी. सं. ४. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. १२ २१५ पृ. ३.५०

बाहरी, हरदेव. १९०७-
हिंदी : उद्भव, विकास और रूप. संशो. सं. २. इलाहाबाद, किताब महल, १९७०. १२, ३१० पृ.

बाहरी, हरदेव, १९०७-
हिंदी का सामान्य ज्ञान. भा. १. इलाहाबाद, लोकभारती, १९७१. २८७ पृ. ६.००

बुल्के, कामिल, १९०९- संपा.
अंग्रेजी हिंदी कोष. सं. २. रांची, कैथोलिक प्रेस, १९७४. ८, ८९१ पृ. २८.००
प्रथम सं. १९७१.

ब्लोच, जुलेस, १८८०-१९५३.
द्रविड़ भाषाओं की व्याकरणिक संरचना. अनु. कृष्णकुमार शर्मा. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ८, ११९ पृ. ५.००

भटनागर, राजेंद्रमोहन, १९३८-
सरल हिंदी-व्याकरण तथा रचना. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७२. २१६ पृ. ७.५०

भट्ट, हरिदत्त 'शैलेश', १९३०-
गढवाली भाषा और उसका साहित्य. लखनऊ, हिंदी समिति, उत्तरप्रदेश शासन, १९७६. ६, ४२६ पृ. १३.००

भट्टाचार्य, अशोककुमार.
हिंदी और बांगला मुहावरों का तुलनात्मक विवेचन : रूप, वस्तु और व्यंजना. कलकत्ता, वंगीय हिंदी परिषद, १९७२. १०, २४० पृ. ८.००
शोध-प्रबन्ध—कलकत्ता विश्व.

भट्टाचार्य, रामशंकर, १९२६-
पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन. वाराणसी, इण्डोलाजिकाल बुक हाउस, १९६६. ४३८ पृ. १२.००

भाटिया, ओमप्रकाश 'अराज', १९३३-
भारतीय-समान-लिपि : अरा. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७१. १७५ पृ. १०.००

भाटिया, ओमप्रकाश 'अराज', १९३३-
लिपि-विज्ञान और नागरी-लिपि. दिल्ली, सूर्य-प्रकाशन, १९७४, १८० पृ. १२.५०

भाटिया, कैलाशचंद्र, १९२७-
भाषा-भूगोल. लखनऊ, हिंदी समिति, उत्तरप्रदेश शासन, १९७३. १५, ४५३ पृ. १४.००

भारत. गृह मंत्रालय.
वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट : हिंदी के प्रसार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए उसके प्रगामी प्रयोग में गति लाने के लिए बनाये गये कार्यक्रम. दिल्ली, मैनेजर आफ पब्लिकेशन, १९७२. ६, ९६ पृ.

भारत. शिक्षा मंत्रालय.
एक समीक्षा : हिंदी का प्रसार और विकास, १९५२-६७. नई दिल्ली, १९६८. ८, १३६ पृ.

भारद्वाज, बालकृष्ण.
भाषा-विज्ञान, मानक हिंदी के संदर्भ में. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७६. १०४ पृ. १२.५०

भार्गव, रामेश्वरनाथ.
हिंदी भाषा एवं साहित्य का इतिहास. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७२. १०, ११९ पृ. १२.५०

भावे, विनोबा, १८९५-
भाषा का प्रश्न. वाराणसी, सर्व सेवा संघ, १९७०. ५६ पृ. १.२५

भावे, विनोबा, १८९५- संपा.
उर्दू हिंदी व्यवहार कोष. वाराणसी, सर्व सेवा संघ, १९७०. ४, ८२ पृ. २.००

भाषा भारती. नागपुर, नागपुर विद्यापीठ, १९७२. १२, १११ पृ. २.२५

भीमसेन शास्त्री.
बालमनोरमा-भ्रांति दिग्दर्शन. दिल्ली, १९७२. १८, १६ पृ. ३.००

भूदेव शास्त्री तथा गंगा सहाय प्रेमी.
आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना. सं. २. आगरा, रामप्रसाद एंड संस, १९७०. ८, ३६० पृ. ३.७५

माचवे, प्रभाकर, १९१७-
आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य. अनु. जे. एच. आनंद. लखनऊ, नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल ऑफ इण्डिया के लिए लखनऊ पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ८५ पृ. २.२५

माचवे, प्रभाकर १९१७- तथा कृष्णा मुरारी शर्मा, संपा.
आधुनिक हिंदी लेखन. दिल्ली, थॉमसन प्रेस (इंडिया), प्रकाशन विभाग, १९७४. १६, २०२ पृ. २०.००

लॉक्स, डब्ल्यू. एन.
तुलनात्मक अर्थ पद्धति. अनु. रामचंद्र तिवारी तथा रामचंद्र शर्मा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १०२० पृ. २२.००

लालस, सीताराम.
राजस्थानी सबद कोस. जोधपुर, राजस्थानी शोध-संस्थान, १९६२. भा. १-२, ३ (खं. १-३); भा. ४ (खं. १, १९७३) ७५.००

लोथा, इ. नगुलि तथा राधेश्यामसिंह गौतम.
लोथा-हिंदी स्वयं शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७२. ८, ६२ पृ. ३.००

वचनदेवकुमार, १९३४-
व्याकरण भास्कर. सं. ७. पटना, भारती भवन, १९७१. ६, १५० पृ. २.८०

वडके, मधुकर सदाशिव.
हस्ताक्षर, कैसे सुधारें? रसायनी (कोलाबा), चारुशील मधुकर वडके, १९७१. १६, ७४ पृ. ३.००

वरदराज.
लघुसिद्धांत कौमुदी. अनु. गौरीशंकर सिंह. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ८, १८८ पृ. ३.००

वरदराज.
लघुसिद्धांत कौमुदी (संधीप्रकरण). संपा. रामकृष्ण आचार्य. सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ७, ९६ पृ. १.५०
हिंदी-संस्कृत में.

वरदराज.
व्याकरण कौमुदी. संपा. बाबूराम त्रिपाठी. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. भा. १, सं. ३, २.५०; भा. २, सं. २, २.५०

वर्मा, जयनारायण.
हरियाणवी लोकोक्तियाँ; शास्त्रीय विश्लेषण. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७२. १५२ पृ. १५.००

वर्मा, रामचंद्र, १८९०-१९६९.
अच्छी हिंदी. संशो. सं. १६. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. ३०३ पृ. ६.५०

वर्मा, रामचंद्र, १८९०-१९६९.
मानक हिंदी व्याकरण. सं. ३. वाराणसी, चौखंबा विद्या भवन, १९७०. ४, १६४ पृ. २.५०

वर्मा, रामचंद्र, १८९०-१९६९.
हिंदी प्रयोग. सं. ११. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. १७० पृ. ३.५०

वर्मा, रामचंद्र, १८९०-१९६९, संपा.
संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर. कोश संस्थान (कोशविभाग) द्वारा संशोधित-संवर्धित एवं नवसंपादित. सं. ७. काशी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७१. १०९७ पृ. ३५.००

वर्मा, लक्ष्मीकांत, १९२२- संपा.
हिंदी भाषा और नागरी लिपि; हिंदुस्तानी पत्रिका निबंध संग्रह. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७१. २९, ३४३ पृ. २५.००

वर्मा, व्रजेश्वर, १९१३- तथा अन्य, संपा.
भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६९. ८, २२४ पृ. १०.००

वर्मा, शिवशंकरप्रसाद, १९२९-
देवनागरी लिपि. भागलपुर, भागलपुर विश्वविद्यालय, १९७२. ४०० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—भागलपुर विश्व.

वर्मा, सत्यकाम, १९२६-
व्याकरण की दार्शनिक भूमिका. नई दिल्ली, मुंशीराम मनोहरलाल, १९७१. १५, ५३४ पृ. ४२.००

वर्मा, सत्यकाम, १९२६-
संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, १९७१. २१, ४९७ पृ. ३०.००

वर्मा, सावित्री.
अरुण हिंदी व्याकरण. नई दिल्ली, रामअवतार अरुण कुमार, १९७३. ४१६ पृ. ४.००

वर्मा, सिद्धेश्वर
प्राचीन भारतीय व्याकरणों के ध्वन्यात्मक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन. अनु. देवीदत्त शर्मा. चंडीगढ़, हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २२३ पृ. २०.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
हिंदी भाषा का इतिहास. कलकत्ता, मैकमिलन, १९७०. १४७ पृ. ४.५०

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
हिंदी भाषा का व्यावहारिक ज्ञान. उज्जैन, १९७४. २ भा. ११.००

विश्वनाथ अय्यर, एन. ई., १९२०- संपा.
दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन और पाठ्यक्रम का मूल्यांकन. कोचिन, हिंदी विभाग, कोचीन विश्वविद्यालय, १९७२. ८, ९८, २० पृ.

विश्वमित्र, जे., १९३४-
तेलुगु और हिंदी ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन : गुंटूर जिले की तेलुगु और आगरा की हिंदी के संदर्भ में. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९६९. ४, ८० पृ. ४.००

वुड, एलैक्जेंडर.
ध्वनि-विज्ञान. अनु. निहालकरण सेठी. आगरा, आगरा विश्वविद्यालय, १९६७. ६७१ पृ. १४.६०

व्यथित हृदय, १९०८-
माध्यमिक व्याकरण और रचना. सं. २. आगरा, श्रीराम मेहरा, १९७०. ८, ३९२ पृ. ४.००

व्यास, घनश्याम.
आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का पुनर्वर्गीकरण; दो बोलियों का अध्ययन. रायपुर, आर. सिंह, १९७१. ८१ पृ. ८.५०

व्यास, नरेंद्र तथा रामकिशोर शर्मा, संपा.
भाषा त्रैमासिक, हिंदी भाषाविज्ञान अंक. नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७४. १६, ५३९ पृ. १७.००

व्यास, रामकृष्ण, १९४६-
बीकानेरी बोली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन. बीकानेर, श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, १९७४. २१६ पृ. २५.००

व्यास, रामकृष्ण 'महेंद्र', १९४६-
बीकानेरी-क्रियापद. बीकानेर, श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, १९७४. ६२ पृ. १३.५०
"लघु शोध-प्रबंध".

शब्द कोश—संतमत बानी. आगरा, राधास्वामी सतसंग, १९७०. ४१६ पृ. ६.००

शर्मा, अरिबम कृष्णमोहन, १९४२-
हिंदी और मणिपुरी परसर्गों का तुलनात्मक अध्ययन. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७२. १०८ पृ. ६.००

शर्मा, उदयवीर.
पाणि-दर्शन. जयपुर, पदम बुक कम्पनी, १९७२. २१८ पृ. २०.००

शर्मा, ओंकारचंद्र 'शाही', १९४०-
खड़ी बोली : स्वरूप और साहित्यिक परम्परा. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७५. २०७ पृ. २४.००

शर्मा, ओंप्रकाश, १९३६- संपा.
भारतीय भाषाएं और वैज्ञानिक शब्दावली. आगरा, साहित्य संगम, १९६७. १४४ पृ.

शर्मा, गोपाल तथा अन्य, संपा.
भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास. नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा एवं समाज कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार. १९७४. ४०८ पृ. २३.००

शर्मा, दीप्ति, १९५०-
व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७५. २०, २२२ पृ. १५.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा रामदेव त्रिपाठी.
हिंदी भाषा का विकास. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७१. ३७, २७४ पृ. १५.००

शर्मा, रत्नचंद्र.
भाषा-विज्ञान और मानक हिंदी. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७७. १९१, २२० पृ. २०.००

शर्मा, रमानाथ.
पाणिनि व्याकरण में प्रजनक प्रविधियां. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७६. ५० पृ. ५.५०

शर्मा, राधाकृष्ण तथा अन्य.
हिंदी भाषातत्व एवं उपचारात्मक कार्य. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७६. ३२६ पृ. १२.००

शर्मा, रामविलास.
भारतेंदु-युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७५. ३५२ पृ. २५.००

शर्मा, लक्ष्मीनारायण.
देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी व्यवस्था. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७६. ११४ पृ. ८.००

शर्मा, विवेकानंद.
सरल हिंदी व्याकरण. दिल्ली, गौरव प्रकाशन, १९७४. १२० पृ. ५.००

शर्मा, सतीशचंद्र.
मनोविज्ञान तथा शिक्षा में पारिभाषिक शब्दावली, १९७४. १४४ पृ. १५.००

शर्मा, श्रीराम, १९२०-
दक्खिनी हिंदी का साहित्य. हैदराबाद, दक्षिण प्रकाशन, १९७२. ८, ४३१ पृ. ३०.००

शर्मा, हरवंशलाल, १९२३-
हिंदी व्याकरण. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २८८ पृ. ४.००

शांडिल्य, रमण, संपा.
जनपदीय भाषाओं का साहित्य. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७५. १९५ पृ. २०.००

शिवनाथ, १९१७-
हिंदी कारकों का विकास. सं. २. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७१. १५९ पृ. ७.००

शिवनारायण शास्त्री, १९३८-
वैदिक वाङ्मय में भाषा-चिंतन. वाराणसी, इंडोलॉजिकल बुक हाउस, १९७२. १५, २५२ पृ. १५.००

शिवमूर्तिस्वामी, एस.
हिंदी कन्नड़ नागरी बोधिनी. धारवाड़, कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा, १९६५. भा. १. ९.९०

शुक्ल, कैलाशनाथ.
पश्चिमी हिंदी बोलियों की व्याकरणिक कोटियां. इलाहाबाद, प्रमोद पुस्तकमाला, १९७३. १९१ पृ. १५.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

शुक्ल, दुर्गाचरण तथा कैलाशविहारी द्विवेदी.
बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन. संपा. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'. टीकमगढ़, कला-परिषद, १९७६. १२६ पृ. ६.००

शुक्ल, भगवतीप्रसाद, १९२६-
हिंदी उच्चारण और वर्तनी. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. १२८ पृ. १०.००

शुक्ल, भानुदेव, १९३०- तथा शिवकुमार मिश्र, संपा.
निबंध प्रतिभा. भोपाल, माडर्न बुक डिपो, १९७०. ११८ पृ. २.७५

शुक्ल, रमापति
हिंदी का व्यावहारिक व्याकरण और रचना. वाराणसी, विद्या मंदिर, १९७१. १०, २२० पृ. ७.००

शुक्ल, शिवप्रसाद, १९२८-
हिंदी का निखार तथा परिष्कार, सन् १८५७ से १९६० ई. तक. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७२. २०३ पृ. १८.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

शुक्ल, हीरालाल, १९३९-
बघेलखंड की शब्द-मानचित्रावली. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७४. भा. १. १५००.००
शोध-प्रबन्ध—रविशंकर विश्व.

शुक्ल, हीरालाल, १९३९-
शब्द-भूगोल : सिद्धांत और प्रयोग. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७३. ४०१ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—रविशंकर विश्व.

शोध पत्रावली; राज्य भाषा संस्थान द्वारा आयोजित लेखक गोष्ठियों के लिए लिखे गए शोधपत्र. शिमला, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश, १९७०-७२. २ भा.

श्यामसुंदरदास, १८७५-१९४५, संपा.
हिंदी शब्दसागर. मूल सहायक संपा. बालकृष्ण भट्ट तथा अन्य; संपा. मंडल : संपूर्णानंद तथा अन्य; सहायक संपा. त्रिलोचन शास्त्री तथा विश्वनाथ त्रिपाठी. काशी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९६५-१९७५. भा. १-११. २७५.००

श्रीनिवास शास्त्री, १९१६-
रचनानुवादप्रभा; संस्कृत व्याकरण, अनुवाद तथा रचना की नवीन पुस्तक. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७०. ३३६ पृ. ४.५०

श्रीमाली, नारायणदत्त
हस्ताक्षर विज्ञान. दिल्ली, अनुपम पाकेट बुक्स, १९७१. १२४ पृ. २.००

श्रीरामचंद्र शर्मा, पोक्कुलुरी, संपा.
सत्यनारायण हिंदी तेलुगु शब्द सागर. राजमहेंद्रवरमु, कोंडापल्ली वीरवेंकाय्य एंड संस, १९६७. ४, ६०३ पृ. १०.००

श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, संपा.
प्रयोजनमूलक हिंदी. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७५. ११८ पृ. १०.००

श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ तथा रमानाथ सहाय, संपा.
हिंदी का सामाजिक संदर्भ. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७६. २२, २९६ पृ. २०.००

श्रीवास्तव, वीरेंद्र तथा शिवशंकरप्रसाद वर्मा, संपा.
राष्ट्रभाषा संचयन. पटना, भारती भवन, १९७१. १०, २३१ पृ. ३.००

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, १९२१-
भाषा-विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी-भाषा. मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन, १९७२. ११, ४१२ पृ. १५.००

सक्सेना, बाबूराम, १८९७-
अवधी का विकास. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७२. २४, ३११, ८ पृ. १३.५०
शोध-प्रबंध—इलाहाबाद विश्व.

सक्सेना, रामप्रकाश.
बदायूं जनपद की बोली का एककालिक अध्ययन. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७३. १२, २१४ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

सत्यप्रकाश, १९०५- तथा बलभद्रप्रसाद मिश्र, संपा.
मानक अंग्रेजी हिंदी कोष. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. ५२, १५७६ पृ. ६८.००

सत्यभक्त, स्वामी.
मानवभाषा बनाम एस्पेरैंटो. वर्धा, सत्येश्वर प्रि. प्रेस, १९७०. ४३ पृ. ०.७०

सहाय, चतुर्भुज, १९४१-
मिजो हिंदी स्वयं-शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. ६३ पृ. २.००

सहाय, चतुर्भुज, १९४१-
हिंदी के अव्यय वाक्यांश. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७०. ६, ८३ पृ. २.७०

सहाय, चतुर्भुज, १९४१-
हिंदी मणिपुरी स्वयं-शिक्षक. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद, १९७५. ४२ पृ. २.००

सहाय, राधाकृष्ण, १९२९-
अर्थ-विज्ञान की दृष्टि से हिंदी एवं बंगला शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७४. १५, ४९८ पृ. ३५.००

सिंह, अजित नारायण 'तोमर'.
वज्जिका भाषा : मुहावरे और कहावतें. पटना, श्री रामलगन प्रकाशन, १९६१. ३२ पृ.
अखिल भारतीय लोक संस्कृति सम्मेलन, उज्जैन के तृतीय अधिवेशन के अवसर पर पठित.

सिंह, काशीनाथ, १९३७-
हिंदी में संयुक्त क्रियाएं. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७६. २७२ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—काशी हिंदू विश्व.

सिंह, कृपाशंकर.
भाषाविज्ञान और भोजपुरी. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. १३६ पृ. १२.५०
शोध-प्रबन्ध, संशोधित—दिल्ली विश्व.

सिंह, नामवर, १९२७-
हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. ३२६ पृ. १५.००
शोध-प्रबंध—बनारस हिंदू विश्व.

सिंह, निरंजनकुमार.
माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण. जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १२, ६११ पृ. २५.००

सिंह, भगवान, १९३१-
आर्य द्रविड़ भाषाओं की मूलभूत एकता. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७३. १९० पृ. १८.००

सिंह, राजकिशोर.
संस्कृत भाषाविज्ञान. सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, २८४ पृ. ८.००

सिंह, लालजी, १९३३-
भारत का भाषावाद; सन् १८०० ई. से १९६० तक. वाराणसी, सुरजा देवी, १९७१. ३७९ पृ. २५.००

सिंह, विश्वनाथ, १९२४-
शुद्ध शब्दोच्चारण. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. ६, ११८ पृ. ४.५०

सिंह, सावित्री.
हिंदी शिक्षण. सं. ३. मेरठ, लायल बुक डिपो, १९७३. १०, ३७२ पृ. १०.००

सिन्हा, मंगलविहारी शरण.
सिद्धों की संधाभाषा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ३४६ पृ. ११.००

सीताराम शास्त्री, १९२७-
उर्दू-हिंदी परिचय कोश. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, १९७४. ८३ पृ. १०.००

सुंदर रेड्डी, जी., १९१८- तथा अन्य.
हिंदी तथा द्रविड़ भाषाओं के समानरूपी भिन्नार्थी शब्द. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७४. २०८ पृ. १५.००

सुमन, क्षेमचंद्र, संपा.
राजभाषा हिंदी : प्रगति और प्रयोग; राजभाषा-सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका. नई दिल्ली स्वागत-समिति, राजभाषा सम्मेलन, १९७२. १६३ पृ. २.००

सेन, सुकुमार, १९००-
तुलनात्मक पाली-प्राकृत-अपभ्रंश व्याकरण. अनु. महावीरप्रसाद लखेड़ा. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९६९. ८, २१६ पृ. १०.००

हनुमच्छास्त्रि, अयाचितुल.
तेलुगु हिंदी शब्द कोष. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७०. १४, ३१४ पृ. ३०.००

हिंदी, एक की कड़ी. नई दिल्ली, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९७४. ६३ पृ.

हिंदी पाठशाला (विदेशी विद्यार्थियों के लिये). दिल्ली, कंट्रोलर आफ पब्लिकेशन्स, १९७४. २४, ७६० पृ. ५०.५०

हिमाचल प्रदेश. शिक्षा विभाग.
हिंदी-हिमाचली (पहाड़ी) अनन्तिम शब्दावली; हिंदी के २००० आधारभूत शब्दों के हिमाचल में प्रचलित विभिन्न शब्द. शिमला, शिक्षा विभाग, १९७०. १०३ पृ.

ह्विटने, डब्ल्यू. डी.
संस्कृत व्याकरण. अनु. मुनीश्वर झा. लखनऊ, उत्तरप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २ भा. ३०.००

विविध

अग्निहोत्री, प्रभुदयाल, १९१४-
संस्कृत साहित्य चिंतन इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन; वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७३. ३२० पृ. १८.५०

अग्निहोत्री, राजीवलोचन, १९२०-
बघेलखंड के संस्कृत काव्य. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, १९७३. १६, ३९४ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

अग्रवाल, केदारनाथ, १९१२-
बस्ती खिले गुलाबों की : रूस की मेरी यात्रा. इलाहाबाद, शब्दपीठ, १९७५. '६ पृ. २.००

अग्रवाल, केदारनाथ, १९१२-
समय-समय पर. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७०. २०८ पृ. ८.५०

अग्रवाल, कैलाशचंद्र, संपा.
निबंध-निकष. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, १५० पृ. ५.००

अग्रवाल, दामोदर.
अंगरेज़ी साहित्य कोश. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. ३७६ पृ. २०.००

अग्रवाल, पुरुषोत्तमदास तथा अन्य.
साहित्यिक निबंध. इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, १९७०. १८४ पृ. १०.००

अग्रवाल, वासुदेवशरण, १९०४ १९६६.
कालिदासकृत मेघदूत; एक अध्ययन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. २३७ पृ. ८.००

अग्रवाल, वासुदेवशरण, १९०४-१९६६, संपा.
साहित्य और संस्कृति. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७१. २७० पृ. २०.००

अग्रवाल, विपिनकुमार.
आधुनिकता के पहलू. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. १६२पृ. १२.५०

अग्रवाल, सुरेन, १९२८-
हिंदी में बाल साहित्य, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्. दिल्ली, रचना प्रकाशन, १९७२. भा. १. १८.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
अंतरा. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. १२० पृ. १२.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद, वात्स्यायन), १९११-
आत्मनेपद. सं. २. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७१. २६६ पृ. ७.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
आधुनिक हिंदी-साहित्य. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७६. २३६ पृ. १६.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
आलवाल. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. ११० पृ. ७.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
त्रिशंकु. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७३. १२० पृ. १०.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
भवंती. दिल्ल, राजपाल एंड संस, १९७२. १३९ पृ. ८.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-
लिखि कागद कोरे; निजी निबंध. दिल्ली राजपाल एंड संस, १९७२. १२३ पृ. ६.००

अधिकारी, महावीर, १९१८-
आदमी का गणित. बम्बई, कीर्तिमान प्रकाशन, १९७४. १४३ पृ. १२.००

अनिल, संतराम, १९३१-
कनौजी लोक साहित्य. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९ ५. ३१२ पृ. ४५.००
शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

अनुशीलन. कोचीन, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, १९७०. ८, ५९ पृ.

अमृतराय, १९२१-
आधुनिक भावबोध की संज्ञा. इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९७२. २०५ पृ. ८.००

अमृतराय, १९२१-
बतरस. इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९७३. १३० पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

अयाचित, भालचंद्र तथा जगदंबाप्रसाद दीक्षित, संपा.
साहित्य-संगम. बंबई, बंबई यूनिवर्सिटी, १९७३. ८, १२२ पृ. ३.५०

अरुण.
लंबे हंसाने को छोटे फसाने. मेरठ कैंट, अनु प्रकाशन, १६० पृ. २.००
हास्य-व्यंग्य.

अरुण.
सब समय के साथ. मेरठ, अनु प्रकाशन, १९७३. ८, ८३२ पृ. ४०.००
हास्य-व्यंग्य

अवतरे, शंकरदेव.
साधारणीकरण. दिल्ली, यूनाइटेड बुक हाउस, १९७१. १३२ पृ. ७.५०

अवधेश प्रतापणिह विश्वविद्यालय, रेवा.
निबंध संग्रह. रेवा, भैयालाल एंड संस, १९७०. ३८, १२९ पृ. २.५०

अवस्थी, राजेन्द्र.
काल-चिंतन. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७७. १०५ पृ. ८.००

अश्क, उपेंद्रनाथ, १९१०-
अन्वेषण की सहयात्रा. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७३. २८६ पृ. २५.००

अश्क, उपेंद्रनाथ, १९१०-
आस्मां और भी हैं. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७३. १५५ पृ. ७.००
संस्मरण

आज का भारतीय साहित्य. सं. ४. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७२. ४४४ पृ. १५.००

आदिमजाति अनुसंधान संस्था, छिदवाड़ा.
हिंदी कुडुख वार्तालाप निर्देशिका; रायगढ़ जिले की कुडुख बोली के समान. छिदवाड़ा, आदिमजाति अनुसंधान संस्था, १९६३. ६० पृ १.००

आदिमजाति अनुसंधान संस्था, छिदवाड़ा.
हिंदी भीली वार्तालाप निर्देशिका; धार जिले की भीली बोली के समान. छिदवाड़ा, आदमजाति अनुसंधान संस्था, १९७३. ६० पृ १.००

आदेश्वर राव, पी., १९३६-
तुलनात्मक शोध और समीक्षा. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७२. ९१ पृ. ७.५०

आधुनिक निबंध. आगरा, आगरा विश्वविद्यालय, १९७२. ८, १४७ पृ. २.५०

आनंद, जे. एच., संग्रा.
जीवन के ताने वाने. लखनऊ, लखनऊ पब्लिशिंग हाउस, १९७०. ८, १२६ पृ. ३.२५

आनंद, रवेलचंद, १९४१-
आधुनिक हिंदी गद्य. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७४. १६० पृ. ७.५०

आनंद, रवेलचंद, १९४१-
हिंदी साहित्य का आधुनिक काल. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७२. २१४ पृ. ७.००

आलोक, संपा.
परिवेश: श्रेष्ठ गद्य-विधाओं का अभिनव संचयन. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. १४४ पृ. ३.५०

आलोचनात्मक निबन्ध. पटियाला, भाषा विभाग, पंजाब, १९७०. ३६७ पृ. ४.३०

आसोपा, पुरुषोत्तमप्रसाद, १९४२-
आदिकाल की भूमिका. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७३. १७६ पृ. १५.००

आसोपा, पुरुषोत्तमप्रसाद, १९४२-
हिंदी साहित्य, संदर्भ ग्रंथ कोश, जोधपुर, उषा पब्लिशिंग हाउस, १९७६. १०, १०६ पृ. २५.००

आहलूवालिया, हरिपाल सिंह.
आस्मां और भी हैं. अनु. धर्मपाल पांडेय. दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस, १९७४. १८६ पृ. १७.५०
संस्मरण.

इस्सर, देवेन्द्र
साहित्य और आधुनिक युगबोध. अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स, १९७३. १९० पृ. २५.००

उपाध्याय, कृष्णदेव १९११-
आंचलिक रेखाचित्र. वाराणसी, भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, १९७४. ८, १५२ पृ. १२.००

उपाध्याय, कृष्णदेव, १९११-
भोजपुरी साहित्य का इतिहास. वाराणसी, भारतीय लोक-संस्कृति शोध संस्थान, १९७२. १६, ४१६ पृ. १०.००

उपाध्याय, बलदेव, १८९९-
महाकवि भास : एक अध्ययन. वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, १९६४. ८, १७६ पृ. ४.००

उपाध्याय, बलदेव, १८९९-
संस्कृत साहित्य का इतिहास : संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक बृहत्-इतिहास. सं. ८. वाराणसी, शारदा मंदिर, १९६८. ७८५ पृ १५.००

उपाध्याय, बलदेव, १८९९-
संस्कृत साहित्य का इतिहास. वाराणसी, शारदा संस्थान. भा. १. २२.००

उपाध्याय, भगवतशरण, १९१०-
कालिदास के सुभाषित. कलकत्ता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन १९७०. ३०८ पृ. ७.००

उपाध्याय, भगवतशरण, १९१०-
भारतीय व्यक्ति कोष : वैदिक, पौराणिक, रामायण और महाभारत साहित्य से समन्वित. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. २६० पृ. २५.००

उपाध्याय, भरतसिंह.
पालि साहित्य का इतिहास. सं. ३. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. २३, ७७५ पृ. २०.००

उपाध्याय, मुकुल, संपा.
हास्यम्; व्यंग्य विनोद व हास्य की वार्षिकी, १९७४. बंबई, पुष्पा उपाध्याय, १९७४. भा. १. २४३ पृ. २५.००

उपाध्याय, रामजी, १९२०-
संस्कृत-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. संशो. सं. २. इलाहाबाद, रामनारायणलाल बेनीमाधव, १९७१. भा. १. १२.००; भा. २ (१). १२.००

उपाध्याय, रामनारायण, १९१८-
कुंकुम कलश और आम्रपल्लव. खंडवा, म.प्र., साहित्य कुटीर, १९७४. १८६ पृ. ६.००

उपाध्याय, रामनारायण, १९१८-
सुख के नाम पाती. खंडवा, साहित्य कुटीर, १९७०. १६, २०९ पृ. १०.००

उपाध्याय, हरिभाऊ, १८९३-१९७२.
बदलते संदर्भ और साहित्यकार. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७६. ८, २२५ पृ. १३.५०

उप्रेती, भवानीदत्त, १९३५-
कुमाउंनी लोक-साहित्य तथा गीतकार. इलाहाबाद, कुमाउंनी समिति, १९७६. ७, १५८ पृ. १२.५०

उमापति शास्त्री, जी. एम., अनु.
अक्का महादेवी के वचन. धारवार, कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा. १९६४. ८, ५९ पृ.

उमराव, संयोजक.
विवेचना संकलन. इलाहाबाद, भारती भंडार, १९७१. २३० पृ. १०.००

ऋतुपर्ण, सुरेश, १९४८-
निबंधायन. दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति, १९७१. १४८ पृ. ४.००

ऋषि, वीर राजेन्द्र, १९१७-
रूसी साहित्य का इतिहास. दिल्ली, पंजाबी पुस्तक भंडार; वितरक : हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७२. २८५ पृ. २५.००

एकबोटे, गोपालराव तथा अन्य, संपा.
तेलुगु वाणी : विश्व तेलुगु सम्मेलन-संस्मारिका. हैदराबाद, विश्व तेलुगु सम्मेलन, १९७५. २०६ पृ. ५.००

ओंकार राही.
खड़ी बोली; स्वरूप और साहित्यिक परम्परा. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७५. २०७ पृ. २४.००

ओंकार शरद्.
देखा सुना पढ़ा. इलाहाबाद, साहित्य भंडार, १९७६. ३३५ पृ. २५.००

ओंकार शरद्.
नये निबंध. लखनऊ, प्रकाशन केंद्र, १९७३. ३३९ पृ. ४.५०

ओंकार शरद्, संपा.
साहित्यकार चित्रावली. इलाहाबाद, स्वस्तिका प्रकाशन, १९७२. ३५ पृ., १५ चित्र. ३०.००

ओझा, जगन्नाथ.
शरत्चन्द्र की शिल्प साधना. साहिबगंज, स्निग्धा प्रकाशन, १९६९. ७९ पृ. ५.००

ओझा, दशरथ, १९०९-
हिंदी नाटक कोश : सन् १३२५ से १९७० तक के हिंदी-नाटकों का आधिकारिक अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. २२, ६५४ पृ. ६५.००

ओझा, रसिकविहारी 'निर्भीक', १९२२- संपा.
साक्षातकार : भोजपुरी साहित्यकार (भोजपुरी इंटरव्यू संग्रह). जमशेदपुर, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, १९७३. २, १५२ पृ. ३.००

ओमप्रकाश, १९२४- संपा
गद्य-भारती. दिल्ली, भारती साहित्य मंदिर, १९६५. ३, १४४ पृ २.५०

कथूरिया, सुंदरलाल, १९४१-
आधुनिक साहित्य : विविध परिदृश्य. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७३. २१३ पृ. २१.००

कपिल तथा विजेन्द्र नारायण सिंह, संपा.
गद्य शैली. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७०. २१३ पृ. ३.५०

कलिंगवुड, आर. जी.
कला के सिद्धान्त. अनु. ब्रजभूषण पालीवाल. जयपुर, राजस्थाज हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ३२५ पृ. ११.००

कलीमुद्दीन अहमद
उर्दू समालोचना पर एक दृष्टि. अनु. रामप्रसाद लाल. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, १९६९. २४१ पृ. ७.५०

कवड़े, चंद्रदेव.
भारतेन्दु पूर्व हिंदी गद्य. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७५. २४४ पृ. ३५.००

कवि-सम्राट् विश्वनाथ सत्यनारायण : व्यक्तित्व और कृतित्व. नई दिल्ली, भारती साहित्यकार प्रतिष्ठान, १९७१. ११७ पृ. ३.००

कांतिकुमार, १९३२-
भारतेंदु पूर्व हिंदी-गद्य. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७४. १२१ पृ. ७.००

कात्यायन, हेमकांत, १९४२-
मंडयाली और उसका लोक-साहित्य. सोलन, कुमारसन्ज, १९७४. १०, १७२ पृ. १०.००

काले, एस. एम.
भारतीय पाठालोचन की भूमिका. अनु. उदयनारायण तिवारी. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २०, १७४ पृ. ७.५०

कानोड़िया, कमला.
भारतेंदुकालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७१. १८, ४५६ पृ. ३०.००

कामत, अशोक प्रभाकर, संपा.
आद्य महाराष्ट्रीय हिंदी कवि आचार्य दामोदर पंडित और उनकी कविता. पुणे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, १९७६. १२५ पृ. १५.००

काश्यप, पद्मचन्द्र.
कुल्लई लोक साहित्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. २३३ पृ. १४.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
अध्ययन और अनुसंधान. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७५. १५६ पृ. १४.००

कुट्टन पिल्लै, एन. पी., १९३५-
कैरली-वैभव. हैदराबाद, दक्षिणांचलीय साहित्य समिमि, १९७६. १२० पृ. १०.००

कुट्टिचातन्.
सब रंग और कुछ राग. अनु. सच्चिदानंद वात्स्यायन. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७०. १०२ पृ. ६.००

कुमार, वचनदेव.
निबंध-भास्कर. सं. ३. पटना, भारती भवन, १९७१. १८४ पृ. ३.२०

कुमार, वचनदेव
वृहत् निबंध भास्कर. पटना, भारती भवन, १९७१. २८३ पृ. ५.००

कुमार, वचनदेव.
संस्कृत साहित्य का इतिहास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७७. २५० पृ. २५.००

कुलश्रेष्ठ, रमेशचंद्र तथा विद्याराम शर्मा.
आदर्श निबंध. सं. ९. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७१. १६, ३१० पृ. ३.००

कृशनचंदर
कांच के टुकड़े. बम्बई, रंजन पब्लिशर्स; वितरक : राजकमल प्रकाशन, १९७१. १४८ पृ. ६.००

कृष्णमूर्ति, सरगु, १९३६-
तुलसी रामायण और पंप रामायण. लखनऊ हिंदी-साहित्य भंडार; प्रमुख वितरक : विद्या मंदिर, १९७४. ११६ पृ. १५.००

केंद्रीय हिंदी निदेशालय.
हिंदी वार्षिकी : १९७०. नयी दिल्ली, १९७३? ३२८ पृ. ५.००

केंद्रीय हिंदी निदेशालय.
हिंदी वार्षिकी : १९७१. नई दिल्ली, १९७१. १६, ३९७ पृ. ८.५०

केशरी, विसेश्वरप्रसाद, १९३३-
नागपुरी भाषा और साहित्य. रांची, कमल प्रकाशन, १९७१. ६७ पृ. ३.००

केसरी, अर्जुनदास.
हिंदी कल्पतरु. सं. २. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७०. भा. २. ५.००

कैलाशप्रकाश, श्रीमती, संपा.
संचयन. बम्बई, सोमेया पब्लिकेशन्स, १९७०. ८४ पृ. २.००

कोलहटकर, श्रीपाद कृष्ण.
सुदामा के चावल. अनु. कृष्णगोपाल अग्रवाल. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १९७५. ३६१ पृ. १२.००

क्लेमेंट मेरी, सिस्टर, १९१७-
हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर विचारात्मक गद्य. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७१. १९, ३६४ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

खंडेलवाल, जयकिशनप्रसाद, १९३२-
ब्रजभाषा गद्य का विकास. आगरा, अपाला प्रकाशन, १९७२. ३५२ पृ. ३५.००

खंडेलवाल, जयकिशनप्रसाद, १९३२-
हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां. संशो. सं. ६. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. २४, ६८६ पृ. १६.००

खन्ना, शांति.
आधुनिक हिंदी का जीवनीपरक साहित्य; जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण पत्र एवं डायरी आदि. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७३. ३०१ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

खरे, नर्मदाप्रसाद, १९१३-
कुछ कांटे : कुछ फूल. जबलपुर, लोकचेतना प्रकाशन, १९७३. १०४ पृ. ५.००

गंगादत्त शास्त्री 'विनोद', १९२४-
मति मंथन. नई दिल्ली, अजय पब्लिशर्स, १९७२. १७६ पृ. १६.००

गद्य गरिमा. उज्जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. १८, १४८ पृ. ६.००

गद्य गरिमा. नागपुर, नागपुर विद्यापीठ प्रकाशन, १९७५. १०, २२२ पृ. ५.५०

गद्य प्रवाह (गद्य संकलन). जबलपुर, जबलपुर विश्वविद्यालय, १९७१. १६, ११२ पृ. ३.२५

गद्य भारती. नागपुर, नागपुर विद्यापीठ, १९७२. १०, १३५ पृ. २.५०

गद्य-सुषमा (गद्य-संकलन). जबलपुर, जबलपुर विश्वविद्यालय, १९७१. १६, ६३ पृ. २.२५

गर्ग, शेरजंग.
व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७६. १६० पृ. २२.००

गुप्त, अशोककुमार, १९५१-
आधुनिक युग के वातायन से. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७६. ८८ पृ. १२.००

गुप्त, अशोककुमार, १९५१-
साहित्यिक निबंध. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७१. ३०२ पृ. १२.५०

गुप्त, गंगाप्रसाद, १९३६-
छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७२. ८, १४६ पृ. १०.००

गुप्त, गंगाप्रसाद, १९३६-
हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७१. १६, ३०५ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—जबलपुर विश्व.

गुप्त, गणपतराय तथा सत्या अग्रवाल, संपा.
संयोजिता. चंडीगढ़, पंजाब यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन ब्यूरो, १९७१. २२४ पृ. २.४०

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८- संपा.
आदिकाल की प्रामाणिक रचनाएं. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. ५५, २५७ पृ. ३६.००

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
साहित्य का वैज्ञानिक विवेचन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ४१२ पृ. ३५.००

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
साहित्यिक निबन्ध. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७७. ७९४ पृ. २०.००
सं. : १९७१.

गुप्त, गणपतिचंद्र, १९२८-
हिंदी साहित्य का विकास. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. १२, ३२९ पृ. १०.००

गुप्त, तनसुखराम, संपा.
निबंध प्रभाकर. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७४. ८, २८८ पृ. ८.५०

गुप्त, द्वारिकाप्रसाद, संपा.
फौलादी चौखटा. नयी दिल्ली, कर्मधारा प्रकाशन, १९७४. १०२ पृ. ६.००

गुप्त, प्रेमस्वरूप तथा अन्य.
हिंदी अनुसंधान-विवरणिका, १९७१-७२. झांसी, सेतु प्रकाशन, १९७३. २३२ पृ. १०.००

गुप्त, रमेशचंद्र, १९४०-
साहित्य के शाश्वत मूल्य. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १५१ पृ. १०.००

गुप्त, राकेश, संपा.
गद्य-विविधा. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. २०, २१२ पृ. ३.५०

गुप्त, रामअवतार, संग्रा. तथा संपा.
अकबर-बीरबल विनोद. दिल्ली, हिंद पुस्तक भण्डार, १९७५. २४८ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

गुप्त, लालचंद 'मंगल'.
अस्तित्ववाद; दार्शनिक तथा साहित्यिक भूमिका. पटियाला, अनुपम प्रकाशन मंदिर, १९७७. १४२ पृ. २५.००

गुप्त, शांतिस्वरूप.
कल्पना-तत्व. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७४. ८, १६० पृ. १०.००

गुप्त, शांतिस्वरूप.
साहित्यिक निबंध. सं. ७. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. ७२८ पृ. १०.००

गुप्त, सरयूप्रसाद.
संस्कृत साहित्य में तीर्थ-भावना का उद्भव तथा विकास. वाराणसी, १९७४. ३९ पृ. २.००

गुप्त, सुधीरकुमार.
बाण और दंडी : एक अध्ययन. जयपुर, भारती मंदिर अनुसंधानशाला, १९६९. ६, ८६ पृ. ६.००

गुप्ता, प्रेमस्वरूप.
हिंदी वैष्णव साहित्य में रस-परिकल्पना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६९. १५, ४४० पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध.

गुप्ते, विलास, १९३७-
आधुनिक हिंदी साहित्य में अहिंदी लेखकों का योगदान. बंबई, नवनीत प्रकाशन; वितरक : हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, १९७३. ३५८ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—विक्रम विश्व.

गुलाटी, यश संपा.
गद्य सौरभ. जालंधर सिटी, हिंदी भवन. १२० पृ. ०.९५

गुलाटी, यश, संपा.
बृहत् साहित्यिक निबंध. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७१. ३७६ पृ. ३०.००

गुलाबराय, १८८३-१९६३.
गुलाब-वल्लरी. संपा. सी. बालकृष्णराव. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७४. १२, १५२ पृ. १२.००

गुलाबराय, १८८३-१९६३.
प्रबंध-प्रभाकर. संपा. रामबहोरी शुक्ल. संशो. सं. १३. इलाहाबाद, हिंदी भवन, १९७०. ६, ५१९ पृ. ८.००

गोकाककर, सुधाकर तथा गो. रा. कुलकर्णी.
हिंदी साहित्य में प्रतिबिंबित चिंतन प्रवाह. कोल्हापुर, फडके बुकसेलर्स, १९७६. १६, १९३, १९८ पृ. २५.००

गोपालदास.
जीवन की धूप छांव से. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७३. ११२ पृ. ६.००

गोपीनाथन, जी., १९४३-
केरलीयों की हिंदी को देन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १५२ पृ. १२.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ विश्व.

गोस्वामी, श्रवणकुमार, १९३८-
नागपुरी शिष्ट साहित्य. दिल्ली, रिसर्च, १९७२. १४६ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—रांची विश्व.

गौड़, राजेंद्रसिंह, १९०३-
हमारे लेखक : हिंदी के इकतीस प्रसिद्ध लेखकों के जीवन और कृतित्व की आलोचना. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७०. ४८० पृ. ७.५०

गौड़, राजेंद्रसिंह, १९०३- संपा.
हिंदी गद्यालोक. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, २०५ पृ. ३.५०

गौतम, ओमप्रकाश.
चिंतन. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७३. १३५ पृ. १५.००

चतुरसेन, १८९१-१९६०.
अंतस्तल. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७२. ६, २११ पृ. ७.००

चतुर्वेदी, कृष्णकांत, १९३७-
द्वैत-वेदान्त का तात्विक अनुशीलन. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७१. २३१ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—जबलपुर विश्व.

चतुर्वेदी, परशुराम, १८९४-
संत-साहित्य के प्रेरणा-स्रोत. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. २०८ पृ. २०.००

चतुर्वेदी, प्रवीण.
स्वप्न चले मिट्टी के पांव. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७६. २६८ पृ. २५.००

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
चकल्लस. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३. ७२ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
तलाश काले धन की. नई दिल्ली, पीताम्बर बुक डिपो, १९७४. १२८ पृ. ८.००
हास्य-व्यंग्य.

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
बुरे फंसे. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. ८६ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
भोला पण्डित की बैठक. संपा. लक्ष्मीचंद्र जैन तथा जगदीश. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७५. ५७ पृ. ६.००

चतुर्वेदी, बरसानेलाल, १९२०-
हिंदी साहित्य में हास्य-रस. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७५. २२८ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

चतुर्वेदी, राजेश्वरप्रसाद.
अभिनव साहित्यिक निबंध. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७६. ५८८ पृ. १८.००

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, १९३१-
हिंदी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियां; तीन व्याख्यान. आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, १९६९. २७ पृ. २.००

चतुर्वेदी, रूपनारायण.
सावित्री. आगरा, चतुर्वेदी प्रकाशन समिति, १९६९. ८० पृ. १.००

चतुर्वेदी, श्रीनारायण, १८९५-
आधुनिक हिंदी का आदिकाल, १८५७-१९०८. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७३. १०, २५१ पृ. १४.००

चतुर्वेदी, श्रीनारायण, १८९५-
पावनस्मरण : साहित्यकारों, मनीषियों, और महापुरुषों से संबंधित. नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. ६, ३०७ पृ. ४०.००

चतुर्वेदी, श्रीनारायण, १८९५-
मनोरंजक संस्मरण. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७७. २१० पृ. २०.००

चतुर्वेदी, सत्येंद्र.
साहित्य का मर्म और धर्म. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७६. १९४ पृ. १८.००

चतुर्वेदी, सीताराम तथा अन्य, संपा.
रत्नावली. काशी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, १९७३. १२, ४१३ पृ. १६.००

चावला, इंद्रनाथ.
रोहतांग के पार. पटियाला, प्रवेश प्रकाशन, १९७५. १२६ पृ. १२.००

चौधरी, रामस्वार्थ 'अभिनव', १९२०-
मधुर रस : स्वरूप और विकास. २ भा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९६८-७२ भा. १. १८.००; भा. २. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—पटना विश्व.

चौधरी, रामस्वार्थ 'अभिनव', १९२०- तथा सुरेंद्रनाथ दीक्षित, संपा.
विविधा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७१. १६, १९१ पृ. ६.२५

चौधरी, सुधांशु 'शेखर', संपा.
विवेचना : आलोचनात्मक निबंध-संग्रह. दरभंगा, वैदेही समिति, १९५४. ५० पृ.
मैथिली में.

चौबे, ब्रजविहारी.
वैदिक वाङ्मय : एक अनुशीलन. होशियारपुर, कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, १९७२. भा. १. २०.००

चौहान, मो. मा. तथा प्रागसिंह बैस.
अखिल भारतीय हिंदी साहित्य का इतिहास. आगरा, हिंदी प्रकाशन गृह, १९७३. ३६० पृ. १२.००

छंगाणी, शिवराज.
ओल खाण : राजस्थानी चितराम. बीकानेर, सरजणा प्रकासण, १९७६. ७९ पृ. १०.००
राजस्थानी में.

जयदेव बंधु, संग्रा.
संचयन. पूना, नेशनल डिफेंस अकादमी, १९७१. १०, २४० पृ.

जयनाथ 'नलिन', १९१२-
साहित्य का आधार दर्शन. भिवानी, आलोक प्रकाशन, १९७६. २४, २१४ पृ. ४०.००

जायसवाल, मंजुला.
कालिदास के काव्य में ध्वनितत्व. इलाहाबाद, संजय प्रकाशन, १९७६. २९४ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

जायसवाल, शंकरलाल.
हिंदी गद्य-साहित्य पर समाजवाद का प्रभाव. इलाहाबाद, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, १९७३. ४८२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—जबलपुर विश्व.

जैन, अक्षयकुमार.
याद रही मुलाकातें. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७१. १५२ पृ. ५.००
संस्मरण.

जैन, अक्षयकुमार.
याद रही बातें; आज के जीवन पर रोचक लेख. दिल्ली, पंजाबी पुस्तक भंडार; एकमात्र वितरक : हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७४. १२६ पृ. ८.००

जैन, कैलाशचंद्र, १९०५-
जैन साहित्य का इतिहास. वाराणसी, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला प्रकाशन, १९७५-१९७६. २ भा. भा. १. १५.००; भा. २. २०.००

जैन, नेमिचंद्र, १९२७- अनु.
जर्मन साहित्य की परम्परा. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १२, २६५ पृ. २५.००

जैन, पन्नालाल, १९१०-
महाकवि हरिचंद्र : एक अनुशीलन. नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७५. १६, २१० पृ. १४.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

जैन, प्रेमचंद्र.
अपभ्रंश कथाकाव्य एवं हिंदी प्रेमाख्यानक. अमृतसर, सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति, १९७३. १२, ३६६ पृ. २०.००
शोध-प्रबंध—बनारस हिंदू विश्व.

जैन, राजाराम, १९२९-
रइधू साहित्य का आलोचनात्मक-परिशीलन. वैशाली, प्राकृत, जैनशास्त्र और अहिंसा शोध-संस्थान, १९७४. ८२४, ३१ पृ. २८.७५

जैन, श्रीचंद्र, १९०९-
बघेलखण्ड का लोक साहित्य. जबलपुर, मदनमहल जनरल स्टोर्स, १९६६. ६३ पृ. १.००

जैन, श्रीचंद्र, १९०९-
लोक-कथा विज्ञान. जयपुर, मंगल प्रकाशन, १९७७. १६, २२८ पृ. ३०.००

जैनेन्द्रकुमार, १९०५-
वृत्त-विहार. दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७१. भा. १-२. २०.०० (प्र.)

जैनेन्द्रकुमार, १९०५-
समय, समस्या और सिद्धान्त. दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७१. ३२, ५९४ पृ. ५०.००

जोतवाणी, मोतीलाल, संक. तथा रूपा.
प्रतिनिधि संकलन, सिंधि. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७४. १९५ पृ. ९.००

जोशी, अंबालाल.
बाल्मीकीय रामायण में आयुर्वेद. जोधपुर, पूर्णिमा प्रकाशन, १९७३. १६, २२४ पृ. १५.००

जोशी, अरविंद.
गांधी विचारधारा का हिंदी-साहित्य पर प्रभाव. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७३. १४, ५३० पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—गुजरात विश्व.

जोशी, कृष्णानन्द, १९३६-
कुमाऊं का लोक साहित्य. बरेली, प्रकाश बुक डिपो, १९७१. ४२५ पृ. २२.५०

जोशी, नेमनारायण, १९२६-
चिंतन-अनुचिंतन. जयपुर, संघी प्रकाशन, १९७५. १४२ पृ. १८.००

जोशी, शरद, १९३१-
किसी बहाने. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. १३४ पृ. ४.५०
हास्य-व्यंग्य.

जोशी, शरद, १९३१-
तिलस्म. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. १५२ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

जोशी, शरद, १९३१-
रहा किनारे बैठ. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १३३ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

ज्ञानेंद्र 'सुषमा'.
प्रेरणा के स्रोत. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९६६. १०४ पृ. ३.००

ज्योती, लीला.
सूरदास और पोतना : वात्सल्य की अभिव्यक्ति. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार; प्रमुख विक्रेता : विद्या मंदिर, हिंदी बुक सेन्टर, बंगलौर १९७६. २५६ पृ. ३२.००
शोध-प्रबंध—उस्मानिया विश्व.

झा, गंगाधर.
आधुनिक मनोविज्ञान और हिंदी साहित्य. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७७. ३१३ पृ. ४०.००

झा, दिनेशकुमार, १९४१-
अनुसन्धान एवं आलोचना. पटना, शिववाणी प्रकाशन, १९७५. १५६ पृ. ११.००

झा, परमानन्द.
मैथिली नव-निबन्धावली. दरभंगा, विद्यापति प्रकाशन १९६१. १५४ पृ. ३.५०

झा, बालगोविंद 'बच्चन', १९३२.
मैथिली साहित्य इतिहास. पटना, भारती भवन, १९६१. १११ पृ.

झा, राजेश्वर, १९२५-
वीर गाथा : विवेचन. पटना, मैथिली साहित्य संस्थान. १९७४. ५६ पृ. ४.००

झा, विष्णुकिशोर 'बेचन', १९३१- संपा.
नचारी-संकलन. भागलपुर, नचारी प्रकाशन, १९७३. ६, १३६ पृ. ७.५०

झा, विष्णुकिशोर 'बेचन', १९३१-
समकालीन साहित्य और समीक्षा. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. १३६ पृ. १५.००

झा, विष्णुकिशोर 'बेचन', १९३१- संपा. तथा अन्य.
अत्याधुनिक मैथिली गद्य. भागलपुर, प्रगतिशील मैथिली प्रकाशन, १९७०. ८० पृ. २.२५

झा, शैलेंद्रमोहन, १९२९-
ब्रजबोली साहित्य. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १२, ३७२ पृ. ११.५०

झा, शैलेंद्रमोहन, १९२९- तथा दिनेश्वर झा 'दीन', संपा.
संकलन : मैथिली-गद्य-भाग १. सं. २. लहेरियासराय, मिथिला प्रकाशन, १९६७ ६, १८१ पृ. ३.००

झा, रमानाथ, १९०७-१९७१.
प्रबन्ध-संग्रह. दरभंगा, दरभंगा प्रेस कम्पनी, १९६३. २०८ पृ. ४.५०

झा, हितनारायण.
गद्य पारिजात. दरभंगा, ग्रन्थालय प्रकाशन, १९६१. २, ६० पृ.

झा, हितनारायण.
मैथिली-गद्य-पुष्पांजलि. पटना, किताब महल, १९७३. ६१ पृ. ३.४०

टंडन, उमेशचंद्र, संपा.
हिंदी संदर्भ, १९६९. जयपुर, राजस्थान विश्वविद्याय पुस्तकालय, १९७१? ३१० पृ. ३०.००

टंडन, उमेशचंद्र, संपा.
हिंदी संदर्भ १९७०; हिंदी पत्रिका साहित्य से चयनित समस्त विषयों पर लेख, संपादकीय, टिप्पणी, पत्रादि की प्रवेश सूची. जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, १९७३. ४२४ पृ. ४५.००

टंडन, कमलनारायण.
उर्दू साहित्य का सुबोध इतिहास. बंगलौर, विद्या-मंदिर, १९७२. ११७ पृ. ७.००

टंडन, पी. डी.
सपनों की फांसी. नई दिल्ली, स्टार पब्लिकेशन्स. १४४ पृ. २.००

टंडन, पुरुषोत्तमदास.
निबंधावलि. वर्धा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, १९७०. १६७ पृ. ४.००

टंडन, प्रतापनारायण १९३५-
संस्कृत समीक्षा की रूपरेखा. बंबई, सोमैया पब्लि-केशन्स, १९७२. ३०२ पृ. १२.००

टंडन, प्रतापनारायण, १९३५-
साहित्यिक निबंध. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन. १०.००

टंडन, प्रतापनारायण, १९३५-
हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७३. ३११ पृ. १५.००

ठलुआ क्लब.
एक कोडी एक. संपा. मंडल : कृष्णदेव प्रसाद गौड़ तथा अन्य. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९६८. १९९ पृ. ५.००

ठलुआ क्लब.
तीन कोडी तीन. संपा. मंडल: सीताराम चतुर्वेदी तथा अन्य. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७०, २१६ पृ. ७.५०

ठलुआ क्लब.
दो कौड़ी दो. संपा. मंडल : सीताराम चतुर्वेदी तथा अन्य. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७०. ६, २१० पृ. ७.५०

ठाकुर, देवेश, १९३३-
आधुनिक हिंदी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएं. मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन १९७४. ३७५ पृ. ५०.००

ठाकुर, रवीन्द्रनाथ, १८६१-१९४१.
रवींद्रनाथ के नाटक. नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी, १९६६-६७. २ भा. १६.००

ठाकुर, रवींद्रनाथ, १८६१-१९४१.
रवींद्रनाथ का बाल साहित्य. सपा. लीला मजूमदार तथा क्षितीश राय. अनु. युगजीत नवलपुरी. नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी, १९७१. ३१२ पृ. ७.५०

ठाकुर, संपत तथा शोमनाथ यादव, संपा.
इंद्रधनुष. बंबई, बंबई यूनिवर्सिटी, १९७३. ८, १५० पृ. ४.५०

डोलिया, मदनलाल.
साहित्य-शोध. जयपुर, रोशनलाल जैन एंड संस, १९७१. ६० पृ. ८.००

तिवारी, नंदकिशोर, १९४१-
छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन. रायपुर, महानदी प्रकाशन. ७१ पृ. १.५०

तिवारी, रमाशंकर, १९१५-
महाकवि कालिदास. शोधपूर्ण परिवर्धित संस्करण. वाराणसी, चौखम्बा विद्या भवन, १९७२. ४९२ पृ. १५.००

तिवारी, रमाशंकर, १९१५-
ललित की खोज में, समीक्षात्मक निबंध. कानपुर, ग्रंथम, १९७४. २७९ पृ. २५.००

तिवारी, रमाशंकर, १९१५-
शृंगार और साहित्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७५. १५९ पृ. १२.००

तिवारी, रामचंद्र, १९२४-
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७२. ३८३ पृ. ३०.०० शोध-प्रबन्ध—लखनऊ विश्व.

तिवारी, रामजी.
निबंध निकेतन. इलाहाबाद, ज्ञानलोक, १९७०. ४, १२४ पृ. २.५०

तिवारी. विश्वनाथप्रसाद, १९४०- संपा.
हिंदी निबंध. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७३. ४१६ पृ. १०.००

तिवारी, सी. एस. तथा श्रीधर मिश्र, संपा.
हिंदी साहित्य संकलन. बंबई, बंबई यूनिवर्सिटी, १९७३. १२७ पृ. ३.५०

तुलसी, त्रिलोकचंद, १९२६-
परिवेश, मन और साहित्य. होशिआरपुर, प्रतिभा प्रकाशन, १९७४. ३८३ पृ. ३५.००

तेजा सिंह, १८९४-१९५८.
नव चिंतन. अनु. प्रेमभूषण गोयल. पटियाला, भाषा विभाग, १९७३. ६, १०८ पृ. १.४५

तेलंग, भालचंद्रराव, संपा.
शृंगार रस माधुरी. श्रीविठ्ठलेशाष्टक. रासा जाजऊ. औरंगाबाद, पद्माकर अनुसंधानशाला, १९७३. १३, ८०, १६५, ३५ पृ. २१.००

त्यागी, रवींद्रनाथ.
अतिथि-कक्ष. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७७. ८९ पृ. ७.००

त्यागी, रवींद्रनाथ
कृष्णवाहन की कथा. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ६, १०९ पृ. ४.००
हास्य-व्यंग्य

त्यागी, रवींद्रनाथ.
देवदार के पेड़. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. १२४ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

त्यागी, रवींद्रनाथ.
मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें. दिल्ली, ज्ञान भारती, १९७७. १३० पृ. १०.००

त्यागी, रवींद्रनाथ.
शोक सभा. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ११४ पृ. ७.००
हास्य-व्यंग्य.

त्रिगुणायत, गोविंद, १९२४-
नवीन साहित्यिक निबंध. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १०, ३९४ पृ. १२.५०

त्रिधारा. उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय, १९७३. १३७ पृ. ६.००

त्रिपाठी, आदित्यप्रसाद तथा जी. के. कार्लेकर, संपा.
हिंदी साहित्य पारिजात. बंबई, बंबई यूनिवर्सिटी, १९७३. ८, १३६ पृ. ४.००

त्रिपाठी, जयशंकर, १९२९-
पर्वत से झांकता वक्र नयन; ललित निबंध. इलाहाबाद, अभिनव भारती प्रकाशन, १९७३. १०, १६४ पृ. ८.००

त्रिपाठी, जयशंकर, १९२९-
साहित्य में क्ष त्र ज्ञ : साहित्य रचना की सैद्धान्तिक एवं अनुसंधात्मक व्याख्या. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. ८, २४४ पृ. २४.००

त्रिपाठी, बाबूराम.
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १२, ३८० पृ. १०.००

त्रिपाठी, राजदेव.
कुछ कण; कुछ बूंदें. नई दिल्ली, अम्बिका पब्लिकेशन्स, १९७६. १५६ पृ. १५.००

त्रिपाठी, रामप्रताप, संपा.
भवभूति ग्रंथावली. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. ५९७ पृ. ४०.००

त्रिपाठी, रामफेर, १९३२-
नये-पुराने परिवेश. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७५. १२, २३७ पृ. ३०.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९- संपा.
निबंधिका. भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन. १५, ७३ पृ. ३.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९-
साहित्य सारणी. उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. १७६ पृ. ६.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, १९२९-
हिंदी साहित्य का इतिहास. उज्जैन, मानकचंद बुक-डिपो. ४५३ पृ. १५.००

त्रिपाठी, रामसागर तथा शांतिस्वरूप गुप्त.
बृहत् साहित्यिक निबंध. सं. २. दिल्ली, अशोक प्रकाशन, १९७२. ४, १०३१ पृ. २५.००
त्रिविधा. उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय, १९७२. १५१ पृ. ५.००

थानवी, शिवरतन तथा पुरुषोत्तमलाल तिवारी, संपा.
अस्तित्व की खोज. बीकानेर, शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७३. १४३ पृ. ५.७५

थानवी, शिवरतन तथा पुरुषोत्तमलाल तिवारी, संपा.
जूनां बेली : नुवां बेली. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७३. ८, १७६ पृ. ५.७५

दत्त, नारायण, संपा.
नवनीत-सौरभ. बम्बई, नवनीत, १९७२. ८, ४०० पृ. १२.००

दशरथ राज, १९२७-
दक्खिनी साहित्य का इतिहास. आगरा, अपाला प्रकाशन, १९७२. १९० पृ. १२.००

दामोदर, हरि.
भारतेन्दु-युग-द्विवेदी युग. पटना, भारत बुक डिपो. १९७५. १८८ पृ. १२.००

दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.
आधुनिक बोध; आधुनिकता पर संकलित निबंध. दिल्ली, पंजाबी पुस्तक भंडार; एकमात्र वितरक : हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, १९७३. ११६ पृ. ८.००

दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.
चेतना की शिखा. पटना, उदयाचल, १९७३. ४, १२७ पृ. ६.००

दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.
रेती के फूल. सं. ३. पटना, उदायचल, १९७३. १४२ पृ. ३.००

दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.
विवाह की मुसीबतें. नई दिल्ली, स्टार पब्लिकेशन; एकमात्र वितरक : हिंदी बुक सेंटर, १९७४. १०३ पृ. ८.००

दीक्षित, आनंदप्रकाशन, १९२५-
साहित्य-सिद्धांत और शोध. मेरठ, मनीषी प्रकाशन; नयी दिल्ली : वितरक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. १६३ पृ. २०.००

दीक्षित, आनंदप्रकाश, १९२५- तथा अन्य, संपा.
साहित्य-सौरभ. सं. २. पूना, पूना यूनिवर्सिटी, १९७२. ८, १७६ पृ. ४.००

दीक्षित, प्रकाश, १९३८- संग्रा.
गद्य-गद्य. नागपूर, विश्वभारती प्रकाशन, १९७०. ४, १२२ पृ. १.७५

दीनानाथ 'शरण', १९३७-
नेपाली साहित्य का इतिहास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. भा. १. २२.००

दुबे, परमेश्वर 'शाहाबादी'.
एनक. जमशेदपुर, जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्, १९७१. १०२ पृ. २.००

देवड़ा, शरद, संपा.
गरधर गहिमा. जयपुर, अणिमा प्रकाशन, १९७१. ४१६, ३९ पृ. २०.००

देवराज.
साहित्य समीक्षा और संस्कृति बोध. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७७. १६५ पृ. २३.५०

देवेन्द्र मुनि शास्त्री, १९३२-
साहित्य और संस्कृति. वाराणसी, भारती विद्या प्रकाशन, १९७०. ५, २३९ पृ. १०.००

देसाई, महादेव हरिभाई, १८९२-१९४२.
महादेवभाई की डायरी. संपा. नरहरि द्वा. परीख अनु. रामनारायण चौधरी काशी, अखिल भारत सर्व सेवा संघ, १९६१. २ भा.

द्वारकाप्रसाद शास्त्री, १९१७-
सार्वभौम हिंदी लेखक सारणी. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७६. ३२ पृ. ५.००

द्विवेदी, राधेश्याम, १९२१-
हिन्दी भाषा और साहित्य में ग्वालियर क्षेत्र का योगदान; तोमरयुगीन ग्वालियर संस्कृति, भाषा-साहित्य, १५-१६वीं शती ई. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७२. २०, ४४२ पृ. २५.००

द्विवेदी, शिवबालक.
संस्कृत निबंध-चंद्रिका. कानपुर, ग्रंथम, १९७६. १३९ पृ. ४.००

द्विवेदी, श्रीमन्नारायण, संपा.
चरित्र-रेखांकन. झांसी, मयूर प्रकाशन, १९६९. ४, १०४ पृ. १.५०

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
अशोक के फूल. सं. ११. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. २०८ पृ. ४.००

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
आलोक पर्व. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७२. २२१ पृ. १४.००

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
कालिदास की लालित्य योजना. सं. २. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७०. १७६ पृ. ७.००

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
कुटज एवं अन्य निबंध. सं. ३. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७०. ४, १६५ पृ. ३.७५

द्विवेदी, हजारीप्रसाद, १९०७-
साहित्य-सहचर. सं. २. वाराणसी, नैवेद्य-निकेतन, १९६८. १०, १८० पृ. ५.००

द्विवेदी, हरिहरनाथ.
निबंध : सिद्धांत और प्रयोग. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. १६, १९१ पृ. ७.००

धर्मचंद, संपा.
नौ निबंध. ग्वालियर, वसंत प्रकाशन, १९७३. १०५ पृ. २.००

धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, संपा
प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण. संशो. सं. ३. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, १९७१. भा. १. ६.५०

नगेंद्र, १९१५-
अप्रवासी की यात्राएं. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. ८८ पृ. ३.००

नगेंद्र, १९१५-
उत्तरलेख. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. १०७ पृ. १०.००

नगेंद्र, १९१५-
नयी-समीक्षा, नये संदर्भ. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १०६ पृ. ७.००

नगेंद्र, १९१५-
भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं काव्य. नई दिल्ली, एस. चांद एंड कंपनी, १९७२. ४४१ पृ. ६०.००

नगेंद्र, १९१५-
समस्या और समाधान. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. १०१ पृ. ७.००
विषय सूची : शिक्षा की समस्याएं—भाषा की समस्याएं—विविध समस्याएं.

नगेंद्र, १९१५-
हिंदी वाङ्मय : बीसवीं शती. आगरा, साहित्य-समारोह के लिए विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. ४८६ पृ. ५०.००

नगेंद्र, १९१५- संपा.
हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास : उत्कर्ष काल (काव्य) सं. १९७५-१९९५. काशी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७१. भा. १०. ३०.००

नगेंद्र, १९१५- तथा सुरेशचंद्र गुप्त, संपा.
हिंदी साहित्य का इतिहास. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. ३७, ८१५ पृ. ४०.००

नरसिंहाराव, कनुमूरि वीर वेंकट लक्ष्मी.
तेलुगु और हिंदी लोकोक्तियां. मैसूर, भारतीय भाषा संस्थान, १९७५. २४३ पृ. १२.००

नरेंद्र मोहन, १९३५-
आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७३. १५१ पृ. १५.००

नरेंद्र मोहन, १९३५- तथा देवेंद्र इस्सर, संपा.
विद्रोह और साहित्य. दिल्ली, साहित्य भारती; नई दिल्ली, एकमात्र वितरक : हिंदी बुक सेंटर, १९७४. १६० पृ. २०.००

नरेश, १९४२-
जिज्ञासा. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. ८२ पृ. ८.००

नलिन, जयनाथ, १९१२-
साहित्य का आधार दर्शन. भिवानी, आलोक प्रकाशन, १९७६. २४, २१४ पृ. ४०.००

नवलकिशोर, १९३२-
कृति और संदर्भ. भरतपुर, स्टूडेण्ट ब्रादर्स, १९७५. २०६ पृ. २०.००

नवलकिशोर, १९३२-
मानववाद और साहित्य; समकालीन मानववादी चिंतन और साहित्यिक प्रतिबद्धता. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७२. २०८ पृ. २०.००

नवलकिशोर, १९३२- संपा.
साहित्य की राह से. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७३. १३९ पृ. ४.००

नवलकिशोर, १९३२- तथा रामचरण महेंद्र.
राजस्थान में हिंदी कथा और नाटक साहित्य के सौ वर्ष : सर्वेक्षण ग्रंथ. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७५. १२६ पृ. ७.५०

नवलकिशोर, १९३२- तथा अन्य, संपा.
अधुनातन परिवेश और सृजन की समस्यायें : मधुमती परिचर्चा अंक. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी प्रकाशन, १९७५. १५९ पृ. ५.००

नागर, अमृतलाल, १९१६-
कृपया दायें चलिये. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. १०७ पृ. ५.००

नागर, अमृतलाल, १९१६-
जिनके साथ जिया. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. १३० पृ. ५.००

नागर, अमृतलाल, १९१६-
भारत पुत्र नौरंगीलाल. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७१. १६२ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य

नागर, अमृतलाल, १९१६-
हम फिदा-ए-लखनऊ. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. ११९ पृ. ५.००

नागरीप्रचारिणी सभा. आर्यभाषा पुस्तकालय.
हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथ-सूची; आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा, काशी में उपलब्ध. संपादक मंडल : सुधाकर पांडेय तथा अन्य. वाराणसी नागरी-प्रचारिणी सभा, १९७४. भा. १. ७५.००

नामवरसिंह, १९२६-
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां. संशो. सं. ५. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. १५१ पृ. ४.००

नाहटा, किरण, १९४६-
आधुनिक राजस्थानी साहित्य. कालू, जिला बीकानेर, नाहटा प्रकाशन; मुख्य विक्रेता : चिन्मय प्रकाशन, जयपुर, १९७४. ३१९ पृ. ४०.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

निबंध-पीयूष. उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय, १९७३. १०९ पृ. ५.००

निबंध भारती. उज्जैन, विक्रम विश्वविद्यालय, १९७२. १० पृ. ३.२५

निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, १८९६-१९६१.
रवींद्र-कविता-कानन (रवींद्र काव्य दर्शन). लखनऊ, प्रकाशन केंद्र. १५२ पृ. ७.५०

निशांतकेतु.
शब्दांतर. पटना, दिल्ली पुस्तक सदन, १९७२. २२७ पृ. १५.००

नेमिचंद्र शास्त्री, १९२१-
संस्कृत के आदि नाटककार महाकवि भास. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७२. ५६५ पृ. २२.००

पंजाब का हिंदी साहित्य को योगदान. पटियाला, भाषा विभाग, पंजाब, १९७०. २११ पृ. २.६५

पंत, प्रदीप.
मैं गुटनिरपेक्ष हूं. नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७६. १३६ पृ. १०.००
हास्य-व्यंग्य.

पंत, सुमित्रानंदन.
साठ वर्ष और अन्य निबंध. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. १७४ पृ. १०.००

पचौरी, गिरीशचंद्र, १९४१-
राजनीतिक निबंध. कानपुर, ओरियन्टल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ४४२ पृ. १२.५०

परमार, श्याम, १९२५-
लोक साहित्य विमर्श. अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स, १९७२. २३८ पृ. २१.००

परलीकर, एस. एम. तथा अन्य.
साहित्य परिमल. पूना, पूना यूनिवर्सिटी, १९७४. ८, २१६ पृ. ६.००

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
अपनी-अपनी बीमारी. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७२. १३३ पृ. ५.००

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
ठिठुरता हुआ गणतंत्र. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १३४ पृ. ४.५०
हास्य-व्यंग्य

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
तिरछी रेखाएं. दिल्ली, संभावना प्रकाशन, १९७२. १३६ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
वैष्णव की फिसलन. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. ११९ पृ. ८.००

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
शिकायत मुझे भी है. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७०. १४३ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य

परसाई, हरिशंकर, १९२४-
सदाचार का तावीज. सं. २. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७१. १३९ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

पवार, इंद्र, १९३८-
हिंदी और मराठी का शृंगार काल. कानपुर, ग्रंथम, १९७४. ४५६, ५१ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—मराठावाड़ा विश्व.

पांडेय, अमरनाथ, १९३७-
बाणभट्ट का आदान-प्रदान. वाराणसी, [illegible] प्रकाशन, १९६७. १३१ पृ. ५.००

पांडेय, अमरनाथ, १९३७-
बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन. वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९७४. ३८४ पृ. ४०.००

पांडेय, चंद्रशेखर तथा शांतिकुमार नानूराम व्यास.
संस्कृत साहित्य की रूपरेखा. सं. १०. कानपुर, साहित्य निकेतन, १९७३. ८, ३७९ पृ. ७.५०
प्रथम सं. : १९४५.

पांडेय, रत्नाकर, १९३८-
स्वतंत्रता और साहित्य तथा अन्य निबंध. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७५. २५१ पृ. ३०.००

पांडेय, रत्नाकर, १९३८-
हिंदी साहित्य, सामाजिक चेतना. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७६. २१६ पृ. ३०.००

पांडेय, राजकिशोर, १९२०-
हिंदी साहित्य और रीतिकाल : भावनात्मक परिचय. बेंगलूर, विद्या मंदिर, १९७१. ३४४ पृ. १०.००

पांडेय, राजनाथ, १९१०-
मन की मौज. दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, १९७१. १७१ पृ. ६.००

पांडेय, रामअवध तथा रविनाथ मिश्र, संपा.
पाली-प्राकृत-अपभ्रंश संग्रहो. सं. २. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७१. १२, ३६० पृ. १५.००

पांडेय, रामनरेश.
साहित्य प्रवेश. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २२७ पृ. ६.००

पांडेय, शिवनाथ, १९४०-
वाङ्मय-विलास. दिल्ली, पुस्तक प्रचार, १९७३. १५२ पृ. १२.००

पांडेय, श्यामनारायण, संपा.
साहित्य दिग्दर्शन; अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मेलन, कानपुर में प्रदत्त विविध व्याख्यानों का अपूर्व संग्रह. कानपुर, हिन्दी प्रचारिणी समिति, १९६७. १२, ३०३ पृ. १६.००

पांडेय, संगमलाल, १९२९-
ज्ञान, मूल्य और सत्. इलाहाबाद, साहित्यवाणी, १९७३. १५१ पृ. १०.००

पांडेय, सत्यनारायण.
संस्कृत-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. सं. २. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७२. ३७४ पृ. ८.००

पांडेय, सुधाकर, १९२७-
चक्र-परिचक्र. मेरठ कैंट, कल्पना प्रकाशन, १९७६. १४९ पृ. २०.००

पांडेय, सुधाकर, १९२७- तथा विश्वनाथप्रसाद तिवारी, संपा.
रेखाएं और रेखाएं. सं. २. वाराणसी, अनुराग प्रकाशन, १९७१. ८, १६८ पृ. ३.००

पांडेय, सुधाकर, १९२७- तथा अन्य, संपा.
हस्तलिखित संस्कृत-ग्रंथ-सूची : आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा, काशी में उपलब्ध. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७४-७६. ४ भा. ३००.००

पाठक, अमरेश, १९३६-
निबंध संकलन. पटना, आलोक प्रकाशन, १९७५. ६८ पृ. ४.५०

पाठक, आनंदस्वरूप, संपा.
साहित्य और भाषाशास्त्र. मथुरा, शिक्षा ग्रंथागार, १९७५. ८, २४८ पृ. ४०.००

पारीक, रूपचंद, १९३५-
हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन. आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन, १९७२. ७, ३३० पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—जोधपुर विश्व.

पालीवाल, कृष्णदत्त.
नया सृजन, नया बोध. दिल्ली, राजेश प्रकाशन, १९७३. २२३ पृ. १५.००

पीतांबर नारायण, १९१९- तथा एस. भास्कर नायर.
हिंदी-साहित्य-सारिणी, १९६४. होश्यारपुर, विश्वेश्वरानंद-संस्थान, १९७१. २ भा. १००.०० (प्र.)

पुणतांबेकर, शंकर.
रेडीमेड कपड़े. दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार, १९७३. १५२ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

पुरी, रामचंद्र, १९४०-
साधारणीकरण और तादात्मय. दिल्ली, पुस्तक-प्रचार, १९७२. ९१ पृ. ८.००

पुरोहित, सोमेश्वर, संपा.
गद्य-गरिमा. अहमदाबाद, नवजीवन, १९७२. १६, १६७ पृ. ३.००

पुरोहित, हरिकृष्ण.
आधुनिक हिंदी साहित्य की विचारधारा पर पाश्चात्य प्रभाव. जयपुर, उपमा प्रकाशन, १९७०. ४४० पृ. ३२.००

पुष्पलता.
रीतिकालीन शृंगारिक सतसइयों का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. २४० पृ. ३५.००

पोद्दार, कन्हैयालाल, १८७१-
संस्कृत साहित्य का इतिहास. सं. ३. काशी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९६२? २६, २१५, १८६ पृ. ६.५०

प्रसाद, तपेश्वरनाथ, १९३९-
साहित्य-चिंतन. वाराणसी, वितरक : हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७२. २१२ पृ. ८.००

प्रसाद, दिनेश्वर.
लोकसाहित्य और संस्कृति. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. १५९ पृ. १०.००

प्रसाद, रत्नशंकर तथा गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, संपा.
प्रसाद के नाम पत्र. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. २०२ पृ. २५.००

प्रसाद, विश्वनाथ, १९०५-
कला एवं साहित्य : प्रवृत्ति और परम्परा. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २३९ पृ. ८.००

प्रसाद, विश्वनाथ, १९०५-
पूर्वांचला. वाराणसी, देवीप्रसाद 'कुंवर'; वितरण : हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. ३६० पृ. १२.००

प्रसाद, विश्वनाथ, १९०५- तथा अन्य.
निबंध और निबंध. लखनऊ, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. ४५२ पृ. ८.५०

फ़ज़ले इमाम, १९४०-
उर्दू साहित्य; एक झलक. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७५. ६६ पृ. १०.००

फिक्र तौंसवी.
राजा राज करें. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७४. १३४ पृ. ८.००
हास्य-व्यंग्य.

फ्रडरिक, वर्नर पाउल तथा अन्य.
जर्मन साहित्य का इतिहास. अनु. नगीनचंद सहगल. बंबई, शकुन्तला पब्लिशिंग हाउस, १९७२. ९.००

बंबई विश्वविद्यालय, बंबई.
हिंदी साहित्य प्रसून. संपा. महेश विष्णु विघोष्कर तथा उमाशंकरसिंह. बंबई, १९७०. ८, ११६ पृ. ४.००

बख्शी, पदुमलाल पुन्नालाल, १८९४-१९७१.
अंतिम अध्याय; बख्शीजी के नौ संस्मरणात्मक निबंध. जबलपुर, लोक चेतना प्रकाशन, १९७२. १२४ पृ. ५.००

बच्चन, हरिवंशराय.
टूटी छूटी कड़ियां. दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज, १९७३. १८३ पृ. १५.००

बरुआ, हेम.
असमिया साहित्य. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १९६६. १६, ३०२ पृ. ७.५०

बलदुआ, बालकृष्ण.
चार संस्मरण. कानपुर, ननहीन पुस्तकें, १९७३. १०६ पृ. १.५०

बापना, उषा.
संत कवि आचार्य श्री जयमल्ल : कृतित्व एवं व्यक्तित्व. जोधपुर, जयध्वज प्रकाशन समिति, १९७३. १६, १७० पृ. १०.००
शोध-प्रबंध—राजस्थान विश्व.

बिड़ला, लक्ष्मीनिवास, १९०९-
जीवन की चुनौती. नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल, १९६९. ९१ पृ. २.००

बुल्के, कामिल, १९०९-
रामकथा : उत्पत्ति और विकास. संशो. सं.३. प्रयाग, हिंदी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, १९७१. १६, ८१५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—प्रयाग विश्व.

बेचन, १९३१- संपा.
शताब्दी-संकलन (साहित्य संकलन). भागलपुर, शताब्दी-प्रकाशन, १९७५. १३५ पृ. ७.५०

बेचन, १९३१-
समकालीन साहित्य और समीक्षा. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७६. १३६ पृ. १५.००

बोरा, राजमल, १९३३-
आधुनिकता और राष्ट्रीयता. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७२. १०३ पृ. ६.५०

बोरा, राजमल, १९३३-
मंजिला के स्वर. औरंगाबाद, नमिता प्रकाशन, १९७५. १०७ पृ. १२.००

बोस, बुद्धदेव.
प्रतिनिधि रचनाएं. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. २९२ पृ. १०.००

ब्रजभूषणसिंह 'आदर्श', १९३१-
मध्यप्रदेश के अहिंदी भाषाओं की हिंदी-सेवा. जबलपुर, लोक चेतना प्रकाशन, १९७२. ११८ पृ. ५.००

भंडारकर, श्रीधर रामकृष्ण, संपा.
राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज के विषय में एक विशिष्ट विवरणी. अनु. ब्रह्मदत्त त्रिवेदी. जोधपुर, राजस्थान ओरिंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, १९६३. ६, ९७ पृ. ३.००

भगवतीलाल.
हिंदी कल्पतरु. सं. २. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७०. भा. १. ४.००

भटनागर, राजेन्द्रमोहन, १९३८-
आधुनिक हिंदी-निबंध. दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, १९७२. १९४ पृ. ६.५०

भट्टाचार्य, रामशंकर, १९२६-
पुराणगत वेदविषयक सामग्री का समीक्षात्मक अध्ययन. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९६५. ४७६ पृ.
शोध-प्रबन्ध—आगरा विश्व.

भाकुनी, पी. एस., संक.
महापुरुषों के जीवन में हास्य. नई दिल्ली, पीताम्बर बुक डिपो, १९७३. १४५, ४ पृ. ४.००
हास्य-व्यंग्य.

भानावत, नरेंद्र तथा लक्ष्मी कमल, संपा.
राजस्थानी गद्य विकास और प्रकाश. भा. १. आगरा, श्रीराम मेहरा एंड संस, १९७२. १९८ पृ. १५.००

भानावत, नरेंद्र तथा शांता भानावत.
हिंदी साहित्य की कृतियां और कृतिकार. जयपुर, अनुपम प्रकाशन, १९६९. २०७ पृ. १५.००

भारत.
भारतीय साहित्य रत्नमाला. नई दिल्ली, १९७०. १२, १२०० पृ. १६.००

भारती, धर्मवीर.
पश्यंती. सं. २. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७२. १९५ पृ. १०.००

भारती, धर्मवीर.
मानव, मूल्य और साहित्य. काशी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९६०. १८० पृ. ५.००

माथुर, अगमप्रसाद.
राधास्वामी मत : ऐतिहासिक अध्ययन. अनु. प्रतिमा अस्थाना. दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस, १९७४. १५० पृ. १०.००

माथुर, जगदीशचंद्र.
जिन्होंने जीना जाना. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७१. १४१ पृ. ९.००

माथुर, जगदीशचंद्र.
बोलते कण. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. १८८ पृ. ७.००

माथुर, रमेश तथा अन्य, संपा.
जापान साहित्य की झलक. दिल्ली, सीमांत पब्लिकेशन्स, १९७५. २५७ पृ. ३५.००

माधवन, आनंद शंकर.
कवि. भागलपुर, अमरावती, १९७३. ८, १३९ पृ. ८.००

मालवीय, उमाकांत.
मसखरों की मसखरी. इलाहाबाद, संगम प्रकाशन, १९७५. ३७ पृ. ३.००
हास्य-व्यंग्य.

मालवीय, ओमप्रकाश.
आधुनिक हिंदी निबंध. इलाहाबाद, एशिया बुक कंपनी, १९७१. ३६० पृ. ८.००

मालवीय, हरिमोहन तथा रामेश्वरप्रसाद मेहरोत्रा, संपा.
संस्कृत लोकोक्ति संग्रह. इलाहाबाद, अभिनव भारती प्रकाशन, १९७२. २८६ पृ. २५.००

मालवीय, हर्षदेव.
बौने का चुनाव, युद्ध और अन्य शब्द चित्र. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७५. ११६ पृ. ८.००

माहेश्वरी, लक्ष्मणस्वरूप, संपा.
उत्कल दर्शन. व्रजनगर, साहित्य संगम, १९७३. भा. १. ३०.००

मित्र, रामचरण हयारण, १९०४-
उदय और विकास. झाँसी, बुंदेलखण्ड शोध-संस्थान, १९७६. ४, ४१६ पृ. ५०.००

मिराशी, वासुदेव विष्णु.
कालिदास. सं. ३. बंबई, पाप्युलर प्रकाशन, १९६७. २७५ पृ. १२.००

मिश्र, आत्मानन्द, १९१३-
मुश्किल में पड़ गये. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. १७३ पृ. १०.००
हास्य-व्यंग्य.

मिश्र, कन्हैयालाल 'प्रभाकर'.
अनुशासन की राह में. मेरठ, भारतीय साहित्य प्रकाशन, १९७७. ११० पृ. ७.५०

मिश्र, कृष्णबिहारी, १९३०-
आधुनिक सामाजिक आंदोलन और आधुनिक हिंदी साहित्य. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७२. २१, ३८५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध, संशोधित—लखनऊ विश्व.

मिश्र, कृष्णबिहारी, १९३०-
आलोक पंथा. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, १९७७. ८६ पृ. १२.५०

मिश्र, गंगाशरण 'एक किताबी कीड़ा'.
मनन मनोरंजन. वाराणसी, ज्ञानमंडल, १९६९. ८ भा. ४०.००

मिश्र, गौरीशंकर 'द्विजेंद्र', १९१३-
भारतीय साहित्य; आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७३. २२७ पृ. ८.५०

मिश्र, चंद्रनाथ 'अमर', १९२५-
मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास. दरभंगा, नवरत्न गोष्ठी, १९६९. ५६ पृ. १.५०
मैथिली में.

मिश्र, जयदेव तथा अन्य, संपा.
पूर्वांचलीय लोकसाहित्य. पटना, चेतना समिति, १९७३? १४८ पृ. ७.००

मिश्र, प्रभाशंकर.
संस्कृत शिक्षण. सं. २. चंडीगढ़, हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. १६९ पृ. १०.००

मिश्र, भगवतीशरण.
मिस्टर मुखर्जी मजिस्ट्रेट बने. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७६. १३२ पृ. १०.००

मिश्र, भुवनेश्वरनाथ 'माधव', १९१२-१९७१?
वैष्णव साधना और सिद्धान्त : हिंदी साहित्य पर उसका प्रभाव. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ४५९ पृ. १६.००

मिश्र, राजकृष्ण.
कामना का क्षितिज. लखनऊ, पुस्तक केन्द्र, १९६४. ७२ पृ. १०.००

मिश्र, रामदरश, १९२५-
आज का हिंदी साहित्य : संवेदना और दृष्टि. दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७५. १९२ पृ. २५.००

मिश्र, रामदरश तथा रामसरूप, संपा.
हिंदी निबंध. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७०. १५७ पृ. ३.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६- संपा.
आधुनिक निबंधावली. इलाहाबाद, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७२. ८, १९८ पृ. २.७५

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
कंटीले, तारों के आर-पार; व्यक्ति-व्यंजक निबंधों का संग्रह. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७६. ११२ पृ. ९.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
छितवन की छांह : निबंध संग्रह. बनारस, सरस्वती प्रेस, १९५३. १४० पृ.

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
परंपरा बंधन नहीं : वैचारिक निबंधों का संकलन. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७६. १०४ पृ. १२.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
बसंत आ गया, पर कोई उतकंठा नहीं. सं. २. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. १४४ पृ. ६.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
भोर का आह्वान. संपा. शिवप्रसाद सिंह. सं. २. वाराणसी, अनुराग प्रकाशन, १९७२. १२, १०८ पृ. ३.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
मेरे निबंध, मेरी पसंद के. इलाहाबाद, कौशाम्बी प्रकाशन, १९७४. १२० पृ. ४.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ११० पृ. ११.००

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६- संपा.
हिंदी-सेवा की संकल्पना. प्रयाग, श्रीनारायण चतुर्वेदी सारस्वत समारोह समिति, १९७७. ३९० पृ. ५०.००

मिश्र, विभुराम, १९४७-
प्रतिनिधि हिन्दी-निबंधकार. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७५. २१६ पृ. १५.००

मिश्र, विभुराम.
हिंदी साहित्य; साहित्यिक निबंध. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७६. ३५० पृ. २२.००

मिश्र, विश्वनाथप्रसाद.
चिंतामणि-मंजूषा. इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, १९७६. ८३ पृ. ४.२५

मिश्र, वीरेंद्रकुमार, संपा.
निबंध संकलन. इलाहाबाद, किताब महल, १९७३. ४, १५० पृ. २.००

मिश्र, शिवकुमार, १९३१-
मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७०. ५२० पृ १७.००

मिश्र, शिवकुमार, १९३१-
यथार्थवाद. दिल्ली, मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया, १९७५. १०, २०९ पृ. २३.००

मिश्र, शिवसागर, १९२७-
रेखाएं और रंग. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. १५६ पृ. १०.००

मिश्र, श्यामसुंदर.
अस्तित्ववाद और द्वितीय समरोत्तर हिंदी साहित्य. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७१. ३६३ पृ. ३०.००

मिश्र, श्रीधर, १९३१-
भोजपुरी पहेलियां. बंबई, भोजपुरी समाज द्वारा मिडिया एजेंसी, वितरक : जनता ग्रंथालय, मुजफ्फरपुर, १९६६. ८, ४४ पृ. २.००

मिश्र, श्रीधर, १९३१-
भोजपुरी लोकसाहित्य. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७१. १६, ३८९ पृ. २०.००
शोध-प्रबंध—बिहार विश्व.

मिश्र, श्रीधर, १९३१-
साहित्य की नयी दिशाएं. इलाहाबाद, राजीव प्रकाशन, १९७३. १६० पृ. १२.००

मिश्र, हेरम्ब.
पत्रकारिता : संकट और सन्त्रास. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन, १९७३. २३२ पृ. १५.००

मिश्रबंधु (गणेश बिहारी मिश्र, श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र).
मिश्रबंधु विनोद. नवीन संशो. सं. हैदराबाद, गंगा-ग्रंथागार, १९७२. भा. १-२. ७५.००; भा. ३-४. ७५.००

मुखोपाध्याय, हीरेंद्रनाथ.
स्वयं ही थे एक काव्य : रवींद्रनाथ ठाकुर; व्यक्तित्व और कृतित्व. अनु. सुशीला मेहता. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७१? १३८ पृ. ६.००

मुगलि, रं. श्री.
कन्नड़ साहित्य का इतिहास. अनु. सिद्धगोपाल. नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी, १९७१. ३१८ पृ. १२.००

मुजीब.
गालिब. संपा. रमेश गौड़. नई दिल्ली, साहित्य अकादमी, १९७५. ९७ पृ. २.५०

मेंहदीरत्ता, वीरेंद्र, १९३१-
आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग, १८५७-१९०७. नयी दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशंस इन सोशल साइंसेज, १९७६. २४० पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—पंजाब विश्व.

मेंहदीरत्ता, वीरेंद्र, १९३१- संपा.
निबंध विविधा. चंडीगढ़, प्रकाशन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, १९७२. १९२ पृ. २.५०

मेघ, रमेश कुंतल, १९३१-
क्योंकि समय एक शब्द है : सर्जना, साहित्य और आलोचना के आधुनिक परिप्रेक्ष्य. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७५. १०, ६३२ पृ. ४०.००

मेहता, जगन्नाथसिंह.
शिक्षा और संस्कृत : देश में, विदेश में. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७४. ७९ पृ. ७.५०

मेहता, रमेश, संपा.
हमारा साहित्य, १९७३. जम्मू, जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज, १९७३. २, १९३, ८ पृ. १५.५०

मेहरोत्रा, शांति.
दंत कथा. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. १४३ पृ.
हास्य-व्यंग्य.

यादव, श्रीराम, १९४३- तथा अन्य, संपा.
हिंदी संदर्भग्रंथ निर्देशनी. संगरूर, पंजाब, सर्चमेट्स; विक्रेता : इण्डियन ब्यूरो ऑफ बिब्लियोग्राफ़िज, दिल्ली, १९७३. ११० पृ. १५.००

युगेश्वर, १९३४-
हिंदी कोश-विज्ञान का उद्भव और विकास. वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९७१. १०, २४७, २४ पृ. १५.००

रजनीश, गोविंद, १९३८-
राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोक-साहित्य. जयपुर, राजस्थान प्रकाशन, १९७४. १८६ पृ. २०.००

राकेश, अनीता.
चंद सतरें और. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. १०८ पृ. १२.००

राकेश, मोहन.
बकलम खुद. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७४. १४५ पृ. १५.००

राघव, रांगेय, १९२३-१९६२.
काव्य, यथार्थ और प्रगति. संशो. सं. २. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९६४. १९३ पृ. ३.००

राघव, शिवनाथ तथा अनिरुद्ध पांडेय, संपा.
प्रकाशन वार्षिकी, १९६९. वाराणसी, संदर्भ भारती, १९७१. १९७ पृ, १६.००

राजदा, संपा,
बड़ों के बोल छोटों के नाम. बंबई, सत्साहित्य प्रकाशन केंद्र, १९७१. १८४ पृ. ४.००

राजपाल, हुकुमचंद.
कृति और मूल्यांकन; आलोचनात्मक निबंध संग्रह. जालन्धर, व्रतीभ्राता, १९७१. ११, १६४ पृ. १२.५०

राजपाल, हुकुमचंद.
विविध बोध, नये हस्ताक्षर. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७६. २३७ पृ. १८.००

राजानंद.
संवेदना के बिम्ब. बीकानेर, सूर्य प्रकाशन मंदिर, १९७१. १७३ पृ. १२.५०

राजूरकर, भ. ह., १९३५-
अनियत अंकन. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. २१० पृ. १५.००

राजे, सुमन, १९३८-
साहित्येतिहास : आदिकाल. कानपुर, ग्रंथम, १९७६. ७, ६४० पृ. ७५.००

राजे, सुमन, १९३८-
साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप. कानपुर, ग्रंथम, १९७५. ३४७ पृ. ४०.००

रामअवध शास्त्री, १९४४-
चिंतन के आयाम : विभिन्न अवसरों पर लिखित समीक्षात्मक निबंधों का संग्रह. वाराणसी, श्रीराम प्रकाशन; प्रमुख वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन. १९७८, १२० पृ. २०.००

रामकुमार, संपा.
हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की विवरणात्मक सूची. सहायक संपा. : रोशनलाल तथा अन्य. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७१. ४९१ पृ. ७०.००

रामचंद्र, एस. तथा शंकरराय कप्पिकेरी, संपा.
हिंदी गद्य पाठ. सं. २. धारवार, कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा, १९६५. ८, १३६ पृ. २.००

रामजीलाल सहायक, १९१८-
महात्मा कबीर एवं महात्मा गांधी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७२. ३५५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—लखनऊ विश्व.

रामन नायर, एन., १९३१- संपा.
गद्य सोपान. सं २. कोचिन, गीता, १९७२. १६८ पृ ३.५०

राममूर्ति, वारणासि 'रेणु', १९१७-
साहित्यिक आदान-प्रदान. हैदराबाद, आं. प्र., आदान-प्रदान पुस्तकमाला, १९७२. ३५२ पृ. १८.००

रामवृक्ष बेनीपुरी.
सतरंगा धनुष. मुजफ्फरपुर, बेनीपुरी प्रकाशन, १९७५. ७२ पृ. ४.००

राय, अमृत, १९२१-
बतरस. इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९७३. १३० पृ. ५.००

राय, उपेन्द्रनाथ, १९३७-
साहित्य और समाज; आलोचना. लखनऊ, नवयुग ग्रंथागार, १९७३. २५१ पृ. १५.००

राय, कुबेरनाथ, १९३५-
गंधमादन; ललित निबंध. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. ३२३ पृ. ११.००

राय, कुबेरनाथ, १९३५-
निषाद बांसुरी. नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७४. २३५ पृ. १७.००

राय, कुबेरनाथ, १९३५-
रस-आखेटक. वाराणसी, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७०. २९० पृ. ८.५०

राय, कुबेरनाथ, १९३५-
विषाद योग; ललित वैचारिक निबंध. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. २२६ पृ. १४.००

राय, गंगासागर.
महाकवि भवभूति. काशी, चौखंबा प्रकाशन, १९६५. १२, २१२ पृ. ५.००

राय, गोपाल, संपा.
हिंदी साहित्याब्द कोष, १९७४. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७६. २५६ पृ. ३०.००

राय, द्विजेंद्रलाल, १८६३-१९१३.
कालिदास और भवभूति. अनु. रूपनारायण पांडेय. सं. २. बम्बई, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, १९५६. २.५०

राय, निशीथकुमार.
एक डिप्टी की डायरी. इलाहाबाद, इंडियन प्रेस, १९७४. १५६ पृ. १२.५०

राय, रामकुमार.
निबंध प्रदीप. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७४. १४७ पृ. १५.००

राय, रामकुमार.
महाभारत-कोश; महाभारतस्य नाम्नां विषयाणां च व्याख्यात्मिका अनुक्रमणिका. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, १९६६. भा. २. २०.००

राय, रामकुमार.
वाल्मीकिरामायण कोश:; वाल्मीकिरामायणस्य नाम्नां विषयाणां च व्याख्यात्मिका अनुक्रमणिका. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, १९६५. ४३१ पृ. २०.००

रायजादा, महेंद्र.
आधुनिक हिंदी साहित्यकार. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७२. १४३ पृ. १२.५०

राव, उमा, संयोजक.
विवेचना संकलन; सन् १९५० के बाद प्रकाशित हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों का विशेषज्ञों तथा पाठकों द्वारा विवेचन. इलाहाबाद, भारती भण्डार, १९७१. भा. १-३. १०.०० (प्र.)

रुवाली, केशवदत्त, संपा.
निबंधायन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ४, ११० पृ. २.५०

रुविचेक, पाल.
अस्तित्ववाद : पक्ष और विपक्ष. अनु. प्रभाकर माचवे. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. १८२ पृ. १०.००

विजयराघवरेड्डी.
तेलुगु भारती. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७४. ८, ७८ पृ. ५.००

रैणा, शिबन कृष्ण, १९४२-
कश्मीरी भाषा और साहित्य. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. २६२ पृ. २५.००

रैणा, शिबन कृष्ण, १९४२-
कश्मीरी-साहित्य की नव्यतम प्रवृत्तियां. पटना, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७१. २५ पृ.

रैणा, शिबन कृष्ण, १९४२- संपा.
प्रतिनिधि संकलन, कश्मीरी. नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, १९७३. १२,१७६ पृ. १२.००

लहरी, रजनीकांत.
निबंध-पारिजात. वाराणसी, चौखंबा विद्याभवन, १९७०. १२, २२३ पृ. ४.००

लालचंद 'प्रार्थी' तथा हरिराम जसटा, संपा.
पहाड़ी लोक रामायण : हिमाचल प्रदेश के जनपदों में प्रचलित रामकथा. शिमला, हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी, १९७४. १०, २५६ पृ.

लीलाधर 'वियोगी'.
हिंदी गद्य साहित्य का विकास. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. १४४ पृ. ६.५०

लुत्ज़, लोथार, १९२७-
साहित्य : विविध संदर्भ. अनु. संयुक्ता. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९६८. ९४ पृ ८.००

लेखराम, १९११-
ग़ालिब. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. ४०, ७९० पृ. ६०.००

लेनिन और भारतीय साहित्य. नयी दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, १९७०. ९० पृ. २.५०

वधावन, केशवचंद्र.
हंसना ही जीना है. अंबाला, नरेश पब्लिशिंग हाउस. भा. १. २.५०; भा. २. २.००; भा. ४. २.००; भा. ६. २.००

वर्मा, कृष्णचंद्र, १९२९- संपा.
निबंध मणि. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. ४, २५७ पृ, १०.००

वर्मा, केशवचंद्र.
अफलातूनों का शहर. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७४. २२७ पृ. १०.००
हास्य-व्यंग्य.

वर्मा, केशवचंद्र.
ज्यादातर ग़लत, कुछ सही भी. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७५. २०२ पृ. १२.००

वर्मा, केशवचंद्र.
वृहन्नला का वक्तव्य. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७४. २०३ पृ. १२.००
हास्य-व्यंग्य.

वर्मा, चंद्रप्रकाश.
शब्द की लकीरें. दिल्ली, राजपाल एंड संज़, १९७०. १२० पृ. ४.००

वर्मा, धनंजय, १९३५-
अंधेरा नगर. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७१. १२६ पृ. ५.००

वर्मा, धनंजय, १९३५-
हस्तक्षेप : रचना के समकालीन सरोकार. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७५. २३९ पृ. २५.००

वर्मा, धीरेंद्र, १८९७-
किस्सा प्रीतम पांडे का. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७३. ११३ पृ. ५.५०
हास्य-व्यंग्य.

वर्मा, धीरेंद्र, १८९७- तथा अन्य, संपा.
हिंदी साहित्य; सन् १८५० ई. के बाद. प्रयाग, भारतीय हिंदी परिषद्, १९६९. भा. ३. २५.००

वर्मा, निर्मल, १९२९-
शब्द और स्मृति. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. ९९ पृ. १२.००

वर्मा, परिपूर्णानंद.
बीतीं यादें : संस्मरण : कतिपय राजनैतिक तथा साहित्यिक महापुरुषों की अज्ञात बातें. नई दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, १९७६. १८२ पृ. १८.००

वर्मा, भगवतीचरण, १९०३-
अर्पित मेरी भावना. संपा. धर्मवीर भारती तथा अन्य. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन १९७४. १८९ पृ. २५.००

वर्मा, भगवतीचरण, १९०३-
साहित्य के सिद्धांत तथा रूप. नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. १९३ पृ. १५.००

वर्मा, भगवानदास, १९३ -
आधुनिकता के रचना संदर्भ. कानपुर, ग्रंथम, १९७५. १३२ पृ. १५.००

वर्मा, महादेवी, १९०७-
क्षणदा. सं. २. इलाहाबाद, भारती भंडार १९७२. १३८ पृ. ४.००

वर्मा, महादेवी, १९०७-
साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध. चयन : गंगाप्रसाद पांडेय. सं. ३. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७०. २०५ पृ. ८.००

वर्मा, शकुंतला, १९१४-
छतीसगढ़ी लोक-जीवन और लोकसाहित्य का अध्ययन. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, १९७१. १०, ३३२ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध—विक्रम विश्व.

वर्मा, शिवशंकर.
विचारित. भागलपुर, अनुशीलन प्रकाशन, १९७३. १३१ पृ. ७.५०

वर्मा, शिवशंकरप्रसाद, १९२९- तथा अन्य.
हिंदी संचय. पटना, भारती भवन, १९७२. १०, १५६ पृ. ४.००

वर्मा, श्यामा.
आचार्य राजशेखर. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७१. २९१ पृ. १०.००

वर्मा, श्रीकांत, १९३१-
अपोलो का रथ. दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७५. ९८ पृ. १०.००

वर्मा, श्रीकांत, १९३१-
जिरह; निबंध संग्रह. हापुड़, संभावना प्रकाशन, १९७३. १०८ पृ. ११.००

वर्मा, सर्वदानंद.
अकबर-बीरबल-विनोद. इलाहाबाद. लीडर प्रेस, १९५८. ३२ पृ. १.००
हास्य-व्यंग्य.

वाजपेयी, नंददुलारे, १९०६-१९६७.
हिंदी साहित्य : बीसवीं शताब्दी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७०. २७२ पृ. १०.००

वाजपेयी, रमेश.
मौलिक निबंध. जबलपुर, स्टूडेंट्स पब्लिकेशन्स, १९७३. १४, २०८ पृ. ६.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
आधुनिक हिंदी साहित्य, १८५०—१९०० ई. इलाहाबाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७१. ११, ३७१ पृ. १५.००
शोध-प्रबंध—इलाहाबाद विश्व.

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका, १७५७-१८५७ ई. सं. २. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. ५०१ पृ. २०.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७३. ३१३ पृ. २०.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
परिप्रेक्ष्य और प्रतिक्रियाएं. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १४६ पृ. ११.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
विविधा. इलाहाबाद, संजय प्रकाशन, १९७६. १४७ पृ. १६.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
हिंदी साहित्य का इतिहास. सं. ११. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७४. ३३८ पृ. १०.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
हिंदी साहित्य का मानक इतिहास. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७३. ३२१ पृ. ७.५०

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४-
हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७२. २४४ पृ. ४.००

वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, १९१४- तथा सुरेशचंद्र गुप्त
हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली, नेशनल कौंसिल आफ एजूकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, १९७०. ८, ९२ पृ. २.००

विजयेंद्र स्नातक, १९१४- संपा.
निबंध पारिजात. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७१. ७४ पृ. २.००

विनोदचंद्र विद्यालंकार.
जयदेव : आचार्य एवं नाटककार के रूप में आलोचनात्मक अध्ययन. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७५. ६, ३७० पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

वियोगी हरि.
तटस्थ कौन? दिल्ली, कुटीर प्रकाशन, १९७३. १६० पृ. ५.५०

विश्वनाथ, संपा.
बच्चों के मुख से. नई दिल्ली, विश्वविजय प्रकाशन, १९७२. १६० पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

विश्वनाथ अय्यर, एन. ई., १९२०- संपा.
अनुशीलन. कोचिन, हिंदी विभाग, कोचिन विश्वविद्यालय, १९७१. ६, ७६ पृ.

विश्वनाथ अय्यर, एन. ई., १९२०-
शहर सो रहा है; ललित निबंध. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७५. ११५ पृ. १५.००

विश्वनाथ अय्यर, एन. ई., संपा.
दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन. कोचिन. हिंदी विभाग, कोचिन विश्वविद्यालय, १९७२. ६८, २० पृ.

विश्वनाथ अय्यर, एन. ई. तथा अन्य, संपा.
हिंदी प्राध्यापक संगोष्ठी की स्मारिका. एरणाकुलम, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, १९६८. १४, १२५ पृ.

विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर.
प्रतिवेदन, विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर, भारत, जनवरी १९७५. नागपुर, विश्व हिंदी सम्मेलन, १९७५. २०९ पृ. ३०.००

विष्णुकांत शास्त्री.
कुछ चंदन की, कुछ कपूर की. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७१. ३१५ पृ. १०.००

विष्णुकांत शास्त्री.
चिंतन मुद्रा नयी दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, १९७७. २८४ पृ. ३२.००

विष्णुकांत शास्त्री, संपा.
बांगलादेश; संस्कृति और साहित्य. कलकत्ता, बंगीय हिंदी परिषद, १९७३. २०३ पृ. १०.००

विष्णुदत्त 'राकेश'.
रीतिकाल के ध्वनिवादी हिंदी आचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७७. ३५५ पृ. ३०.००.

विष्णुशरण 'इंदु'.
हिंदी साहित्य का भक्तिकाल और रीतिकाल : संधि-कालीन प्रवृत्तियां. साहिबाबाद, विभू प्रकाशन, १९७५. २६० पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

वीरकुमार अधीर.
मनुष्य की तीसरी भौंह. दिल्ली, शकुन प्रकाशन, १९७३. ३९ पृ. २.००
हास्य-व्यंग्य.

वेदकुमारी, १९३२- तथा रामप्रताप.
सांस्कृतिक और साहित्यिक निवंध. वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९७३. भा. १. १०.००

वेदप्रकाश शर्मा 'अमिताभ' तथा अन्य, संपा.
समकालीन हिंदी-साहित्य. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७३. १८८ पृ. १२.००

वैदिक, वेदप्रताप, संपा.
हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम. नयी दिल्ली, हिंदी पत्रकारिता समिति के लिए नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७६. २२, ९७४, ३२ पृ. १५०.००

वैद्य, कृष्णबलदेव.
उसके ब्यान. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७४. ७५ पृ. १०.००

वैष्णव, यमुनादत्त 'अशोक', १९१५-
संस्कृति संगम उत्तरांचल : कुमाऊं-गढ़वाल की लोक संस्कृति और पर्वतीया भाषा के उद्भव और विकास का इतिहास. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७७. १०, ३२८ पृ. ३०.००

व्यास, गोपाल नारायण.
बीकानेर की साहित्यिक संस्थाएं और उनकी हिंदी को देन. बीकानेर, श्री गणेश शक्ति प्रकाशन, १९७१. १२, १४२ पृ. १२.५०

व्यास, गोपालप्रसाद, संपा.
गणतंत्र स्मारिका. नई दिल्ली, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७७. ६८ पृ. १०.००

व्यास, गोपालप्रसाद, संपा.
हिंदी मनीषा; विविध विधाओं के मूर्धन्य मनीषियों द्वारा भाषा और साहित्य का अभिनव मूल्यांकन. नई दिल्ली, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७७. १८२ पृ. २५.००

व्यास, गोपालप्रसाद तथा अन्य, संपा.
स्वतंत्रता रजत जयन्ती अभिनंदन ग्रंथ : हिंदी के २५ वर्ष. नई दिल्ली, दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७३. ८०० पृ. १४०.००

व्यास, मुरलीधर, १८९९- तथा मोहनलाल पुरोहित.
जूना जीवंता चितराम. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९६०. ९२ पृ.

व्यास, रामकृष्ण 'महेंद्र', १९४६-
आधुनिक हिंदी साहित्य. बीकानेर, श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, १९७५. ३५६ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—राजस्थान विश्व.

व्यास, लक्ष्मीशंकर, १९२०-
विश्व के युगनिर्माता साहित्यकार. वाराणसी, व्यास प्रकाशन, १९७६. १७६ पृ. १०.००

व्यास, लक्ष्मीशंकर, १९२०-
स्मृति की त्रिवेणिका. वाराणसी, व्यास-प्रकाशन; मुख्य वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. १५२ पृ. १०.००

व्यास, सूर्यनारायण, १९०२-
अनुष्टुप. संपा. प्रभाकर श्रोत्रिय. भोपाल, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद, १९७२. २६, ३०० पृ. १२.००

शंकर शेष, १९३३-
छत्तीसगढ़ी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. २७१ पृ. ११.००

शरद, ओंकार, १९२६-
देखा, सुना, पढ़ा; संस्मरणों, रेखाचित्रों, जीवनियों, पत्रों, अतीत गाथाओं, और व्यक्ति-चित्रों का संग्रह. इलाहाबाद, साहित्य भंडार, १९७६. ३३५ पृ. २५.००

शरण, १९२८- संपा.
बृहत् सूक्ति कोश : विश्व के लब्धप्रतिष्ठ मनीषियों की विशिष्ट सूक्तियों का संदर्भ ग्रंथ. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७२. १२ भा. ४.०० (प्र.)

शरण, १९२८-
विश्व सूक्ति कोश. नयी दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. भा. ४. २६३ पृ. २५.००

शरण, १९२८-
सूक्ति सरोवर. दिल्ली, चंद्र पब्लिशिंग हाउस; प्रमुख वितरक : ज्ञान भारती, १९६८. भा. १-२.

शरण, दीनानाथ
नेपाली साहित्य का इतिहास. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. ४८३ पृ. २०.००

शर्मा, कमला १९४२- तथा [illegible] शर्मा, संपा.
आलेख-७२. नई दिल्ली, १९७३. ४१६ पृ. १५.००

शर्मा, ओमप्रकाश, १९२४- तथा कमल कुमारी, संपा.
साहित्यिक कोश; २५०० साहित्यिकों, विचारकों और पत्रकारों का परिचय एवं २०० साहित्यकारों के कृतित्व का अध्ययन. नई दिल्ली, साहित्य सहकार, १९७३. १०, २६३, २६० पृ. [illegible]

शर्मा, कन्हैयालाल, १९२४-
हाड़ौती साहित्य और [illegible]. [illegible], [illegible] मंदिर, १९७२. १०१ पृ. १६.००

शर्मा, कृष्णकुमार, १९३४-
गद्य संरचना : शैली वैज्ञानिक विवेचन. जयपुर, [illegible] प्रकाशन, १९७५. ८, १४२ पृ. २०.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
अनुपम साहित्यिक निबंध. दिल्ली, [illegible] बुक डिपो, १९७४. ८, ५३० पृ. २०.००

शर्मा, कृष्णदेव, १९३७-
एकायन : एक मूल्यांकन. आगरा, भारती भवन, १९७३. ८, २८७ पृ. ३.००

शर्मा, गजानन, १९२२- संपा.
हिंदी निबंध संकलन. इलाहाबाद, रामनारायण बेनीप्रसाद. ६, १२७ पृ. १.८०

शर्मा, ताराचंद तथा श्रीराम शर्मा, संपा.
हिंदी गद्य ललिता. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २०७ पृ. ४.५०

शर्मा, तिलकराज.
सवा सौ श्रेष्ठ निबंध. नयी दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७४. ६९५ पृ. ३०.००

शर्मा, तिलकराज
हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७१. ४७९ पृ. ७.५०

शर्मा, दीपचंद तथा निरूपण विद्यालंकार, संपा.
संस्कृत शोध-प्रबंध परिचायिका. मेरठ, मेरठ विश्वविद्यालय संस्कृत अध्यापक परिषद, १९७४? १४५ पृ. १५.००

शर्मा, देवीदत्त, १९२८-
संस्कृत का ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक परिचय. चंडीगढ़, हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७४. ११, २४९ पृ. २०.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा गोपाल राय, संपा.
हिंदी साहित्याब्द कोश, १९६९. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७०. ३३९ पृ. २०.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा गोपाल राय, संपा.
हिंदी-साहित्याब्दकोश, १९७०. पटना, ग्रंथ निकेतन १९७१. ३८१ पृ. २५.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा गोपाल राय, संपा.
हिंदी साहित्याब्दकोश, १९७१. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७२. ३४९ पृ. २५.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा गोपाल राय, संपा.
हिंदी साहित्याब्दकोश, १९७२. सहायक संपा. मंगलदेव शर्मा. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७३. ३७२ पृ. २५.००

शर्मा, देवेंद्रनाथ, १९१८- तथा गोपाल राय, संपा.
हिंदी साहित्याब्दकोश, १९७३. सहायक संपा. मंगलदेव शर्मा. पटना, ग्रंथ निकेतन, १९७४. ३१४ पृ. ३०.००

शर्मा नीलांबरदेव.
आधुनिक डोगरी साहित्य : एक परिचय. अनु. सुभाष भारद्वाज. जम्मू, ललितकला, संस्कृति वा साहित्य अकादमी, जम्मू-कश्मीर, १९६८. ३०७ पृ. ७.६०

शर्मा परेशचंद्रदेव संपा.
हिंदी निबंध मंजूषा. आगरा, भारती भवन, १९७२. ८, १०० पृ. २.००

शर्मा, बंशीराम.
किन्नर लोक साहित्य. लैहड़ी सरेल, ललित प्रकाशन, १९७६. ६, ४१४ पृ. ५०.००
शोध-प्रबन्ध—पंजाब विश्व.

शर्मा, ब्रज वल्लभ, १९२०-
भवभूति के नाटक; संस्कृत नाट्य-शास्त्र के आलोक में. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ३६३ पृ. १४.००

शर्मा मनमोहन
निबंध सिंधु. अजमेर, कृष्ण ब्रदर्स, १९७२. ५८४ पृ. २१.००

शर्मा, मनोहर, १९१४-
राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन. जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान, १९७६. ८, २३१ पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—राजस्थान विश्व.

शर्मा, मनोहर, १९१४-
लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा. जयपुर, रोशनलाल जैन एंड संस, १९७१. १९, २२८ पृ. १५.००

शर्मा, मनोहर, १९१४- संपा.
राजस्थानी साहित्य की समीक्षा : जागती जोत समीक्षा अंक. बीकानेर, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), १९७६. ८८ पृ. ८.००

शर्मा, मालीराम.
आमने सामने. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. १२८ पृ. ८.००
हास्य-व्यंग्य.

शर्मा, मुरारीलाल 'सुरस', १९२७-
साहित्यिक निबंध. दिल्ली, प्रेम प्रकाशन मंदिर, १९७५. १७६ पृ. २२.००

शर्मा, रमाकांत, १९२८-
चंदन वृक्ष. आनंद, आस्था प्रकाशन, १९७१. ८, ११० पृ. ४.००

शर्मा, राजकुमार तथा रामचंद्र पुरी, संपा.
साधना और परख. दिल्ली, लोकवाणी प्रकाशन, १९७५. ३०२ पृ. ४०.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
निबंध-निकष : एक मूल्यांकन. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७५. ६, २५७ पृ. ५.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
साहित्यिक निबंध. संशो. सं. १५. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. १६, ६३५ पृ. २०.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास सं. ३. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. १६, ८४६ पृ. १५.००

शर्मा, राजनाथ, १९२२-
हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. सं. १८. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७४. ८, २३६ पृ. ३.००

शर्मा, राजेंद्र, संपा.
स्वातंत्र्योत्तर राजस्थान का हिंदी-साहित्य. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), १९७६. २०४ पृ. ११.५०

शर्मा, राणाप्रसाद, १९०८-
पौराणिक कोश. वाराणसी, ज्ञानमंडल, १९७१. ५६६ पृ. ३०.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- संपा.
अध्ययन और अन्वेषण : मौलिक साहित्य-चिंतन. जयपुर, हिंदी-विभाग, उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर के निमित्त संघी प्रकाशन, १९७५. ११० पृ. १२.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९-
साहित्य के नये संदर्भ. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७६. १६० पृ. २०.००

शर्मा, रामगोपाल दिनेश', १९२९- संपा.
स्वाधीनताकालीन हिंदी साहित्य के जीवन-मूल्य. दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशयल साइंसेज, १९७३. ८, ५९ पृ. १५.००

शर्मा, रामगोपाल 'निनेश' १९२९- तथा प्रतापचंद जैसवाल, संपा.
हिंदी का समकालीन साहित्य. आगरा, समीक्षालोक कार्यालय. १४४ पृ. ८.००

शर्मा, रामगोपाल 'दिनेश', १९२९- तथा प्रतापचंद जैसवाल.
हिंदी साहित्य का इतिहास : प्रवृत्तियां एवं मूल्यांकन. आगरा, समीक्षालोक कार्यलय, १९७३. २२६ पृ. १५.००

शर्मा, रामसकल तथा जी. वी. जोशी, संपा.
हिंदी साहित्य सीकर. बंबई, बंबई, यूनिवर्सिटी, १९७१. ८, ११९ पृ. २.७५

शर्मा, वासुदेव.
हिंदी साहित्य का विकास. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७१. ३२८ पृ. १०.००

शर्मा, विनय मोहन, १९०५-
तुलसीदास रामचरितमानस और एकनाथी भावार्थ रामायण : एक तुलनात्मक दृष्टि. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन, १९७५. ९८ पृ. ८.५०

शर्मा, विनय मोहन, १९०५-
भाषा, साहित्य, समीक्षा. इलाहाबाद, अनादि प्रकाशन; एकमात्र वितरक : स्मृति प्रकाशन, १९७२. ६, १७८ पृ. १०.५०

शर्मा, विनय मोहन, १९०५-
शोध-प्रविधि. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. २२१ पृ. ११.००

शर्मा, विनय मोहन, १९०५-
साहित्य : नया और पुराना. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १६५ पृ. ११.००

शर्मा, विष्णुचंद्र, १९३३-
अग्निसेतु : बंगला के विद्रोही कवि काजी नजरुल इस्लाम की जीवनी. नई दिल्ली, प्रासंगिक प्रकाशन, १९७६. ३०४ पृ. ३५.००

शर्मा, वेदप्रकाश 'अमिताभ' तथा अन्य, संपा.
समकालीन हिंदी-साहित्य; 'विवेचना' मूल्यांकन-माला. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७३. १८८ पृ. १२.००

शर्मा, वेदव्रत.
चिंतन की वीथियां. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ८, २५४ पृ. ५.००

शर्मा, वेदव्रत.
बोध के धरातल. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७४. १५९ पृ. १२.००

शर्मा, शिवमूर्ति, १९४१-
हिंदी साहित्य का प्रवृत्त्यात्मक इतिहास. इलाहाबाद, एशिया बुक कम्पनी, १९७२. ६, ४७९ पृ. ८.००

शर्मा, श्रीराम, १९२०-
लोकसाहित्य : सिद्धांत और प्रयोग. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७३. ३०५ पृ. ७.५०

शर्मा, सुरेशचंद्र, संपा.
हिंदी के बढ़ते चरण: साहित्यिक निबंध संकलन. गाजियाबाद, विमल प्रकाशन, १९७४. २९८ पृ. १२.५०

शर्मा, हरद्वारी लाल, १९१९-
चिंतन के नये आयाम. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, १९७६. १९५ पृ. १३.००

शर्मा, हरिमोहन
स्वप्नलोक (स्वप्न निबंध). दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७१. १२५ पृ. १०.००

शहा, मु. व., १९३७-
हिंदी निबंधों का शैलीगत अध्ययन. कानपुर, पुस्तक संस्थान, १९७३. ४८८ पृ. ३५.००
शोध-प्रबन्ध—पूना विश्व.

शांता कुमारी, संपा.
हिंदी के प्रमुख निबंध. दिल्ली, उमेश प्रकाशन, १९७४. १४८ पृ. ६.००

शारंगपाणि, शा. रा. तथा अन्य, संपा.
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास : स्वर्ण जयंती ग्रंथ, अप्रैल १९७१. मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, १९७२. ८, ३७४ पृ. १५.००

शाह, रमेशचंद्र, १९३७-
समानांतर. इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस, १९७३. २२४ पृ. १५.००

शिवनाथ, १९१७-
रवींद्र साहित्य की समीक्षा. लखनऊ, हिंदी समिति, उत्तरप्रदेश शासन, १९७६. १२, ३६३ पृ. १२.००

शिवप्रसाद.
कस्तूरी मृग. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. ७.५०

शिवरतन तथा पुरुषोत्तम तिवारी, संपा.
जूनां वेली; नुवां वेली. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७३. ११, ४४, ४४ पृ. ५.७५

शिवानी (गौरा पंत), १९२३-
आमादेर शांतिनिकेतन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. ८५ पृ. ४.००

शिवानी (गौरा पंत), १९२३-
वातायन. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. १२२ पृ. ७.००

शुक्ल, चुन्नीलाल.
संस्कृत-नाटकालोचन. मेरठ, साहित्य भंडार, १९७२. ३७६ पृ. ५.००

शुक्ल, तारा.
हास्य मंजूषा. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७६. ९६ पृ. ७.००
हास्य-व्यंग्य.

शुक्ल, भगवतीप्रसाद, १९२६-
आंचलिकता से आधुनिकता-बोध. कानपुर, ग्रंथम, १९७२. १३३ पृ. ९.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र, १९३९-
एक युग : एक दृष्टि; आलोचनात्मक निबंध. इलाहाबाद, साहित्यालोचन, १९७२. १०४ पृ. ९.००

शुक्ल, मत्स्येंद्र, १९३९-
हिंदी साहित्य, विविध प्रसंग. इलाहाबाद, सर्वराकेश प्रकाशन, वितरक : परिमल प्रकाशन, १९७४. १९२ पृ. १८.००

शुक्ल, रमाकांत.
जैनाचार्य रविषेण-कृत 'पद्मपुराण' और तुलसी-कृत 'रामचरितमानस'. दिल्ली, वाणी परिषद, १९७४. १६, ४८० पृ. ६०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

शुक्ल, ललित, संपा.
अनाहूत. नयी दिल्ली, समता प्रकाशन, १९७१. १६८ पृ. १२.५०

शुक्ल, विष्णुदत्त.
लेखक कैसे बने? दिल्ली, हिमालय पॉकेट बुक्स. १७६ पृ. ४.००

शुक्ल, सरला, १९२७-
उर्दू साहित्य का इतिहास. लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र, १९७१. १९७ पृ. ६.००

शुक्ल, सरला, १९२७-
परिवेश और प्रतिक्रिया. लखनऊ, हिमांशु प्रकाशन, १९७५. १२७ पृ. १०.००

शुक्ल, हीरालाल, १९३९.
आधुनिक संस्कृत साहित्य. इलाहाबाद, रचना प्रकाशन १९७१. ४४३ पृ ३५.००

शुक्ल, हीरालाल, १९३९-
मुद्राराक्षस का सांस्कृतिक अनुशीलन. नागपुर, विश्वभारती प्रकाशन, १९७६. १०५ पृ. १२.५०

शैलकुमारी.
शोध : तंत्र और सिद्धांत. दिल्ली, लोकवाणी प्रकाशन, १९७६. १३५ पृ. १६.००

श्रीकृष्ण 'मायूस'.
भ्रष्टाचार और हम. दिल्ली, सरताज प्रकाशन, १९७१. १७५ पृ. ६.००
हास्य-व्यंग्य.

श्रीरामरेड्डी, अन्नापुरेड्डी, १९३५-
कलियों के द्वार पर अलियों का गुंजन, निडावोलु, १९७४. १२, १३० पृ. ५.००

श्रीवास्तव, दयानंद तथा शंभुनाथ, संपा.
संकल्प. कलकत्ता, हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, १९७३. २२३ पृ. १५.००

श्रीवास्तव, मुरलीधर, १९११-
हिंदी के यूरोपीय विद्वान; व्यक्तित्व और कृतित्व. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ४४९ पृ. १५.००

श्रीवास्तव, रामस्वरूप 'स्नेही'.
बुंदेली लोक साहित्य. आगरा, रंजन प्रकाशन, १९७६. ८, ४०७ पृ. ४०.००

श्रीवास्तव, वीरेंद्र.
हिंदी साहित्य परंपरा और परख. पटना, भारती भवन, १९७१. २७७ पृ. १०.००

श्रीवास्तव, शैलेंद्रनाथ.
प्रतियोगिता निबंध. पटना, भारती भवन, १९७३. ८, २६३ पृ. ५.६०

श्रीवास्तव, सावित्री.
रीतिकालीन लक्षण-ग्रंथों में भाषा भूषण का स्थान. वाराणसी, चौखंबा ओरियन्टालिया, १९७७. ३९२ पृ. ३०.००

श्रीवास्तव, सुबोधकुमार, १९४३-
शहर बंद क्यों है? दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४. १२, १२५ पृ ६.००
हास्य-व्यंग्य.

श्रीवास्तव, हिमांशु.
बड़ों के व्यंग विनोद. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७४. ३५ पृ. १.५०
हास्य-व्यंग्य.

संपूर्णानंद, १८९०-१९६९.
अधूरी क्रांति. संपा. भानूप्रताप शुक्ल. लखनऊ, भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति; वितरक : राष्ट्र-धर्म पुस्तक प्रकाशन, १९७०. १५६ पृ. ३ ००

संसारचंद्र, १९१७-
आकलन और समीक्षा. नई दिल्ली, आशा प्रकाशन गृह, १९७३. १७२ पृ. १०.००

संसारचंद्र, १९१७-
वातें ये झूठी हैं. दिल्ली, उमेश प्रकाशन, १९७४. ८७ पृ. ४.००
हास्य-व्यंग्य.

संसारचंद्र, १९१७-
सटक सीताराम. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७६. १०६ पृ. ७.५०
हास्य-व्यंग्य.

संसारचंद्र, १९१७-
सोने के दांत. सं. ३. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७३ १०३ पृ. ५.००
हास्य-व्यंग्य.

सक्सेना, के. पी., १९३४-
नया गिरगिट. दिल्ली, विवेक प्रकाशन, १९७५. १२० पृ. ८.५०
हास्य-व्यंग्य

सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद.
हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७६. ४२२ पृ. १५.००

सक्सेना, भुवनेश्वरीचरण.
आधुनिक हिंदी निबंध. लखनऊ, प्रकाशन केंद्र, १९७१. ६, ५५९ पृ. ६.००

सक्सेना, ललताप्रसाद 'ललित', १९२४-
आधुनिक बोध और परंपरा. जयपुर, निर्मल प्रकाशन, १९७२. २४९ पृ. २० ००

सत्यनारायण, मोटूरि.
विश्व ज्ञान संहिता. मद्रास, हिंदी प्रचार समिति, १९७४. ७५१ पृ. १२५.००

सत्येंद्र, संपा.
कांचन-मणि; हिंदी गद्य और साहित्यलोचन के विकास की भूमिका सहित. ग्वालियर, कैलाश पुस्तक सदन, १९७६. १६० पृ. १८.००

सरलादेवी.
हिंदी साहित्य में नारी. कोचीन, केरल हिंदी साहित्य मंडल, १९७१. १६२ पृ. ५.००

सरीन, धर्मपाल.
हिंदी साहित्य और स्वाधीनता-संघर्ष. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७३. १५९ पृ. १२.५०

सहगल, ललित.
बीरबल. नई दिल्ली, शकुन प्रकाशन, १९७६. ९५ पृ. ३.००
हास्य-व्यंग्य.

सहगल, सीताराम.
अमर भारती के ज्ञान-कण. दिल्ली, भारती साहित्य सदन, १९७६. २०८ पृ. १२.००

सहल, कन्हैयालाल, १९११-
चिंतन के आयाम. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७२. ३०१ पृ. २५.००

सहाय, रघुवीर.
दिल्ली मेरा परदेश. नई दिल्ली, मैकमिलन, १९७६. १८१ पृ. १८.००

सहाय, राजवंश 'हीरा', १९२९-
संस्कृत साहित्य कोश. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, १९७३. १०, ७१५ पृ. ४५.००

सामर, देवीलाल, १९११-
अंतर्मन. उदयपुर, भारतीय लोक कला मंडल, १९६७. ४, ४५ पृ.

सारस्वत, केदारनाथ शर्मा, अनु.
कथासरित्सागर. पटना, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९६०-७३. ३ भा.

सारस्वत, रावत, १९२०-
राजस्थानी साहित्यकार परिचय-कोस. बीकानेर, राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), १९७४. १२४ पृ. ७.७५

साहनी, बलराज.
यादों के झरोखे से. दिल्ली, आत्माराम एंड संस, १९७४. १५४ पृ. १०.००

सिंघवी, कमला.
नारी भीतर और बाहर. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १२, १५५ पृ. ६.००

सिंह, अवतार.
दादा जी के कारनामे. नई दिल्ली, अनुराग प्रकाशन, १९७३. ७२ पृ. ३.५०
हास्य-व्यंग्य.

सिंह, कपिलदेव, १९१७-
मगही का आधुनिक साहित्य. पटना, पारिजात प्रकाशन, १९६९. भा. १. ३.००

सिंह, कपिलदेव नारायण 'सुहृद', १९००-
युगपुरुष महापुरुष. दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, १९७२. १३६ पृ. १०.००

सिंह, कुंवर चंद्रप्रकाश, १९१०-
शोध-साधना. इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन, १९७३. भा. १. १२.००

सिंह, कुंवर चंद्रप्रकाश, १९१०-
हिंदी शोध समस्यायें और समाधान. इलाहाबाद, साकेत प्रकाशन, १९७४. १९६ पृ. २०.००

सिंह, केशवप्रसाद तथा वासुदेव सिंह, संपा.
निबंध निचय. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७५. २४, १२० पृ. ४.५०

सिंह, गुरु इकबाल तथा प्रेम सक्सेना, संपा.
सन्निवेश-४. जयपुर, शिक्षा विभाग, राजस्थान के लिए चिन्मय प्रकाशन, १९७१. १५६ पृ. ४.७५

सिंह, गुरु इकबाल तथा प्रेम सक्सेना, संपा.
सन्निवेश-५. बीकानेर, कल्पना प्रकाशन, १९७२. १७८ पृ. ४.९५

सिंह, त्रिभुवन, १९२९- संपा.
साहित्यिक निबंध. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७०. २१.००

सिंह, त्रिभुवन, १९२९-
हिंदी साहित्य : एक परिचय. सं. २. वाराणसी, हिंदी प्रचारक, १९७४. १६, ४३१ पृ. १४.००

सिंह, पुष्पपाल, १९४१-
आधुनिक हिंदी साहित्य : विकास के विविध सोपान. पटियाला, प्रबुद्ध प्रकाशन, १९७५. २०१ पृ. २०.००

सिंह, बच्चूप्रसाद, १९३०-
कुछ दूर की, कुछ पास की. दिल्ली, विद्या प्रकाशन मंदिर, १९७५. १०१ पृ. ७.००

सिंह, ब्रजभूषण 'आदर्श', १९३१-
मध्यप्रदेश के अहिंदी भाषियों की हिंदी सेवा. जबलपुर, लोकचेतना प्रकाशन, १९७२. ११८ पृ. ५.००

सिंह, ब्रजभूषण 'आदर्श', १९३१-
मध्यप्रदेश के आधुनिक साहित्यकार. जबलपुर, मदन-महल जनरल स्टोर्स, १९७१. १३, ३५२ पृ. १०.००

सिंह, बेनीबहादुर, संपा.
दूषणोल्लास. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन. ६.००

सिंह, माहेश्वरी 'महेश', १९१३- तथा रामेश्वर प्रसाद सिंह, संपा.
ललित निबंध. इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन; वितरक : पुस्तकम्, पटना, १९७०. १५२ पृ. ३.००

ाह, राजकिशोर.
वैदिक साहित्य का इतिहास. सं. ४. आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, १९७२. १२, २६४ पृ. ४.००

सिंह, राजेंद्रप्रसाद, १९३०-
कावार्ता; गद्य विविधा. आगरा, प्रगति प्रकाशन, १९७३. १११ पृ. ५.००

सिंह, राजेश्वरप्रसाद नारायण.
रोचक प्रसंग. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७७. २०८ पृ. २५.००

सिंह, रामकृष्ण.
सैनिक हंस गोले. अजमेर, चित्रगुप्त प्रकाशन, १९७५. ७१ पृ. ४.५०
हास्य-व्यंग्य.

सिंह, रामशरण.
लोक जीवन की सीता. इलाहाबाद, अभिव्यक्ति प्रकाशन, १९६९. १०८ पृ. ५.००

सिंह, रामसेवक, १९३२-
भारतीय अंग्रेजी कथा-साहित्य. दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, १९७२. १८० पृ. १६.००

सिंह, रेणुका, १९३७-
संत साहित्य का दार्शनिक अध्ययन. वाराणसी, १९७२? १६, ३२८ पृ. २५.००
शोध-प्रबंध – काशी हिंदू विश्व.

सिंह, लालजी, १९२६-
हिंदी का सांस्कृतिक परिवेश. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७४. २३५ पृ. ३०.००

सिंह, वासुदेव, १९३५-
हिंदी साहित्य का उद्भवकाल. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७३. १५, २६४ पृ. १०.००

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७३. १५२ पृ. १३.००

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
आधुनिक परिवेश और नवलेखन. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन. २८० पृ. १२.५०

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
कस्तूरी मृग; ललित निबंध. नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, १९७२. १७२ पृ. ७.५०

सिंह, शिवप्रसाद, १९२९-
चतुर्दिक. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७२. ४, २१२ पृ. १२.००

सिंह, शिवमंगल 'सुमन', १९१६-
प्रकृति-पुरुष कालिदास. भोपाल, कैलाश पुस्तक सदन, १९७२. ११, २८ पृ. ३.००

सिंह, हृदयनारायण.
आकलन. वाराणसी, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७६. १७८ पृ. १२.००

सिद्धेश्वर प्रसाद, १९२९-
विचार-प्रवाह, संपा. हरिवंश भाटिया. जबलपुर, १९७६. १२५ पृ. १८.००

सिद्धेश्वर प्रसाद, १९२९-
साहित्य का मूल्यांकन. पटना, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७६. ६, २४२ पृ. १८.००

सुंदर, एन. तथा विश्वनाथ विश्वासी, संपा.
सुब्रमह्मण्यम भारती की राष्ट्रीय कविताएं. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७१. ७७ पृ. ४.००

सुंदर रेड्डी, जी., १९१८-
वैचारिकी. निबंध संग्रह. नई दिल्ली, एस. चंद एंड कंपनी, १९७१. भा. १. ३.५०

सुंदर रेड्डी, जी., १९१८-
शोध और बोध. वाराणसी, हिंदी प्रचारक प्रकाशन, १९७४. १११ पृ. ७.००

सुंदर रेड्डी, जी., १९१८- तथा अन्य, संपा.
हिंदी साहित्य के विकास में दक्षिण का योगदान. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७५. १०४ पृ. ८.००

सुकुमारदास, जी., संपा.
निबंध पल्लव. सं. २. धारवार, कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा, १९७०. ८४ पृ. १.५०

सुदर्शन.
इंडिकेट बनाम सिंडिकेट. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७०. १२८ पृ. ७.५०
हास्य-व्यंग्य.

सुधाकर.
अनमोल वचन; महापुरुषों की अमृतवाणी. दिल्ली, किताब घर, १९७३. १६० पृ. ५.००

सुमन, क्षेमचंद्र, १९१७-
रेखाएं और संस्मरण; कुछ दिवंगत आचार्यों, साहित्यकारों, नेताओं, पत्रकारों और कवियों के मार्मिक संस्मरण. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७५. १८९ पृ. २५.००

सुरीरवाला, रोशनलाल, १९३१-
घाट पर हनुमान. दिल्ली, हिंदी साहित्य संसार, १९७४. १०२ पृ. ७.५०
हास्य-व्यंग्य.

सुरीरवाला, रोशनलाल, १९३१-
पत्नी शरणं गच्छामि. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७६. १०७ पृ. २५.००
हास्य-व्यंग्य.

सुरीरवाला, रोशनलाल, १९३१-
मंच के विक्रमादित्य : हास्य-व्यंग्य. अलीगढ़, १९७२. १०२ पृ. ४.००

सुरीरवाला, रोशनलाल, १९३१-
मूर्ख शिरोमणि. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७५. १५१ पृ. २०.००
हास्य-व्यंग्य.

सुरीरवाला, रोशनलाल, १९३१-
ये मांगने वाले. दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, १९७५. १५२ पृ. २०.००
हास्य-व्यंग्य.

सुरेंद्रदेव शास्त्री.
कालिदास और भवभूति के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन. मेरठ, साहित्य भंडार, १९६९. ३२३ पृ. २५.००

सूर्यकांत, १९०१-
संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास. नई दिल्ली, ओरिएण्ट लांगमैन, १९७२. २१, ४९७ पृ. २५.००

सूर्यदेव शास्त्री.
मनोभाषिकी. पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, १९७३. ३७४ पृ. १३.५०

सूर्यबलीसिंह, संपा.
निबंध संग्रह. रायपुर, ज्ञानोदय प्रकाशन, १९७०. ६, १४८ पृ. २.५०

सेठ, रवींद्रकुमार, १९३९-
तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७२. १७, २३१ पृ. ३०.००
शोध-प्रबन्ध—दिल्ली विश्व.

सोनवणे, चंद्रभानु सीताराम, १९३१-
हिंदी गद्य साहित्य : आर्यसमाज की हिंदी-गद्य-साहित्य को देन. कानपुर, ग्रंथम, १९७५. २९७, २८ पृ. ३५.००

हंस, कृष्णलाल, १९०९-
बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप : एक भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन. प्रयाग, हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७६. २०, ५४३ पृ. ४५.००

हंस, कृष्णलाल, १९०९-
भारतीय साहित्य दर्शन. कानपुर, ग्रंथम, १९७३. ६३६ पृ. ५०.००

हंस, कृष्णलाल, १९०९-
हिंदी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास. कानपुर, ग्रंथम, १९७४. ५९० पृ. ५०.००

हंसराज.
ओ जे कहलनि; मैथलीक दस साहित्य-सेवी से भेंट वार्ता. पटना, मैथिली साहित्य संस्थान, १९७१. भा. १. ३.००

हरदयाल.
आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य. दिल्ली, आदर्श साहित्य प्रकाशन, १९७२. १८३ पृ. १६.५०

हल्लीखेदे, काशीनाथ.
कन्नड़-साहित्य का सुबोध इतिहास. बेंगलोर, विद्या मंदिर, १९७३. २३५ पृ. २०.००

हिंदी कथा कोष; प्राचीन हिंदी साहित्य में व्यवहृत नामों तथा पौराणिक अंतर्कथाओं का संदर्भ-ग्रंथ. सं. २. इलाहाबाद, हिंदुस्तानी एकेडेमी, १९७४. १३६ पृ. ६.००

हिंदी विश्वकोश. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९६२-७३. १२ भा.

हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास. १६ भा. में. काशी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९५७-
भा. १. हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक पीठिका. ३०.००;
भा. २. हिंदी भाषा का इतिहास. ३०.००;
भा. ३.
भा. ४. भक्तिकाल : निर्गुण भक्ति. ३०.००;
भा. ५.
भा. ६. रीतिकाल : रीतिवद्ध. ३०.००,
भा. ७. रीतिकाल (रीतिमुख), सं. १७.००-१९०० वीं). ३०.००;
भा. ८. हिंदी साहित्य का अभ्युत्थान भारतेंदु काल, (सं० १९००-१९५०वीं). ३०.००;
भा. ९.
भा. १०. उत्कर्ष काल (काव्य) सं. १९७५-१९९५ वी). ३०.००;
भा. ११. हिंदी साहित्य का उत्कर्ष काल; नाटक : सं. १९७५-९५ वी. तक; ३०.००;
भा. १२.
भा. १३. हिंदी साहित्य का उत्कर्ष काल; समालोचना, निबंध और पत्रकारिता. ३०.००;
भा. १४. हिंदी साहित्य का अद्यतन काल. ३०.००;
भा. १५.
भा. १६. हिंदी का लोक साहित्य. ३०.००

हिंदी सौरभ. नागपूर, नागपूर विद्यापीठ, १९७२. २ भा. ४.००

हिरणमय.
कन्नड़ साहित्य सौरभ. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७५. १८७ पृ. १५.००

हुल्लड़ मुरादाबादी, संपा.
हा-हा-ही-ही-हू-हू. मुरादाबाद, हास-परिहास प्रकाशन. ११२ पृ. ४.००
हास्य-व्यंग्य.

हौसलाप्रसाद 'ठाकुर', १९३३-
हिंदी ग्रंथ-सूची सारिणी; १८२८ से लेकर अप्रैल १९७२ तक प्रकाशित हिंदी ग्रंथ-सूचियों तथा सूचीपत्रों की विवरणात्मक सारिणी. होशियारपुर, विश्वेश्वरानंद संस्थान, १९७२. २२, १०६ पृ. २०.००

परिशिष्ट

कृति तथा कृतिकार

—अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन), १९११-

अवस्थी, ओमप्रकाश, १९३७-
'अज्ञेय' कवि. कानपुर, ग्रंथम, १९७७. १३, ३६८ पृ. ४०.००

शर्मा, बालकराम.
अज्ञेय के गद्य साहित्य का शैली-वैज्ञानिक अध्ययन. गाजियाबाद, अमित प्रकाशन, १९७७. ५, १८५ पृ. २०.००
शोध-प्रबंध—मेरठ विश्व.

—अमीरदास.

रामप्रकाश.
आचार्य अमीरदास और उनका साहित्य. नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो, १९७७. ३५८ पृ. ४०.००

—आलम, शेख, वि. १५८३.

जोशी, भारतभूषण.
आलम और उनका काव्य. दिल्ली, सूर्य-प्रकाशन, १९७६. ८८ पृ. १२.५०

—ओंकार शरद, १९२६-

चतुर्वेदी, अनील, संपा.
मूर्तिशिल्प. इलाहाबाद, साहित्य भंडार, १९७७. ३१२ पृ. ३०.००

—कबीर, १५वीं शती.

गंगाशरण शास्त्री.
कबीर जीवन चरित्र. वाराणसी, कबीर वाणी प्रकाशन केंद्र, १९७६. ४०, ३०३, १६ पृ. २०.००

गंगाशरण शास्त्री.
श्री सद्गुरु कबीर-सिद्धांत-दर्शन. वाराणसी, कबीर-वाणी-प्रकाशन-केंद्र : प्राप्तिस्थान : मास्टर अयोध्यादास, १९७६. ३१२, ३१ पृ. ५.००

चौहान, प्रतापसिंह, १९१६-
कबीर; साधना और साहित्य. कानपुर, ग्रन्थम, १९७६. ५२१ पृ. ६०.००

—कमलेश्वर, ९३२-

मधुकर सिंह, संपा.
कमलेश्वर. दिल्ली, शब्दकार, १९७७. ३९५ पृ. ५०.००

रणसुभे, सूर्यनारायण मा., १९४२-
कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ और प्रकृति. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७७. १०, १५९ पृ. २०.००

—काका हाथरसी (प्रभुलाल गर्ग), १९०६-

अग्रवाल, गिरिराज शरण, संपा.
काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ. बिजनौर, काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ समिति : वितरक : संगीत कार्यालय, हाथरस, १९७६. २२, ४४९, १६ पृ. ७०.००

—कामताप्रसाद गुरु.

झा, वेणीशंकर तथा अन्य, संपा.
कामताप्रसाद गुरु शती-स्मृति ग्रंथ. वाराणसी, नागरी-प्रचारिणी सभा, १९७७. ३०७ पृ. ५१.००

—केशवदास,

गुप्त, सरला तथा सरोज गुप्त.
केशवदास कृत रामचंद्रिका, अंतर्कथाएं. संपा. हेम भटनागर. दिल्ली, पराग-संस्था, जानकी महाविद्यालय के निमित्त अलंकार प्रकाशन, १९७६. १२, ८८ पृ. ८.००

सिंह, विजयपाल, संपा.
केशव-कोश. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७६. ४०९ पृ. ४५.००

—गुप्त, बालमुकुंद, १८६५-१९०७.

ओंकार शरद, संपा.
बालमुकुंद गुप्त के श्रेष्ठ निबंध, चिट्ठे और खत. इलाहाबाद, विविध भारती प्रकाशन, १९७६. १४० पृ. १२.००

—गुप्त, मैथिलीशरण, १८८१-१९६४.

शर्मा, व्रजमोहन.
कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत. जयपुर, जयपुर पुस्तक सदन, १९७७. १२० पृ. २०.००

—गुरुभक्तसिंह 'भक्त', १८९३-

गुप्त, किशोरीलाल, संपा.
नूरजहां-मीमांसा. वाराणसी, भक्त कर्माबाई एजुकेशनल ट्रस्ट; वितरक : अभिनव प्रकाशन, १९७७. १६८ पृ. ८.००

—घनानंद.

वर्मा, सहदेव, १९२६-
घनानंद काव्य दर्शन. नई दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७७. १८४ पृ. ३०.००

—चंदाझा, १८३०-१९०९.

झा, अमरनाथ, १९५६-
कवीश्वर चंदाभा ओ हुनक मिथिलाभाषा-रामायण. पटना, मैथिली अकादमी, १९७७. १७८ पृ. १७.५०
मैथिली में.

—चतुरभुज, १५वीं शती.

झा, शैलेंद्र मोहन.
चतुर चतुरभुज एवं गीत सप्तदशी. लहेरियाराय, मिथिला प्रकाशन, १९६९. २, ४० पृ. ५.००
मैथिली में.

—चतुरसेन शास्त्री, १८९१-१९६०.

वशिष्ट, इंदु.
उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७७. ४१८ पृ. ४५.००

—चतुर्वेदी, श्रीनारायण, १८९५-

मिश्र, विद्यानिवास, संपा.
हिंदी-सेवा की संकल्पना; पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी बहुमुखी कृतित्व की पार्श्वच्छवि के रूप में उनकी टिप्पणियों, कविताओं एवं अन्य कृतियों से संकलन प्रयाग, पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी सारस्वत समारोह समिति, १९७६. ४१, ३९० पृ. ५०.००

—जगनिक, १२वीं शती.

सिलाकारी, लोकनाथ द्विवेदी, १९०४-
महाकवि जगनिक, उनका लोक-गाथा-काव्य आल्हा सागर, हिंदी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, १९६९? १३, २१० पृ. ५.००

—जयरामदास, १८वीं शती.

सिंह, रामविनोद, १९३९-
संत जयरामदास; जीवन और साहित्य. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७६. १२७ पृ. १२.५०

—जसवंतसिंह, महाराजा, १६२५-१६७८.

श्रीवास्तव, सावित्री.
रीतिकालीन लक्षण-ग्रंथों में भाषाभूषण का स्थान. वाराणसी, चौखंभा ओरियन्टालिया, १९७७. २४, २६२ पृ. ३०.००

—तुलसीदास.

अवस्थी, हरिकृष्ण.
तुलसीदास; परिवेश, प्रेरणा, प्रतिफलन. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७६. ४, ३१६ पृ. ३०.००

ओझा, स्नेह.
तुलसीदास : ब्रजभाषा-प्रबंध काव्य. उदयपुर, साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, १९५२? ७८, ५२ पृ.

कुमार, बच्चनदेव.
तुलसी : विविध संदर्भों में. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७७. ३६२ पृ. १५.००

गुप्ता, शीलवती, १९२०-
तुलसीदास का राजनीतिक चिंतन. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७७. १७८ पृ. २०.००

गुप्ता शीलवती, १९२०-
तुलसी-साहित्य में राजनीतिक विचार. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७७. २६४ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

गुप्ता, शीलवती, १९२०-
तुलसी-साहित्य में राम-राज्य की परिकल्पना. दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, १९७२. १६४ पृ. २०.००

चतुर्वेदी, कृष्णनाथ गौड़.
तुलसी-साहित्य की दार्शनिक पीठिका; आचार्य वेदान्त-देशिक के दर्शन के आलोक में. बीकानेर, श्री विष्णु धार्मिक प्रकाशन, १९७२. ६, २६६ पृ. ४३.००

त्रिपाठी, राममूर्ति, संपा.
तुलसी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. ८, २७२ पृ. १६.५०

प्रेमशंकर.
रामकाव्य और तुलसी : सांस्कृतिक संदर्भ में. दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७७. १२६ पृ. १५.००

शुक्ल, रामचंद्र, संपा.
तुलसी ग्रंथावली. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७३-७६. ३ भा. ८६.००
विषय-सूची.—१. रामचरितमानस.—२. मानसेतर एकादश ग्रंथ.—३. मूल्यांकन.

श्यामसिंह, टीका.
रामचरितमानस : राजस्थानी टीका सहित. जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान, १९७१. १०४९ पृ. २१.००

—दिनकर, रामधारीसिंह, १९०८-१९७४.

चतुर्वेदी, जगदीशप्रसाद, संपा.
दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. नई दिल्ली, प्रवीन प्रकाशन, १९७७. १५६ पृ. २५.००

दीक्षित, छोटेलाल, १९३६-
दिनकर का रचना संसार. इलाहाबाद, प्रतिभा प्रकाशन, १९७६. २, १४० पृ. २०.००

—द्विवेदी, महावीरप्रसाद, १८६८-१९५८.

झा, शैव्या.
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी; व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७७. २६२ पृ. ३५.००

शर्मा, रामविलास.
महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७७. ४०५ पृ. २५.००

—नाथूराम शर्मा 'शंकर', १८५९-१९३२.

कौशिक, वीरेंद्र.
द्विवेदी-युग की पृष्ठभूमि और नाथूराम 'शंकर'. मेरठ, अनुराधा प्रकाशन, १९७७. ११, ३३८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—मेरठ विश्व.

—निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी), १८९६-१९६१.

खरे, रेखा.
निराला की कविताएं और काव्यभाषा. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. २०८ पृ. १६.००

बाछोतिया, हीरालाल.
निराला साहित्य का अनुशीलन : गद्य के संदर्भ में. कानपुर, साहित्य संस्थान, १९७७. २९० पृ. ३८.००
शोध-प्रबन्ध—सागर विश्व.

श्रीवास्तव, परमानंद, संपा.
निराला की कविताएं; कविता में कविता की खोज. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७७. २०८ पृ. २५.००

श्रीवास्तव, परमानंद, संपा.
निराला की कविताएं; मूल्यांकन और मूल्यांकन. इलाहाबाद, नीलाभ प्रकाशन, १९७५. २०८ पृ. २५.००

—नेहरू, जवाहरलाल, १८८९-१९६४.

उपाध्याय, हरिभाऊ तथा अन्य, संपा.
साहित्यकार नेहरू. जयपुर, प्रज्ञा प्रकाशन, १९६५. ११६ पृ. ४.५०.

—पंत, सुमित्रानंदन, १९००-

जोशी, शांति.
सुमित्रानंदन पंत; जीवन और साहित्य. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, १९७६. भा. २. (६८० पृ.) ५०.००

—पद्माकर भट्ट, १७५३-१८३३.

खत्री, मधु.
पद्माकर की काव्य-भाषा. नई दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७७. ६, २५२ पृ. ४०.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

—प्रसाद, जयशंकर, १८८९-१९३७.

उपाध्याय, नीलमणि.
कामायनी का आनन्दवाद. जयपुर, जयपुर पुस्तक सदन, १९७७. ६, १२९ पृ. २०.००

दिनेश्वर प्रसाद.
प्रसाद की विचारधारा; प्रसाद के साहित्य-संबंधी विचारों और उनके स्रोतों के संदर्भ में. पटना, अनुपम प्रकाशन, १९७७. ४, १२, ३८८ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—रांची विश्व.

प्रसाद, रत्नशंकर, संपा.
प्रसाद ग्रंथावली; जयशंकर प्रसाद का संपूर्ण काव्य साहित्य. इलाहाबाद, भारती प्रकाशन, १९७७. खं. १. (७०४ पृ.) ६०.००

भुवालका, धर्मशीला.
काव्य बिंब और कामायनी और कामायनी की बिंब योजना. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७७. ३४९ पृ. ४२.००

—प्राणनाथ, १६१८-१६९४.

मेहता, विमला, संकलन.
महामति प्राणनाथ एवं तारत्तम वाणी, कुलजम स्वरूप परिचय. दिल्ली, श्री प्राणनाथ प्रकाशन, १९७३. १३२ पृ. ४.००

—बख्शी हंसराज, १८वीं शती.

तिवारी, बलभद्र, संपा.
स्नेह-सागर. सागर, बुंदेली पीठ, हिंदी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, १९७०. १६६, २८ पृ. ८.००

—बनादास, १७९८-१८९२.

सिंह, भगवतीप्रसाद, १९२१-
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७६. २६, ३५२ पृ. ३५.००
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

—बाहादर ढढी, १५वीं शती.

राठौर, भूरसिंह, संपा.
कवि बाहादर और उसकी रचनायें. फेफाणा, मरू-जांगल शोध-संस्थान, १९७६. ४, ३२, २४७, ६२ पृ. ४०.००

—बिहारी.

त्रिगुणायत, गोविंद.
बिहारी सतसई का शास्त्रीय भाष्य. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७७. ६१२ पृ. ५०.००

लल्लूलाल, संपा.
बिहारी सतसई. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७७. १००.००

—भारतेंदु हरिश्चंद्र, १८५०-१८८५.

सहाय, शिवनंदन.
हरिश्चंद्र : भारत-भूषण भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र का जीवन-चरित्र. लखनऊ, हिंदी समिति, उ. प्र. शासन, १९७५. ३७६, ९२ पृ. ८.००

सोनवण, चंद्रभानु सीताराम, १९३१-
भारतेंदु के विचार : एक पुनर्विचार. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७७. ७९ पृ. १२.००

—भूषण.

तिवारी, भगवानदास.
संक्षिप्त भूषण. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७७. ७६ पृ. १०.००

—मीराबाई.

आनंद स्वरूप, स्वामी, संपा.
मीरा सुधा-लहरी; श्री मीराजी की जीवनी, उनके चुने हुए पदों का संग्रह व फुटकर लेख आदि. भीलवाड़ा, श्रीमीरां प्रकाशन समिति, १९५७. ३२, १९१ पृ.

भाटी, नारायणसिंह, १९३०-
मीरां. जोधपुर, गिरधर प्रकाशन : प्राप्तिस्थान: लक्ष्मी पुस्तक भंडार, १९७६. ९६ पृ. १०.००

—रत्नाकर, जगन्नाथदास, १८६६-१९३२.

तिवारी, सोच हरण.
रत्नाकर; व्यक्तित्व, कृतित्व और भाषा. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७७. १६० पृ. २०.००
शोध-प्रबन्ध—काशी हिंदू विश्व.

—रविदास, १५वीं शती

पदम गुरचरन सिंह, १९३९-
संत रविदास; विचारक और कवि. जालंधर, नव-चिंतन प्रकाशन, १९७७. २१६ पृ. ३०.००

—राकेश, मोहन, १९२५-१९७२.

बंसल, पुष्पा.
मोहन राकेश का नाट्य-साहित्य. सं. ५. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७६. ४, ११४ पृ. १५.००

रस्तोगी, गिरीश.
मोहन राकेश और उनके नाटक. इलाहाबाद, लोक-भारती प्रकाशन, १९७६. १७९ पृ. १४.००

—राव गुलाबसिंह, १८३०-१९०१.

विवलकर, र. वा., १९३१-
राव गुलाबसिंह और उनका हिंदी साहित्य. कानपुर, अभिलाषा प्रकाशन, १९७७. ३४३ पृ. ४२.००
शोध-प्रबंध—पूना विश्व.

—लक्ष्मीनाथ, १७७८-१८७२.

मिश्र, भवेश, संपा.
गोस्वामी लक्ष्मीनाथ लेखमाला. बनगांव, जिला सहरसा, १९७१. ६, ३५ पृ. २.००

—वर्मा, भगवतीचरण, १९०३-

श्रीवास्तव, रमाकांत.
व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के संदर्भ में उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७७. १६, ३४४ पृ. ५०.००

—वर्मा, महादेवी, १९०७-

शर्मा, मक्खनलाल.
महादेवी वर्मा के रेखाचित्र. दिल्ली, प्रेमशील प्रकाशन; वितरक : शब्द और शब्द. १३७ पृ. १८.००

श्रीवास्तव, परमानंद, संपा.
महादेवी. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७६. ७, २०० पृ. १०.००

—विद्यापति, १५वीं शती.

झा, जयकांत 'श्रुतधर'.
विद्यापति सौरभ. कलकत्ता, मैथिली प्रकाशन समिति, १९६७? २, ३२ पृ. ०.७५
मैथिली में.

ठाकुर, दामोदर तथा अन्य, संपा.
स्मारिका, विद्यापति पर्व समारोह, १९७६. पटना, चेतना समिति, १९७६. १७३ पृ. ५.००

सेन, सुकुमार, १९००-
विद्यापति-गोष्ठी. हिंदी रूपकार शैलेंद्र मोहन झा. लहेरियासराय, मिथिला रिसर्च सोसाइटी के लिये मिथिला प्रकाशन, १९६६. ४, ११८, २ पृ. २.५०

—विश्वनाथसिंह, १७८९-१८५४.

छाबड़ा, गोविंदलाल, १९३७-
हिंदी के प्रथम नाटककार विश्वनाथ सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. नई दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, १९७६. ४१४ पृ. ६०.००
शोध-प्रबंध—दिल्ली विश्व.

—शंकरदेव, १४४९-१९६९.

प्रसाद, कृष्णनारायण 'मागध', १९३३-
शंकरदेव : साहित्यकार और विचारक. पटियाला, पंजाबी यूनिवर्सिटी, १९७६. २७, ४८६ पृ. ६५.००

शर्मा, नरेंद्र, १९१३-

मिश्र, दुर्गाशंकर, १९३०-
नरेंद्र शर्मा का काव्य; एक विश्लेषण. लखनऊ, हिंदी साहित्य भंडार; वितरक : विद्या मंदिर, हिंदी बुक सेंटर, १९७७. २०० पृ. २५.००

—शर्मा, पद्मसिंह.

तिवारी, मोहनलाल.
पद्मसिंह शर्मा; शती-स्मृति ग्रंथ. वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा, १९७७. २३० पृ. २०.००

—सत्यनारायण, १८८०-१९१८.

दुबे, रमेशचंद्र, संपा.
'कविरत्न' पंडित सत्यनारायण स्मृति ग्रंथ. मथुरा, ब्रज कोकिल अर्द्धशताब्दि समारोह समिति, आगरा के लिए अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल, १९६८. ४, १४७ पृ. ५.००

—सांकृत्यायन, राहुल, १८९३-१९६३.

उपाध्याय, गुप्तेश्वरनाथ.
राहुल सांकृत्यायन के गद्य साहित्य का शैलीगत अध्ययन. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, १९७६. १४, १६८ पृ. २५.००
शोध-प्रबन्ध—अलीगढ़ विश्व.

—सामर, देवीदयाल, १९१२-

माथुर, अन्नपूर्णा.
सामरजी के एकांकी; आलोचनात्मक अध्ययन. उदयपुर, भारतीय लोककला मंडल, १९७७. १६८ पृ. १५.००

—सुमन, श्रीदेव, १९१५-१९४४.

भक्तदर्शन, संपा.
सुमन-स्मृति-ग्रंथ. सं. २. सिल्यारा, टिहरी-गढ़वाल : पर्वतीय नवजीवन मंडल; प्राप्तिस्थान : सर्वोदय साहित्य भंडार, टिहरी, १९७६. ५, २५१ पृ. १०.००

—सूरदास.

पांडेय, रत्नाकर.
सूर की काव्यचेतना. लखनऊ, हिंदी प्रचारक संस्थान, १९७७. ५४३ पृ. ३५.००

—सेवादास निरंजनी, १६४१-१७४१.

मोरे, एस. एच.
सेवादास निरंजनी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अनुशीलन. मथुरा, जवाहर पुस्तकालय, १९७७. ४४१ पृ. ४५.००
शोध-प्रबंध—पूना विश्व.

—हरिऔध (अयोध्यासिंह उपाध्याय), १८६५-१९४७.

प्रसाद, विश्वनाथ, १९०५- संपा.
प्रिय प्रवास की शब्दानुक्रमणिका. आगरा, क. मु. हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, १९७७? ३०३ पृ. ७.७५

काव्य

अवस्थी, रमेशचंद्र.
भारतीय प्रतिनिधि कवियित्रियां : परिचयात्मक अध्ययन. इलाहाबाद, तरंगिणी प्रकाशन, १९७६. ८४ पृ. ८.००

ओझा, दीनदयाल, संपा.
राजस्थानी संत सुधा सार. जैसलमेर, मूमल प्रकाशन, १९७१. २४ पृ. ०.५०

केशवदेव शास्त्री 'केशव'.
शिवा-वाजि-वावनी; आचार्यकृत टिप्पणी साहित्य. सं. २. कानपुर, ग्रंथम, १९७६. ३०, ५४ पृ. ५.००

गोविंदशरण शास्त्री तथा अन्य, संपा.
व्रज लीलाओं का सांस्कृतिक अध्ययन. मथुरा, प्रदीप प्रकाशन, १९७४. ३१२ पृ. २५.००

झा, राजेश्वर, १९२५-
मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य. पटना, मैथिली अकादमी, १९७७. ४, २११ पृ. १५.००
मैथिली में.

तिवारी, वलभद्र.
बुंदेली-काव्य-परंपरा. सागर, म. प्र., बुंदेली पीठ, हिंदी विश्वविद्यालय, १९७१-१९७२. भा. १. प्राचीन काव्य. १०.००; भा. २. आधुनिक काव्य. ८.००

त्रिपाठी, रामफेर.
रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि. लखनऊ, रामा प्रकाशन, १९७७. २०० पृ. ३०.००

दास, दामोदरलाल
मैथिली-काव्य में हास्यरसमयी प्रेम पत्रावली. लहेरियासराय, मेटवाक पता पंचायत प्रेस, १९४८? ६, ४१ पृ.
मैथिली में.

द्विवेदी, गोविन्द, संपा.
दूषण उल्लास : कवि चिन्तामणि तथा कवि रघुनाथ की कृतियां. सागर, बुंदेलीपीठ, हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, १९७२. ६३ पृ. ४.००
बुंदेली में.

धामेजा, दयाल कोटूमल 'आशा'.
सिंधी कवियों की हिंदी-साधना, अंजली प्रकाशन, १९७७. ३०४ पृ. ४०.००

भील, फूलजी भाई (मीणां), संग्रा.
राजस्थानी भीलों के लोक गीत. लोक-साहित्य विभाग. साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा संपादित. उदयपुर, साहित्य संस्थान, १९५४. १५८ पृ.
भीली में.

महापात्र, शिवप्रिया.
छायावादोत्तर प्रबंध-काव्यों का कालापक्ष. नई दिल्ली, प्राची प्रकाशन, १९७७. ४२१ पृ. ६०.००

मिश्र, आनंद तथा गोपालजी झा 'गोपेश', संपा.
परंपरा एवं आधुनिक कविता; १९७५क पूर्वांचलीय विचार गोष्ठमे पठित. पटना, चेतना समिति, १९७६. २३६ पृ. ७.००

मिश्र, भुवनेश्वरनाथ 'माधव', १९१२-१९७१?
रामभक्ति-साहित्य में मधुर उपासना. पटना, विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७६. २८, ५६२ पृ. २५.५०

मीतल, मिथिलेश शरण.
निर्गुण सम्प्रदाय के कवियों में मधुर भक्ति. मथुरा, राज्यश्री प्रकाशन, १९७६. २६० पृ. ३५.००
शोध प्रबंध—अलीगढ़ विश्व.

मुक्तिपर्व: स्वाधीनता दिवस, १९७६, के आयोजनों में वुद्धिजीवियों, कलाकारों, कवि और कवियित्रियों की रचनाओं का संकलन. नई दिल्ली, दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, १९७६. ७१ पृ. ५.००

राजस्थानी लोकगीत. उदयपुर, साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ १९६३-६९? ६ भा.

शर्मा, श्रीनिवास.
हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि-कवि. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. २३७ पृ. १८.५०

उपन्यास-कहानी

गुप्त, राधेश्याम.
हिंदी कहानी का शिल्प-विधान. अजमेर, हिंदी साहित्य संस्थान, १९७७. २७८ पृ. ३०.००

गुप्त, सूर्यकांत.
हिंदी उपन्यास वार्षिकी, १९७५. दिल्ली, सूर्य प्रकाशन, १९७७. २८७ पृ. ५०.००

राजस्थानी वार्ता. उदयपुर, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, १९६३. ७ भा.

नाटक-एकांकी

पांडेय, दीनानाथ.
हिंदी समस्या नाटक : भाषागत अध्ययन. इलाहाबाद, अभिनव भारती, १९७६. ३, ९५ पृ. ८.००

पाठक, मूलचंद्र.
संस्कृत नाटक में अतिप्राकृत तत्त्व. जयपुर, देवनागर प्रकाशन, १९७६. १८, ४६८ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—उदयपुर विश्व.

सामर, देवीलाल, १९१२-
भारतीय लोकनाट्य: वस्तु और शिल्प. उदयपुर, भारतीय लोककला मंडल, १९७६. ४, ११६ पृ. १५.००

सामर, देवीलाल, १९१२- तथा गींडाराम वर्मा.
राजस्थानी लोक-नाट्य. उदयपुर, भारतीय लोक-कला मंडल १९५७. ११, ६९ पृ.

साहित्यशास्त्र तथा आलोचना

अमृतराय.
नयी समीक्षा. इलाहाबाद, हंस प्रकाशन, १९७७. ३६८ पृ. २५.००

अवतरे, शंकरदेव, १९२६-
काव्यांग-प्रक्रिया; रस, ध्वनि, औचित्य, रीति, गुण, अलंकार, और वक्रोक्ति, काव्य के सात अंगों का संपूर्ण विवेचन. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७७. ४३२ पृ. ४०.००

चौधरी, सत्यदेव.
भारतीय काव्य-सिद्धांतों का सर्वेक्षण. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७६. १७० पृ. १०.००

झा, शंभुदत्त.
काव्यदोषों का उद्भव तथा विकास. पटना, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, १९७६. १३, २४८ पृ. १६.००

नरसिंहाचारी, एस. टी.
सौंदर्य तत्व निरूपण. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, १९७७. २२७ पृ. ४०.००

वाजपेयी, राधेश्याम.
हिंदी नाट्यकला तथा रेडियो नाटक : प्रेरणास्रोत, क्रमिक विकास, संप्रेषण, विषयवस्तु, शिल्प-सौष्ठव, नूतन उपलब्धियां एवं सीमायें. नई दिल्ली, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, १९७७. ४९० पृ. ७५.००

विष्णुदत्त 'राकेश', १९४१-
रीतिकाल के ध्वनिवादी हिंदी आचार्यों का तुलनात्मक अध्ययन. इलाहाबाद, साहित्य भवन, १९७७. ३५५ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—विक्रम विश्व.

शुक्ल, रामाश्रय 'करुणेंद्र'.
सौंदर्यशास्त्र के संदर्भ में भारतीय संगीत कला. सागर, हिंदी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, १९७१. १३१ पृ. ७.५०

सुखवीर सिंह, १९४३-
समीक्षा के नए प्रतिमान. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. १७१ पृ. २५.००

भाषाविज्ञान तथा व्याकरण

अर्याणी, सम्पत्ति, १९२३-
मगही-भाषा और साहित्य. पटना, बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद्, १९७६. ५७२, १४ पृ. २७.५०

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी आदी कोश (पदम बोली). कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद्, १९७६. ६६ पृ. ६.००

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१-
हिंदी रियाङ् शब्द-सूची. संपा. विजय राघव रेड्डी. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद्, १९७५. १६ पृ.

कुमार, ब्रजबिहारी, १९४१- तथा हरिप्रसाद राय.
हिंदी मरिङ् शब्द-सूची. कोहिमा, नागालैंड भाषा-परिषद्, १९७५. ३२ पृ. २.००

कुमार, ब्रजबिहारी तथा अन्य.
हिंदी काबुइ (रोङ्मइ) कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद्, १९७५. ११२ पृ. १०.००

कुमार, रामकृपाल तथा होशु रेङमा.
हिंदी रेङमा अंग्रेजी कोश. कोहिमा, नागालैंड भाषा परिषद्, १९७३. १२६ पृ. ४.००

कैलन, एस. डब्ल्यू.
हिंदुस्तानी कहावत कोश. अनु. कृष्णानंद गुप्त. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १९६८. ४०९ पृ. ११.००

जोशी, एल. डी.
वागड़ी वोली का स्वरूप और उसका तुलनात्मक अध्ययन. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७७. ५, १८२ पृ. २५.००

जोशी, हेमचंद्र.
भाषा वैज्ञानिक निवंध. लखनऊ, रामा प्रकाशन, १९७७. १९८ पृ. ३०.००

झा, विद्यानाथ 'विदित'.
मैथिली ओ संताली; संपर्क आ सामीप्य. पटना, मैथिली अकादमी, १९७७. १६, २५१ पृ. २०.००
मैथिली में.

तिवारी, भोलानाथ, १९२३-
हिंदी भाषा और नागरी लिपि. इलाहावाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७७. ७८ पृ. २.५०

देथा, विजयदान तथा भगीरथ कानोड़िया, संपा.
राजस्थानी हिंदी कहावत कोश. वोरुंदा, रूपायन-संस्थान, १९७७. भा. १. ६५.००

भाटी, नारायणसिंह तथा सौभाग्यसिंह शेखावत, संपा.
राजस्थानी व्याकरण; एक अध्ययन. जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान, १९७२. ४, ९३ पृ. ६.००

भील, फूलजी भाई (मीणां), संग्रा.
राजस्थानी भीलों की कहावतें. लोक-साहित्य विभाग, साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा संपादित. उदयपुर, साहित्य संस्थान, १९५४. ८, १८०, ९७ पृ.
भीली में.

मनोहर प्रभाकर तथा विजयशंकर मंत्री, संपा.
राजस्थान ज्ञान कोश. जयपुर, यूनिक ट्रेडर्स, १९७७. ५, २४७ पृ. २२.००

मैकालिस्टर, जी.
राजस्थानी व्याकरण. अनु. सत्यनारायण स्वामी तथा लक्ष्मी कमल. जयपुर, राजस्थान भाषा प्रचार सभा, १९७६. भा. १. २५.००

वेच्चुर, मैथ्यु, अनु.
हिंदी के तीन प्रारंभिक व्याकरण. इलाहावाद, संत पौलुस प्रकाशन, १९७६. १७६ पृ. २५.००

शर्मा, महावीरप्रसाद, १९४०-
मेवाती का उद्भव और विकास. कोटपूतली, लोक-भाषा प्रकाशन, १९७७. ८, २६४ पृ. ४०.००
शोध-प्रवंध—राजस्थान विश्व.

साकरिया, वदरीप्रसाद, १८९६- तथा भूपतिराम साकरिया.
राजस्थानी हिंदी शब्द कोश. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, १९७७. भा. १. ६५.००

सिंह, अवधेशकुमार.
वेगूसराय की वोली; भाषा-शास्त्रीय अध्ययन. वाराणसी, कालिंदी प्रकाशन, १९७६. भा. १. १२.००
शोध-प्रवंध—वनारस हिंदू विश्व.

विविध

अग्रवाल, कुसुम.
वीसवीं शताब्दी : दो दशक; पत्र पत्रिकाओं का साहित्यिक अवदान. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७६. ७, २०२ पृ. १६.००

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन).
अद्यतन. दिल्ली, सरस्वती विहार, १९७७. १६८ पृ. २०.००

अधिकारी, महावीर.
आदमी का गणित. दिल्ली, राजपाल एंड संस, १९७७. १८४ पृ. १२.००

अमृतराय.
आनंदकम् : हास्य-व्यंग्य ललित निवंध और कहानियां. इलाहावाद, हंस प्रकाशन, १९७७. २९६ पृ. २०.००

अमृता प्रीतम, १९१९-
सफ़रनामा. नई दिल्ली, सरस्वती विहार, १९७७. १४८ पृ. १०.००

अरोड़ा, ज्ञानवती.
हिंदी साहित्य में प्रहसन. नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, १९७७. २१६ पृ. ३५.००
शोध-प्रवन्ध—दिल्ली विश्वविद्यालय.

उत्साहराम.
श्री रामस्नेही मत दिग्दर्शन : श्री रामस्नेही संप्रदाय का शास्त्रीय एवम् ऐतिहासिक विवेचन. खेड़ापा, श्री सत्साहित्य प्रकाशन समिति, १९६२. ३१, ३२८ पृ. १०.००

गुलाबराय.
ठलुआ क्लब. संपा. प्रेमचंद. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७६. ९२ पृ. ६.००

गोविंदशरण शास्त्री तथा अन्य, संपा.
रसोपासना : एक तात्त्विक विवेचन. मथुरा, प्रदीप प्रकाशन, १९७७. ३१५ पृ. २५.००

गोस्वामी, प्रेमचंद्र.
पत्रकारिता के प्रतिमान. जयपुर, किशोर बुक डिपो, १९७७. २९६ पृ. २५.००

चतुर्वेदी, रामस्वरूप, १९३१-
हिंदी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियां; तीन व्याख्यान. आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, १९७३. २८ पृ. २.००

जैन, कुसुम, संपा.
नवलेखन : उभरते हस्ताक्षरों का प्रतिनिधि संकलन. नई दिल्ली, नेशनल फोरम ऑफ राइटर्स, १९७६. ८४ पृ. १०.००

झा, गंगाधर.
आधुनिक मनोविज्ञान और हिंदी साहित्य. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७७. ३१४ पृ. ४०.००

झा, शैलेंद्र मोहन तथा अन्य, संपा.
संकलन; निबंध संग्रह. पटना, मैथिली अकादमी, १९७७. ६, २२२ पृ. १०.५०
मैथिली में.

तिप्पेस्वामी, पुनीत.
समागम, कन्नड़ एवं हिंदी साहित्य की विविध प्रवृत्तियों का विश्लेषण. दिल्ली, कोणार्क प्रकाशन, १९७७. ९२ पृ. १२.००

तिवारी, रामचंद्र.
पत्रिका संपादन कला. दिल्ली, आलेख प्रकाशन, १९७७. ११९ पृ. १६.००

ठाकुर, कृष्ण कुमार तथा शिवशंकर झा 'कांत', संपा.
मैथिली ललित गद्य. भागलपुर, शब्दायन; वितरक : बुक फेयर. १९७३. ८३ पृ. ३.५०

देथा, विजयदान, १९२६-
साहित्य और समाज; शब्द, भाषा, लोकगीत, सौंदर्य-बोध, कविता और प्रेम आदि तथ्यों का ऐतिहासिक विवेचन. जोधपुर, राजस्थानी शोध संस्थान, १९६०. १९१ पृ.

परसाई, हरिशंकर.
मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें. दिल्ली, ज्ञानभारती, १९७७. १४३ पृ. १०.००

पांडेय, रत्नाकर तथा अन्य, संपा.
हिंदी पत्रकारिता. कलकत्ता, मणिमय प्रकाशन, १९७६. २९४ पृ. ३५.००

पाठक, शोभनाथ, १९३७-
संस्कृत एवं प्राकृत जैन साहित्य में महावीर कथा. जबलपुर, मदनमहल जनरल स्टोर्स, १९७७. १८४ पृ. ३०.००
शोध-प्रबंध—विक्रम विश्व.

पालीपाल, देवीलाल तथा अन्य, संपा.
राजस्थान विद्यापीठ साहित्य संस्थान, उदयपुर. उदयपुर, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, १९६९? २३, ३८ पृ.

भटनागर, सरला.
रिश्ता शिकायतों का. दिल्ली, अलंकार प्रकाशन, १९७७. ९२ पृ. ६.००

भटनागर, सुषमा, १९५१-
आधुनिक साहित्य; वेदना के नये आयाम. दिल्ली, पांडुलिपि प्रकाशन, १९७७. ११८ पृ. १५.००

भीमसेन निर्मल तथा अन्य.
केरल क्षेत्रीय हिंदी साहित्य का इतिहास. हैदराबाद, किरण साहित्य, १९७७. १९२ पृ. २५.००

मदान, इंद्रनाथ, १९१०-
समकालीन साहित्य, एक नई दृष्टि; आज के हिंदी लेखन की प्रमुख विधाओं और उल्लेखनीय रचनाओं पर एक नई स्वतंत्र दृष्टि. दिल्ली, लिपि प्रकाशन, १९७७. २४२ पृ. २५.००

मलिक मोहम्मद, संपा.
हिंदी साहित्य को हिंदीतर प्रदेशों की देन. दिल्ली राजपाल एंड संस, १९७७. ३०७ पृ. ३०.००

मानव, विश्वंभर.
हिंदी-साहित्य का सर्वेक्षण. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, १९७७. २९० पृ. १८.००

माहौर, भगवानदास, १९१०-
१८५७ के स्वाधीनता संग्राम का हिंदी साहित्य प[र] प्रभाव. अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स, १९७६. १२, २ ५४० पृ. ७०.७५
शोध-प्रबंध—आगरा विश्व.

मिश्र, कृष्ण विहारी, १९३६-
आलोक पंथा; साहित्यिक निबंध. नई दिल्ली, नेशन[ल] पब्लिशिंग हाउस, १९७७. १६, ८६ पृ. १२.५०

मिश्र, रामगोपाल, १९२८-
संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास. दिल्ली, विवेक प्रकाशन, १९७७. १६, २३५ पृ. ५०.००
शोध-प्रबंध—सागर विश्व.

मिश्र, विद्यानिवास, १९२६-
कंटीले तारों के आर-पार; व्यक्ति-व्यंजक निबंधों का संग्रह. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, १९७६. ११२ पृ. ९.००

वर्मा, मुकुट बिहारी, १९०४-
पत्रकारिता के अनुभव. लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, पत्रकारिता प्रभाग, १९७७. ११५ पृ. ६.००

वर्मा, सुरेंद्रनाथ तथा अन्य, संपा.
हिंदी स्मारिका; हिंदी संगोष्ठियों में (१) पढ़ी गई कविताएं (२) विवेचित शोध-पत्र तथा (३) हिंदी प्रचलन विषयक अनुदेश. शिमला, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, १९७६. ६, १२९ पृ.

व्यास, भोलाशंकर.
साहित्य का इतिहास-लेखन समस्या-समाधान. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी, १९७७. ९० पृ. ७.५०

शर्मा, राजेंद्र, संपा.
विविधा; राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की विविध रचनाओं का संकलन. जयपुर, चिन्मय प्रकाशन, १९७५. ११२ पृ. ५.१०

शर्मा, शिवस्वरूप 'अचल', १९२३-
राजस्थानी गद्य-साहित्य : उद्भव और विकास. बीकानेर, सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, १९६१. २३५, ३८ पृ.

संपूर्णानंद, १८९१-१९३९.
चरितचर्चा, जीवनदर्शन. वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा, १९७७. ३, १८३ पृ. १६.००

सारस्वत, रावत, संपा.
राजस्थानी और हिंदी; कुछ साहित्यिक संदर्भ. जयपुर, राजस्थान भाषा प्रचार सभा, १९७०? १०० पृ. ७.५०

साहित्य के मान और मूल्य; राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषदों में पठित श्रेष्ठ निबंधों का संकलन. उदयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी, १९६१. २३१ पृ.

सिंह, महेंद्रप्रताप.
रीतिकालीन हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक व्याख्या. नई दिल्ली, श्रीपाल प्रकाशन, १९७७. २६० पृ. २५.००

अनुक्रमणिका

ट

त

प

ल

ल

श

स

स

ह

प्रकाशक-सूची

[यहां पर उन प्रकाशकों के पते हैं, जिनकी पुस्तकें इस ग्रंथ में समाविष्ट की गई हैं]

अंजली प्रकाशन, उल्हासनगर

अंबिका पब्लिकेशन्स, एच २२ ग्रीनपार्क एक्सटेन्सन, नयी दिल्ली-११००१६

अ. भा. ब्रा. परिषद (बंग), ५० रामकृष्णपुर लेन, हवड़ा

अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., २/३६ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-११०००६

अक्षरपीठ प्रकाशन, ८४ बी मोहिलेनगर, इलाहाबाद-६

अखबार घर, गौहाटी

अखिल भारत सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी-१

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, १५३२ चंद्रावल रोड, सब्जी मंडी, दिल्ली-६

अखिल भारतीय परनामी परिषद, १०-ए/१२ शक्ति नगर, दिल्ली-७

अखिल भारतीय व्रज साहित्य मंडल, मथुरा

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, ४३ उत्तर वेनिया वाग, वाराणसी-२२१००१

अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस, छत्ता बाजार, मथुरा

अजब पुस्तकालय, कोल्हापुर-२

अजय पब्लिशर्स, ७/६३६३ देवनगर, नई दिल्ली-५

अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

अणिमा प्रकाशन, प्लाट नं.५, पुलिस स्मारक के पास, जयपुर-४

अनपूर्णा पब्लिकेशन्स, विशाखापटनम

अनादि प्रकाशन, ६०६, कटरा, इलाहाबाद-२

अनामिका प्रकाशन, पटना

अनाहूत प्रकाशन, नयी दिल्ली

अनिल प्रकाशन, दिल्ली

अनीता प्रकाशन, दिल्ली

अनु प्रकाशन, शिवाजी रोड, मेरठ सिटी-२५०००१

अनुपम पाकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७

अनुपम प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

अनुपम प्रकाशन, पटना कालेज के सामने, पटना

अनुपम प्रकाशन मंदिर, पटियाला

अनुपम प्रकाशन, ७/८ वोटावाला बिल्डिंग, होर्नीमान सर्किल, २ माला, फोर्ट, बंबई

अनुराग प्रकाशन, सुन्दर विलास, अजमेर

अनुराग प्रकाशन, ४१२ ए, हरीनगर, नई दिल्ली-११००२८

अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-१

अनुराधा प्रकाशन, मेरठ

अनुशीलन प्रकाशन, भागलपुर-८१२००१

अपाला प्रकाशन, १७/२८४ छिलीईंट रोड, आगरा-३

अपोलो प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

अभिनव प्रकाशन, वाराणसी

अभिनव भारती प्रकाशन, २ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

अभिलाषा प्रकाशन, १०७/२६५ ब्रह्मनगर, कानपुर-२०८०१२

अभिव्यक्ति प्रकाशन, ८४७ यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-२

अमित प्रकाशन, केवी ६७, कविनगर, गाजियाबाद-२०१००२

अरविंद प्रकाशन, २७ पानदरीबा, इलाहाबाद

अरुण प्रकाशन, गया



प्रकाशक-सूची

[यहां पर उन प्रकाशकों के पते हैं, जिनकी पुस्तकें इस ग्रंथ में समाविष्ट की गई हैं]

अंजली प्रकाशन, उल्हासनगर
अंबिका पब्लिकेशन्स, एच २२ ग्रीनपार्क एक्सटेन्सन, नयी दिल्ली-११००१६
अ. भा. ग्रा. परिषद (बंग), ५० रामकृष्णपुर लेन, हवड़ा
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., २/३६ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-११०००६
अक्षरपीठ प्रकाशन, ८४ बी मोहिलेनगर, इलाहाबाद-६
अखबार घर, गौहाटी
अखिल भारत सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी-१
अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, १५३२ चंद्रावल रोड, सब्जी मंडी, दिल्ली-६
अखिल भारतीय परनामी परिषद, १०-ए/१२ शक्ति नगर, दिल्ली-७
अखिल भारतीय व्रज साहित्य मंडल, मथुरा
अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, ४३ उत्तर बेनिया बाग, वाराणसी-२२१००१
अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस, छत्ता बाजार, मथुरा
अजब पुस्तकालय, कोल्हापुर-२
अजय पब्लिशर्स, ७/६३६३ देवनगर, नई दिल्ली-५
अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
अणिमा प्रकाशन, प्लाट नं.५, पुलिस स्मारक के पास, जयपुर-४
अनपूर्णा पब्लिकेशन्स, विशाखापटनम
अनादि प्रकाशन, ६०६, कटरा, इलाहाबाद-२
अनामिका प्रकाशन, पटना
अनाहूत प्रकाशन, नयी दिल्ली
अनिल प्रकाशन, दिल्ली
अनीता प्रकाशन, दिल्ली
अनु प्रकाशन, शिवाजी रोड, मेरठ सिटी-२५०००१
अनुपम पाकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-११०००७
अनुपम प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
अनुपम प्रकाशन, पटना कालेज के सामने, पटना
अनुपम प्रकाशन मंदिर, पटियाला
अनुपम प्रकाशन, ७/८ वोटावाला बिल्डिंग, होर्नीमान सर्किल, २ माला, फोर्ट, बंबई
अनुराग प्रकाशन, सुन्दर विलास, अजमेर
अनुराग प्रकाशन, ४१२ ए, हरीनगर, नई दिल्ली-११००२८
अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी-१
अनुराधा प्रकाशन, मेरठ
अनुशीलन प्रकाशन, भागलपुर-८१२००१
अपाला प्रकाशन, १७/२८४ छिलीईंट रोड, आगरा-३
अपोलो प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
अभिनव प्रकाशन, २१-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली ११०००२
अभिनव प्रकाशन, वाराणसी
अभिनव भारती प्रकाशन, २ सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-
अभिलाषा प्रकाशन, १०७/२६५ ब्रह्मनगर, कानपु २०८०१२
अभिव्यक्ति प्रकाशन, ८४७ यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-
अमित प्रकाशन, केबी ६७, कविनगर, गाज़ियाब० २०१००२
अरविंद प्रकाशन, २७ पानदरीबा, इलाहाबाद
अरुण प्रकाशन, गया

अरुणोदय प्रकाशन, शाहाबाद
अर्चना प्रकाशन, १ मेहरा हाउस, कालाबाग, अजमेर
अर्चना प्रकाशन, ६६७ तिराहा बैरम खाँ, दरियागंज, दिल्ली-६
अलंकार प्रकाशन, ६६६ झील, दिल्ली-५१
अलका प्रकाशन, ५६/५१ ए, बिरहाना रोड, कानपुर-१
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६
अशोक प्रकाशन, १६ कालियन टोला स्ट्रीट, चौक, लखनऊ-३
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गौहाटी, आसाम
अस्तेय प्रकाशन, ११६ धरमपेठ एक्सटेन्शन, नागपुर-१
आं. प्र. आदान-प्रदान पुस्तकमाला, हैदराबाद
आंध्र प्रदेश हिंदी प्रकाशन मंदिर, सुलतान बाजार, हैदराबाद
आंध्र राष्ट्र हिंदी प्रचार संघ, विजयवाड़ा-२
आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्तेर
आखर प्रकाशन, १४७ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता
आगरा विश्वविद्यालय (हिंदी विद्यापीठ प्रकाशन), आगरा
आचार्य शुक्ल साधना सदन, कानपुर
आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६; जालंधर; चंडीगढ़; जयपुर; लखनऊ
आदर्श साहित्य प्रकाशन, १२६/६ वैस्ट सीलमपुर, दिल्ली-३१
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्था, छिंदवाड़ा, म. प्र.
आनंद प्रकाशन, दीवानी मिसिल, फैजाबाद (उ. प्र.)
आर्य बुक डिपो, ३० नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-५
आलेख प्रकाशन, बी-८ नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२
आलोक प्रकाशन, पटना
आलोक प्रकाशन, भिवानी, हरियाणा
आशा प्रकाशन गृह, करोल बाग, नई दिल्ली-५
आस्था प्रकाशन, आनंद, जि. खेरा.
इंडियन प्रेस. प्रा. लि., इलाहाबाद
इंडोलॉजिकल बुक हाउस, सी. के. ३१/१० नेपालीखपड़ा, पोस्ट बॉक्स ९८, वाराणसी
इंदु प्रकाशन, ८/३ रूपनगर, दिल्ली-७
इंदौर विश्वविद्यालय, इंदौर
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के-७१, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५
उड़ीसा सीमेंट लि., सुंदरगढ़ (उड़ीसा)
उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ
उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, पत्रकारिता प्रभाग, लखन
उदयपुर विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग), उदयपुर
उदयाचल, आर्यकुमार रोड, पटना-४
उपमा प्रकाशन, बापू बाजार, उदयपुर
उपलब्धि प्रकाशन, के-८/२७ कृष्णनगर, दिल्ली-५१
उमा ऐंटरप्राईज़िज़, थुरावूर
उमेश पुस्तक प्रकाशन, १६१ आलोक नगर, उदयपुर(
उमेश प्रकाशन, ५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-
उर्जा प्रकाशन, इलाहाबाद
ऊषा पब्लिशिंग हाउस, नीम स्ट्रीट, वीर मोहल्ला, जो ३४२००१
ऋषभचरण जैन एवं सन्तति, २१ दरियागंज, नई f ११०००२
एन. डी. सहगल एन्ड संस, दरीबा कला, दिल्ली-६
एम. व्ही. फडके एंड कंपनी, महाद्वार पथ, कोल ४१६००२
एल. एस. रस्तोगी एंड संस, बिजनौर
एशिया बुक कंपनी, ६ यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबा
एस. ई. एस. प्रकाशन, २१५३/२ चाह इन्दारा, फ दिल्ली-११०००६
एस. चंद एंड कंपनी प्रा. लि., रामनगर, नई f ११००५५
एस. पी. आर. सहारिया एजुकेशन सोसायटी, काला जयपुर
ओरिएंट लांगमैन लि., १/२४ आसफ अली रोड, नई दि
ओरियण्टल पब्लिशिंग हाउस, ४०/७४ परेड, कानपुर

क

कंट्रोलर आफ पब्लिकेशंस, दिल्ली
क. मु. हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, आगरा
कबीर मठ, चपरा

कबीर हनुमत पुस्तकालय, वाराणसी
कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी
कमल प्रकाशन, ५४, प्रिन्स यशवन्त रोड, इन्दौर (म. प्र.)
कमला प्रकाशन, ७/१०९ स्वरूप नगर, कानपुर
करमरकर सत्कार समिति, पूना
करुण-प्रकाशन, सुलतानपुर
कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा, धारवाड़
कर्मधारा प्रकाशन, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-१६
कर्मवीर प्रकाशन; २२ अंबिका हैसिंग सोसायटी, सेनापति बापत पथ, पूना-१६
कलकत्ता विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग), कलकत्ता-१२
कलम घर प्रकाशन, जोधपुर
कला-परिषद, टीकमगढ़
कला मंदिर, नई सड़क, दिल्ली-६
कलानिधि प्रकाशन, देवरिया
कलाभारती नाट्य संघ, कुरसेंग
कलाकार प्रकाशन, ५२ बादशाह नगर, लखनऊ-७
कल्पना-तीर्थ, दलसिंह सराय, जिला दरभंगा
कल्पना प्रकाशन, कृष्णकुंज, बीकानेर
कल्पना प्रकाशन, ७, कावेरी बाजार, मेरठ कैंट-२५०००१
कल्याणदास एंड ब्रदर्स, ज्ञानवापी, वाराणसी-१
कल्याणी प्रकाशन, दिल्ली
कविता प्रकाशन, आर्यनगर, अलवर
कात्यायन प्रकाशन, एफ/४, अध्यापक कुटीर, प्रताप गंज, बड़ौदा
कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, बहादुर चौक, होशियारपुर
कादंबरी प्रकाशन, हरिपुर
कामता-वाद-विवाद-प्रतियोगिता समिति, देव, अनुमंडल-औरंगाबाद, जिला गया
कालिंदी प्रकाशन, वाराणसी
काशी विद्यापीठ, वाराणसी-२
काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन (हिंदी विभाग), वाराणसी-५
काशी हिंदू विश्वविद्यालय मानस चतुश्शती समारोह समिति, वाराणसी
किताब घर, हाई कोर्ट रोड, ग्वालियर-१ (म. प्र.)
किताब घर, मेन बाजार, गांधीनगर, दिल्ली-११००३१
किताब महल प्रा. लि., ५६ ए जीरो रोड, इलाहाबाद
किरण साहित्य, हैदराबाद
किशलय मंच, इलाहाबाद
किशोर बुक डिपो जयपुर
कीर्तिमान प्रकाशन, छठा महला, १४२ बालचंद हीराचंद मार्ग, बंबई-१
कुटीर प्रकाशन, एफ, १३/२, माडल टाउन, दिल्ली-११०००९
कुमाउंनी समिति, इलाहाबाद
कुमार प्रकाशन, २०/३० मोतीनगर, नई दिल्ली-११००१५
कुमार ब्रदर्स, हौज खास, नई दिल्ली १६
कुमार सन्ज, दी माल, सोलन (हि. प्र.)
कुमुद प्रकाशन, महमदपुर (रमना), मुजफ्फरपुर
कृति केंद्र प्रकाशन, ४०६ कृष्णनगर, त्रिवेणी रोड इलाहाबाद-२११००३
कृष्णा ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर
केंद्रीय हिंदी निदेशालय, पश्चिम ब्लाक-७, रामकृष्णापुरम नई दिल्ली-२२
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा-२८२००३
के. लाल एंड कंपनी, ९ कनाट सरकस, जलंधर
के. वी. पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
केरल विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग), कोचिन
केरल हिंदी साहित्य मंडल प्रकाशन, कोचिन-१६
कैथोलिक प्रेस, रांची
कैलाश पुस्तक सदन, पाटनकर बाजार, ग्वालियर; हमीदिया मार्ग, भोपाल-४६२००१
कोंडापल्ली वीरवेंकाटय एंड संस, राजमहेंद्रवरमु
कोचिन विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग), कोचिन-६८२०
कोणार्क प्रकाशन, १२/७१४० मंडेलिया मार्ग, क नगर, दिल्ली-७
कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद,
कौशिक साहित्य सदन, पाठक निवास, भोलानाथ शाहदरा, दिल्ली-११००३२
क्वालिटि पब्लिशर्स, धारवाड़
गंगा ग्रंथागार, आबिद रोड, हैदराबाद
गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली

गाडोदिया पुस्तक भंडार, फड बाजार, बीकानेर(राज.)
गिरधर प्रकाशन, जोधपुर
गीता प्रकाशन, कोचीन-२५
गीतांजली पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
गुप्ता प्रकाशन, ४८, रैहगड़पुरा, करौल बाग, नई दिल्ली-५
गुरुनानक युनिवर्सिटी (प्रकाशन विभाग), अमृतसर
गुर्जर-भारती, दुधिया बिल्डिग, गांधी रोड, अहमदाबाद-१
गोयल प्रकाशन, दिल्ली
गौरव प्रकाशन, दिल्ली
ग्रंथ निकेतन, ८७/२४ राजेंद्रनगर, पटना-८०००१६
ग्रंथम, १०४ ए/२१५, रामबाग, कानपुर
ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा, बिहार

च

चंद्रादित्य प्रकाशन, चौबेजी का कटरा, किनारी बाजार, आगरा-३
चतुर्वेदी प्रकाशन समिति, कमतरी, आगरा
चारुशील मधुकर पड़के, रसायनी (कोलाबा)
चित्रगुप्त प्रकाशन, पुरानी मंडी, अजमेर
चित्रलेखा प्रकाशन, १७४ सोहबतिया बाग, इलाहाबाद-६
चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर
चिल्ड्रन बुक सोसायटी, महरौली, नई दिल्ली-३०
चेतना प्रकाशन, नयी दिल्ली
चेतना प्रकाशन, नागपुर
चेतना समिति, विद्यापति भवन, पटना-१
चैतन्य प्रकाशन मंदिर, मदन गोपाल कुलश्रेष्ठ का हाता, कृष्णनगर(दर्शन पुरवा), कानपुर
चौखंबा ओरियन्टालिया, गोकुल भवन, के ३७/१०९, गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी-२२१००१
चौखंबा विद्या भवन, गोपाल मंदिर मार्ग, वाराणसी-१
चौखंबा विश्वभारती, चौक, वाराणसी-२२१००१
चौखंबा संस्कृत सीरिज आफिस, गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी-१
जन चेतना प्रकाशन, ३८९ जी. टी. रोड, हवड़ा-९
जनता ग्रंथालय, कल्याणी, मुजफ्फरपुर
जनता प्रेस, कलकत्ता

जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, टी-६, रोड-ए, टेल्को कालोनी, जमशेदपुर-८३१००४
जयध्वज प्रकाशन समिति, जोधपुर
जयपुर पुस्तक सदन, चौड़ा रास्ता, जयपुर
जयभारत प्रकाशन, ६५ कल्याण भवन, तिलकमार्ग, अहमदाबाद
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२८१००२
जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली
जीवन ज्योति प्रकाशन, ३०१२, वल्लीमारान, दिल्ली-११०००६
जे. एंड. के. अकैडमी आफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज, जम्मू
जैन. अ. क्षेत्र श्री महावीरजी, महावीर भवन, जयपुर
जैन ब्रदर्स, ४७, बापू बाजार, उदयपुर
ज्ञान प्रकाश मंदिर, माछरा (मेरठ)
ज्ञान प्रकाशन, पटना
ज्ञान भारती प्रकाशन, ४/१४ रूपनगर, दिल्ली-७
ज्ञानदीप प्रकाशन, गांधी चौक, गुड़गांव
ज्ञानपीठ प्रा. लि., खजांची रोड, पटना-४
ज्ञानमंडल लि., वाराणसी
ज्ञानलोक, इलाहाबाद
ज्ञानोदय प्रकाशन, रजतलव, रायपुर, म. प्र.
ज्योति प्रकाशन, पनिचोभ, लहेरियासराय, दरभंगा
ज्योत्सना प्रकाशन, ११६७ कल्याणी देवी, इलाहाबाद-३

ड

डाबर(डा. एस. के वर्मन), कलकत्ता
ठाकुरप्रसाद एंड संस, राजादरवाजा एवं कचौड़ी गल वाराणसी

त

तक्षशिला प्रकाशन, २३/४७६२ अन्सारी रोड, नई दिल्ल ११०००२
तरंगिनी प्रकाशन, इलाहाबाद

तारा पब्लिकेसन्स, कमच्छा, वाराणसी.
तुलसी प्रकाशन, १७५ छोटा चांदगंज, लखनऊ-७
तुलसी शोध संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
तेज प्रकाशन, २३/४७६२ अंसारी रोड, दिल्ली-११०००२
थामसन प्रेस (इन्डिया) लि. (प्रकाशन विभाग), १९ नेताजी सुभाप मार्ग, दिल्ली-६
दक्षिण प्रकाशन, २१-७-६२ गांधी बाजार, हैदराबाद-२
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्यागरायनगर, मद्रास-१७
दक्षिणांचलीय साहित्य समिति, १-१-४०५/७/१ गांधीनगर, हैदराबाद-५००३८०
दरभंगा प्रेस कंपनी, दरभंगा
दादू महाविद्यालय व छात्रावास, मोती डूंगरी रोड, जयपुर
दिल्ली पुस्तक सदन, १५ यू. बी. बंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७
दिल्ली पुस्तक सदन, पटना
दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, २०, कम्युनिकेशन बिल्डिंग, नई दिल्ली-१
दिल्ली बुक कंपनी, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१
दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, २० कम्युनिकेशन बिल्डिंग, नई किल्ली-१
दीप प्रकाशन, ४०२१/२, अम्बाला शहर
दीपक प्रकाशन, वाराणसी
दुर्गा प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा-३
देवनागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर
देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बडशाहबुला, दिल्ली-११०००६
द्विवेदी-स्मारक-संघ, रायबरेली
धर्मविज्ञान पीठ, १७७ टैगोर नगर, इलाहाबाद-२
नंदन प्रकाशन, रानी कटरा, लखनऊ-३
ननहीन पुस्तकें, कानपुर
नमिता प्रकाशन, ६, आनंद नगर टाउन हॉल, औरंगाबाद-४३१००१
नयी कविता प्रकाशन, १८१-ए/१, नागवासुकी, इलाहाबाद-६
नरेश पब्लिशिंग हाउस, अंबाला शहर
नव-चिंतन प्रकाशन, १६६ न्यू जवाहर नगर, जालंधर
नवजीवन ट्रस्ट, पो. नवजीवन, अहमदाबाद-३८००१४
नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई-७
नवभारत प्रकाशन, ८ गंगाराम बिल्डिंग, अजमलखां रोड, नई दिल्ली
नवभारती सहकार प्रकाशन प्रतिष्ठान, (सी) ए ८/४२, राणा प्रताप बाग, दिल्ली
नवयुग ग्रंथागार, सी-७४७, महानगर, लखनऊ
नवरत्न गोष्ठी, मिश्र टोला, दरभंगा
नागपूर विद्यापीठ प्रकाशन, नागपूर
नागरी प्रकाशन प्रा. लि., पटना-४
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
नागालैंड भापा परिपद, कोहिमा
नाहटा प्रकाशन, कालू, जिला बीकानेर
निर्मल कीर्ति प्रकाशन, नयी दिल्ली
निर्मल प्रकाशन संस्थान, डी-१६३ बापूनगर, जयपुर-४
नीरज अभिनंदन स्मारिका, बिजनौर
नीलम प्रकाशन, ५, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद-७
नूतन पुस्तक भवन, दरभंगा
नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल आफ इंडिया, लखनऊ
नेशनल डीफेंस अकादमी, पूना
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, २३ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
नेशनल फोरम आफ राइटर्स, नई दिल्ली
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए/५ ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-११००१६
नैवेद्य-निकेतन, रवींद्रपुरी, वाराणसी-५
न्यू बुक कंपनी, जालंधर
न्यू रत्नाश्रम प्रकाशन, रत्नाश्रम भवन, लोहामंडी आगरा-२
न्यू लिटरेचर, ६१६-कूचा पातीराम, दिल्ली-११०००६

प

पंकज प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर
पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर
पंजाब विश्वविद्यालय (प्रकाशन विभाग), चंडीगढ़-१६००१४
पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

गाडोदिया पुस्तक भंडार, फेड बाजार, बीकानेर (राज.)
गिरधर प्रकाशन, जोधपुर
गीता प्रकाशन, कोचीन-२५
गीतांजली पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
गुप्ता प्रकाशन, ४८, रैहगड़पुरा, करौल बाग, नई दिल्ली-५
गुरुनानक युनिवर्सिटी (प्रकाशन विभाग), अमृतसर
गुर्जर-भारती, दुधिया बिल्डिंग, गांधी रोड, अहमदाबाद-१
गोयल प्रकाशन, दिल्ली
गौरव प्रकाशन, दिल्ली
ग्रंथ निकेतन, ८७/२४ राजेंद्रनगर, पटना-८०००१६
ग्रंथम, १०४ ए/२१५, रामबाग, कानपुर
ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा, बिहार

च

चंद्रादित्य प्रकाशन, चौबेजी का कटरा, किनारी बाजार, आगरा-३
चतुर्वेदी प्रकाशन समिति, कमतरी, आगरा
चारुशील मधुकर पड़के, रसायनी (कोलाबा)
चित्रगुप्त प्रकाशन, पुरानी मंडी, अजमेर
चित्रलेखा प्रकाशन, १७४ सोहबतिया बाग, इलाहाबाद-६
चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर
चिल्ड्रन बुक सोसायटी, महरौली, नई दिल्ली-३०
चेतना प्रकाशन, नयी दिल्ली
चेतना प्रकाशन, नागपुर
चेतना समिति, विद्यापति भवन, पटना-१
चैतन्य प्रकाशन मंदिर, मदन गोपाल कुलश्रेष्ठ का हाता, कृष्णनगर (दर्शन पुरवा), कानपुर
चौखंबा ओरियन्टालिया, गोकुल भवन, के ३७/१०९, गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी-२२१००१
चौखंबा विद्या भवन, गोपाल मंदिर मार्ग, वाराणसी-१
चौखंबा विश्वभारती, चौक, वाराणसी-२२१००१
चौखंबा संस्कृत सीरिज़ आफिस, गोपाल मंदिर लेन, वाराणसी-१
जन चेतना प्रकाशन, ३८९ जी. टी. रोड, हवड़ा-६
जनता ग्रंथालय, कल्याणी, मुजफ्फरपुर
जनता प्रेस, कलकत्ता
जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपुर
जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद, टी-६, रोड-ए, टेल्को कालोनी, जमशेदपुर-८३१००४
जयध्वज प्रकाशन समिति, जोधपुर
जयपुर पुस्तक सदन, चौड़ा रास्ता, जयपुर
जयभारत प्रकाशन, ६५ कल्याण भवन, तिलकमार्ग, अहमदाबाद
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा-२८१००२
जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली
जीवन ज्योति प्रकाशन, ३०१२, बल्लीमारान, दिल्ली-११०००६
जे. एंड. के. अकैडमी आफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, जम्मू
जैन. अ. क्षेत्र श्री महावीरजी, महावीर भवन, जयपुर
जैन ब्रदर्स, ४७, बापू बाजार, उदयपुर
ज्ञान प्रकाश मंदिर, माछरा (मेरठ)
ज्ञान प्रकाशन, पटना
ज्ञान भारती प्रकाशन, ४/१४ रूपनगर, दिल्ली-७
ज्ञानदीप प्रकाशन, गांधी चौक, गुड़गांव
ज्ञानपीठ प्रा. लि., खचांची रोड, पटना-४
ज्ञानमंडल लि., वाराणसी
ज्ञानलोक, इलाहाबाद
ज्ञानोदय प्रकाशन, रजतलब, रायपुर, म. प्र.
ज्योति प्रकाशन, पनिचौभ, लहेरियासराय, दरभंगा
ज्योत्सना प्रकाशन, ११६७ कल्याणी देवी, इलाहाबाद-३

ट

डाबर (डा. एस. के वर्मन), कलकत्ता
ठाकुरप्रसाद एंड संस, राजादरवाजा एवं कचौड़ी गल वाराणसी

त

तक्षशिला प्रकाशन, २३/४७६२ अन्सारी रोड, नई द. ११०००२
तरंगिनी प्रकाशन, इलाहाबाद

पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२००४
पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र अभिनंदन ग्रंथ संयोजन-समिति, दिल्ली
पं. मोहनवल्लभ पंत स्मारक समिति, दिल्ली
पं. रामकर्ण आसोपा राजस्थान-विद्या शोध संस्थान, जयपुर
पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र अभिनंदन समिति, ए-३/१२, त्रिलोचन, वाराणसी
पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी सारस्वत समारोह समिति, प्रयाग
पक्षधार प्रकाशन, दिल्ली
पदम बुक कंपनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर
पदमभूषण श्री सीताराम सेकरिया अभिनंदन समिति, कलकत्ता
पद्माकर अनुसंधान शाला, सुषमा निकुंज, बेगमपुरा, औरंगाबाद-४३१००२ (महाराष्ट्र)
पराग-संस्था, जानकी महाविद्यालय, दिल्ली
परिचय ट्रस्ट, बंबई
परिमल प्रकाशन, ७४३ मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद-२११००२
पर्वतीय नवजीवन मंडल, सिल्यारा, टिहरी-गढ़वाल
पांडुलिपि प्रकाशन, ई-११/५ कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१
पाप्युलर प्रकाशन, ३५ सी, तारदेव रोड, बंबई-४०००३४
पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना-१
पीताम्बर बुक डिपो, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५
पीपा प्रकाशन गृह, बीकानेर
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., रानी झांसी रोड, नई दिल्ली
पुणे विद्यापीठ, गणेश खिंड, पुणे-४११००७
पुष्पा उपाध्याय, बंबई
पुस्तक केंद्र, ७२ हजरत गंज, लखनऊ
पुस्तक निकेतन, बस स्टैंड, रेवा, म. प्र.
पुस्तक प्रचार, ७१३/१२, ए/१ ए, प्रेम गली, गांधी नगर, दिल्ली-३१
पुस्तक भंडार, लहेरियासराय
पुस्तक संस्थान, १०६/५० ए नेहरू नगर, कानपुर-१२
स्पुतक सदन, गोला, आरा (बिहार)
पुस्तक सदन, दिल्ली
पूना यूनिवर्सिटी, गनेश खिड, पूना-७
पूर्णिमा प्रकाशन, मकराना मोहल्ला, जोधपुर-३४२००१
पूर्वांचल प्रकाशन, २३९ चक, इलाहाबाद-२११००३
पूर्वोदय प्रकाशन, ७/८ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
पृथ्वीराज पब्लिशर, ६६ बाबर रोड, नई दिल्ली-१
प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली (उ. प्र.)
प्रकाशन केंद्र, न्यू बिल्डिंग, अमीनाबाद, लखनऊ
प्रकाशन प्रतिष्ठान, सी-११ श्याम एंक्लेव, साहिबाबाद-२०१००५ (मेरठ)
प्रकाशनालय, महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर
प्रगति प्रकाशन, बेतुल बिल्डिंग, आगरा-३
प्रगतिशील प्रकाशन, भगवान पुस्तकालय, भागलपुर
प्रज्ञा प्रकाशन, कानपुर
प्रज्ञा प्रकाशन, जयपुर
प्रणामी प्रकाशन, १६१ अतरसुइया, इलाहाबाद-२११००३
प्रतिभा प्रकाशन, ५११ के. एल. कीडगंज, इलाहाबाद-३
प्रतिभा प्रकाशन, १०६५ गांधी गली, तिलक बाजार, दिल्ली-११०००६
प्रतिभा प्रकाशन, व्यास भवन, नाहरगढ़ रोड, जयपुर
प्रतिभा प्रकाशन, होशिआरपुर
प्रत्यूष प्रकाशन, रामबाग, कानपुर
प्रदीप प्रकाशन, धान मंडी का चौक, अजमेर
प्रदीप प्रकाशन, मथुरा
प्रबुद्ध प्रकाशन, १६४/II अर्जुन नगर, पटियाला (पंजाब)
प्रभात प्रकाशन, रफात गंज, अलीगढ़
प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६
प्रमोद ट्रेडिंग कारपोरेशन, बुलानाला, वाराणसी
प्रमोद पुस्तक माला, ११ यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
प्रवीण प्रकाशन, १/१०७३ डी महरौली, पोस्ट आफिस पीछे, नई दिल्ली-११००३०
प्रवेश प्रकाशन, बक्शी सदन, रावो माजरा, पटियाला
प्रसाद बुक ट्रस्ट, शेरी वाली कोठी, घटिया पिप्ली, आगरा-३
प्राकृत, जैनशास्त्र और अहिंसा शोध-संस्थान, वैश., मुजफ्फरपुर
प्राची प्रकाशन, नयी दिल्ली

भारतीय भाषा परिषद, दिल्ली
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु
भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी
भारतीय लोककथा मंडल (प्रकाशन विभाग), उदयपुर
भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर (राजस्थान)
भारतीय विद्या संस्थान, ३३१ अग्रवाल विद्यालय मार्ग, मोती नगर, लखनऊ-४
भारतीय विश्व प्रकाशन, कचौड़ी गली, वाराणसी-१
भारतीय शोध प्रकाशनालय, ३६ रेजीडेन्सी रोड, उदयपुर (राजस्थान)
भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति; प्राप्तिस्थान : राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन, पत्र मंजूषा २०७, डॉ० रघुवीर नगर, लखनऊ-४
भारतीय साहित्य प्रकाशन, २०४ ए, सदर, मेरठ
भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद-२
भार्गव प्रकाशन, माडल हाउस, लखनऊ
भार्गव बुक डिपो, चौक, वाराणसी
भावना प्रकाशन, ई-१९. जवाहर पार्क, लक्ष्मीनगर, नई दिल्ली-५१
भाषा एंव सांस्कृतिक प्रकरण विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला
भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला
भाषाविज्ञान विभाग, पंजाब, पटियाला
भेटवाक पता पंचायत प्रेस, लहेरियासराय
भैया लाल एंड संस, रेवा, म. प्र.
मंगल प्रकाशन, गोविंद राजियों का रास्ता, जयपुर-१
मणिमय प्रकाशन, ४६२ बी, रवींद्र सरणी, कलकत्ता
मदनमहल जनरल स्टोर्स, राइट टाउल, जबलपुर-२ (म. प्र.)
मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, ९७ मालवीय नगर, भोपाल-४६२००३
मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन, ग्वालियर
मनीषा प्रकाशन, छावनी, नीम का थाना, राजस्थान
मनीषा प्रकाशन, वाराणसी
मनीषी प्रकाशन, मेरठ
मयूर प्रकाशन, झांसी
मरु-जांगल शोध-संस्थान, फेफाणा
मलिक एंड कंपनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर
महात्मा गांधी मेमोरियल रिसर्च सेंटर, बंबई
महानदी प्रकाशन, सती बाजार, रायपुर
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय (कला संकाय), बड़ौदा-१
महाराष्ट्र ग्रंथ भंडार, महाद्वार रास्ता, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, राष्ट्रभाषा भवन, नारायण पेठ, पुणे-३०
महेश प्रकाशन, बर्मा रोड, मदनपल्ली, चितूर जिला, आं. प्र.
माडर्न बुक डिपो, बाल विहार, हमीदिया रोड, भोपाल
मानकचंद बुक डिपो, सत्तीदरवाजा, उज्जैन
मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह समिति, श्री प्रयागनारायण मंदिर, कानपुर
मानस चतुश्शताब्दी समिति, सतना
मानस चतुश्शती आयोजन समिति, संभल, उ. प्र.
मानस तरंग, कानपुर
मानस संघ, पो० रामवन, सतना (म. प्र.)
माया प्रकाशन, ३२५/४ सोंधी टोला, चौक, लखनऊ-३
मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय
मिश्रा ब्रदर्स, पुरानी मंडी, अजमेर
मीनाक्षी प्रकाशन, अजमेर
मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ; ४ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-२
मुंशीराम मनोहरलाल, नई सड़क, नई दिल्ली-१
मुदित प्रकाशन, कैथल
मूमल प्रकाशन, साहित्य साधना सदन, केलापाड़ा, जैसलमेर
मेरठ विश्वविद्यालय संस्कृत अध्यापक परिषद, मेरठ
मेहरचंद लछमनदास, दिल्ली
मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि., २/१० अंसारी रोड, नई दिल्ली-११०००२
मैथिली अकादमी, पटना
मथिली प्रकाशन समिति, कलकत्ता

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना-१
मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
मोतीलाल बनारसीदास, बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७; चौक, वाराणसी-२२१००१; अशोक राजपथ, पटना-८००००४

य

युगवाणी प्रकाशन, पी रोड, कानपुर-१२
युनीवर्सल पब्लिकेशन्स, कोल्हापुर
यूनाइटिड बुक हाउस, ४८७२ चांदनी चौक, दिल्ली-११०००६
यूनाइटेड पब्लिशर्स, कटरा रोड, इलाहाबाद-२
यूनिक ट्रेडर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

र

रंजन पब्लिशर्स, बी-४०, शिव सोसाइटी, थाना ईस्ट, बंबई
रंजन प्रकाशन, प्रसाद पारिजात, सिटी स्टेशन मार्ग, आगरा-२८२००३
रचना प्रकाशन, ५ खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद-१
रतन एंड कंपनी, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६
रवि प्रकाशन, बाग मुजफ्फरखाँ, आगरा-२
रवींद्र प्रकाशन, पाटनकर बाजार, ग्वालियर
रश्मि प्रकाशन, जम्मू
रसिक प्रकाशन, नासिक
राका प्रकाशन, ४०-ए, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद-२
राज पब्लिशर्स, अड्डा होसियारपुर, जालंधर
राज बुक डिपो, बरेली
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., ८ नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२; साइंस कालेज के सामने, पटना-८००००६
राजकीय मुद्राणालय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६
राजभाषा सम्मेलन (स्वागत-समिति), नई दिल्ली
राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इन्स्टट्यूट, जोधपुर
राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
राजस्थान भाषा प्रचार सभा, डी-२८२, मीरां मार्ग, बर्न पार्क, जयपुर-६
राजस्थान विद्यापीठ हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान, केशर भवन माला रोड, कोटा-२ (राज.)
राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर
राजस्थान संस्कृत-संसद, जयपुर
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम), उदयपुर
राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, ए २६/२ विद्यालय मार्ग तिलक नगर, जयपुर-३०२००४
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
राजीव प्रकाशन, १७३ अलोपीबाग, इलाहाबाद-२११००६
राजेंद्र पुस्तक भंडार, सहसराम
राजेश प्रकाशन, डी ४/२० कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१
राज्य भाषा संस्थान, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश शिमला
राज्यश्री प्रकाशन, दलपत स्ट्रीट, मथुरा
राधाकृष्ण प्रकाशन, २ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
राधावल्लभ ग्रंथमाला, मथुरा
राधास्वामी सतसंग, स्वामी बाग, आगरा
राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली
रामअवतार अरुणकुमार, नई दिल्ली
रामचरितमानस-चतु.शती राष्ट्रीय समिति, १-ए, सुनहरी बाग रोड, नई दिल्ली
रामचरितमानस चतुर्शताब्दी समारोह समिति, मध्यप्रदेश, भोपाल
रामचरितमानस प्रचार समिति, बरेली
रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद-२११००२
रामनारायणलाल बेनीमाधव, २ कटरा रोड, इलाहाबाद-२
रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा-२८२००३
रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा)
रामस्नेही साहित्य शोध संस्थान, ६०० राम द्वारा कूचा पातीराम, दिल्ली-११०००६

रामा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर
रामा प्रकाशन, नजीराबाद, लखनऊ
राष्ट्रधर्म पुस्तक प्रकाशन, पत्र मंजुषा २०७, डा. रघुवीर नगर, लखनऊ-४
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदी नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)
राष्ट्रीय साहित्य सदन, ३६ गौतमबुद्ध मार्ग, लखनऊ
रिसर्च पब्लिकेशंस इन सोशल साइंसिस, २/४४ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली
रीगल बुक डिपो, अमीरचंद मार्ग (नई सड़क), दिल्ली-११०००६
रूपायन संस्थान, बोरूंदा-३४२६०४
रेखा प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
रोशनलाल जैन एंड संस, बोरडी का रास्ता, जयपुर; अलवर

ल

लक्ष्मी पुस्तक भंडार, सोजती गेट, जोधपुर
लक्ष्मी प्रकाशन माला, बांदा
लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड, आगरा
लखनऊ पब्लिशिंग हाउस, ३७ कैन्टूनमेंट रोड, लखनऊ
लखनऊ विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, लखनऊ
ललित प्रकाशन, लैहड़ी सरेल
ललितकला, संस्कृति वा साहित्य अकादमी, जम्मू-कश्मीर, जम्मू-तवी
लायल बुक डिपो, बेगम पुल, मेरठ
लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद
लिटिल थियेटर ग्रुप, नई दिल्ली
लिपि प्रकाशन, ई-१०/४ कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१
लीडर प्रेस, इलाहाबाद
लीलाकमल प्रकाशन, डी-१४१ साकेत, मेरठ
लोक चेतना प्रकाशन, १८४, शहीद-स्मारक-पथ, जबलपुर
लोक संपर्क प्रकाशन, १६५ गांधी नगर, जयपुर-४
लोकभारती प्रकाशन, १५-ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद
लोकभाषा प्रकाशन, कोटपूतली
लोकवाणी प्रकाशन, डी-१५ सिनेमा ब्लाक, कृष्णानगर, दिल्ली-५१

व

वंदना प्रकाशन, दिल्ली
वसंत प्रकाशन, ग्वालियर
वसुमती, ३८ जीरो रोड, इलाहाबाद-३
वाणी परिषद, आर-७, वाणी विहार, दरियागंज, दिल्ली-११०००२
वाणी प्रकाशन, ६१-एफ कमलानगर, दिल्ली-११०००७
वासुदेव-ज्ञानपीठ, १३ शिवाजी मार्ग, लखनऊ-१
विकल्प प्रकाशन, २६१-आ, मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद-२
विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., ५ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-११०००२
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
विक्रमशिला साहित्य सम्मेलन, कहलगांव, जिला भागलपुर
विजयंत प्रकाशन, २० ईस्ट एवेन्यू मार्केट, पंजाबी बाग, नयी दिल्ली-२६
विज्ञान भारती, १४३७ वजीर नगर, नई दिल्ली-३
विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन, श्री फत्तेचंद मोर हिंदी भवन, वर्धा रोड, नागपुर-१२
विद्या प्रकाशन मंदिर, १६८१ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
विद्या भवन, खजूरी बाजार, इंदौर
विद्या मंदिर, हिंदी बुक सेंटर, बंगलोर
विद्या-मंदिर, ब्रह्मलाल, वाराणसी-१
विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा
विद्यार्थी प्रकाशन, के-७१, कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१
विनोद पुस्तक मंदिर, डा. रांगेय राघव मार्ग, आगरा-२
विभू प्रकाशन, सी-११ श्याम एंक्लेव, साहिबाबाद २०१००५ (मेरठ)
विमल प्रकाशन, ४१३-ए, रामनगर, गाजियाबाद
विवेक पब्लिशिंग हाउस, लालजी सांड का रास्ता, जयपुर
विवेक प्रकाशन, ५६२ बी, नेहरू गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

विवेक प्रतिष्ठान, ५७ रानी मंडी, इलाहाबाद
विवेक प्रकाशन, ३०६ रानी मंडी, इलाहाबाद-३
विशाल पब्लिकेशन्ज़, कुरुक्षेत्र
विशाल प्रकाशन, फूलकियां मार्ग, पटियाला
विश्व तेलुगु सम्मेलन, हैदराबाद, आं. प्र.
विश्व हिंदी सम्मेलन, नागपुर
विश्वभारती प्रकाशन, धनवटे चेंबर्स, नागपुर
विश्वविजय प्रकाशन, एम/१२ कनाट सरकस, नई दिल्ली-११०००१
विश्वविद्यालय प्रकाशन, उज्जैन
विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, वाराणसी
विश्वविद्यालय हिंदी प्रकाशन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
विश्वेश्वरानंद-वैदिक-शोध-संस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर
वीना प्रकाशन, २ बाई का बाग, इलाहाबाद-३
वीरांश प्रकाशन, एस १७/३३० बी-४ मलहिया, वाराणसी
वेणु प्रकाशन, ग्वालियर
वैदिक साहित्य सदन, बहादुरपुर चौक, होशियारपुर
वैदेही समिति, दरभंगा
व्यास प्रकाशन, के ३१/५१ कालभैरव, वाराणसी-१
व्रतीभ्राता, गोपालनगर, जालंधर

श

शंभुनाथ झा, रसुआर, पो. निर्मली, जिला सहरसा
शकुंतला पब्लिशिंग हाउस, बंबई
शकुन प्रकाशन, ३६२५ सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
शक्ति प्रकाशन, वाराणसी
शताब्दी प्रकाशन, भागलपुर
शनिवार गोष्ठी प्रकाशन, वाराणसी
शब्द और शब्द, डी-११८ अशोक विहार, दिल्ली-११००५२
शब्दकार, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-६
शब्दपीठ, १६४ सोहबतियाबाग, इलाहाबाद-६
शब्दलोक प्रकाशन, ४७ लाजपत नगर, वाराणसी-२
शब्दायन, भागलपुर
शांति निकेतन, उखकोंडा, आं. प्र.
शारदा पुस्तक भंडार, १ पोनप्पा रोड, इलाहाबाद
शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-११००३०
शारदा प्रकाशन, पूना
शांति प्रकाशन मंदिर, बरेली
शारदा मंदिर, २६/१७, गणेश दीक्षित, वाराणसी
शारदा संस्थान, वाराणसी
शारदा सदन, मुजफ्फरनगर
शिक्षा ग्रंथागार, मथुरा
शिवलाशाल अग्रवाल एंड कम्पनी प्रा. लि., अस्पताल रोड, आगरा
शिववाणी प्रकाशन, पटना
शिवाजी विद्यापीठ, विद्यानगर, कोल्हापुर-४१६००४
शैल प्रकाशन, रायल टाकीज़ के पीछे, अलीगढ़
शोध-प्रबन्ध-प्रकाशन, नई दिल्ली-७; वितरक : सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६
शोध साहित्य प्रकाशन, ५७७ शाहगंज, इलाहाबाद
शोभा प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
श्याम काशी प्रेस, मथुरा
श्री १०८ प्राणनाथजी मंदिर ट्रस्ट बोर्ड, श्री ५ पद्मावती पुरी धाम, पन्ना, म. प्र.
श्री अंबिका ग्रामोदय प्रतिष्ठान, सुइथाकलां, जिला जौनपुर
श्री अगरचंद नाहटा अभिनंदन-ग्रंथ प्रकाशन समिति, बीकानेर
श्री अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर
श्री कबीर मंदिर, बाहरा, महावीर बाजार, गोंडा, उ. प्र.
श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, नत्थूसा दरवाजे के अंदर, बीकानेर
श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रंथमाला प्रकाशन, १/१२८ डुमरावबाग वसति, अस्सी, वाराणसी-५
श्री गिरिजा प्रकाशन, जबलपुर
श्री गुरु रविदास संस्थान, चंडीगढ़
श्री द्वारकेश स्मारक समिति, मथुरा
श्री निजानंद साहित्य सदन, इलाहाबाद
श्री प्राणनाथ प्रकाशन, १० ए/१२ शक्तिनगर, दिल्ली-७
श्री पुष्टि मार्गीय वैष्णव मंडल, पीतलियों का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर

श्री भारत भारती प्रा. लि., जैन स्ट्रीट, १ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली
श्री रामलगन प्रकाशन, पटना
श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, २३/३ शक्तिनगर, दिल्ली-७
श्री विष्णु वागीश प्रकाशन, बीकानेर
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय (प्रकाशन विभाग), तिरुपति, आं. प्र.
श्री संगीत भारती, शोध विभाग, बीकानेर
श्री सत्साहित्य प्रकाशन समिति, खेड़ापा
श्री सदगुरु कबीर हनुमत पुस्तकालय, वाराणसी
श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर, इलाहाबाद
श्रीनारायण चतुर्वेदी सारस्वत समारोह समिति, प्रयाग
श्रीपटल प्रकाशन. के ४६ कैलास कालोनी, नई दिल्ली ११००४८
श्रीमीरां प्रकाशन समिति, भीलवाड़ा
श्रीराम मेहरा एंड संस, अस्पताल रोड, आगरा-३
संकीर्तन भवन, प्रयाग
संगम प्रकाशन, इलाहाबाद
संगीत कार्यालय, हाथरस
संघी प्रकाशन, जयपुर
संजय प्रकाशन, १८ डी रोड, इलाहाबाद
संजय प्रकाशन, १८ रिंग रोड, लाजपतनगर, नई दिल्ली-११००२४
संजय प्रकाशन, बुलानाला, वाराणसी
संजय बुक सेंटर, के-३८/६ गोलघर, वाराणसी
संजय साहित्य संगम, दास बिल्डिंग नं. ५, बिलोचपुरा, आगरा-२
संजीव प्रकाशन, ३६१३ दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
संत पौलुस प्रकाशन, इलाहाबाद
संदर्भ भारती, डी/१, काशी हिंदू विश्वविद्यालय क्षेत्र, वाराणसी-५
संप्रति प्रकाशन, पटना-४
संभावना प्रकाशन, भोलानाथ नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२
संभावना प्रकाशन, गौरीगंज, सुलतानपुर, उ. प्र.
संभावना प्रकाशन, रेवतीकुंज, हापुड़, उ. प्र.
संस्कृत परिषद्, सागर विश्वविद्यालय, सागर
सत्य सदन, बाराबंकी.
सत्येश्वर प्रि. प्रेस, सत्याश्रम, वर्धा
सत्साहित्य प्रकाशन केंद्र, बंबई
सद्भावना प्रकाशन, हाथरस
सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा-२
सन्मार्ग प्रकाशन, १६ यू. बी बैंगलो रोड, दिल्ली-११०००७
सप्तांशु प्रकाशन, बेंगलूर
समकालीन प्रकाशन, १४/१६० बी-२, सत्याग्रह मार्ग वाराणसी २
समता प्रकाशन, २१/५६ राजेंद्रनगर, नयी दिल्ली-६०
समीक्षालोक कार्यालय, आगरा
सरजणा प्रसारण, बीकानेर
सरदार पटेल यूनीवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, जि. खेरा
सरला प्रकाशन, राजघाट, नई दिल्ली-१
सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतनपोल, अहमदबाद-१
सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा, हनुमान चौराह आगरा-३
सरस्वती प्रकाशन, आगरा
सरस्वती प्रकाशन, मथुरा
सरस्वती प्रकाशन मंदिर, ६ बी, बेली रोड, इलाहाबाद
सरस्वती प्रेस, ५ सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद-१
सरस्वती प्रेस, २/४३ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६
सरस्वती मंदिर, जतनपुर, वाराणसी
सरस्वती विहार, २१ दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल ११०००२
सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद-२
सर्चमेंट्स, घूरी गेट, संगरूर, पंजाब.
सर्व सेवा संघ. दे. अखिल भारत सर्व सेवा संघ.
सर्वराकेश प्रकाशन, ८१, हिम्मतगंज, इलाहाबाद
सर्वोदय साहित्य भंडार, टिहरी-गढ़वाल
सस्ता साहित्य भंडार, ५७ बी पाकेट ए फेज II, [illegible] विहार, दिल्ली-५२
सस्ता साहित्य मंडल, कनाट सरकस, नई दिल्ली-११०
सस्ताज प्रकाशन, दिल्ली
सांईटिफिक सर्विसस, हैदराबाद

साकेत प्रकाशन, इलाहाबाद
साकेत प्रकाशन, बस्ती
साकेत प्रिंटिंग प्रेस, फैजाबाद
सागर विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग), सागर
सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर
साथी प्रकाशन, सागर, म. प्र.
सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
सारथी प्रकाशन, पूना
साहनी प्रकाशन, दिल्ली
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, ३५ फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-११०००१
साहित्य कुटीर, खंडवा, म. प्र.
साहित्य कुटीर, ३६६ गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ
साहित्य केंद्र प्रकाशन, ई ५/२० कृष्णनगर, दिल्ली-११००५१
साहित्य निकुंज, एफ १७/३३० बी-४, मलदहिया, वाराणसी
साहित्य निकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर
साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली-११०००६
साहित्य प्रकाशन, हैदराबाद
साहित्य प्रकाशन उपसमिति, जयपुर
साहित्य प्रकाशन कमेटी, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर
साहित्य प्रकाशन मंदिर, हाई कोर्ट रोड, लश्कर, ग्वालियर
साहित्य भंडार, इलाहाबाद
साहित्य भंडार, सुभाष बाजार, मेरठ
साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद
साहित्य भारती, १२३/४ पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-११००५१
साहित्य शोध विभाग, महावीर भवन, जयपुर
साहित्य संगम, आगरा
साहित्य संगम, नई सड़क, लश्कर, ग्वालियर
साहित्य संगम, व्रजनगर
साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर
साहित्य संस्थान, १०६/१५४ गांधीनगर, कानपुर-२०८०१२
साहित्य सदन, पलटन बाजार, देहरादून
साहित्य समारोह, ३३ फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली
साहित्य सरोवर, इलाहाबाद
साहित्य सहयोग सरकारी समिति, इलाहाबाद
साहित्यलोचन, १०६ शहटारा बाग, इलाहाबाद-३
साहित्यवाणी, ५, गोसाईं टोला, इलाहाबाद-३
साहित्यार्चन समिति, हरसूद
सिंधु पब्लिकेशंस प्रा. लि., फोर्ट, बंबई-१
सीमांत पब्लिकेशंस, दिल्ली
सुदर्शन प्रकाशन, निराला निलय, सहसराम
सुधा कमल ग्रंथमाला, २६३ नार्थ गांधी कालोनी, मुजफ्फर-नगर-२५१००१
सुरजादेवी (श्रीमती), कैथी, वाराणसी
सूचना तथा प्रसार मंत्रालय (प्रकाशन विभाग), नई दिल्ली-११०००१
सूचना विभाग, प्रकाशन शाखा, लखनऊ
सूदन प्रकाशन, जवाहर पार्क, बेहर रोड, सहारनपुर
सूर पंचशती समारोह समिति, बिजनौर
सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-११०००६
सूर्य प्रकाशन मंदिर, बिस्सों का चौक, बीकानेर
सूर्यमल्ल स्मारक समिति, बूंदी
सृजन-चेतना, सरदारशहर, राजस्थान
सेतु प्रकाशन, १८४ तलैया, झांसी
सेवा सदन प्रकाशन, रामपुरा, जि. मंदसौर, म. प्र.
सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति, गुरु बाजार, अमृतसर
सौभाग्य प्रकाशन, १५१ चक माधोसिंह लेन, इलाहाबाद-२११००३
सोमैया पब्लिकेशंस, बंबई
सौरभ प्रकाशन, १/५४८५ बलबीर नगर विकास, शाहदरा, दिल्ली-३२
स्टार पब्लिकेशंज (प्रा.) लि., आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२
स्टूडेंट्स पब्लिकेशंस, जबलपुर
स्टूडेंट्स बुक कंपनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३
स्टूडेंट्स ग्रादर्स, भरतपुर
स्निग्धा प्रकाशन, साहिबगंज
स्मृति प्रकाशन, १२४ शहरारा बाग, इलाहाबाद-२११००३
स्वस्तिका प्रकाशन, २५६ चक, जीरो रोड, इलाहाबाद-३

☆

